अंशु

अंशु

शिव कुमार झा "टिल्लू"

ISBN : ९७८-९३-८०५३८-३३-४

मूल्य: भा. रु.१००/-

पहिल संस्करण : २०१३.

श्रुति प्रकाशन रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स-(०११)२५८८९६५७

Website:http://www.shruti-publication.com

e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Printed at: Ajay Arts, Delhi-११...२

Typeset by: Sh. Umesh Mandal.

Distributor: *Pallavi Distributors*, Ward no- ६, Nirmali (Supaul), मो.- ९५७२४५.४.५, ९९३१६५४७४२

*Anshu: Anthology of **Maithili Criticism** by Shiva Kumar Jha Tillo.*

समर्पण

अपन माय स्व. श्रीमती चन्द्रकला देवी आ पिता स्व. कालीकान्त झा ''बूच'' जीक चरण रजकेँ भावक शतदलसँ स्पर्श करैत पुष्पांजलि...।

अध्याय

१०.समीक्षा- मिथिलाक बेटी (नाटक)

११.मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान

१२.समीक्षा-मैथिली कविता संचयन- (संपादक- गंगेश गुंजन)

१३.समीक्षा- तरेगन
१४. गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा
१५. हम पुछैत छी- कविता संग्रह (विनीत उत्पल)- समीक्षा
१६.समीक्षा-अरिपन (कविता संकलन)
१७.समीक्षा-बिन बाती दीप जरय
१८.मैथिलीक विकासमे बाल कविताक योगदान
१९.पोथी- समीक्षा भावांजलि
२०.कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक- (समीक्षा)
२१.रमाजीक काव्य यात्रा
२२.सूर्यमुखी
२३.अम्बरा- (कविता संग्रह, राजदेव मण्डलक)

२४.*मैथिली कथाक विकासमे गामक जिनगीक योगदान*

२५. मैथिली कथा साहित्यक विकासमे राजकमलक योगदान
२६.इन्द्रधनुषी अकासमे सामाजिक विमर्श

२७.कृष्णजन्म :: कथाकाव्यक सूत्रपात

२८.मिथिलाक लोकदेवता

२९.कथा किरणमे यथार्थवोध ओ नारी विमर्श

अंशु

३०.आशु कवित्वक हृदयांतरिक किलोल- कलानिधि

३१.निश्तुकी

३२.पृथ्वीपुत्र

३३.मैथिली उपन्यास साहित्यक विकासमे हरिमोहन झाक योगदान

३४. कला :: सबल समाजक अर्न्तद्वन्द्वपर सकारात्मक प्रहार

आमुख

साहित्यक मर्मकेँ बूझएबला विद्वत आ विदुषी लोकनिक दृष्टिमे समालोचनाक अर्थ होइत- कोनो रचना वा कृतिकेँ चारू कातसँ देखब। युरोपीय साहित्यमे आलोचनाकेँ ''क्रिटिसिज्म'' कहल जाइत। कहैले एकर स्वरूप नकारात्मक मानल जाइ छै। बाल कालेसँ जेठ-पुरान लोकनिक मुखसँ सुनि रहल छी- केकरो आलोचना नै करी। ऐ परिप्रेक्ष्यक आलोचना आ जीवन रहस्यक आलोचनामे बहुत अन्तर मानल जाए। जौं कोनो बेक्तिक व्यर्थ आलोचना कएल जाए तँ समाजमे भ्रमक संग-संग मनोविश्लेषणात्मक अंतर्द्वन्द्व हएब प्रासंगिक भऽ जाइ छै। ऐ तरहक आलोचनासँ अपन प्रवृतिमे नकारात्मक स्वरूपक सृजन हएब सेहो निश्चिते मानल जाए। परंच साहित्य, संस्कृति बा मानव संसाधन मूल्यक सभ विधामे ''आलोचना'' अति आवश्यक होइत, किएक तँ ऐसँ सृजनहारक रचनात्मकतामे वागीश वृद्धि हएब सेहो अपेक्षित।

आवश्यकता छै तँ ''आलोचना'' क स्वरूप आलोचना नै भऽ कऽ समालोचना हेबाक चाही। हमर बेक्तिगत मत अछि जे समालोचनामे मात्र चारूकातसँ देखब प्रासंगिक नै, एकरा दसो दिससँ देखब उचित।

विदेह ई-पत्रिकाक फीडबैक कॉलममे ऑनलाइन समालोचनासँ प्रारम्भ भेल समालोचनाक हमर यात्रामे शनैः शनै सम्पादक श्री गजेन्द्र ठाकुर आ श्री उमेश मण्डलजी उत्प्रेरक बनला। मैथिली सरस भाव-भाषाक संग-संग विचारमूलक साहित्यक केन्द्र बिन्दु रहल अछि। ऐठाम कनेक कमी अछि तँ ओ छी ''मनसा-वाचा-कर्मणा'' ऐ त्रिवेणीकेँ आत्मसात करब। लोक अपन संस्कृतिक गुणगान तँ करै छथि मुदा ओइमे सन्निहित सार्थक तत्वकेँ आत्मसात नै कऽ कऽ ओइमे समाहित किछु भांगठकेँ जड़िसँ पजिऔने छथि।

हमर लेखनी भाग्यशाली जे एकरा आरसी, ललित आ जगदीश प्रसाद मण्डल सन जीवनकलाक सम्यक् त्रिवेणी भेटलै। श्रीमती प्रीति ठाकुर सन बाल-सिनेहीसँ लऽ कऽ राजदेव मण्डल सन आत्मिक रचनाकार भेटलै। राजकमल, हरिमोहन, शेखर, शेफालिकासँ लऽ कऽ श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरीक रचनाक प्रवाह अपन शब्दमे लिखि देलौं। एक दिस साम्यवादी चतुरानन मिश्र आ किरण सन शिलाजीत भेटल छथि तँ दोसर दिस रमाकान्त

राय रमा आ विकल सन समरपित साहित्य साधक। कियो-कियो कहलनि जे आलोचना कृतिक हेबाक चाही, कृतिकारक नै। जौं आलोचनाकें मात्र नकारात्मक रूपसँ देखल जाए तँ से केकरो नै हेबाक चाही। जौं एकर सकारात्मक स्वरूप देखल जाए तँ कृतिकारक आलोचनासँ डराएब उचित नै। जौं कृतिकारक जीवन शैली लेखनीसँ सम्यक् हएत तँ आलोचनाक परिप्रेक्ष्य समाजोपयोगी हएब आवश्यक। जौं केतौ किनको विषएमे समुचित उद्बोधन् नै भेल हुअए तँ क्षमाप्रार्थी छी। मुदा एतेक तँ निश्चित अछि, जे किछु लिखलौं, पोथी पढ़ि कऽ लिखलौं।

ऐ आंजुर भरि कनैलक फूलकें पथ देखौनिहारमे श्रद्धेय गजेन्द्रजी, रविभूषण पाठकजी, सत्यनारायण झाजी शामिल छथि। ऐ विद्वत् मण्डलीकें धैनवाद।

सभसँ बेसी धैनवादक पात्र छथि श्री उमेश मण्डलजी, जे उजड़ल-उपटल नार-पुआरकें अपन टाइपिंगसँ लऽ कऽ भाषा-सम्पादन धरि साहित्यिक स्थापत्यकलासँ ''शिल्प''क रूप देलनि।

श्रुति प्रकाशनक अधिष्ठाता श्रीमती नीतू कुमारी आ श्री नागेन्द्र कुमार झाक प्रति आभार व्यक्त करैत छियनि जे हमर कृतिकें प्रकाशन योग्य बुझलथि। अंतमे महाकवि विद्यापतिक ऐ मैथिलीक ओइ कालजयी रचनाकारक प्रति श्रद्धा सुमन अरपित करैत छियनि जिनक रचनाक प्रवाह साहित्यकें सुवासित कऽ रहल अछि।



१.

मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण

उपन्यास कोनो गद्य साहित्य रूपी व्यष्टिक आत्मा मानल जाइत अछि। मैथिली साहित्यमे लगभग सए बर्ख पूर्ब धरि उपन्यास विधाक रचना लगभग शून्य छल। ऐ कारण ओइ अवधि धरि मैथिलीकेँ पूर्ण साहित्यिक भाषा नै मानल जाइ छल। जनसीदनजी ऐ भाषा साहित्यक पहिल मान्य उपन्यासकार छथि। हिनक पाँच गोट उपन्यासक पश्चात् अखनि धरि देसिल बयनामे साहित्यक समग्र विधाक चित्रण करैत बहुत रास उपन्यास पाठक धरि पहुँचल अछि। परंच ऐ साहित्यक संग सभसँ पैघ बिडम्बना रहल जे पछातिक समाज जेकरा सामाजिक शब्दमे दलित कहल जाइत अछि, ओकर महिमा मण्डनक गप तँ दूर प्राय: ऐ साहित्यमे अकस्मात् अवांछित अभ्यागतक रूपमे क्षणप्रभा जकाँ केतौ-केतौ चर्चित अछि। दलित वर्ग तँ सामाजिक, सांस्कृतिक आ शैक्षणिक रूपेँ सम्पूर्ण आर्यावर्त्तमे पिछड़ल छथि, मुदा मिथिला-मैथिलीमे हिनक स्थानक विवेचन हिनका सबहक जाति जकाँ अछोप अछि। एकर प्रमुख कारण मिथिलामे धर्मसुधार आन्दोलन, विधवा बिआहक सकारात्मक दृष्टकोण आदि प्राय: मृतप्राय रहि गेल। दार्शनिक उदयनाचार्य, भारती-मंडन, आयाचीक ऐ भूमिपर सनातन संस्कृतिक पुनरूद्वार तँ भेल मुदा ऐ पुनरूद्धारपर आडंबरधर्मी बेवस्थाक अमरलत्ती मूल संस्कृतिक बिम्बकेँ सुखा देलक। समाजक साम्यवादी सोच भगजोगनी बनि सवर्ण-दलितक मध्य भिन्न सामाजिक दशाक मध्य मात्र टिमटिमाइत रहल। ऐ कारण सम्यक् दृष्टिकोण रहितो मैथिली भाषाक स्थापित रचनाकारक लेखनी बेथित आ शोषित दलितक मर्मस्पर्शी जीवन गाथाकेँ प्रकाशित नै कऽ सकल। कथा-कविता आ गल्पमे तँ दलितक चित्रण भेटैत अछि, मुदा उपन्यासमे अत्यल्प। अपन बेथाक विवेचन दलित वर्गक साहित्यकार सेहो नै कऽ सकला, किएक तँ हिनक संख्या अखनि धरि नगण्य रहल अछि। संभवत: दलित रचनाकारक उपन्यास अपन बयनामे मैथिलीकेँ अखनि धरि नै भेटलनि।

अंशु

सभसँ जनप्रिय उपन्यासकार हरिमोहन झाक साहित्यमे दलित वर्ग अनुपस्थित जकाँ छथि। यात्रीक 'बलचनमा' ओना ऐ वर्ग दिस संकेत करैत अछि ओहिना जेना ललितक 'पृथ्वीपुत्र', धूमकेतुक 'मोड़ पर' आ रमानंद रेणुक 'दूध-फूल'। यात्रीक 'पारो' आ नवतुरिया विषएक चयनक कारण दलित वर्ग दिस धियान नै दऽ सकल। धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र'क 'कादो ओ कोयला' छोट लोकक कथा कहैत अछि तँ हुनकर 'ठुमकि बहू कमला' मे दलित वर्गक संघर्षक कथा ठीठर आ रामकिसुनक माध्यमसँ कहल गेल अछि। मणिपद्मक उपन्यासक 'राजा सलहेस' दलित दुसाधक नायक सलहेसक कथा कहैत अछि तँ 'लोरिक विजय' उपन्यासक नायक तँ यादव छथि मुदा हुनक मित्र वर्गमे बंठा चमार, वारू पासवान, राजल धोबी, ई सभ दलित वर्गक छथि। लोरिकक किछु विरोधी शासक सेहो दलित वर्गक छथि- मोचलि, गजभीमलि, हरवा आदि। बंठाक संहार परिस्थितिवश करै छथि आ तइसँ लोरिक विजयमे दलित कथाक ढेर रास प्रसंग आएल अछि। नैका बनिजारामे सेहो नैकाक पत्नी फुलेश्वरीकेँ किनबाक वर्णन अछि। हुनकर ''फुटपाथ'' भिखमंगा सबहक कथा कहैत अछि तँ लिली रे क 'पटाक्षेप' भूमिहीनक नक्सलवाड़ी आन्दोलनक कथा कहैत अछि।

विद्यानाथ झा 'विदित'जी ऐ विषएपर अपन लेखनीकेँ चलेलनि। ओना तँ विदितजी अखनि धरि आठ-नौ गोट उपन्यासक रचना केलनि अछि, परंच हिनक तीन गोट उपन्यासमे दलितक दशाक चित्रण मैथिली साहित्य लेल अपूर्व निधि मानल जा सकैत। हिनक विप्लवी बेसराक कथामे आदिवासीक कथा धौना, टेकू सुफल, बांसुरी, मोहरीलाल, गौरी, मारसक संग सफलता पूर्वक कहल गेल अछि। 'कौसिलिया' उपन्यासमे तँ फुलिया चमैनक पात्रताक चित्रण अनुपमेय अछि। विदित जीक तेसर उपन्यास 'मानव कल्प' मे मिथिला, अंग आ झारखंडक आँचरमे बसल लगभग सम्पूर्ण दलित समाजक विवेचन कएल गेल।

ओना तँ श्रीमती शेफालिका वर्माजी मानवधर्मी रचनाकार छथि। हिनक समग्र साहित्यिक कृतिमे 'जाति' शब्द भूमंडलीकृत अछि। 'नाग फांस' उपन्यासमे जातिवादी बेवस्थासँ शेफालिकाजी बँचबाक प्रयास केलनि, परंच ऐ

उपन्यासक एकटा पात्र आकाशक पत्नी तरंगक प्रकृतिसँ बुझना जाइत अछि, जे ओ दलित छथि।

कहैले तँ सभ साहित्यकार अपनाकेँ साम्यवादी कहै छथि मुदा साम्यवादी जीवन शैलीक जौं चर्च कएल जाए तँ संभवत: मैथिलीक सर्वकालीन साहित्यमे ध्रुवताराक स्थान श्री जगदीश प्रसाद मण्डल जीकेँ भेटबाक चाही। हिनक सभ उपन्यास (मौलाइल गाछक फूल, जिनगीक जीत, जीवन-मरण, जीवन-संघर्ष, उत्थान-पतन, नै धाड़ैए, सदबा-विधवा, बड़की बहिन, भादवक आठ अन्हार।)मे दलितक चित्रण अनायास भेट जाइत अछि। लिखबाक शैली ओ बिम्बक चयन तेतेक पारदर्शी जे सवर्ण-दलितक मध्य कोनो खाधि नै। सम्पूर्ण समाजमे सकारात्मक तारतम्य स्थापित करबाक जगदीश जीक स्वप्न मात्र उपन्यासमे नै रहत, ऐसँ मिथिलाक समाजिक परिस्थितिमे भविसमे सर्वे भवन्तु सुखिन:, सिद्धान्तक स्थापना अबस्स हएत। हिनक अविरल मर्मस्पर्शी आ प्रयोगधर्मी कृति 'मौलाइल गाछक फूल' मे दलित समाजक महादलित मुसहर जातिक रोगही, बेंगबा, कबुतरीक मनोदशा आ नित्यकर्मसँ समाजमे शांतिक ज्योति जगबैक कल्पना अनमोल अछि। दरिभंगाक प्लेटफार्मपर सँ भंगी डोमक मानवीय भावनाक मरीचिका एकठाँ भक्क दऽ उगि जाइत अछि। भजुआ, झोलिया आ कुसेसरी सभ सेहो डोम जातिक छथि, जिनकर सहायता सम्यक् सोचबला ब्राह्मण रमाकान्तजी करै छथि। ऐ कृतिक सभसँ अजगुत पात्र छथि रमाकान्तजी। हिनक छोट पुत्र कालक डांगसँ अधमरू, वनिता सुजाता जे धोबिन छथि, तिनकासँ बिआह कऽ लइ छथि। बिआहे टा नै, बिआहसँ शिक्षा ग्रहण करैले प्रेरणा आ अर्थ सेहो सुजाताकेँ भेटलनि, जइसँ ओ डॉ. सुजाता बनि गेली। गाममे रहनिहार आ अपन मातृभूमिक प्रति असीम श्रद्धा रखनिहार रमाकान्त जीकेँ अपन पुत्र महेन्द्रक ऐ निर्णएसँ कोनो पीड़ा नै भेलनि। हिनक सम्पूर्ण परिवार ऐ निर्णएकेँ सहृदए स्वीकार कऽ लेलकनि।

जगदीश जीक दोसर उपन्यास 'जीवन-मरण'मे हेलन-गुदरी डोम दम्पतिक चर्च कएल गेल अछि। जीबछ, छीतन, रंगलाल चमार जातिसँ सम्बन्ध रखै छथि। जिनगीक जीत उपन्यासमे पलहनिक नेपथ्यक पात्रता दर्शित अछि।

अंशु

गजेन्द्र ठाकुरक 'सहस्त्रबाढ़नि'मे दम्माक जड़ी एकटा आदिवासी द्वारा आनब आ किछु बर्ख बाद ओ जड़ी जंगलमे नै भेटब वोन कम होइ दिस संकेत करैत अछि तँ हुनकर 'सहस्त्रशीर्षा' मिथिलाक लगभग सभ दलित जातिक विस्तृत विवेचना करैत अछि। -तीनटा घरक रहलोपर धोबिया टोली एकटा टोल बनि गेल अछि। झंझारपुर धरि मारवाड़ीक कपड़ा एतए साफ कएल जाइत अछि। महिसवार ब्रह्मण सभ जे बरियातीमे बेलवटम झाड़ि कऽ सीटि-सीटि कऽ निकलै छथि से कोनो अपन कपड़ा पहीरि कऽ। वएह मंगनिया कपड़ा, महगौआ मारवाड़ी सबहक। मारवाड़ी सबहक ई कपड़ा रजकभाय दू दिन लेल भाड़ापर हिनका सभकेँ दइ छथिन। कोरैल बुधन आ डोमी साफी, धोबि। डोमी साफी आब डोमी दास छथि, कारण कबीरपंथी छथि। फेर एकटा आर टोल, चमरटोली अछि। चमार- मुखदेब राम आ कपिलदेव राम। पहिने गामसँ बाहर रहए, बसबिट्टीक बाद। मुदा आब तँ सभ बाँस काटि कऽ उपटाए देने अछि आ लोकक बसोबास बढ़ैत-बढ़ैत ऐ चमरटोली धरि आबि गेल अछि। घरहट आ ईंटा-पजेबा सभ अगल-बगलमे खसिते रहैत अछि। ढोलहो देबासँ लऽ कऽ सिंगा बजेबा धरिमे हिनकर सबहक सहयोग अपेक्षित। गाए-माल मरला पछाति जाधरि ई सभ उठा कऽ नै लऽ जाइ छथि लोकक घरमे छुतका लागले रहैत अछि। भोला पासवान आ मुकेश पासवान, दुसाध। गेना हजारीक निचुलका खाड़ीक सम्बन्धी। वएह गेना हजारी जे कुशेश्वर स्थानमे एकटा कुशपर गाए द्वारा आबि कऽ दूध दैत देखने रहथि तँ ओइ स्थानकेँ कोड़ए लगला, महादेव निच्चाँ होइत गेला, सीतापुत्र कुश द्वारा स्थापित ई महादेव गेना हजारीक ताकल। मुकेश पासवानक बेटी मालती बैंक अधिकारी छथिन आ जमाए मथुरानंद डी.पी.एस. स्कूलक प्राचार्य छथि, वसंतकुंज लग फार्म हाउसमे रहै जाइ छथि। भोला पासवान आ मुकेश पासवान गामेमे रहै जाइ छथि। १९६७ई.क अकालमे जखनि सभटा पोखरि, गड़खै सुखा गेल मुदा डकही पोखरि नै सुखाएल प्रधानमंत्री आएल रहथि तँ हुनका देखेने रहनि सभ जे केना एतएसँ बिसाँढ़ कोड़ि कऽ मुसहर सभ खाइ छथि। चर्मकार मुखदेव रामक बेटा उमेश सेहो ओइ मुक्ताकाश सैलूनक बगलमे अपन असला-खसला खसा नेने अछि, रहैए मुदा किशनगढ़मे। चप्पल, जुताक मरोम्मतिक अलावे तालाक डुप्लीकेट चाभी

बनेबाक हुनर सेहो सीख नेने अछि। कुंजी अछि तँ ओकर डुप्लीकेट पंद्रह टाकामे। कुंजी हेरा गेल अछि तँ तेकर डुप्लीकेट सए टाकामे। आ जे घर लऽ जएबनि तँ तेकर फीस दू सए टका अतिरिक्त। मुसहर बिचकुन सदायक बेटा रघुवीर ड्राइवरी सीख नेने अछि। वसंत कुंजक एकटा बेवसायीक ओइठाम ड्राइवरी करैए आ रहैत अछि किशनगढ़मे। डोम टोलीक बौधा मल्लिकक बेटा श्रीमंत सेक्टरक मेन्टेन्सक ठेका नेने छथि। हुनका लग दू सए गोटे छन्हि जे सभ क्वार्टरक कूड़ा सभ दिन भोरमे उठेबाक संग रोड आ पार्किंगक भोरे-भोर सफाइ करै छथि। ऐमे सँ किछु गोटे विशेष कऽ नेपालक, भोरे-भोर लोकक शीसा महिनवारी दू सए टाकामे पोछै छथि आ अखबारक हौंकर बनल छथि। रहै छथि किशनगढ़मे मुदा अपन मकानमे- मुसहर पिचकुन सदाय।

दलित संस्कृतिक प्रति उदासीनताक मुख्य कारण अछि समाजमे पसरल छूति बेवस्था। ओना तँ ऐ प्रकारक अवस्था प्राय: सम्पूर्ण आर्यावर्त्तमे रहल अछि, परंच आन ठामक जनभाषासँ दोसर धर्मक लोकक हृदैगत स्पर्शक कारण दलित संस्कारक चित्रण आन भाषामे मैथिलीसँ बेसी भेटैत अछि। मिथिलामे तँ इस्लामधर्मी छथि, परंच मातृभाषा मैथिली रहला पछातिओ हुनका सबहक मध्य साहित्यक सृजनशीलता उदासीन रहल। एकरा मैथिलीक दुर्भाग्य मानल जा सकैत अछि जे अखनि धरि ऐ भाषामे दलित वर्गसँ उपजल साहित्यकार उपन्यास नै लिखि सकलनि। प्राय: यएह स्थिति इस्लामधर्मी साहित्यकारक संग सेहो अछि। फजलुर रहमान हासमी, मंजर सुलेमान सन साहित्यकार तँ मैथिलीकेँ आत्मसात केलनि परंच उपन्यासकार नै बनि सकलाहेँ। ई लिखबाक तात्पर्य जे इस्लाममे जातिवादी बेवस्था सनातन संस्कृतिक अपेक्षा न्यून अछि।

दलित वर्गक संख्या मिथिलामे लगभग आठ आना अछि, संपूर्ण समाजक मातृभाषा मैथिली, मुदा शिक्षा-चेतनाक अभावक कारण ऐ वर्गमे मैथिली साहित्यक प्रति सृजनात्मक दृष्टिकोण नै पनपि सकल। आगाँक जातिमे सम्यक् विचारक अभाव रहल अछि, किछु साहित्यकार ऐ परिधिसँ तँ बाहर छथि परंच वर्गक बीचक खाधि लक्ष्मण रेखा बनि हुनको सभमे जनभाषा वाचकक प्रति सिनेह नै आबए देलक। संभवत: मैथिली आर्यभाषा समूहक

पहिल जनभाषा छी जेकरापर जातिवादी कलंक लागल अछि। संस्कृतक संग यएह विडम्बना रहल परंच ओ कहिओ जनभाषा नै रहल। जखनि कि मैथिली वर्तमान कालमे सवर्णसँ बेसी दलित-पछातिक मातृभाषा अछि। पड़ाइन तँ सभ जाति समूहमे भऽ रहल अछि परंच मजदूरी केनिहार दलित प्रवासमे सेहो मैथिलीकेँ आत्मसात केने छथि। एकर विपरीत मिथिलामे रहनिहार सवर्ण परिवारक आधुनिक पिरहीक नेना वर्गमे मातृभाषाक स्थान हिन्दी लऽ रहल अछि। 'ज्योतिक-कोखि अन्हार' जकाँ मातृभाषाक वास्तविक संरक्षकक विवेचन ऐ साहित्यक उन्नयनक नै कऽ रहल छथि। उत्तर-बिहारक बेस रास स्थानमे पसरल मैथिली तँ कखनो-कखनो मात्र मधुबनी दरिभंगाक मातृभाषा प्रमाणित कएल जाइत अछि।

रचनाकारक दृष्टिकोण रचनामे किछु आर आ वास्तविक जीवनमे किछु आर रहल। साम्यवादी बेवस्थापर सियाहीक प्रयोग केनिहार उपन्यासकारमे वास्तविकता जौं रूढ़िवादी रहत तँ सम्यक् समाजक कल्पनो करब असंभव। बेथा वएह बूझि सकैत अछि जेकरामे जीवन्त अविरल हृदए हुअए वा स्वयं बेथित हुअए।

निष्कर्षत: आशक संग-संग बिसवास अछि जे वर्तमान युगक साहित्यकार समाजक कात लागल वर्गक प्रति सिनेही बनि मैथिली साहित्यकेँ गरिमामयी बनाबथु। पूर्वाग्रहकेँ अनुगृहीत करबाक पश्चात एहेन कल्पना-वास्तविक भऽ सकैत अछि। जौं अपमानित, अछोपकेँ सम्मानित कएल जाए तँ मिथिला पुनि ओइ मिथिलामे परिणत भऽ सकैत अछि जेतए राजा जनक परिवार, समाज आ राज्य हितमे धर्मक पालनक हेतु राजासँ हरबाह बनि गेलथि।



२.

'समकालीन मैथिली कविता'क समीक्षा

साहित्य अकादेमी द्वारा सन् १९६१ई.सँ लऽ कऽ १९८० धरि प्रकाशित मैथिली कविताक बीछल संकलनक प्रकाशन सन् १९८८ई.मे भेल अछि, एकर शीर्षक देल गेल 'समकालीन मैथिली कविता'। सन् १९०९मे मिथिलाक माटिपर जनम लेल साहित्यकार स्व. तंत्रनाथ झासँ लऽ कऽ आधुनिक पिरहीक कवि श्री सुकान्त सोम सहित २१ गोट कविक ६८ गोट कविताक संग्रहक संपादक द्व छथि- श्री भीमनाथ झा आ श्री मोहन भारद्वाज। 'त्रिधारा' आ 'वीणा' सन चर्चित कविता संग्रहक रचयिता भीमनाथजी मूलत: कवि छथि आ श्री मोहन भारद्वाजजी मैथिलीक चर्चित समीक्षक मानल जाइ छथि।

ऐ संग्रहमे जागृत विषएक रचनाक संग, विचार मूलक, श्रृंगारिक, विरह, बाल साहित्य आ देशकालक दशापर आधारित रचनाकेँ प्राथमिकता देल गेल। प्रस्तावनामे उल्लेख कएल गेल जे पहिने मात्र पंद्रह गोट कविक रचना संकलन करबाक छल मुदा बिछबामे कठिनता कारणेँ एकरा २१ धरि कऽ देल गेल। आब प्रश्न उठैए जे कविक संख्या २१ आ कविताक गणना ६८। बीस बर्खक जे परिधि बनौल गेल ओइमे बहुत रास एहेन रचनाकार छूटल छथि जनिक रचना सभ ऐ पोथीमे छपल किछु रचनासँ बेसी बिम्बित मानल जा सकैत। जौं 'समकालीन मैथिली कवि' शीर्षक रहितए तँ प्रासंगिक मानल जा सकै छल, परंच कविता-समकालीन लिखल गेल आ किछु चर्चित कविताकेँ कात कऽ देल गेल ई सर्वथा भ्रामक। संपादक मण्डल कविक गणना बढ़ा सकै छला, किएक तँ किछु कविक चारि-चारि रचना छपल अछि, मायानन्द जीक तँ पाँच गोट कविता देल गेल। मायानन्द जीक रचनासँ कोनो गतिरोध नै मुदा जौं किछु चर्चित कविता छुटि गेल छल तँ मायानन्द जीक संग-संग अन्य रचनाकारक छपल कविताक गणना कम कएल जा सकै छल। मैथिली भाषाक दुर्भाग्य मानल जाए कि ऐ संग्रहमे समाजक मुख्य धारसँ कात लागल रचनाकारक संग-संग कवयित्री सबहक एकोटा रचना नै देल गेल। मैथिलीक चर्चित कवयित्री डॉ शेफालिका वर्मा जीक कविता संग्रह

विप्रलब्धा १९७४ई.मे प्रकाशित भेल। हुनक पहिल कविता 'पावस प्रतीक्षा' १९६५ई.मे मिथिला मिहिरमे छपल छल। श्रीमती सुभद्रा सिंह 'पाध्या' १९७० दशकमे मैथिलीक चर्चित कवयित्री छेली। श्रीमती श्यामा देवी, श्रीमती इलारानी सिंह सन माँजल कवयित्रीकेँ विसरब आश्चर्य जनक अछि। 'समए रूपी दर्पणमे' कविताक कवि गोपेशजी, 'हे भाई' कविताक कवि फजलुर रहमान हाशमी जी, 'कोइली' शीर्षक कविताक कवि श्री चन्द्रभानु सिंह जी, बालुक करेजपर गीतक रचनाकार श्री विलट पासवान विहंगम, जागरण गान/ माला/ तोहर ठोर/ परिचए-पात आ उदासी सन मिथिला मिहिरमे प्रकाशित गीतक रचनाकार कवि स्व. काली कान्त झा बूच सन रचनाकारक कविता सबहक प्रासंगिकतापर प्रश्नचिन्ह लगाएब उचित नै। श्री भीमनाथजी आ भारद्वाजजी सन पारखी लोक ऐ रचनाकेँ केना बिसरि गेलनि! भऽ सकैत अछि कोनो अपरिहार्य परिस्थिति भेल होन्हि।

ऐ लेल संपादक मण्डलक पूर्वाग्रह नै मानल जा सकैत अछि, किएक तँ भीमनाथ झा प्रायश्चित स्वरूप अपन लिखल कविता सेहो ऐ संकलनमे नै देलनि, जखनि कि ओ मैथिलीक प्रांजल कवि छथि।

कविताक श्री गणेश तंत्रनाथजी लिखित कविता 'प्रणयालाप' शीर्षक कवितासँ कएल गेल अछि। स्मृति रेखांकनक विषए-वस्तुमे एकातक वेदना हृदए स्पर्शी अछि। जीवन संग्रामक रणभूमिमे कवि एकसरि ठाढ़ छथि, सभ किछु अछि मुदा आत्माक सगरो स्थान रिक्त, केकरो स्मृतिक शेष-अशेष बेथामे तीज-भिजि गेल छन्हि। श्रैंगारिक वेलाक अवसान भेलापर विरह मर्मस्पर्शी होइत अछि मुदा ई तँ जीवनक गति छी। निष्कर्षत: ई कविता तृण-तृणकेँ छुबैत अछि।

सुमनजी मैथिलीक तत्सम् मिश्रित काव्यधाराक उन्नायक कवि छथि। प्रकृति पूजनक विषए-वस्तुक परिपेक्ष्यमे वसुन्धराक महिमाक गुणगान 'पूजन-उपादान' शीर्षक कवितामे कएल गेल अछि। संसारक अस्तित्व धरतीक बिनु अकल्पनीय अछि। अपन हृदैकेँ रवि तापसँ जाड़ि भाफ उत्पन्न कऽ माँ धरित्री संसारकेँ जल बून प्रदान करै छथि।

''परमारथकेँ कारणे साधुन बना शरीर'' जकाँ पृथ्वी मात्र दोसर लेल अपन अस्तित्वकेँ जीवन्त केने छथि। 'भीक्षा-पात्र शीर्षक कवितामे सुमनजी

नीति मूलक विचारसँ समाजकेँ डबडब करबाक प्रयास कऽ रहल छथि। व्यष्टिसँ समष्टिक निर्माण होइत अछि, बेकतीसँ समाजक निर्माण होइत अछि। समाजक बिना बेक्तीक अस्तित्व क्षीण ठीक ओहिना बेक्तीक बिनु समाजक कल्पनो टा नै कएल जा सकैत अछि। दिवस-रात्रि, नव-पुरातन, सनातन-नूतनता, सुख-दुख ई सभटा जीवन मूलक अवस्था छी, एक बिनु दोसर अस्तित्व विहिन। हिन्दी साहित्यमे अविस्मरणीय कविता स्व. आरसी प्रसाद सिंहक लिखल 'जीवन का झरना' शीर्षक कवितासँ ऐ भिक्षा-पात्रक विषए-वस्तु मिलैत-जुलैत अछि, परंच विश्लेषण विलग अछि।

'जा रहल छी' कविता सुमन जीक कविताक पुष्पवाटिकामे खिलौल एकटा महतपूर्ण कविता अछि। अपन प्राचीन सभ्यता ओ संस्कृतिक महतपूर्ण अध्यायसँ वर्त्तमान अवस्थाक तुलना नीक बुझना जाइत अछि। हमर इतिहास विलक्षण अछि। श्री कृष्ण सत्यक रक्षा लेल पार्थक सारथी बनि गीताक उपदेश देलनि। बेक्तीत्वक मान नै बँचि सकैत अछि जाधरि राष्ट्रमानक भावना जन-जनमे जागृत नै हएत। वर्तमान समाजमे महाराणा प्रताप सन समरपित बेक्तीक अभाव अछि तँए मानसिंह सन मानव अपन कुकर्मक शंखनाद कऽ रहल अछि। बुधि कौशलसँ परिपूर्ण हमर भूमि बुधिहीन भऽ गेल। समाजमे चोरि बजार व्याप्त अछि। कवि ऐसँ हतोत्साहित नै छथि। समाजमे क्रांतिक शंखनाद कऽ अधर्मी तत्व सभकेँ चेता रहल छथि। ऐ कविताकेँ 'योग धर्मक क्रांति गीत' मानल जा सकैत अछि।

१९६८ई.मे यात्रीजी केँ हुनक कविता संग्रह 'पत्रहीन नग्न गाछ'क लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कार देल गेल। ओना 'चित्रा हुनक सभसँ प्रसिद्ध कविता संग्रह मानल जा सकैत जेकर प्रकाशन बहुत पहिने भेल छल। प्रस्तुत संकलनमे यात्री जीक पाँच गोट कविता देल गेल अछि। 'पिता-पुत्र संवाद' कविता पत्रहीन नग्न गाछसँ लेल गेल अछि। कविताक भूमिका गणपति आ श्री शिवक संवादक रूपेँ लेल गेल मुदा परिपेक्ष्य अति गूढ़ संगहि प्रासंगिक। शंकर गजाननसँ कुण्ठा, त्रास आ मृत्युबोधक लीलाक विषएमे पुछै छथि तँ लम्बोदरक उत्तर छन्हि जे स्वयं ऐ परिधिसँ दूर रमणीय स्थानपर बैसल हो ओ केना बूझि सकैत अछि? बेथा वएह बूझत जे स्वयं बेथित भेल हुअए वा वर्तमानमे अछि। माए चुप करेबाक प्रयास करै छथि। यात्रीजी

साम्यवादी विचारधाराकेँ आत्मामे समाहित केने छथि। तँए अधमक बेथाकेँ केतौ ने केतौ नीतिसँ जोड़ि दइ छथि। मैथिली भाषाक संग ई विडंबना रहल अछि जे शब्द विन्यास महिमा मंडित होइत अछि विषए-वस्तु दिस पाठक वा समीक्षक विशेष धियान नै दइ छथि।

यात्रीजीक कविता सबहक शब्द-शब्दमे संत्रास अनायास भेट जाइत अछि। 'भोरे-भोर' कवितामे प्रकृतिक मनोरम रूपक बहाने यात्रीजी शस्य-श्यामला भूमिक महिमाक गुणगान करै छथि। 'भोरे भोर आएल छी धाङि पथारक मोती'क तात्पर्य अछि जे हमर भूमि हरियर अन्नसँ भरल अछि। माघ मास घास, पात, अन्न, साग, तरकारीसँ खेत पथार सजल रहैत अछि।

कविक दृष्टि आदित्यक रश्मिसँ तीक्ष्ण होइत अछि। एकर प्रमाण यात्री जीकेँ 'कंकाले-कंकाल' शीर्षक कवितामे भेटैत अछि। कंकालक आरिमे कवि की कहऽ चाहै छथि एकर विश्लेषण करब साधारण नै। विषए-वस्तुसँ यएह बुझना जाइत अछि जे समाजमे लोक अपन स्वार्थकेँ सिद्ध करैले दोसरक नाश तक कऽ दइ छथि। बाल, वृद्ध, रोगी, निरोग केकरोसँ कोनो श्रद्धा वा दया नै। अपन देश कृषि प्रधान अछि तँए पावस-प्रतीक्षा सभकेँ रहैत अछि। 'सौन' शीर्षक कवितामे कवि पावस ऋतुक आगमन मास सौनक बरखाक संग-संग सलहेस पूजा आ नागपंचमीक वर्णन करै छथि। ई मास प्रणयक विहंगम मास सेहो मानल जाइत अछि। यात्रीजी सन वैरागी सेहो ऐ मासक माधुर्यसँ नै बँचि सकला। राधाक उतापक वहाने स्वयं नन्द किशोर बनि गेलनि। 'सरिता-सर निर्मल जल सोहा' बरखाक पश्चात् शरदक अवाहन कवि यात्री "आब भेल वर्षा" शीर्षक कविताक माध्यमसँ करै छथि। विषए-वस्तु सामान्य मुदा विश्लेषण अंशत: नीक बुझना जाइत अछि। विचारमूलक कविताक रचनामे आरसी प्रसाद सिंहक एकटा अलग स्थान अछि। माटिक दीप, पूजाक फूल, सूर्यमुखी सभटा पोथीमे जीवनक गति वा नियतिक प्रासंगिकता प्रवाहमयी अछि। ऐ संकलनमे 'जीवन' कविताक बिम्ब हुनक हिन्दी साहित्यमे लिखल कविता 'जीवन का झरना' सँ मिलैत अछि। जनम-मृत्यु जीवनक सरिताक दू किनार छी मुदा एकर शक्ति अपराजेय मानल जा सकैत। फूलमे काँट, अन्नमे भुस्सी जीवन सुखक मध्य अवांछित तत्वक वोध कराबैत अछि। दूधकेँ महि कऽ घृत बनौल जाइत, ठीक ओहिना जीवनमे

समग्र तत्वकेँ महि लेबाक चाही। ऐसँ जनम-मृत्युक मध्य वेदनाक अनुभव नै भऽ सकत।

ओ मानव, मानव नै जेकरा मातृभूमिक प्रति श्रद्धा नै हो। राष्ट्रभक्ति शीर्षक बिम्बमे मैथिली साहित्यमे बहुत गीत लिखल गेल अछि मुदा आरसी प्रसाद सिंह रचित 'राष्ट्रगीत'मे मातृभूमिक प्रति श्रद्धाक संग-संग वर्तमान परिस्थितिक अधम दशापर सेहो प्रहार कएल गेल अछि। जखनि कंठसँ ध्वनि नै फूटि सकैत अछि तखनि शंखक कोन प्रयोजन? पुरान लेल भ्रमर अनजान बनि गेल, मनमे संताप आ बाहर गीतक गान भऽ रहल अछि ई बेथाक उद्बोधन कऽ रहल अछि। समाजक विलगित मानसिकतासँ कवि क्षुब्ध छथि।

व्यास जीक कविता स्तरीय होइत अछि मुदा ऐ संकलनमे देल गेल कविताक 'मेहक बड़द जकाँ'क बिम्बमे वैराग्य भावक बोध होइत अछि। वास्तवमे मेहक बड़द अपन कर्मगतिसँ मानव जीवनकेँ तृष्णासँ मुक्ति दैत अछि, परंच अपन कविताक माध्यमसँ व्यासजी कर्मक परिणाम बेथित रूपेँ प्रकट केलनि। भऽ सकैत जीवनक कोनो क्लेशक विवेचन केने होथि मुदा ऐ प्रकारक कवितासँ समाजकेँ की भेटत, ई अवलोकन करबाक योग्य अछि। व्यासजीक दोसर कविता 'मृदु मयंक हंस शिशु'मे छायावादक प्रयोग नीक रूपेँ कएल गेल अछि। किसुन जीक दुनू कविता 'पत्रोतर' आ विश्लेषण मिथिला मिहिरसँ लेल गेल अछि। पत्रोत्तर कवितामे पीड़ा भरल मोनमे पत्र प्राप्तिक पश्चात पसरल उद्धीपनक विवेचन नीक लगैत अछि। रेलक काट माल डिब्बासँ लऽ कऽ अभिमन्युक बलिदान धरिक तुलनामे छोहक अद्भुत स्पर्शन झकझोरि दैत अछि। अमरजी मैथिली साहित्यक क्रांतिवादी कवि छथि। हास्य हो वा विचारमूलक कविता, सभठाॅ हुनक क्रांतिवादी स्वरसँ कविताक विषए-वस्तु ओत-प्रोत रहैत अछि। 'युद्ध-एक समाधान' शीर्षक कवितामे कवि दिनकर जीक 'शक्ति और क्षमा' कविता स्वरूप झलकैत अछि। 'अभियान' कवितामे हिमालयक गुणगानसँ लऽ कऽ योगक बलवंत स्वरूपक विश्लेषणमे कविक विशाल अध्ययनशीलताक झाकी देखैमे अबैत। राजकमलजी मैथिलीक चर्चित रचनाकार छथि। मैथिली हुअए वा हिन्दी राजकमलजी कथाकारक रूपेँ बेसी चर्चित भेल छथि। मैथिलीमे 'स्वरगंधा' कविता संग्रहक संग-संग विविध पत्र पत्रिकामे ५७ गोट कविता सेहो प्रकाशित भेल अछि। प्रयोगकेँ

वादक धरातलपर प्रतिष्ठित करबाक श्रेय मैथिली साहित्यमे हुनके देल जाइत अछि। प्रस्तुत संग्रहमे हुनक चारि गोट कविता देल गेल अछि। 'अर्थतंत्रक चक्रव्यूह'मे कवि की कहए चाहै छथि ई बूझब क्लिष्ट अछि। कोनो रचनाकारकेँ अनुत्तरित प्रश्न छोड़ि कऽ नै जेबाक चाही। ऐसँ पाठकक मध्य भ्रमक स्थिति उत्पन्न भऽ जाइत अछि। 'वासन्ती परकिया विलास' सर्वथा समीचीन कविता मानल जा सकैत अछि। समकालीन मैथिली कवितामे ऐ कविताक स्थान निश्चित रूपेँ स्वर्णिम अछि। प्रकृतिक संग-संग जीवनक दर्शन आ श्रृंगारपर आधारित कवितामे भावक उद्बोधन नीक जकाँ कएल गेल अछि। 'महावन' कविता सेहो नीक लगैत अछि। सत्य आ नैतिकताक बिम्बक मध्य हेराएल स्वपनपर आधारित कवितामे हृदैगत जुआरि प्रदर्षित कएल गेल।

'पति-पत्नी कथा' शीर्षक कविताकेँ सर्वकालीन कविताक श्रेणीमे राखब उचित नै। एकटा महान कविक साधारण रचना ऐ कविताकेँ मानल जा सकैत अछि।

सोमदेव जीक कविता संग्रह 'कालध्वनि' सेहो प्रकाशित भेल अछि। प्रस्तुत संग्रहमे हुनक लिखल चारू कविता खाली आकाश, स्थायी प्रभातक उद्येश्यँ, एकटा अदना सिपाही आ मोह शीर्षक कवितासँ प्रमाणित होइत अछि जे ओ युगान्तरकारी कवि छथि। धीरेन्द्रजी उपन्यासकार छथि मुदा किछु स्फुट कविता आ गीतक रचना सेहो केलनि अछि। 'हैंगरमे टॉगल कोट' हुनक स्फुट कविता अछि जेकर पहिल बेर प्रकाशन मिथिला मिहिरमे भेल। ऐ कवितामे चेतनाक दर्शन स्वरूप नीक मानल जा सकैत। मुदा अन्य तीनू कविता बुल बुल गीत, लक्ष्य हम्मर दूर आ भोरक आशापर कोनो अर्थे समकालीन श्रेष्ठतम कविताक श्रेणीमे नै मानल जा सकैत अछि। बिम्बक रूपकेँ जौं सम्यक् मानल जाए तैयो विवेचन सामान्य लगैत अछि।

मैथिली कवितामे नव कवितावादक प्रणेता मायानंद मिश्र जीकेँ मानल जाइत अछि। हुनक कविता संग्रह 'दिशांतर' १९६५ई.मे प्रकाशित भेल अछि। एकर अतिरिक्त विविध पत्र पत्रिकामे हुनक लिखल कविता आ गीत सेहो प्रकाशित होइत रहल अछि। प्रस्तुत संग्रहमे हुनक लिखल पाँच गोट कविता देल गेल अछि। एकटा नखशिख: एकटा दृश्य, साम्राज्यवाद, मानवता

आ लालटेन ई सभ लघुकविता छी। विषए-वस्तुक संयोजन नीक मुदा विवेचन अस्पष्ट अछि। बिरड़ो छोट मुदा प्रासंगिक कविता लागल।

जीवकांत जीक कविता संसार बड़ विस्तृत अछि मुदा सभटा अतुकांत। हिनका आशुकवि नै मानल जा सकैत। ओना तँ ऐ संकलनमे हिनक चारि गोट कविता देल गेल अछि मुदा मात्र 'पापक भोग' कविताकेँ प्रासंगिक आ समकालीन मैथिली कविताक श्रेणीमे मानल जा सकैत। ई कविता हुनक कविता संग्रह 'नाचू हे पृथ्वी'सँ लेल गेल अछि। 'आकाश पपियाह नै अछि' सँ शून्यवादमे आत्मीयताक दर्शन होइत अछि।

चिन्तनशील कविताक रचनामे कीर्ति नारायण मिश्र जीक नाओं सादर लेल जा सकैत। 'सीमान्त' कविता संग्रहक द्वारा कीर्तिजी प्रयोगवादकेँ राजकमल जीक पश्चात नव रूप देबाक प्रयास केलनि जे अंशतः सफल मानल जाए।

ऐ संकलनमे प्रकाशित हिनक चारू कविताक विषए-वस्तु नीक, विवेचन उपयुक्त आ भाषा सरल अछि। हिनक जनम शोकहारा बरौनीमे भेलनि। वर्तमान बिहारमे औधोगिकीकरणक सभसँ बेसी प्रभाव ऐठाम भेल। अपन प्राचीन रूपक गामक स्थितिक तुलना वर्तमान विकासशील गामसँ करैत 'कतेक बर्खक बाद' कविताक रचना केलनि। हंसराज जीक चारि गोट कविता ऐ संकलनमे देल गेल अछि। पहिल कविता 'गंध' हुनक कालजयी कविता छी, प्रवेशिका स्तरक पूर्ब पाठ्यक्रममे ई सेहो छल। प्रस्तावनामे ऐ कविताकेँ श्रमशील लोकक चामक गंधकेँ ममतासँ जोड़ल गेल मुदा ई प्रश्न उठैए जे श्रमशील लोकक मध्य 'गंध' केतएसँ आएत ओ तँ कर्मसँ वातावरण आ समाजमे सुगंध पसारै छथि। जौं चर्म उद्योगक श्रमजीवीकेँ चामक गंध लागल तँ ओइ चामकेँ मूर्त्त रूप नै देल जा सकैत, जौं कृषककेँ घामक गंध लागल तँ वसुन्धराक कोखि शस्य श्यामला नै भऽ सकत। 'कलंक लिप्सा' कविता सुमधुर आ प्रवाहमयी लागल। चानकेँ साक्षी मानि कऽ लिखल गेल कविता नारीक मान आ पुरुषक स्वाभिमानक विवेचन तथ्यपरक बुझना गेल। 'नारी' शीर्षक कवितामे नारी जीवनक बेथाक मार्मिक चित्रण असहज अछि। साधन विहिन नारीक जीवन चूल्हिक संग प्रारंभ आ इति भऽ जाइत अछि। 'हम तँ' नोरेसँ चिक्कस सनै छी'मे दीनहीन नारीक मनोदशा विवेचन हृदैकेँ

झकझोरि दैत अछि। कुलानंद मिश्र जीक कविता 'स्पष्टीकरण'मे अपन मनोदशाकेँ कवि नुका लेलनि। 'जड़कालाक साँझ' कवितामे बिम्बक मूल्यांकन आ निष्कर्ष प्रासंगिक अछि। मिला-जुला कऽ हुनक तीनू कविताकेँ नीक मानल जा सकैत अछि।

प्रवासी जीकेँ मैथिली साहित्यक निराला मानल जाए तँ कोनो अतिशयोक्ति नै। 'सम्हरि कऽ चलिहेँ' शीर्षक कवितामे जीवनक गतिकेँ नव आयामसँ कवि निर्देशित कऽ रहल छथि। परिवर्तन, वसन्त, अनभुआर तीनू कविता लघुकविताक रूपमे लिखल गेल अछि, परंच बिम्बक परिधिक रूप व्यापक अछि। गंगेश गुंजन, विनोद जी, मंत्रेश्वर झा आ नचिकेता जीक कविता सभमे दृष्टकोणक व्यापक उद्बोधन स्वत: भऽ जाइत तँए ऐ कवि सबहक कवितापर प्रश्नचिन्ह ठाढ़ करब प्रासंगिक नै।

सुकान्त सोम जीक तीनू कविता स्वत: स्फूर्त नै मानल जा सकैत अछि, केतौ-केतौ लागल जे गद्य रूपमे लिखि कऽ पद्यक रूपेँ परिवर्तित कएल गेल।

निष्कर्षत: 'समकालीन मैथिली कविता' नीक कविताक संकलन छी मुदा समए कालक जइ परिधिक निर्धारण कएल गेल अछि ओइमे किछु चर्चित कविता सबहक तिरस्कार कएल गेल। परिस्थिति की छल? ई तँ नै कहल जा सकैत अछि मुदा मैथिली कविता समूहक संग पूर्ण न्याय नै कएल गेल जेकरा कोनो अर्थे उचित नै मानल जाएत। ई उपहासक पात्र बनल कवि-कवयित्रीक उपेक्षा मात्र नै, मैथिली साहित्य आन्दोलनपर वज्रपात छी। संपादकक संग-संग साहित्य अकादेमीक मैथिली विभाग अदूरदर्शिता आ कलुषित मनोवृत्तिसँ साहित्यकेँ कलंकित कऽ देलनि।



३.
चित्राक सनेस

मिथिलाक भूमि पुरातन कालहिंसँ आर्यावर्तक संस्कृतिक आकर्षण केन्द्र रहल अछि। सभ दर्शनक संग-संग साहित्य सरिताक वैभव-विकासमे मिथिलाक योगदान अविस्मरणीय। ऐ भूमिक जनभाषामे ज्योतिरीश्वरसँ लऽ कऽ अद्यतन काल धरि साहित्यकारक भरमारि लागल अछि। ओइ साहित्यकारक ढेरीमे एकटा एहेन साहित्यकार भेल छथि, जनिक नाओं सुनिते हमरा सबहक वास्तविक रूप उपटि कऽ आबि जाइत अछि। ओ छथि- बैधनाथ मिश्र। तरौनी गामक लाल बैधनाथ मिश्र मैथिली साहित्यमे 'यात्री' नाओंसँ प्रसिद्ध भेला। बौद्ध दर्शनसँ प्रभावित रहबाक कारण हिन्दीमे 'नागार्जुन' नाओंसँ रचना करै छला। प्रांरभिक रचना संस्कृतमे केलनि मुदा चौगमा गाम वासी आ मैथिलीक चर्चित महाकाव्य अम्बचरितक सृजनहार पं. सीता राम झाक प्रेरणासँ मैथिलीमे सेहो लिखए लगला। मैथिली साहित्यक हुनक प्रमुख कृति -पारो- मानल जाइत अछि, परंच एक छोट मुदा प्रासंगिक कविता संग्रह 'चित्रा' हुनका कविक रूपेँ हमरा सबहक भाषाक ध्रुवतारा बना देलक।

चित्राक रचना कोनो योजना बना कऽ नै केलनि। सन् १९३१सँ लए कऽ सन् १९४९ई. धरिक लिखल किछु कविताक संकलन ऐ पोथीमे कएल गेल अछि। एक दिस मातृभूमि प्रेम तँ दोसर दिस मैथिलीक दशापर क्षोभ। जीवनक समग्र मूल्यक तात्विक विवेचन। अनियोजित रचना सबहक संकलन बड़ कष्टदायी होइत अछि मुदा ऐमे भाव प्रवाहक अभाव नै बुझना जाइत अछि। माॅ मिथिले शीर्षक कवितामे अपन ठाम, अपन गाम, अपन बुधि आ अपन दर्शनक सरल रूपमे प्रदर्शन कएल गेल। गौतम यज्ञवल्यकसँ लऽ कऽ रमेश्वर महाराजक महिमाक गुण गान। ऐ गुण गानक मूल अछि- अपन संस्कृतिक विश्लेषण। भारती आ मंडन मिश्र लेल कीर दंपतिक उदवोधनमे अपन पहिचान झलकैत अछि। उदयनाचार्य जग्रन्नाथपुरीमे सनातनक पुनरूद्वारक प्रमाणित भेला, ई मिथिलाक विजय छी। विद्यापतिक कविता हमर धरोहरि अछि। अयाची मिश्रक सादा जीवन सेहंतित अछि, तँ शंकरक वालोहं जगदानंद... बाल साहित्यक आ बाल कौशलक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण।

एक दिस 'माँ मिथिले' कवितामे अपन माटिपर स्वाभिमानक दर्शन तँ दोसर दिस 'अंतिम प्रणाम' कवितामे अपन जनम आ कर्मपर क्षोभ। अर्न्तद्वन्द्वक एहेन दशा वा वेदना कविमे किएक उत्पन्न भेल? ऐ कविताक माध्यमसँ कवि जागरण करैले पलाएन करए चाहै छथि। अपन संस्कारमे निहित विषमतासँ अकच्छ कवि झाँपल बेथाकेँ नि:शब्द उघारए चाहै छथि। जेना अवोध अपन माएसँ घरसँ भागि जेबाक धमकी उपरे मोने दैत अछि, ओहिना कविक वेदनामे हृदैगत पलाएन नै अछि। 'कविक स्वप्न' कवितामे कवि समाजक विगलित अर्थहीन बेक्तीगणक कचोटक मार्मिक चित्रण केलनि अछि। मिथिलाक भूमिमे सम्यक् अर्थनीतिक अभाव अछि तँए समाजक परिदृश्यमे भारी अन्तर देखैमे अबैत। ऐ भूमिपर एकसँ बढ़ि कऽ एक महामानव भेला, परंच साधन आ शिक्षाक अभावमे केतेक प्रतिभा मोइनसँ बाहर नै निकलि पबैत अछि-

'तानसेन कतेक रविवर्मा कते
घास छीलथि वाग्मतीक कछेड़मे
कालिदास कतेक विद्यापति कते
छथि हेड़ाएल महिम वारक हेड़मे'

जौं पेट-पांजड़ि अन्न जलक त्रासमे आकुल हुअए तँ शिक्षाक कल्पना निर्मूल प्रमाणित भऽ जाएत, परंच स्वपनोमे आशक दर्शन। कविकेँ समाजमे नव जोश उत्पन्न करबाक प्रेरणा भेटल तँए प्रवासकेँ छोड़ि अपन मिथिला धुरि एबाक निश्चय केलनि। ऐ कविताक रचना काशीमे केलनि मुदा मोन तरौनीमे घुरिया रहल छल। निश्चय जन्मभूमिक दशापर वेदनासँ कविक मोन तपि रहल होइतनि।

'बूढ़ वर' कविताक दर्शन केलापर हास्यपर बेथाक विजय दर्शित होइत अछि। शीर्षकसँ स्पष्ट होइत अछि जे बिआहमे कनियाँ-बरक वएसमे अन्तर अबस्स हएत। कविताक मूलमे जेबा पछाति तँ स्पष्ट भऽ गेल जे बरकेँ वरांठ वा खोरनाठ किछु कहल जाए अनसोहाँत नै लागत। जीवनक अंतिम अवस्थाक बर काँच-कुमारिक वरन् कहलनि। विवाहिता नि:संतान रहि गेली। माएक विरोध नि:सफल भऽ गेल। स्त्रीगणक बेथाकेँ के बूझत? वाप कैंचाक लोभमे बेटीकेँ बेचि लेलनि। मिथिलामे ऐ प्रकारक पाप होइत रहल अछि।

समाजक तथाकथित आगाँक पाँतिमे बैसल जातिक दीन आ कर्तव्यहीन जनमे ई बेवस्था पलेगक रूप धारण केने छल। अंतमे वेटी धरती माएसँ फटैले आग्रह करै छथि।

'विलाप' कविताक विषएमे लिखब कठिन अछि जे एकरा बाल-वियाहक कुकृत्य वा विधवाक विलापमे सँ की मानल जाए? बाल कालक वियाह संस्कारमे आनंदक कोन रूप होइत अछि? दुरागमनमे कनियाँ सिखेलासँ कानै छथि मुदा नोरक अभिप्राय नै बुझै छथि। जखनि नोरक अर्थ बुझबाक वएस भऽ गेलनि तँ वज्रपात? वैद्यव्य जीवनक मार्मिक छंद...।

श्रृंगारसँ पहिने नीति आ वैराग्य, ऐ जीवनक उदेसपर विचार करबाक आवश्यकता अछि। वैद्यव्य जीवन पतिक स्मृतिक संग जीबए चाहै छथि विहुंसलि नायिका मुदा समाजक कुदृष्टिक डर। ऐ कवितामे सेहो उच्च जातिक बेवस्थापर कटाक्ष कएल गेल। विधवा वियाह मिथिला समाजक सवर्ण वर्गमे पूर्णत: वंचित छल, अखनो आंगुरेपर गनल-गुथल होइत अछि। जइ वर्गक लोक शांतिसँ दु:खो नै सहए दैवए चाहै छथि, ओइमे जन्मपर केना गर्व करू? कविकेँ कतिपय बेथा छन्हि ऐ बेवस्थासँ, खिन्न छथि उच्च जातिक अलच्छ सदृश सोचसँ। पुरुषसूक्तमे कर्मक आधारपर जेकरा चण्डाल आ छुद्र सन संज्ञा देल गेल, हुनक सोच अखनि पारदर्शी अछि। ओइ वर्गक कांताकेँ ई अधिकार छन्हि जे कुकर्मी स्वामीसँ कखनो जान छोड़ा कऽ आन मनुखक वरण कऽ सकै छथि मुदा आगाँक पाँतिमे बैसल प्रवुद्ध वर्गक विधवा अवला बनि उज्जर साड़ीमे दुबकल छथि मुदा तैयो वागमती कातक बगुला हुनक चरित्र हनन करैले सदिखन उद्धत छथि। ऐ दशाकेँ देखि एकटा कविक ई उक्ति प्रासंगिक अछि-

आगि भेल शीतल, पानि अदहन भऽ उधिएलै
काँट बनल कोमल आ फूले गड़ि-गड़ि गेलै
ककरासँ करतै तकरार हम जिनगी
धिक-धिक जुआनी धिक्कार हमर जिनगी।

कौशिकीक धार कवितामे कोसी माएक पसारल विनाश लीलासँ भेटल परिणामक पीड़ा मड़ोरि दैत अछि। मुदा ई छी मिथिलाक शोक। 'प्रेयसी' कविता श्रृंगारसँ भरल अछि। प्रेमी द्वारा प्रेमिकाक प्रति समरपित संबोधन

नीक लागल। ऐ सिनेहमे प्रेमी प्रेमिकाकेँ अपन शक्ति मानै छथि। सिनेहक मूल रूपक वर्णन, केतौ रूपक चर्च नै। प्रेमी अपन प्रेमीकाकेँ तपवति छथि मुदा ओ अपन निर्णएसँ नै विलग भेली। ऐ समर्पणसँ प्रेमी सिनेहक जुआरि पानि फुटि गेल-

अपन इच्छापर तोहर आशाक कैलियहु होम
तों बनलि रहलि सदए सखि मोम

'फेकनी' कविताक नायिका फेकनी कंजूस महिला छथि। कैंचा बँचा-बँचा कऽ अपन संतति लेल राखब छन्हि हुनक इच्छा। दूध बेचि कऽ टका जमा करै छथि, ओहो दूधमे पानि मिला कऽ तँए पानि जकाँ दिवस बितै छन्हि। कोनो धर्म-कर्म नै, कवि ऐसँ छुब्ध छथि। ऐ प्रकारक घटना हमरा सबहक गाम-घर होइत अछि। पेट काटि कऽ जेकरा लेल संयोजन करै छथि, ओ ओइ धनकेँ की करता? सहज अछि-

पूत कपूत तँ किएक धन जोहब
पूत सपूत तँ किए धन जोहब।

'लखिमा' कविता मिथिला नरेश राजा शिव सिंहक अर्द्धांगिनी लखिमा रानीक प्रति समरपित अछि। महाकवि विद्यापतिक श्रृंगार रसक सिद्धिमे लखिमा जीक बेक्तीत्व आ सुन्दरताक पैघ भूमिका छल। ओना विद्यापतिक चरित्रपर संदेह करब कविक दृष्टिकोण नै अछि मुदा हुनक श्रृंगारक नायिका लखिमा रानी छेली। महाकविक रचनासँ स्पष्ट होइत अछि जे लखिमाक सौन्दर्य तेतेक विलक्षण छल जे हुनक रचनाकेँ अमरत्व प्रदान कऽ देलक। विद्यापतिक नयनमे लखिमा अबस्स छेली, परंच ओ कर्तव्यवंधसँ बान्हल छला। हुनक मनमे विरति छेलनि।

'उड़ान' शीर्षक कविता कल्पनापर आधारित अछि। सहज अछि जे कल्पनाशील बेकतीकेँ कर्मसँ बेसी ऐपर बिसवास होइत छै। वास्तविक जीवनमे कर्मक जेतेक महत हो मुदा कल्पनाक उड़ान विलगित मानवकेँ आनंदक शिखरपर पहुँचा दैत अछि। कल्पना कहियो धोखा नै दैत अछि, ऐमे केकरोसँ आश नै होइत अछि। स्वप्नक भारकेँ कियो नै डिगा सकैत छै।

'गामक चट्टी' कविता प्रवासमे रहनिहार एकटा गरीवक नाओं लिखल हुनक कनियाँ बेथाक किछु पाँती छी।

गाममे अपन नेनाक संग रहैत दीनक दाराकेँ की-की सहए पड़ैत अछि, एकर मार्मिक वर्णन कएल गेल अछि। जौं हाथमे किछु कैंचा नै हुअए तैयो गाम एबाक निवेदन बेथित कनियाँक हृदैगत कचोट बुझना गेल। चारू कातसँ समस्यासँ घेरल नारी अपन पतिसँ खाली हाथ गाम धुरि अबैले कहै छथि। जीवन डोरिकेँ पकड़ि कऽ राखब कठिन भऽ गेलनि। सम्यक् अर्थनीतिक उद्घोषण यात्री जीक ऐ कवितामे देखैमे आएल। अपन सनेशकेँ कखनो उधारि, कखनो झाँपि यात्रीजी असमान समाजक अस्तित्वकेँ ललकारि रहल छथि। दीनक नेना पितृक दर्शन लेल आकुल छथि, ओ तँ नेना छथि मुदा माए किए बजाबए चाहै छथि अपन स्वामीकेँ। कविक ऐ भावकेँ स्पष्ट करब आजुक लोकसँ संभव नै बुझना जाइत अछि।

ठीठर मामा कविता गाममे सभ दिन रहएबला ठीठर पाठकक पटना प्रवासक स्थितिपर लिखल गेल अछि। भगजोगिनीक दर्शन करैबला लोककेँ हजार वोल्टक इजोतमे उजगुजाहटक अनुभव होइत अइ। ऐ कविताक प्रसंग साधारण अछि आ भाषामे प्रवाहक अभाव बुझना गेल। ओना ठीठर मामा यात्री सन स्थापित कविक कृति तँए साहित्यिक प्रतिष्ठा केँ प्राप्त कऽ लेलक मुदा जौं कोनो अदना कविक कृति रहितए तँ एकर कोनो विशेष महत्व नै होइतए।

'परमिटक साड़ी' चारि अना वेहरी दऽ कऽ तीन टकामे परमिटसँ कनियाँ काकी लेल आनल साड़ीपर आधारित अछि। गाम-घरमे बेहरी दऽ कऽ समान खरीदबाक परम्परा प्राचीन अछि। ऐ कथाकेँ यात्रीजी कोन उद्धेश्यसँ लिखलनि नै स्पष्ट भेल। देश कालक दशापर सामान्य प्रस्तुति। कृतिका नक्षत्रमे, हिमगिरिक उत्संगमे, भए गेल प्रभात आ ताड़क गाछ शीर्षक कविता सभ प्रकृति वर्णनक छोट छाया प्रस्तुति करैत अछि। ई चारूटा कवितामे कविक उदेस हुनक शब्दसँ नै प्रकट भऽ सकल। छंद समायोजन नीक लागल मुदा दोसर, कविता सभसँ तारतम्य नै बुझना जाइत अछि। 'द्वन्द्व' कविताक शब्द-शब्दमे परिताप दर्शित भेल। किंकर्तव्य विमूढ़ छथि कवि, गाममे रहथि की प्रवासमे? गाममे विपन्नता मुदा सिनेहक आवरण अछि। मोरंग वा आन ठामक प्रवासमे कैंचा-कौड़ी तँ अछि मुदा परिवार समाजक सिनेह नै। पावनि तिहारक जे आनंद गाममे भेटैत अछि, ओ शहरमे संभव नै।

एकठाँ गामक जीवनसँ कविक मोन गुजगुजा गेलनि। गामक छोट लोक (साधन विहिन) पलाएन कऽ रहल अछि, तँए सामाजिक बेवस्थामे अन्तर आबि गेल। यात्री जीक अर्न्तमन समाजक बदलैत स्वरूपसँ संतुष्ट अछि, किएक तँ हुनक साम्यवादमे समाजवादक ज्योति प्रखर भेल अछि।

'ऋृतु संधि' शीर्षक प्रकृति वर्णनसँ जोड़ल अछि मुदा ऐमे अर्थनीतिक मर्म झाँपल अछि। ग्रीष्मक तात्पर्य दीन मुदा उद्वेलित दीन, वर्षाक अर्थ नव जीवनक बिसवास। दीनमे साधनक अभाव परंच हुनक श्रद्धा उद्वेलित अछि। ऐ कवितामे महाकवि पंतक छाया वादक झलकि देखैमे अबैत अछि।

जौं यात्री जीक पद्य सागरक सुवासित सरिता चित्राकेँ मानल जाए तँ ऐमे सभसँ पैघ योगदान 'वंदना' कविताक देल जाएत। 'वंदना' कविताक शीर्षक मात्र माध्यम छी हुनक जन जनक बेथाकेँ नग्न करैले । मिथिलाक समग्र जीवन दर्शनकेँ ऐ कवितामे कवि मंचस्थ कऽ देलनि। नेपथ्यमे किछु नै रहि गेल। अनुलोम-विलोम, आशक्त-घृणा सभटा उपटि कऽ बाहर कऽ देलनि। मिथिला वर्णनपर बहुत रास कविताक रचना भेल अछि। परंच बेसी किछु विशेष वर्गकेँ महिमामंडित कएलक। उपेक्षितकेँ सम्मान देबाक हिनक शैली आबैबला वास्तविक मैथिल संस्कृतिक रक्षक लेल कोसक पाथर प्रमाणित हएत। मिथिलाक माटि-पानिमे रहनिहार, संस्कृतिकेँ आत्मसात केनिहार सभटा मैथिल छथि। मैथिलीमे एतेक सम्यक् सोच रखएबला केतेक लोक छथि? मैथिली भाषीक चर्च होइते मैथिल ब्रह्मण आ मैथिल कर्ण कायस्थक नाओं उमरि जाइत अछि मुदा अन्य वर्ग की मैथिल नै? जौं दोसर भाषाक लोक मात्र उपर्युक्त दुनू जाति लेल ऐ भाषाक वाचकक प्रयोग करै छथि, तँ दुनू किएक नै विरोध करै छथि? ओना ऐ वर्गक किछु लोक विस्तृत सोचक छथि मुदा ओ सेहो ऐ प्रश्नपर चुप भऽ जाइ छथिन? यात्री जीक आत्मा निश्चित रूपसँ ऐ कविता रचना करए काल काँपि गेल हेतनि। ऐ सनेशकेँ जौं सभ गोटे आत्मसात कऽ ली तँ मैथिलीक परिदृश्य अबस्स बदलि जाएत। आर्य, द्रविड़, आंग्ल, इस्लाम आ पारसी सभ परिवारक सभटा भाषामे मात्र मैथिलीपर जातिवादी स्वरूपक कलंक लागल अछि।

'चित्रा' संग्रहक विशेष पक्ष अछि- एकर सम्पूर्णता। आंचलिक रचनाकेँ मैथिली साहित्यमे प्राथमिकता देल गेल अछि। ऐ भ्रमकेँ यात्रीजी 'गॉधी' शीर्षक कविता लिखि कऽ तोड़ि देलनि। गाँधी मात्र एक बेक्तीक नाओं नै 'भारतीय दर्शन' छी। ऐ दर्शनमे कोनो विभेद नै, सबहक लेल स्थान ऐ दर्शनक मूल संस्कार छी। विडंम्बना अछि जे समाजमे दिव्य ज्योति जगबैबलाक अंत निर्मम होइत छन्हि। ईसा-मसीह आ सुकराते जकाँ गाँधी मर्म स्पर्शी रूपेँ विलोकित भेला। राजा भर्तृहरिक 'वैराग्य शतक' जकाँ यात्री जीक रचनामे क्षोभक अवलोकन कएल जा सकैत अछि। 'आसिन मासक राति इजोरिया कहैमे तँ ज्योतिक प्रतीक छी मुदा बुढ़वा पीपरक ठुट्ठपर बैसल नील कंठक त्राससँ भरल जीवनमे ऐ ज्योतिक कोन अर्थ? फागुनक इजोरिया टहाटही हो वा युग धर्म सभ ठाम विगलित असार जीवन रसकेँ छंदसँ यात्रीजी पसारि देलनि। जेठक दुपहरियामे कालक प्रहारकेँ देखएबाक सार्थक प्रयास कएल गेल।

''देश दशाष्टक'' भ्रष्टाचारपर लिखल यात्री जीक अश्रुकण छी। यात्री जीक यौवन परतंत्र भारतमे बीतल मुदा स्वतंत्रताक दू बर्ख बाद ऐ कविताक रचना केलनि। जे आश अप्पन लोकसँ कहल गेल ओइ आशक पूर्णतामे संदेह देखएबाक यात्रीजी प्रयास केलनि।

परम सत्यकेँ चित्राक सतोगुण कहल जा सकैत अछि। स्वामी विवेकानंदक शून्यवादी सोच सदृश यात्रीजी जहानक अस्तित्वपर प्रश्नचिन्ह लग एबाक प्रयास केलनि। प्रारंभमे वैराग्यक अनुभूति मुदा शनै: शनै बिसवासक सोतीमे डुबकी लगाबए लगलनि। यएह छी गृहस्थ धर्म। मनुख विपतिमे संसारकेँ मायागृह बुझैत अछि, परंच मोहक तांडवसँ कियो नै बँचि सकैत। अंतमे बिसवासक संग ऐ कविताक दुरागमन कएल गेल।

अंतिम पद्य एकटा पाछाँक पछातिमे विचरण करैवाली नारीक कर्मगाथा छी-

'गोट-बिछनी'। नारी पुनरूत्थानपर भाषण खूब देल जाइत अछि मुदा अज्ञ, दीन, साधन विहिन, शोषित आ समाजक धारसँ बाढ़िक खाधि जकाँ कटलि नारीक बेथा लग कियो नै जा सकल।

अंशु

'चित्रा' कविता संग्रह चित्रा नक्षत्रक तीत पानि जकाँ चिन्तन करबाक योग्य अछि। रचनाकारक जीवन चरित्र जौं सम्यक् हो तँ रचनाक विषए-वस्तु समाज लेल दर्शन भऽ जाइत अछि। समग्र जीवन संघर्षक पांजड़िमे बितेबाक कारण यात्रीजी कर्म आ धर्मक हृदैमे घुसि गेल छथि। चित्रासँ स्पष्ट दर्शन भेल जे यात्रीजी मानवधर्मी छथि। छन्नेमे कचोट आ क्षणहिमे क्रान्तिक जुआरि, आवेग आ अतृप्तिक छोभ रहितो विहानक बिसवास तृण-तृणकेँ सिहरा दैत अछि। ऐ रचनाकेँ जौं आत्मसात कऽ लेल जाए तँ वैदेहीक मिथिलामे पुर्नस्तित्व सुधारससँ ओत-प्रोत भऽ सकैत अछि।

शेष- अशेष...

❍❍❍

पोथीक नाओं- चित्रा

रचनाकार- श्री यात्री

प्रकाशक- अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद प्रयाग

रचना बर्ख- १९४९

४.

भफाइत चाहक जिनगी- समीक्षा

सम्पूर्ण मैथिली भाषामे आधुनिक नाटक विधाक प्रारंभ पंडित जीवन झा कृत नाटक 'सुन्दर संयोग'सँ सन् १९०४ ई. मे भेल। ऐसँ पूर्ब मैथिलीमे उमापति, रामदास, नन्दीपति आदि सेहो नाटकक रचना केलनि, मुदा ओ सभ पूर्ण मैथिलीमे नै लिखल गेल।

सुन्दर संयोगसँ लऽ कऽ श्री नचिकेता रचित 'नो एन्ट्री मा प्रविश', श्रीमति विभारानी कृत 'भाग रौ आ बलचंदा' आ श्री जगदीश प्रसाद मण्डल कृत 'मिथिलाक बेटी' धरि मैथिली साहित्यमे विविध विधाक नाटकक ढेर रास संग्रह उपलब्ध अछि। ओइ समग्र नाटकक मध्य किछु नाटक बड़ लोकप्रिय भेल अछि ओइमे श्री ईशनाथ झा रचित 'चीनीक लड्डू', पंडित गोविन्द झा लिखित 'बसात', श्री मणिपद्म रचित ''झुमकी'', श्री ललन ठाकुर लिखित 'लौंगिया मिरचाई', प्रो. राधा कृष्ण चौधरी लिखित 'राज्याभिषेक', श्री सुरेन्द्र प्रसाद सिन्हा रचित 'वीरचक्र', श्री विन्देश्वरी मण्डल रचित 'क्षमादान', श्री उत्तमलाल मण्डल रचित 'इजोत' आ श्री गौरीकान्त चौधरी 'कांत' (मुखिया जी) रचित 'वरदान'क संग-संग सुधांशु शेखर चौधरी रचित 'भफाइत चाहक जिनगी' प्रमुख अछि।

स्व. सुधांशुजी मूलत: मैथिली साहित्यक उपन्यासकारक रूपमे प्रसिद्ध छथि। अर्थनीतिकेँ आधार बना कऽ लिखबाक शैलीक कारण मैथिलीमे हिनक एकटा अलग स्थान अछि, एकटा कलाकार जौं अपन कलाक प्रदर्शन नाट्य रूपमे करए तँ कोनो अजगुत नै।

भफाइत चाहक जिनगीमे ओ समाजक सामान्य बिम्बकेँ विलक्षण रूपसँ बिम्बित कऽ हास्य आ मर्मक सम्यक् तारतम्य स्थापित केलनि। चाहक जिनगी केतेक क्षणक होइत अछि, भाफ उपटलासँ एकर अस्तित्व लुप्त भऽ जाइत, मुदा जौं भनसियामे आत्म बिसवास हुअए तँ ओइ अस्तित्व विहिन चाहमे नीर-क्षीर मिश्रित कऽ ओकरा फेरसँ सुस्वादु बनौल जा सकैत अछि। नाटकक नायक महेशक जिनगी भफाइत चाहक जिनगी जकाँ अछि। एकटा सुशिक्षित बेकती कर्मक प्रतिस्पर्धाक गतिमे सफल नै भेलापर समाजक अधला

मानल गेल कर्मकेँ अपन जीवनक डोरि बना कऽ तेतेक आत्मबलसँ जीवैत अछि जे दीर्घसूत्री दृष्टिकोणक लोक सेहो ओकरा लग नतमस्तक भऽ गेल।

नाटकक कथा चेतना समिति पटनाक कार्यक्रमक मध्य घुरैत अछि। महेश चाहक स्थायी विक्रेता छथि, मुदा अधिक बिक्रीक आशक संग मिथिला-मैथिलीसँ सिनेहक दुआरे त्रिदिवसीय कार्यक्रममे अपन दोकान लगौलनि। हुनक दोकानक पांजड़िमे गेना जीक पानक दोकान, मात्र मैथिलीक पावनि धरि लेल। सम्पूर्ण नाटक ऐ दू दोकानक दृश्यमे बिम्बित अछि। चेतना समितिक कार्यक्रमक प्रदर्शन मात्र नेपथ्यसँ कएल गेल।

महेश-गेनाक शीत बसंतक बसातक संयोग जकाँ वार्तालापक क्रममे कार्यक्रमक कार्यकर्त्ता गोपालक प्रवेश होइए। हिनक उदेस चाह पीबाक संग कार्यक्रममे चाह पहुँचएबाक सेहो अछि। पान मंचपर अबस्स चाही, किएक तँ ई मैथिल संस्कृतिक प्रतीक अछि। गोपालक संग दिगम्बरक गप-सप्पमे अनसोहाँत कटाक्ष शैलीक विवेचन नीक बुझना जाइत अछि। अध्ययन सम्पन्न कऽ लेलाक पश्चात् दिगम्बर जीकेँ नौकरी नै भेटलनि। पटनामे ओ दस दुआरि बनि पेट पोसि रहल छथि परंच महेशक चाह बेचबासँ ओ संतुष्ट नै, हुनका गामक महेश चाहक दोकान खोलि गामक नाक कटा रहल अछि। वाह-रे मैथिल! भीख मांगि कऽ खाएब नीक, ठकि कऽ जीअब नीक मुदा छोट कर्म नै करब। महेश तँ चाह बेच कऽ अपन परिवारक प्रतिपाल करै छथि, दू गोट बारह बर्खक नेनाकेँ रोजगार देने छथि। ओना संविधान १४ बर्खसँ कम वएसक नेनाकेँ श्रमजीवी बनेबाक विरोध करैत अछि। ऐ लेल दण्डक बेवस्था सेहो छै, मुदा अखनि धरि ऐ उदेसकेँ मूर्त रूप पूर्णतः नै भेटल अछि, जेकर मुख्य कारण आर्यावर्तमे भुखमरीकेँ मानल जाए। दिगम्बर जीकेँ अपन यायावरी जीवन नीक लगै छन्हि। मुँहगर जे स्वयं अकर्मण्य हुअए ओ गोंग कर्मक पुरुषकेँ दूसए तँ की कहल जाए? महेश चुप्प नै रहला, अपन कर्मक गतिक आड़िमे दिगम्बरकेँ सत्यसँ परिचए करा देलनि। ओना ई दोसर गप जे महेशो अपन पितासँ असत्य बजने छथि। हुनक पिताकेँ ई बूझल छन्हि जे महेश पटनामे नौकरी करैत अछि। महेश मिथ्या बजलनि मात्र अपन पिताक मानसिक संतुष्टि लेल, किएक तँ पुरना सोचक

लोक अपन ठोप-चाननेटा पर बिसवास करै छथि, बरू भुक्खे मरि जाएब मुदा विजातीय ओछ कर्म नै करब।

नाटकक दोसर प्रमुख पात्र छथि उमानाथ आ चन्द्रमा, एकटा अकाश आ दोसर धरित्री। उमानाथ अभियंता छथि, नाओं टा लेल मैथिल, कार्यक्रम देखैले नै अएला, मात्र अपन संगी सभसँ भेंट करबाक दुआरे चेतना समितिक दर्शक दीर्घामे अशोकर्य लऽ कऽ पैसला। अपन कनियाँ चन्द्रमाटा सँ मैथिलीमे गप करै छथि। की मजाल केयो दोसर हुनका संग मैथिलीमे गप करबाक दु:साहस करए, ओकरा अपन सामर्थ्य देखा देता। दुनू परानी चाह पीबाक क्रममे महेशक दोकानपर अबै छथि, चाह बनल नै कि उमानाथ जीकेँ कोनो संगीपर नजरि पड़ि गेलनि। कनियाँकेँ महेशक दोकानपर छोड़ि ठामे पड़ा गेला। यथाक्रममे मंचसँ महेश जीकेँ कविता पाठ करबाक आग्रह आएल। चन्द्रमा जीकेँ बिनु दामे दोकानक ओगरबाहि दऽ ओ मंचस्थ भऽ गेला। चन्द्रमा अजगुतमे पड़ि गेली, चाहक विक्रेता आ कवि? कालक लीला विचित्र लगलनि। दोकानपर गाहकि सभ आबए लगल, चन्द्रमा भावावेशमे पड़ि चाह बनाबए लगली। गंगानाथ आ दयानंद सन गाहकिकेँ चाह विक्रेता कवि पचि नै रहल छल। समितिक मंच हुनका लोकनिक मंच, तँए गनहा गेल। हरिकान्त जीकेँ आधुनिक रूपक कार्यक्रम नीक नै लागि रहल छन्हि तँ शिवानंदकेँ पुरातन संस्कृतिसँ कोनो मोह वा छोह नै। ऐ मध्य उमानाथजी चन्द्रमाकेँ तकैत दोकानपर एला। अपन कनियाँकेँ चाह बनबैत देखिते माहुर भऽ गेलथि। छोड़बाक जिद्द केलनि मुदा मैथिल नारी अपन उतरदायित्वसँ केना भटकि सकैत अछि? एक खीरा तीन फाँक! बिगड़ि कऽ फेर पड़ा गेला। मोने-मोन महेशपर अगिनवान बरिसबै छेलथि। चन्द्रमा सेहो संकटक अवाहनसँ सशंकित, मुदा की करती? एक दिस भाव आ दोसर दिस कर्त्तव्य बोध, ''आँखिक तीरक बीख पानि नोर बनि झहड़ल हृदए झमान भेल।''

कथाक अंतिम वनिता सरिताक कंठ चाह लेल सुखए लगल, तँए अपन नोकर आ छोट नेनाक संग महेशक दोकानपर अबै छथि। कविकाठी महेश कविता पाठ कऽ फेर अपन जीवनकेँ गुनि रहल छथि। सरिताकेँ देखिते स्वयंमे नुकएबाक असहज प्रयास करए लगला। वएह सरिता जे कहियो महेशक सहपाठिनी छेली, आब एकटा आइ.ए.एस. अधिकारीक

अर्द्धांगिनी छथि। सरिता महेशसँ साक्षात्कार करबाक प्रयास कऽ रहलीहें। महेश अपन भूतकालकेँ झाँपए चाहै छथि मुदा सरिता घोघट कालक बर जकाँ ओकरा उघारि रहल छेली। हुनक उदेस सिनेहिल अछि तँए महेश टूटि गेला। सरिता अश्रुधारसँ सिचिंत, जेकर नोट्स पढ़ि अध्ययन पथपर बढ़ैत रहली ओ एहेन दशामे पहुँच गेल। चन्द्रमा सरिताक मोहमे विचरण करए लगली। ऐ मर्मस्पर्शी क्षणक अंत भेल नै कि उमानाथ आबि महेशक गट्टा पकड़ि वास्तविक जीवनक दर्शन कराबए लगला। चन्द्रमा ऐ क्षण महेशक संग दऽ रहल छेली।

मैथिली साहित्य लेल सभसँ विलग नूतन विषए-वस्तुक मार्मिक विश्लेषणमे शेखर जीक अतुल्य प्रतिभाक झलक अनमोल अछि। पूर्ण रूपसँ एकरा नाटक नै कहल जा सकैत, किएक तँ ई दीर्घ एकांकीक रूपमे लिखल गेल अछि। कथाक चित्रण मात्र दू दोकानक परिधिमे भेल अछि तँए दृश्य समायोजनमे कोनो प्रकारक विघ्नक स्थिति नै, सरिपौं एकरा शेखरजी नाटकक रूपमे प्रदर्शित केलनि। महेश सन चरित्र हमरा सबहक समाजमे छथि, मुदा कर्त्तव्यबोधक एहेन पुरुष जौं मिथिलामे सभठाम होथि तँ हम सभ साधन विहीन रहितो सम्यक् जीवनक रचना कऽ सकै छी। चन्द्रमा सन दीर्घसोची नारीक विवरणमे वास्तविकतासँ बेसी कल्पनाक आभास होइत अछि। नाटकक आत्मकथ्यमे शेखर जीक आत्मबिसवाससँ बेसी अहंकारक दर्शन भेल। 'नाटकक क्षेत्रमे हमर किछु मोजर अछि' सन उक्तिक संग बटुक भाय आ गजेन्द्र नारायण चौधरीक प्रति कृतज्ञता ज्ञापनमे महिमा मण्डनक भान शेखर जीक संस्कारपर भारी बुझना जाइत। कियो केकरो प्रेरणासँ रचनाकार नै भऽ सकैत अछि, ई तँ नैसर्गिक प्रतिभाक परिणाम छी। मुदा ऐसँ 'भफाइत चाहक जिनगी'क मर्यादाकेँ क्षीण नै बूझल जा सकैत अछि। मात्र छोट-छोट ३९ पृष्ठक नाटक (ओहूमे सँ आठ पृष्ठ विषए-वस्तुसँ बाहरक) मैथिली साहित्य लेल मरूभूमिमे नीरक सदृश बनल दृष्टिकोणकेँ परिलक्षित करैत अछि। ऐ प्रकारक बिम्बक सृजन शेखरजी सन माँजल रचनाकारेसँ संभव भऽ सकैत। निष्कर्षत: मिथिलाक संस्कृतिक मध्य कर्म प्रधान युगक आचमनिसँ नाटक ओत-प्रोत अछि। मात्र साहित्यक नै, मंचन लेल सेहो ई नाटक पूर्णत: उपयुक्त लागल।



नाटक- भफाइत चाहक जिनगी
रचनाकार- पं. सुधांशु शेखर चौधरी
प्रथम संस्करण- नवम्वर १९७५

५.

मौलाइल गाछक फूल (समीक्षा)

कोनो भाषा साहित्यक विकासमे उपन्यासक एकटा अलग महत होइत अछि। औपन्यासिक कृतिकेँ जौं साहित्यक चक्षु द्वय कहल जाए तँ कोनो अतिशयोक्ति नै होएत। मैथिली साहित्यमे उपन्यास सभक भंडार बड़ विस्तृत अछि। ऐ प्रांजल साहित्यिक कृतिमे किछु कोसक पाथर सन रचना भेल जे आर्यावर्त्तक भाषाक गुच्छमे मैथिलीक स्थानकेँ सुवासित कऽ रहल अछि। सर्वकालीन मैथिली साहित्यक इतिहासमे सम्मिलित ओ सभ उपन्यास अछि- पंडित जन सीदन कृत शशिकला, प्रो. हरिमोहन झा रचित कन्यादान ओ द्विरागमन, योगानन्द झा रचित भलमानुष, श्री यात्री कृत पारो, डॉ. मणिपद्म कृति नैका बनिजारा, श्री सोमदेव कृत चानोदाइ, श्री सुधांशु शेखर चौधरी कृत दरिद्र छिम्मड़ि, श्रीमती लिली रे कृत पटाक्षेप, श्री रमानंद रेणु कृत दूध-फूल, डॉ. शेफालिका वर्मा कृत नागफांस, धूमकेतु रचित मोड़ पर, च्तुरानन मिश्र रचित कला, श्री साकेतानंद कृत सर्वस्वांत, श्री ललित कृत पृथ्वीपुत्र, श्रीमती गौरी मिश्र कृत चिनगी, श्री केदारनाथ चौधरी कृत माहूर आ श्री गजेन्द्र ठाकुर कृत सहस्रबाढ़नि।

निश्चित रूपें ऐ सभ उपन्याससँ मैथिली साहित्यकेँ नव दशा ओ दिशा भेटल, परंच एकर अतिरिक्त सेहो किछु कृति अछि जेकर चर्च करब बिना मैथिली उपन्यास विधाकेँ अपूर्ण मानल जाएत। ओइ कृतिमे सँ एक अछि श्री जगदीश प्रसाद मण्डल द्वारा लिखित उपन्यास- 'मौलाइल गाछक फूल'

शीर्षकसँ बुझना गेल जे प्रकृति वर्णनपर आधारित उपन्यास अछि मुदा अध्ययनक पश्चात् समाजक मौलाइल स्वरूपक वर्णन आ पुनरूत्थानक सकारात्मक स्वरूपक आधारपर ऐ उपन्यासक रचना भेल अछि। जौं मालीमे चेतना ओ अनुशीलन हो तँ मौलाइल गाछमे सेहो पुष्प खिलौल जा सकैत अछि, ठीक ओहिना समाजमे एकरूपता, सामंजस्य ओ अनुग्रह हो तँ विगलित मिथिलाक स्वरूपमे हरियरी आबि सकैत अछि।

मैथिल समाजक पहिल लोकसँ लऽ कऽ अंतिम लोकक बेथा वा सुखद अनुभूतिकेँ रेखांकित कऽ रहल अछि- ''मौलाइल गाछक फूल'' ऐ

उपन्यासकेँ सम्पूर्ण उपन्यास ऐ दुआरे मानल जा सकैत अछि जे ऐमे समाजक नकारात्मक स्वरूपपर सकारात्मक सिद्धान्तक विजय देखौल गेल अछि।

सत्यक विजय तँ वेस ठाँ होइत अछि मुदा ऐमे असत्यक हृदए परिवर्त्तनक भऽ कऽ सत्यक जनम होइत अछि। समाजक सभसँ अंतिम बेक्तीक दशा ओकरे शब्दमे लिखल गेल, भाषा सम्पादन आ परिमार्जनक आड़िमे कोनो परिवर्तन नै। सम्पूर्ण जीवन दर्शनमे नायकत्व, कियो खलनायक नै। वास्तविक रूपे की एना संभव अछि? अबस्स भऽ सकैत, जौं हम सभ स्वयंमे सम्यक् सोच आ दृष्टिकोणकेँ स्थापित करी।

कथाक विषए-वस्तु कोनो एकटा कथापर केन्द्रित नै भऽ कऽ बहुत रास उपकथाकेँ सहेजि कऽ बनौल गेल अछि। कथाक प्रारंभ अकालक परिणामसँ होइत अछि। गरीब मजूर अनुपक पुत्र बौएलाल भुक्खक कारण मृत्युक अवाहन कऽ रहल अछि। माए रधिया अपन लोटा बेचि कऽ ओकर तृप्ति लेल चिक्कस कीनि कऽ अनैत अछि। तीनटा रोटी बनल मुदा बौएलालक भाग्यमे मात्र एकटा रोटी आ दू लोटा पानि। श्रमजीवीक मार्मिक दशापर लिखल पहिल भागमे संवभत: रधिया अर्न्तमनसँ अनूपसँ कहै छथि-

की बुझवें ककरा कहै छै गरीवी,

सपनहुँमे सुख नै जेतए श्रमजीवी,

सूर्यास्तक पश्चात दू क्षण लेल कुहेस अबैत अछि, फेर उषाक दर्शन अवश्यंभावी, यएह तँ प्रकृतिक लीला अछि। नथुआ अनूपक अन्हार कूपमे इजोतक सूक्ष्म बाती लऽ कऽ अबैत अछि। रमाकान्तजी पोखरि खुनौता तँए मजूरक आवश्यकता अछि। अनूपकेँ सपरिवार काज भेट गेलनि। मेट मूसनाक वरदहस्त जे छल। मालिकक मुंशीकेँ मेट कहल जाइत अछि। मूल रूपसँ दलालक प्रवृतिबला मूसन अनुप लेल प्राणदायक अछि। किएक तँ दुनू परानीक संग-संग बारह बर्खक बौएलालकेँ सेहो काज दऽ देलक। बौएलाल सेहो पूर्ण तन्मय भऽ कऽ कएलक, तेकर परिणाम भेल जे रमाकान्तजी आन जोनसँ बेसी मजदूरी बौएलालकेँ देलनि। कर्मक गति विचित्र होइत अछि। उपन्यासकार बाल श्रमिककेँ महिमा मंडित कऽ रहल छथि। हमरा सबहक संविधानमे १४ बर्खसँ कम उमेरक बेकतीकेँ 'बाल' कहल जाइत अछि- मजदूरी प्रतिबंधित। मुदा ओ भुक्खे मरि जाए एकर कोनो परिवाहि नै।

टेलीविजनमे नाच पाँच बर्खक बच्चा कऽ सकै छथि, एकरा प्रतिभाक प्रदर्शन मानल जाइत अछि मुदा १२ बर्खक बौएलाल मात्र मौलाइल गाछक मजदूर छी, वास्तविक जीवनमे पकड़ल जाएत तँ दीन हीन पिताकेँ जेहल भेटल। 'समरथकेँ नै दोष गोसाईं। रमाकान्त जीक प्रतापसँ अपन कर्मक प्रकृतिसँ अनूपक गरीवी समाप्त भऽ गेल। बौएलाल काजक संग-संग शिक्षा सेहो ग्रहण करए लगल। बौएलालक जीवनमे विहान जे आएल ओ उपन्यासक अंत धरि जगमगाइते रहल। अंतमे रमाकान्त जीक जेठ बालक डॉ. महेन्द्रक सहकर्मी भऽ गेला बौएलाल। बौएलालसँ डॉ. बौएलाल- सभटा कर्मक प्रभाव।

कथाक दोसर मोड़पर शशिशेखरक जीवन विहानसँ तिमिरमे प्रवेश करैत अछि। कृषि वैज्ञानिक बनाबाक बाटेपर सभटा समाप्त भऽ गेल। माता-पिताक बिमारीमे सभटा चौपट्ट भऽ गेलनि। अधखरू शिक्षा बड़ कष्टदायी होइत अछि। आत्मगलानिक शिकार शशिशेखरक भाग्य सेहो फूजल। एकटा विधवा अपन जमीनसँ विद्यालय खोलबाक योजना बनायलि। गामक संभ्रान्तसँ लऽ कऽ गरीव गुरबाक समर्थन। शशिशेखर शिक्षक भऽ गेला।

उपन्यासक तेसर खण्डमे सुगियाक शारीरिक बेथाक आरम्भक संग-संग पति सोने लालक समर्थन हृदैकेँ झकझोरि दैत अछि। येन-केन प्रकारेण सोनेलाल सुगियाक इलाज करा कऽ गाम घुरला। सुगिया स्वस्थ भेली, चिकित्साक प्रभावसँ मुदा कबुलाक प्रभाव मानि सोनेलाल कीर्त्तनक संग-संग भंडारक आयोजन केलनि। हमरा सबहक समाजमे अंध बिसवासक चमौकनि अपन जालसँ सोचकेँ घेर नेने अछि। कीर्त्तनक दू दल आगाँक जातिक रमापतिक दल आ वेस पछा छी संग-संग किछु सवर्ण साधुक मिश्रित दल- गंगादासक दल। उधेश्य एक मुदा दृष्टिकोण अलग-अलग। रमापतिक दल गरीब सोनेलालसँ दक्षिणा लेलनि, दयाक कोनो संभावना नै। गंगादासक दल दक्षिणा तँ लेलनि मुदा मात्र सिद्धान्तक रूपमे। वास्तवमे लऽ कऽ घुरा देलनि। आत्म सम्मानक भावक संग-संग गंगादासमे दया-भाव सेहो अछि। आब स्वत: बूझल जा सकैत अछि जे सवर्ण ककरा कही?

चारिम खण्डक प्रारंभ रमाकान्त जीक अपन पत्नी श्यामा आ नोकर जुगेसरक संग मद्रास प्रवाससँ होइत अछि। केतए गाम आ केतए मद्रासक जिनगी। एक दिस जगमगाइत रोशनी, साफ सड़क आ गगनचुम्बी महल तँ

दोसर दिस दू कुहेसक वाट। मुदा वास्तविकता किछु आओर छल। पुतोहू-पुत्र डॉ मुदा भविसमे किछु नै भेटबाक संभावना देखि रमाकान्तक हिया सुखा रहल छेलनि। बेटा-पुतोहूसँ तँ खूब सम्मान आ सत्कार भेटलनि मुदा पाँचटा पोता-पोतीमे सँ कियो चिन्हवो नै केलनि। जे जीवितमे नै जनैत अछि ओकरासँ जीवनक अंतिम अवस्थामे की आश करी? पड़ाइन्वादक पराकाष्ठा धरि लऽ जाएब उपन्यासकारक सोचसँ निश्चित रूपे अजगुत लगैत अछि। मिथिलाक भविस केतए धरि जाएत जगदीश जीक संजय सन दृष्टि आश्चर्यजनक मुदा प्रासंगिक अछि। छोटकी पुतोहू सुजाताक जीवनक गाथा सुनि रमाकान्तजी पसिझ गेला। एकटा धोविनक तनयासँ छोटका बेटाक बिआह भेल दूटा संतान सेहो भऽ गेल मुदा रमाकान्तजी अपन पुतोहूक इतिहास नै जनै छला। साम्यवादी सोचक उन्नायक रमाकान्त जीसँ एना संभव तँ मानल जा सकैत अछि मुदा ओ अपन बेटाक बिआहमे शामिल किएक नै भेला। पड़ाइनक एहेन फल मैथिलक समृद्ध वर्गकेँ केना भेट सकैत अछि? गाममे दू सए बीघा जमीनक मालिक रमाकान्त जीक दुनू लाल किएक नै गाममे अस्पताल खोललनि। जखनि मद्रासक संभ्रान्त मिथिलामे नै अबै छथि तँ हम सभ किए पड़ाइन करै छी? विपन्नक पड़ाइन तँ बूझएमे अबैत अछि परंच सम्पन्नक पड़ाइन...?

ऐ उपन्यासक सभसँ पैघ विशेषता जे उपन्यासकार कोनो प्रकारक प्रश्नकेँ छोड़ि रचनाक इतिश्री नै केलनि। प्रश्नक संग-संग विश्लेषण आ समाधान पोथीमे अनायास भेट जाएत। कथाक अंतमे पड़ाइनवादक इतिश्री कहल गेल। डॉ. महेन्द्र आ डॉ. सुजाता गामक गरीव गुरबाक इलाज लेल तत्पर भेली। कोनो बेकतीकेँ असाध्य रोग यथा कैंसर, एड्स नै। ऐसँ प्रमाणित होइत अछि जे गाममे रहनिहारक जीवन संतुलित अछि। वीमार छथि तेकर कारण पोषण संतुलित नै। श्रमजीवी आ श्रमपोषीक मध्यक खाधिक कारण ई दशा अछि। रमाकान्तजी ऐ दशासँ तीजि-भीजि गेला। क्षणहिमे अपन सभटा जमीन जाल गरीवक मध्य वॉटि देलनि। गरीबो आत्म सम्मानी आ वफादार। खेतसँ उपजल अन्न, तीमन तरकारी प्रथमत: रमाकान्त जीकेँ दइ छथि। सम्यक् समाजक रचना, कियो सवर्ण नै कियो क्षुद्र नै। सबल मिथिला, संवल मिथिलाक कल्याणकारी सोच मनोरम अछि।

हीरानन्द सन सम्यक् सोचबला सवर्ण जौं समाजमे आगाँ बढ़ति तँ मिथिलाक रूप रेखा बदलि जाएत। हीरानंदक जातिक उल्लेख तँ नै कएल गेल अछि मुदा लिखबाक कलासँ स्पष्ट होइत अछि ओ निश्चित रूपेँ आगाँक जातिक छथि। अनुपक घरमे भोजन ग्रहण काल सबरी-रामक सिनेहक स्पष्ट दर्शन। जीवन दर्शनपर आधारित ऐ उपन्यासमे केतौ जातिक उल्लेख नै मुदा लक्षणसँ स्पष्टीकरण होइत अछि। सुबुधिक विवेकशीलतामे रचनाकारक दृष्टिकोण पारदर्शी लागल। बुझना जाइत अछि जे जगदीशजी सुबुधक रूपेँ उपन्यासमे पैसल छथि। उपन्यासमे एकठॉ वर्ग संधर्षक स्थिति देखऽ मे आएल मुदा एकटा अवला अपन चरित्रक रक्षा लेल पियक्करपर प्रहार केलनि। ई सभ वास्तविकता अछि एकरा अनसोहॉत नै मानल जा सकैत अछि।

विषए-वस्तुक मध्य झाँपल दशापर बेवाक प्रस्तुति। ओना तँ सभटा रचनाकार अपनाकेँ साम्यवादी आ समाजवादी मानै छथि। मुदा रचनाक संग-संग सबहक जीवनक दर्शन केलापर स्थिति विपरीत भऽ सकै छथि। मैथिली साहित्यक सम्यक् चरित्र, सम्यक् दृष्टि आ सम्यक् जीवन शैलीमे जीबऽ बला किछुए मात्र साहित्यकारक समूहमे जगदीश जीकेँ सेहो राखल जा सकैत अछि। अपन बेक्तीत्वसँ जीवनक नूतन आयामकेँ समाजमे ज्योतिक रूपमे पसारब मात्र रचनामे नै, बेक्तिगत जीवनो मे अवश्ये हएत। भऽ सकैत अछि वर्तमान पिरही ऐ ग्रन्थक तादात्मयकेँ पूर्णत: स्वीकार नै करए, परंच हमरा बुझने ई सम्पूर्ण पाठकक उपन्यास छी। ऐमे केकरोसँ कोनो पूर्वाग्रह नै। सम्भ्रान्त समाजकेँ विगलित आ ओछ समाजसँ जोड़ि सम्यक् समाजक निर्माण करबाक उद्येश्यमे ''सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु:खभाग भवेत्'क दृष्टि परिलक्षित होइत अछि। केतौ-केतौ शब्द आ वाक्य सामंजस्यमे किछु त्रुटि सेहो देखऽ मे आएल मुदा भाव पवित्र, उद्येश्य पवित्र तँए एकरा नजरअंदाज करब प्रासंगिक लागल। निश्चित रूपेँ सर्वश्रेष्ठ मैथिली उपन्यासक सूचीमे ऐ उपन्यासक नाओं देल सकैत अछि।



पोथीक नाओं- मौलाइल गाछक फूल

विधा- उपन्यास

रचनाकार- जगदीश प्रसाद मण्डल

प्रकाशक- श्रुति प्रकाशन राजेन्द्र नगर दिल्ली

मूल्य- २५० टका मात्र

प्रकाशन बर्ख- सन् २००९

पोथी पाप्तिक स्थान- पल्लवी डिस्ट्रीब्यूटर्स, वार्ड न.६, निर्मली, सुपौल,

मोबाइल न. ९५७२४५०४०५

६.

अर्चिस समीक्षा-

वर्तमान मैथिलीक कविताकेँ तरूण कवि आ कवयित्रीक पदार्पणसँ नव गति भेट रहल अछि। ऐ नवतुरिया मुदा विषए-वस्तुक दृष्टिकोणसँ सजल रचना सबहक रचनाकारक वर्गमे एकटा मैथिलीक प्रवासी कवयित्री छथि- श्रीमति ज्योति सुनीत चौधरी। ''अर्चिस'' ज्योति जीक प्रथम संकलित कविता संग्रह छी। ऐ पोथीमे ३७ गोट कविता संग्रहित अछि। ज्योतिजी केतेक दिनसँ रचना करै छथि, ई तँ नै बूझल अछि मुदा विदेहक पदार्पणक किछुए अंकसँ हिनक रचना प्रकाशित हुअ लगल।

अर्चिसक अर्थ तत्सममे अग्नि आ तद्भवमे आगि, अनल आदि मानल जाइत अछि मुदा मैथिलीमे आगि, अंगोर आ लुत्ती सेहो कहल जा सकैत। जौं व्यापक भावात्मक दृष्टिसँ देखल जाए तँ अर्चिस माने ज्योति बा इजोत। मैथिली साहित्यमे कवयित्री वर्गक नवल उत्सर्ग तँए ''अर्चिस'' नाओं सर्वथा न्यायोचित। भऽ सकैत जे अपन नाओंसँ समभाव स्थापित करैले कवयित्री एकर चयन केने होथि। ऐ पोथीक शीर्षक मात्र कवयित्रीक भावनापर आधारित अछि, कविताक भावसँ ऐ शीर्षकक कोनो सम्बन्ध नै। पहिल कविता ''हाइकू'' प्रकृति वर्णन, श्रृंगार, विचार मूल आ विरहक मिश्रित चित्रांकन करैत। हाइकू पहिने मैथिलीमे क्षणिका नाओंसँ लिखल जाइ छल, मुदा ज्योतिजी एकर वास्तविक रूपक चित्रण केलनि अछि। सम्पूर्ण कवितामे अन्तर्द्वन्द्व आ प्रसन्नताक भीड़क मध्य बेथा-टीशक अंतरंग हृदैक प्रवाहमयी प्रस्तुति... मनोरम लागल।

एकटा हेराएल सखीमे कवयित्री कविताक नायिकाकेँ अपन सखी मानि ओकरा सिनेहीसँ भेटल पीड़ाक उद्बोधन कऽ रहल छथि। नारी मोनमे अश्रु उच्छ् वासक संग-संग समर्पण सेहो रहैत अछि। ओना तँ आर्य ग्रन्थमे ''त्रिया चरित्र: पुरुषस्य भाग्यम् देवो न जानाति कुतो मनुख:'' लिखल गेल अछि, मुदा एकरा हम उचित नै मानै छी। आर्यावर्तक नारीक मोन विह्वल आ भावुक होइत अछि तँए भावनात्मक छलक शिकार शीघ्र भऽ जेबाक संभावना देखल जा सकैत। पुरुष प्रधान समाजमे दोष नारीपर देल जाइत अछि मुदा पुरुषक

चरित्रहीनताक नाओं की देल जाए? जीवन भरि एक पुरुषक प्रति समर्पणकेँ केन्द्र बिन्दु बना कऽ कवयित्री दुखित छथि, अपन सखीक निश्छल समर्पणसँ। ई कविता सदेह ३ मे कल्पना शरणक रचनाक रूपमे प्रकाशित भेल अछि। नै जानि बेर-बेर नाओं बदलि कऽ लिखबाक परम्परा कहिया धरि चलत। छद्म नाओंक निर्णए एक बेरमे कऽ लेबाक चाही, नै तँ रचनाकारक विलगित मानसिकताक बोध होइत अछि।

वर्तमान महिला वर्गमे नौकरी करबाक इच्छा शक्ति प्रबल भऽ रहल अछि। स्वभाविके अछि, जीवनक दोसर पहिया तँ नारी छथि। सृजन आ सृष्टिक रूपमे पहिल पहिया सेहो कहि सकै छी। परंच युवा महिला वर्गक प्रवृत्ति चंचल होइत अछि। ऐ अल्हड़पनमे अपन कर्मगतिकेँ सेहो चंचल बनेबाक प्रयास कऽ रहल छथि कवयित्री अपन कविता ''एकरा नौकरी चाही'' मे। कार्यालयक सभटा काज हिनके मोनक हेबाक चाही। काज कम मुदा कैंचा बेसी चाहै छथि। बाँसकेँ आन्हर आ बहीर हेबाक कामनामे हास्यक दर्शन होइत अछि। भऽ सकैत अछि हिनक एहेन दृष्टिकोण मात्र कवितेटा मे हुअए।

''पनिभरनी'' कविता पढ़ि हमर माथ सुन्न भऽ गेल, अकचका गेलौं। जइ नारीक बालकाल जमशेदपुरमे बीतल हुअए, आब लंदनमे रहै छथि हुनकासँ एहेन शब्दक आश केना कएल जा सकैत अछि? गामोमे आब घैल आ इनारक रूप मृतप्राय भऽ गेल अछि। एकटा गरीब अबला पनिभरनीक प्रति आसक्तिसँ कविता ओत-प्रोत अछि। विषए-वस्तु आ दृष्टिकोणक समंजन खूब नीक लागल। अपन जातिक प्रति सिनेहक मर्मस्पर्शी चित्रण, भऽ सकैत अछि जे ऐ प्रकारक बेवस्थाक वर्णन अपन परिवारक बूढ़-पुरानसँ ज्योतिजी सुनने हेती।

दीपमे ज्योति पसारबाक शक्ति होइत अछि मुदा तरमे तँ अन्हार रहैत। स्वाभाविक अछि जे जहानमे आनंद देबामे सक्षम होइत ओकर अपन जीवन बेथित भऽ जाइत अछि। ऐ प्रकारक दर्शन भेल ''शीतल बसात'' कवितामे। वृक्ष दोसरकेँ शीतलता दैत अछि परंच ओकर पात माटिपर खसिते अस्तित्व विहिन भऽ जाइत अछि। पतझड़िक बाद वसन्त, फेर पतझड़ि संगहि रौद क्षणहिमे छाह, ई तँ प्रकृतिक लीला अछि। मिथिलाक भूखण्डमे

आमक गाछी बूढ़ पुरानक संग-संग बाल बोध लेल गरमीक पिकनिकक केन्द्र होइत अछि। भोज कोनो छप्पन प्रकारक भोज्य पदार्थक नै, टिकुला आ झक्काक भोज। गरमी छुट्टीमे गामक प्रवासक ज्योति जीक अनुभव नीक बुझना जाइत अछि।

''एकटा भीजल बगरा'' कविता पढ़ि हिन्दी साहित्यक महान कवयित्री महादेवी वर्मा जीक लिखल ''गिल्लू'' कथा मोन पड़ि गेल। ओइ कथामे वर्माजी एकटा लुक्खीक पीड़ाक वर्णन करैत ओकरा आत्मसात कऽ लइ छथि, तहिना ज्योतिजी एकटा चिड़ैक प्रति सिनेहक जे भाव देखा रहल छथि ओ ''सर्वे भवन्तु सुखिन:'' सिद्धान्तक द्योतक बुझना गेल। ''हम एकटा मध्य वर्गक बालक'' बाल साहित्यपर आधारित कविता अछि। बाल मनोविज्ञानक संग एकरा बाल गृहविज्ञान सेहो मानल जा सकैत अछि, मुदा ऐ कवितामे प्रवाहक अभाव देखैमे आएल। शब्दकेँ तुकांत बनेबाक क्रममे मूल भावक प्रति अनाकर्षण देखैमे आबि रहल अछि। ''टाइम मशीन'' कवितामे आर्य भूमिक दृष्टिकोण आ पाश्चात्य देशक बेवस्थासँ तुलना नीक लागल। विलासिताक प्रति हमरा सबहक समर्पण परतंत्रताक रूपमे परिणत भेल आ हम सभ सगरो क्षेत्रमे पंगु भऽ गेलौं। मिठगर रौद, पहिल फुहार आ बरसातक दृश्य कवितामे प्रकृति वर्णन सामान्य रूपसँ कएल गेल अछि। ऐ प्रकारक कवितासँ हमर साहित्य ओत-प्रोत अछि। ऐ प्रसंगमे किछु नव नै देखैमे आएल। जीवन सोपानमे जीवनक क्रमिक गतिक छंदसँ भरल प्रस्तुति सेहंतित अछि। ''प्रतीक्षासँ परिणाम धरि'' जीवन-दर्शनपर आधारित ज्योति जीक सोहनगरक कविता अछि। हमरा बुझने ई कविता ऐ पोथीक सभसँ विलक्षण अध्याय छी। श्रीमद्भगवतगीता आ शेष महाभारतक आधारपर कृष्ण चरितक वर्णनसँ कवयित्रीकेँ सिद्धहस्त मानल जा सकैत। द्वापरसँ कलिमे प्रवेश निश्चित रूपेँ कवयित्रीक विस्तृत अध्ययन आ अनुशीलनक छाया देखा रहल अछि।

''इन्टरनेट स्वयंवर'' बिआहक नव रूपक चित्रण कऽ रहल अछि। वैदिक कालमे आठ प्रकारक पाणिग्रहण बेवस्था छल। वर्तमान समैमे इंटरनेट चैटिंगसँ बिआह करबाक प्रणालीमे ठक बेवस्था अछि तँए कवयित्री जेकरा बिनु देखने प्रेम करबाक नाटक केलनि ओ पुरुष नै स्त्री अछि। क्षितिजक साक्षात दर्शनमे प्रवाहक पयोधि गतिशील अछि मुदा रचनामे तारतम्यक अभाव

देखि रहल छी। हिम आवरित आ मेघाच्छादित सन शब्द तँ नियोजित अछि मुदा जखनि हमरा सबहक भाषामे शब्द विन्यासक अभाव नै तखनि एहेन तद्भवक चयन करब नीक नै लागि रहल अछि। जौं ऐ कवितामे देसिल बयनाक मूल शब्दक प्रयोग करितथि तँ कविताक रूप बेसी नीक भऽ जेबाक संभावना छल।

महावतक हाथी, विद्या धन, बर्फ ओढ़ने वातावरण आ गामक सूर्यास्त कविता तँ नीक अछि मुदा एकर बिम्ब कोनो नव नै, सभटा वएह पुरना कविक रचना सबहक रूप देखैमे आएल मुदा दृष्टिकोण हिनक अपन अछि, केकरो रचनाक नकल नै केने छथि। विशाल समुद्रमे जलोधिक छोट मुदा प्रासंगिक प्रस्तुति नीक लागल। आधुनिक जीवन दर्शनमे कविताक बिम्ब तँ नीक लागल मुदा विवेचन पक्ष दुर्बल बुझना गेल। मनुख आ ओकर भावनामे जीवनक वर्तमान रूपक अन्वेषण उद्धेश्यपूर्ण अछि। हम्मर गाम कवितामे गामक जिनगीक जीत दर्शनीय अछि। विकासमे मूल प्रकृतिक रूपकेँ वैज्ञानिक दृष्टिसँ परिवर्तनक प्रयाससँ निकलैत परिणामक वर्णन कएल गेल अछि। बालश्रम वर्तमान समाजमे घृणित रूप लऽ नेने अछि। साधनक अभावमे हम सभ नेनाक शैशव कालकेँ बिसरि अबोधपर मानसिक आ शारीरिक अत्याचार करै छी। मिथिलामे बाढ़िक परिणाम आ प्रलयक रूप मेघक उत्पात आ बरखा तूँ कहिया जेबैं कवितामे देखि रहल छी। ''ईशक अराधना'' शीर्षक कवितामे कर्म शक्तिक आवाहन कएल गेल अछि। ऐ कविताक बिम्ब नीक, प्रवाह कलकल आ भाषा सरल अछि। ऐ प्रकारक शब्द विन्यासक मैथिलीमे आवश्यकता अछि। ''खरहाक भोज'' शीर्षक कवितामे आन जीवसँ मनुखक तुलना नीक लागल। बौद्धिक रूपसँ विकसित मानवकेँ कर्म आ धैर्यपर बिसवास रखबाक चाही, आन जीवक जीवन-उद्धेश्य भोजन मात्र होइत अछि। कल्पना तखने साकार भऽ सकैत अछि जखनि शिक्षाक विकास हएत, ऐ प्रकारक दृष्टिकोण लोककेँ समृद्धि दऽ सकैत अछि। कोसीक प्रकोप कविताक बिम्ब वर्तमान कालक एकटा पैघ समस्याकेँ उद्धृत कऽ रहल अछि। ''असल राज आ पतझड़क आगमन''

कविताक विषए-वस्तु सामान्य मुदा नीक लागल। वृद्धक अभिलाषामे प्राकृतिक संतुलनकँ धियानमे रखि नव पिरही लेल सृजनशीलताक क्रममे वृक्षारोपणपर बल देल गेल अछि।

“टेम्स धारमे नौका विहार” कवयित्रीक वास्तविक जीवन रेखाक बिन्दु लंदनसँ अपन ठामक तुलनापर आधारित अछि। टेम्सक धारमे नौका विहार करैवालीकँ अपन चनहा केना मोन पड़ि गेलनि, निश्चय आन ठामक नीक बेवस्था देखि हमरा सभकँ अपन पिछड़ल दशापर मर्म होइत अछि। केतौ-केतौ किछु दुर्बल बिन्दु रहला पछातिओ ऐ संग्रहकँ खूब नीक मानल जा सकैत अछि। कवयित्री कखनो द्वापर युगमे चलि जाइ छथि तँ कखनो चैटिंग बिआहक अनुसंधानक आधुनिक युगमे। समग्र कविता संग्रहमे किछु स्थानकँ छोड़ि विषए-वस्तुक चयन नीक लागल। वर्तमान युगक नवतुरिया पिरहीसँ एतेक आश नै छल। निश्चय ज्योतिजी धैनवादक पात्र छथि।

❍❍❍

पोथीक नाओं- अर्चिस
रचयिता- श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरी
दाम- १५० टाका
प्रकाशक- श्रुति प्रकाशन
प्रकाशन बर्ख- २००९

७.

समीक्षा- विभारानीक नाटक "बलचन्दा"

श्रीमति विभा रानी मैथिली साहित्यक चर्चित लेखिका छथि। श्रुति प्रकाशनसँ प्रकाशित हुनक नाटक द्वय भाग रौ आ बलचन्दा पढ़लौं। भाग रौ बड़ नीक लागल, परंच बलचन्दा पढ़िते हृदएमे नव वेदना पसरि गेल आ समीक्षा लिखबाक दु:साहस कऽ देलौं। विभारानी मैथिली साहित्यक पहिल महिला मौलिक नाटककार छथि।

वास्तवमे बलचन्दा नाटक नै छोट पोथीमे मात्र २० पृष्ठक एकांकी छी। सभसँ पैघ गप जे विभाजी वर्तमान सामाजिक जीवनक सभसँ पैघ समस्याकेँ अपन लेखनीक विषए बनौलनि। कन्या भ्रुण हत्या वर्तमान समाजमे विकट रूप लऽ रहल अछि। प्राय: नाटकमे पुरुष प्रधान पात्रकेँ नायक कहल जाइत अछि, परंच ऐठाँ रोहितक भूमिका खलनायकक अछि। विजातीय समाजक एक शिक्षितसँ क्षणक आवेगमे प्रेम केलनि। बिआह सेहो भऽ गेल। मुदा ओइ स्त्रीकेँ की भेटल? अभियन्ताक शिक्षा ग्रहण केलाक पश्चात् गृहिणी बनि कऽ रहि गेली। पुरुष प्रधान समाज तैयो पाछाँ नै छोड़लक। प्रथम संतान बालक हेबाक चाही। आश्चर्यक गप ई जे ऐ प्रकारक आदेश सासु द्वारा देल गेल। एक नारी द्वारा दोसर नारीसँ आबएबला नारीक नाश करबाक कुटिल आज्ञा ऐ एकांकीक मूल विषए-वस्तु अछि। खलनायक चुप्प छथि, किएक तँ ओ मातृभक्त। तखनि दोसर माएकेँ संतति हंता किए बनाबए चाहै छथि। जीवन भरि संग देबाक शपथक की भेल? जखनि निर्वाह करबाक सामर्थ्य नै छल तँ आन जातिक कन्याकेँ संगिनी किए बनौलनि? रोहितक प्रेम-सिनेह नै वरन् वासना मात्र छल।

स्त्रीकेँ भोग्या बना कऽ राखब ओइ परिवारक मूल संकल्प। ओइ लोकनिकेँ सोचबाक चाही जे आब ओ दिन बीति गेल, नारी लक्ष्मी तँ चंडी सेहो छथि। रोहितक स्त्री गर्भपातक प्रबल विरोध केलनि। प्रतिज्ञा कऽ लेली जे अबैबला तनयाक प्रतिपाल स्वयं करब।

ऐ एकांकीक भाषा सरल आ सुन्दर अछि। विषए-वस्तुक सम्पादन सुन्दर आ आकर्षक। मैथिल संस्कृतिक व्यापक प्रदर्शन। जय-जय भैरविसँ

प्रारंभ आ समदौनसँ इति श्री। नारी बेथाक मर्मस्पर्शी चित्रणक संग जाति बेवस्थापर मैथिली साहित्य लेल ई नाटक नै एकटा आन्दोलन कहल जा सकैत अछि। संस्कृतिक रक्षा लेल आ सामाजिक संतुलन हेतु साहित्यिक आन्दोलन, विभा जीकेँ नमन..।



पोथीक नाओं- भाग रौ आ बलचन्दा लेखिका- विभा रानी
दाम- १००रू.
प्रकाशक- श्रुति प्रकाशन, दिल्ली।
पोथी प्राप्तिक स्थान: Pallavi Distributors
मोबाइल- ९५७२४५०४०५Ward no- ६, Nirmali (Supaul)

८.

समीक्षा- मैथिली चित्रकथा

आठ बर्ख पहिने 'मैथिली' भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे शामिल कएल गेल। कतिपय हर्षित भेलौं जे हमरो भाखाकेँ वैधानिक अस्तित्व देल गेल। मोने-मोन ओइ सभ गोटेक प्रति कृतज्ञता आ मंगल कामना करै छेलौं जनिक प्रयाससँ ई काज भेल। मुदा! एकटा कचोट अर्न्तमनकेँ हिलकोरि रहल छल जे आगाँ की हएत? अपन भाखाक भविस नीक नै देखि रहल छी।

ऐ बेथाक सभसँ पैघ कारण अछि हमरा सबहक भाषा साहित्यकमे कोनो क्रांतिक आश नै नजरि आबि रहल अछि। वर्तमान पीढ़ी मातृभाषासँ दूर भऽ रहल छथि। अगिला पीढ़ीक गप की कहू? केतेक नेनाकेँ ओलती, चिनुआर, थान, छान-पग्घाक अर्थ बूझल छन्हि? जौं कोनो अभिभावकसँ पुछै छी जे नेनासँ अपन वयनामे गप किए नै करै छी तँ जवाब भेटैत अछि जे स्कूल जाएत तँ हिन्दी आ अंग्रेजी नै बूझत तँए अखनेसँ सिखा रहल छी। नेनोमे चेतना नै किएक तँ बाल-साहित्य मैथिलीमे लिखले नै गेल। जौं किछु अछि तँ ओकर अर्थ केतेक नेना बुझै छथि। महान लेखक वा कविक श्रेष्ठ भाषामे लिखल रचना हम नै बुझै छी तँ हमर धिया-पुता केना बूझतथि? ऐ मध्य मैथिलीमे विदेह-सदेहक पदार्पण भेल। नव रूप, नवल सोच आ सकारात्मक दृष्टिकोणक संग। मौलिक बिन्दुपर रचना हुअ लगल। उपेक्षितकेँ नव आश भेटल। साहित्य आन्दोलनक एकटा परिणामक चर्च हम पाठकसँ कऽ रहल छी- गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा- श्रुति प्रकाशन दिल्ली द्वारा (विदेहक सौजन्यसँ) सन् २००८मे बहराएल। ऐ पोथीक लेखिका छथि श्रीमती प्रीति ठाकुर। हिनक दोसर रचना मैथिली चित्रकथा छी जे २००९ ई. मे आएल। विषए पूर्णत: नव, बाल साहित्यक चित्रकथा। हम ऐसँ पूर्ब ऐ विषएक पोथी मैथिलीमे नै देखने छेलौं। एकरा रचना नै कहल जा सकैत, किएक तँ ऐमे कोनो साहित्यक सृजन नै, लोक कथा आ जन-श्रुति जे मिथिलामे पहिनेसँ सुनल जा रहल छल ओकरा चित्रक संग चर्च कएल गेल अछि। ऐ प्रकारक जन श्रुति गाम-गाममे बूढ़-पुरानक मुँहसँ बाजल जाइ छल

मुदा आब विलीन भऽ रहल अछि। ओइ विलुप्त विषएपर चित्रकथा लिखि प्रीतिजी बड़ड नीक काज केलनि। ऐ पोथीमे जे विशेष आ नव सकारात्मक पक्ष देखलौं ओ अछि- विषएक आ कथाक चयन। सम्पूर्ण मिथिला ऐमे समाएल छथि। सभ जाति समाजक लोक-कथाक चित्रण कएल गेल अछि। मोती दाइ कथामे रजक जातिक निष्ठाक चित्रण तँ राजा सलहेसमे दूधवंशीक भावनाक व्याख्या। मिथिला दरवारक वोधि-कायस्थक गंगा लाभ मनोरम लागल। बहुरा गोधिन आ नटुआ दलाल बेगूसरायक लोक कथा छी। पहिने लोकक मानसिकता छल जे बेगूसरायक लोक मैथिली भाषी नै छथि। हमरो मर्म होइत छल किएक तँ हमर मातृक बेगूसरैए जिलामे अछि। ऐ कथाकँ पढ़ि तिरहुतिया आ दछिनाहाक भेद हियासँ मेटा गेल।

हमरा सबहक समाजक एकटा उपेक्षित जाति छथि- मुसहर। मुसहरोमे दूटा आदर्श पुरुष भेल छला दीना आ भद्री। ओइ दीना भद्रीक कथा बड़ड नीक लागल। पहिने बुझै छेलौं जे तपस्वी बनैले वौद्धिकता आ भौतिकता पैघ मापदंड छी मुदा आब ई भ्रम दूर भऽ गेल। ऐ प्रकारे बहुत रास कथाक चित्रण कएल गेल अछि।

एकबेर आदरणीय जगदीश प्रसाद मण्डल आ बेचन ठाकुर जीक रचना पढ़ि हम लिखने छेलौं जे 'विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन' मैथिलीपर लागल जातिवादी कलंककेँ धो देलक। जौं ई गप सत्य अछि तँ ओइमे ऐ पोथीक भूमिकाकेँ नै नजरि अंदाज कऽ सकै छी। वर्तमान पीढ़ी लेल प्रेरणादायी आ अगिला पीढ़ीकेँ मैथिलीक प्रति सिनेह जगबैले ई पोथी प्रासंगिक अछि। भाषा संपादन नीक लागल। चित्रक स्तर बड़ सुन्नर आ व्यापक अछि। श्रुति प्रकाशन सेहो धैनवादक पात्र छथि। नीक कागतक प्रयोग केलनि आ चित्रक रंग संयोजन सेहो सेहंतित लागल।

अंतमे हम प्रीति जीकेँ धैनवाद दैत छियनि जे हमरा सबहक बीच एकटा झाँपल विषएपर लेखनीक प्रयोग केलनि। आगाँ सेहो हम आशा करैत धैनवाद ज्ञापन करै छी।

❍❍❍

पोथीक नाओं- मैथिली चित्रकथा

प्रकाशन बर्ख- २००९
लेखिका- प्रीति ठाकुर
प्रकाशक- श्रुति प्रकाशन, राजेन्द्र नगर- दिल्ली।
दाम- १००टाका मात्र
पोथी प्राप्ति स्थान- पल्लवी डिस्ट्रीब्यूटर्स वार्ड न. ६ निर्मली, सुपौल,
मोबाइल न. ०९५७२४५०४०५

१.
किस्त-किस्त जीवन-शेफालिका वर्मा-(समीक्षा)

साहित्य समाजक दर्पण होइत अछि आ साहित्यकार ओइ दर्पणक शिल्पी। शिल्प जेतेक विलक्षण हएत छाया तेतेक साफ। कोनो साहित्यक अध्ययनसँ रचनाकारक मनोवृत्ति स्पष्ट होइत अछि। मैथिली साहित्यक संग ई विडंवना रहल जे ऐमे बाल साहित्य, अर्थनीति आ आत्मकथाक विरल लेखन भेल। मात्र किछु साहित्यकार ऐ विधामे अपन लेखनीक प्रयोग केलनि। ओइ विरल साहित्यकारक गुच्छमे एकटा नाओं अछि- डॉ. शेफालिका वर्मा।

शेफालिका जीक रचना सभमे पारदर्शिता रहल ओ जे हृदैसँ सोचै छथि ओकरा अपन कृतिमे उतारि दइ छथि। हुनक रचना सभमे अर्न्तमनक ध्वनि स्पष्ट सुनल जा सकैत अछि। केतौ अर्न्तद्वन्द्व नै, केतौ पूर्वाग्रह नै। हुनक किछु कृति- विप्रलब्धा, अर्थयुग, स्मृति रेखा, यायावरी आ भावांजलि पढ़ला पछाति हुनक जीवनक वास्तविक रूपक दर्शन कएल जा सकैत अछि। अपन रचना सभकेँ एकसूत्रमे सहेजि कऽ अपन आत्मकथा लिखलनि ‘‘किस्त-किस्त जीवन’’ अप्रत्याशित मुदा, प्रासंगिक नाओं। जीवनक केतेक रूप होइत अछि, बाल, वयस्क, प्रौढ़... सुख-दुख, काम निष्काम यएह छी ऐ रचनाक सार। अपन करूणामयी जीवनक बून-बूनकेँ ऑंजुरमे एकत्रित कऽ आत्मकथा लिखलनि।

आमुखसँ स्पष्ट होइत अछि जे ओ नित डायरी लिखै छथि तँए अपन किस्त-किस्तक अनुभवकेँ बटोरि लेलनि। बाल-कालक गणित विषएक समस्या हो वा संगीत शिक्षक पंडित वाजपेयी जीक बेवहारक मूक विश्लेषण सभ बिन्दुपर पोथीक फुजल पन्ना जकाँ स्पष्ट प्रस्तुति। युवती वएसमे प्रवेश करैत काल कोनो अनचिनहार युवकक नजरि देखि कऽ अपन ब्रह्मास्त्रक (थूक फेकबाक) प्रयोग करै छेली। ओना ऐ अस्त्रक शिकार बिआहसँ पूर्व ललनजी सेहो भेल छला, जिनका संग ओ दाम्पत्य सूत्रमे बान्हल गेली। नव प्रकारक रक्षा सूत्रक विषए मे पढ़ि अकचका गेलौं, नीक नै लागल मुदा, ऐसँ रचनाक प्रासंगिकतापर प्रश्नचिन्ह नै लगौल जा सकैत अछि।

प्रवेशिका उत्तीर्ण केलाक पश्चात शेफालिकाजी पढ़ए नै चाहै छेली। ललन जीक विशेष प्रेरणासँ जहिना- तहिना स्नातक धरि शिक्षा ग्रहण केलनि। तत्पश्चात् घर-गृहस्थी आ साहित्य साधनामे लीन भऽ गेली। साहित्यमे विशेष योगदान लेल दरिभंगामे डॉ. दिनराजी शाण्डिल्य द्वारा ''विद्या वारिधी'' सम्मानसँ सम्मानित कएल गेली। ऐ सम्मानकेँ पाबि भाव-विभोर भऽ मिथिला मिहिरकेँ अपन मनोदशा पठौलनि। मिथिला मिहिर द्वारा हुनक हस्त-लिपिकेँ यथावत् प्रकाशित कए देल गेल। मिथिला मिहिरक ''होली विशेषांक''मे हिनक रचनाक रचनाकारक नाओं देल गेल ''दिन राजी डॉ शेफालिका वर्मा।'' ऐ मजाकसँ शेफालिकाजी काँपि गेली आ १८ बर्खक मौनव्रतकेँ तोड़ि पुन: शिक्षा ग्रहण करैले आतूर भऽ गेली। परिणाम सोझाँ अछि- एम.ए., पी.एच.डी प्राध्यापक डॉ. शेफालिका वर्मा। अपन सम्पूर्ण जीवनमे प्रेमकेँ जीबाक आधार मानि जीबि रहल छथि- रजनी जी। आरसी प्रसादजीक शेफालिका- केना रजनीसँ शेफाली बनि गेली ऐ रचनामे झाँपल अछि। प्रेमक सभ रूपकेँ अर्न्तमनसँ स्वीकार करब हिनक जीवन दर्शन अछि। राजनीतिसँ दूर रहली, जखनि की किछु प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ हिनका लग नतमस्तक रहै छला। डार्विनवादक ''उपार्जित लक्षणक वंशावलि''क आधारपर एना संभव भेल। पिता स्व. मल्लिक साहित्कार आ सरल बेक्तीत्व छला। हिनक पति ललनजी साहित्यकार तँ नै छला परंच शेफालिका जीक साहित्यक सभसँ पैघ पाठक। अपन पति द्वारा निरंतर पग-पगपर संग देबाक कारण हिनका जीवनसँ कोनो शिकाइत नै अछि। ''जीवनक डोरि फूजि उड़ल व्योममे कातर प्राण मुदा जीवै छी।'' एकरे जीबाक कला मानि सतत साहित्य साधनामे लिप्त रहली।

आब प्रश्न उठैए जे हिनक आत्मकथासँ समाजकेँ की भेटत वा की भेटल? कोनो बेकती ओ महान हो वा नै हो ओकर जीवनसँ शिक्षा लेल जा सकैत अछि। शेफालिकाजी तँ मर्मज्ञ छथि जीवनक मर्मज्ञ, साहित्यक मर्मज्ञ आ सिनेहक मर्मज्ञ। पुरुष प्रधान समाजमे नारीक एहेन दृढ़ता देखि वर्तमान कालक बालाकेँ अबस्स नव दिशा भेटत।

हुनक जीवन दर्शनकेँ कण-कणमे समा लेलौं, भाषा मनोरम आ प्रवाहमयी अछि।

एतेक अविराम कृति रहलाक पश्चात् ऐमे किछु त्रुटिक दर्शन सेहो भेल। शेफालिकाजी अपन जीवनक कचोटकेँ नुका लेली। ओ फूजल मानसिक प्रवृतिक महिला छथि, चरित्र उत्तम मुदा, पारदर्शी। सहज अछि जे ऐसँ हुनका किछु सामाजिक उपहासक अनुभव अबस्स भेल हेतनि। साहित्यकारक रूपमे उपेक्षाक शिकार अबस्स भेल हेती तेकर मौन व्याख्या तँ कएल जा सकै छल मुदा, नै कएल गेल। भऽ सकैत अछि ओ मैथिल समाजक मध्य कोनो अनुत्तरित प्रश्न नै उठबए चाहै छथि। सम्पूर्ण सार अछि जे रचना सारगर्भित ओ सोहनगर लागल।

❍❍❍

पोथीक नाओं- किस्त-किस्त जीवन
रचनाकार- डॉ. शेफालिका वर्मा
प्रकाशक- शेखर प्रकाशन, इन्द्रपुरी पटना-१४
मूल्य- ३००टाका मात्र
प्रकाशन बर्ख- २००८
कुल पृष्ठ- ३२०

१०.

समीक्षा- मिथिलाक बेटी (नाटक)

ईसा संवत् सन २००८ सँ लऽ कऽ वर्तमान कालकेँ अद्यतन मैथिली साहित्यिक आन्दोलनक क्रांति-काल कहल जा सकैत अछि। ऐ अवधिमे रंग-बिरंगक साहित्य सरितासँ सजल पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन प्रारंभ भेल अछि। जइमे प्रमुख अछि- विदेह ई-पत्रिका, विदेह-सदेह, मिथिला दर्शन (पुनर्प्रकाशन), पूर्वोत्तर मैथिल, झारखंडक सनेस आदि-आदि। ऐ पत्र-पत्रिकाक प्रयाससँ नव-नव साहित्यकारक प्रवेश मैथिली साहित्यमे भेल। जइमेसँ किछु साहित्यकार तँ अपन रचनासँ मिथिलाक मानस पटलपर एहेन स्थान बना लेलनि जइसँ हुनका जौं काल पुरुष माने मैन ऑफ टाइम कहल जाए तँ कोनो अतिशयोक्ति नै हएत। ऐ रचनाकारक भीड़मे एकटा साम्यवादी आ बहिर्मुखी प्रतिभासँ सम्पन्न रचनाकार छथि- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल। हिनक बेक्तिगत जीवन कोनो रूपक हुअए मुदा साहित्यिक सृजनशीलतासँ हिनका बहिर्मुखी बेक्तीत्वक बेकती कहल जा सकैत अछि।

हिनक लघुकथा 'बिसाँढ़' आ 'भैंटक लावा' घर-बाहरमे आ 'चुनवाली' मिथिला दर्शनमे प्रकाशित होइते मैथिली पत्रिकाक संपादक मण्डलक संग-संग प्रबुद्ध पाठकक मध्य हड़होरि मचि गेल। 'पहिने आउ आ पहिने पाउ'क आधारपर विदेहक संपादक श्री गजेन्द्र ठाकुर हिनक रचना सभकेँ अपन पत्रिकामे छपबए लेल हथिया लेलनि। ऐ प्रकारक शब्दक प्रयोग करबाक हमर तात्पर्य अछि जे जगदीशजी कोनो नव रचनाकार नै छथि, तिरसठि बर्खक माँजल साहित्यकार छथि, मुदा हिनक रचनाक प्रदर्शन नै भेल छल। समग्र रचना-संसार हिनक पुत्र श्री उमेश मण्डल जीक कम्प्यूटरमे ओझराएल छल किएक तँ छपबैले कैंचा केतएसँ आएत?

आदरणीय संपादक गजेन्द्र ठाकुरक विशेष अनुग्रह आ श्रुति प्रकाशनक अधिष्ठाता श्री नागेन्द्र कुमार झा आ श्रीमती नीतू कुमारी जीक कृपासँ हिनक एकसँ बढ़ि कऽ एक रचना हथिया नक्षत्रक गनगुआरि जकाँ पाठकक आगाँ आबि रहल अछि। ऐ पुष्पांजलि महक एकटा फूल लऽ हम पाठकक सोझाँ रखि रहल छी- 'मिथिलाक बेटी।' मिथिलाक बेटी एकटा नाटकक नाओं

अछि। शीर्षकसँ स्पष्ट होइत अछि जे हमरा सबहक समाजक वनिताक अस्तित्व आ अस्मितासँ ऐ रचनाक सम्बन्ध अछि। मुदा पोथीक गर्भावलोकनक बाद हमर मोनसँ ई भ्रम भागि गेल। ऐमे समाजक विषमताक स्पष्ट दर्शनक अनुभूति भेल। जगदीशजी साम्यवादी विचार धाराक सम्पोषक छथि, तँए समाजमे पसरल व्याधिपर श्रमक विजय, श्रमजीवीक विजय, दृष्टिकोणक विजय, इमानक विजय, सम्यक् भौतिकताक विजय, बौद्धिक आ चेतनाक विजय देखएबाक प्रयास केलनि।

पाँच अंकक ऐ नाटकमे नौ गोट पुरुष पात्र आ पाँचटा नारी पात्र छथि। रचनाक केन्द्र बिन्दु छथि पैंतालीस बर्खक विकट पुरुष पात्र- बाबू कर्मनाथ- एकटा प्रशासनिक अधिकारी। विकट ऐ दुआरे किएक तँ भ्रष्ट समाजक मध्य कर्तव्यपरायण ईमानदार बेकती आ बाबू ऐ दुआरे किएक तँ अधिकारी छथि। स्नातक उत्तीर्ण केला पछाति हिनक पिता सोमनाथ हिनक बिआह एकटा भौतिकवादी परिवारमे पक्का कए लेलनि। द्रव्य, धन धान्य आ बीस बिगहा जमीनक जुआरिमे। मुदा ओ कर्मनाथ जीक मौन समर्थनक आशमे बैसल छला। ऐ मध्य जेठ मासक गरमीमे एकटा कायाहीन आ निर्धन बेकती हिनक दलानपर एलनि, बेथित आ थाकल अपन कन्याक हेतु बर तकबाक क्रममे सोमनाथक दलानपर अचेत भऽ गेला। सोमनाथसँ हुनक बेथा नै देखल गेल। ओइ गरीबक कन्यासँ बिआह करैले आतूर भऽ गेला। कालान्तरमे ई बिआह सम्पन्न तँ भऽ गेल मुदा परिवारमे सामंजस्य नै रहि सकल। पिता सोमनाथ आ दू भाँइ क्रमश: नूनू आ लालबाबू हिनक निर्णएसँ दुखी भऽ गेला, किएक तँ कुबेरक भंडारक आशपर कर्मनाथजी नोन छीटि देलनि। प्रतिभाशाली छात्र कर्मनाथ प्रशासनिक अधिकारी बनि गेला परंच हिनक नैतिक आचरण भौतिकतापर भारी पड़ि गेल, जइसँ नव-नव समस्या उत्पन्न भऽ गेल। पत्नी चमेली, पुत्र फुलेसर आ पुत्री द्वय चम्पा आ जूही- ई अछि हिनक परिवार। भावक सर आ बिसवासक शतदलक संग जीवन क्रम चलैत रहल। पिता सोमनाथ अदूरदर्शी बेकती छला, जइसँ अन्य दुनू पुत्र अवण्ड भऽ गेलनि। कर्महीन नूनू आ लालबाबू जथा बेच-बेच कऽ कर्मनाथक बराबरि करबाक प्रयास कऽ रहल छेलथि। पितासँ महिमा मंडित हेबाक कारणें दुनूक जीवन नारकीय भऽ गेल। परिवारक दशा ओ दिशाकेँ देखि कऽ

कर्मनाथक माए आशाक आश टूटि रहल छल। कर्मनाथ जीक पितृ परिवारमे मात्र हिनक माएक बेक्तीत्व सोझराएल छल। किएक नै रहत, सभ माएक इच्छा होइत अछि हुनक पुत्रक नाओंसँ समाज गौरवान्वित हुअए।

जगदीशजी ऐ नाट्य कथाक नायकक स्पष्ट उद्घोषण नै केलनि मुदा हमर मतसँ ऐ नाटकक नायक छथि विकास, एकटा सेवा निवृत्त शिक्षक। आदर्श आ सहज विचारधाराक बेकती श्री विकास अपन समाजक चितंक छथि। मिथिलाक गाम अखनो विकासक धारमे पाछाँ पड़ल अछि। शिक्षाक अभाव, सामाजिक समरसताक अभाव आ साधनक अभावक कारण विकास सन प्रबुद्ध बेक्तीक ग्राम्य समाजमे आवश्यकता अछि। गामक प्राय: नव आ अधवयसू पीढ़ी हुनक छात्र रहलनि अत: हुनक सलाहकेँ मानै छथि। श्रीचन किसान हाटपर प्रचार करैले आएल शंकर बीज कंपनीक प्रलोभनमे आबि टमाटरक विदेशी बीआ खरीद लइ छथि। टमाटर उपजाक कोन कथा जे लत्तिओ गलि गेल। श्रीचन संताप आ क्रोधक मारे आकुल छला। विकासजी हुनका सान्त्वना दैत कहलनि जे प्रचारक चकाचौंधमे नै अएबाक चाही, अपन स्वदेशी वस्तु ओइ विदेशी समानसँ सोहनगर अछि। विकासजीक प्रयाससँ कर्मनाथक पुत्री चम्पाक बिआह रामविलास मिस्त्रीक पुत्र मदनसँ तइँ कएल गेल। ऐ बिआहकेँ केन्द्र बिन्दु मानि ऐ पोथीक रचना कएल गेल अछि।

आब प्रश्न उठैए जे ऐ पोथीमे नव की भेटल? मिथिलाक बेटी नाटक 'कर्म प्रधान विश्व करि राखा' सिद्धान्तक आधारपर लिखल गेल अछि। एकटा कर्मठ आ ईमानदार बेकतीकेँ समाजमे की-की सहए पड़ैत अछि, ओइ परिप्रेक्ष्यक मार्मिक चित्रण कएल गेल अछि। कथाक मूलमे कर्मनाथक बिआह क्रममे आएल एकटा गरीब (चमेलीक पिता) बेक्तीक मनोदशाक प्रस्तुति नीक अछि। ओ बेकती गरीब छथि मुदा 'चार्वाक दर्शन'क पालक। 'पेटमे खढ़ नै सिंहमे तेल' जेबीमे कैंचा नै मुदा नौ हन्नाक बटुआ जइमे भोगक वस्तु छलिया सुपारी पान आ तमाकू। हमरा सबहक गाममे अहिना होइत अछि, भोजन नै मुदा पान अबस्स। पग-पग पोखरि माछ मखान... मधुर बोल मुस्की मुख पान... नेना पढ़लक, नै पता, कनियाँकेँ पथ्य भेटल, नै जनै छी, बेटी लेल दूध अछि... नै। मुदा पान अति आवश्यक, हाथी मरि गेल, छान आ पग्घा लऽ कऽ बौआ रहल छी। कर्मनाथक अपन पत्नी चमेलीक संग वार्तालापमे

'खट्टर ककाक तरंग'क दर्शन होइत अछि। गाममे प्रचलित लोकोक्तिक हास्य मुदा सत्य प्रस्तुति।

कर्मनाथ जीक पुत्रक नाओं फुलेसर, प्रशासनिक अधिकारी भऽ कऽ एहेन नाओं...। ऐसँ हुनक गामक प्रति सिनेहक झाँकी भेटैत अछि। गाममे एहने नाओं सभ होइत अछि। अपन दुनू पुत्री आ पुत्रकेँ छायावादी रूपमे जीवनक शिक्षा दइ छथि कर्मनाथ। एना करब आवश्यक किए तँ ऐसँ जिज्ञासा बढ़ैत अछि। रामविलास सेवानिवृत मिस्त्री छथि। बाल्यकाल साधनक अभावमे आ युवावस्था संघर्षमे बिता कऽ भौतिक साधन प्राप्त केलनि। जीवनक अंतिम पड़ावमे माधुरीसँ, माने अपन पत्नीसँ, अपन जीवन-यात्राक व्याख्यान करै छथि, आश्चर्यमे पड़ि गेलौं, जिनका संग चालीस बर्खक यात्रा केलनि ओ हिनक जीवन दर्शन नै जनै छेली। हमरा सबहक समाजमे ऐ प्रकारक घटना होइते अछि। गरीब नेनपनक बाद सोझहे प्रौढ़ भऽ जाइ छथि। जे कर्मवादी छथि हुनक अंतिम अवस्था सुखमय नै तँ...। अपन कर्मक नावकेँ कलकत्तामे मजगूत कऽ सोझहे गाम आबि जाइ छथि। मातृभूमिक प्रति सिनेह, गामेमे गैरेज खोलबाक योजना अछि, चौघारा घर बनाएब, दलान अबस्स रहत, किएक तँ दलान समाजक मर्यादा छी, गामक जीवन शहरसँ सुखमयी अछि। ऐ पोथीमे पड़ाइनवादक विरोध कएल गेल अछि।

कर्मनाथक चरित्र पंडित गोविन्द झा लिखित 'बसात' नाटकक नायक कृष्णकान्तसँ मिलैत अछि। रामविलास जीवन संघर्षमे विजयी भेला तँए पुत्रक बिआह आदर्श करता। विकास जीक चरित्र नाटकक लेखक जगदीश जीसँ मिलैत अछि। साम्यवादी, ग्रामीण सभ्यताक दिग्दर्शक। ऐ पोथीमे जातिवादी बेवस्थाक विरोध कएल गेल अछि। आन गामक स्वजातीयकेँ भोजमे निमंत्रण देबासँ अनिवार्य अछि अपन गामक सभ जातिकेँ आमंत्रित करब। किएक तँ बेर-कुबेरमे पाँजरि लागल लोक काज दइ छथि, चाहे ओ कोनो जातिक हुअए।

ऐ पोथीमे जीवनक सभ रूपक व्यापक दर्शन कएल गेल अछि। कुलीन बेकती जनिक परिवार निच्चाँ मुहेँ जा रहल अछि, ओइ परिवारक कन्याक बिआह उर्ध्वमुखी साधारण परिवारक पुत्र (जे आब सम्पन्न छथि)

हुनकासँ भऽ सकैत अछि। ऐ पोथीमे अन्हारपर इजोतक विजय देखौल गेल अछि। भौतिकतापर बौद्धिकता आ सम्यक् जीवनक जीत ऐ पोथीक केन्द्र बिन्दुमे समेटल अछि। पुत्रक बिआहमे तिलक लेबासँ बेसी अछि कुलीन कन्याक चयन। सम्पूर्ण पोथीमे देशज शब्दक प्रयोग कएल गेल अछि। पोथीक अंतिम पृष्ठपर श्री गजेन्द्र ठाकुरक कथन- मैथिली साहित्यक इतिहास जगदीश प्रसाद मण्डलसँ पूर्ब आ जगदीश प्रसाद मण्डलसँ- पढ़लौं, पहिने तँ अनसोहाँत लागल, मुदा पोथीक अध्ययन केलाक पश्चात् हमरा सहज लागल। भाषा अत्यन्त सामान्य मुदा रस, अलंकार आ छंदसँ परिपूर्ण अछि। कलात्मक शैलीमे जगदीशजी अंक-अंकमे अपन दर्शनकेँ सहेजि नेने छथि। हिनक ई रचना कोनो विशेष कथाकार वा नाटककारसँ प्रभावित नै। हिनक रचनामे राजकमलजी, पंडित गोविन्द झा, हरिमोहन झा, धूमकेतु, ललन ठाकुर सन रचनाकारक शैलीक मिश्रित दर्शन होइत अछि। मिथिलाक बेटी अर्थनीतिसँ प्रभावित अछि मुदा सम्यक् अर्थनीतिसँ। अर्थपर मानवताक विजय, जगदीशजीक बिसवास नीक लागल।

जेना कोनो बेकती पूर्ण नै भऽ सकैत अछि तहिना कोनो रचनाक संग होइत अछि। 'मिथिलाक बेटी' पोथीमे किछु त्रुटिक दर्शन सेहो भेल। प्रथमत: ऐ पोथीक शीर्षक अप्रासंगिक लागल। बेटी तँ ऐ दर्शनक माध्यम मात्र अछि, स्रोत नै। ऐमे मानवीयताक जीत देखौल गेल अछि बेटीक जीवन तँ घटना मात्र छी।

ऐ नाटकक भाषा सरल आ शनै: शनै: गमनीय अछि तँए एकरा जन नाटक नै मानल जाए मुदा एकर कलात्मक मंचन कएल जा सकैत अछि।

निष्कर्षत: जगदीश प्रसाद मण्डलजी हमरा सबहक बीच एकटा नव जीवनक आयाम लऽ कए आएल छथि। बहुरंगी जीवनक आयाम आ सकारात्मक सोचक आयाम। मानवीय मूल्य अखनो धरि जीवित अछि। ऐ तरहक घटना कठिन अछि मुदा असंभव नै। बिसवास आ कर्मक संग जीवन जीबाक प्रयत्न करबाक चाही। ऐ पोथीक शब्द-शब्दमे झंकार अछि। भाषा प्रवाहमयी लागल। प्रकाशन दलक प्रयास नीक, शब्द संयोजन आ संपादन अति उत्तम।



पोथीक नाओं- मिथिलाक बेटी

नाटककार- जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रकाशक- श्रुति प्रकाशन राजेन्द्र नगर दिल्ली।

मूल्य- १६० टका मात्र। प्रकाशन बर्ख- सन् २००९

पोथी पाप्तिक स्थान- पल्लवी डिस्ट्रीब्यूटर्स, वार्ड न.६, निर्मली, सुपौल,

मोबाइल न. ९५७२४५०४०५

११.

मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान

जखनि-जखनि मैथिली भाषा साहित्यमे नाट्य विधाक चर्च होइत अछि तँ हठात् पंडित जीवन झासँ लऽ कऽ झिझिरकोना आ तालमुट्ठी सन नाटकक नाटककार अरविन्द कुमार अक्कू जीक विवेचन स्वभाविक भऽ जाइत। ऐ एक सय छ: बर्खक नाट्य रचनामे बहुत रास नाटककार विविध शैलीक साहित्यिक नाटकक संग-संग लोकप्रियता लेल चलन्त आ ओछ नाटक सेहो लिखलनि। किछु रचनाकार तँ नाटककारेक रूपेँ बेस चर्चित छथि, संग-संग हुनका सभकेँ पुरस्कृत सेहो कएल गेल अछि। उदाहरणस्वरूप श्री महेन्द्र मलंगिया मैथिली साहित्यक प्रतिष्ठित सम्मान प्रबोध सम्मानसँ सम्मानित कएल गेल छथि। मलंगियाजी बहुत रास नाटक लिखलनि- लक्ष्मण रेखा : खण्डित, जुआएल कनकनी, एक कमल नोरमे, ओकरा आँगनक बारहमासा, कमलाकातक राम, लक्ष्मण ओ सीता आ काठक लोक। ऐ नाटक सभमे ''एक कमल नोरमे'' साहित्यक समग्र बिन्दुकेँ बिम्बित करैबला नीक नाटक मानल जाइत अछि। मुदा ''काठक लोक'' आदि पढ़लासँ पाठक स्वयं निर्णए सुनाबथि जे केतए धरि एकरा ''मैथिली नाटक'' मानल जाए। बिम्ब गाथा आ विवेचन मैथिलीसँ बेसी हिन्दीमे। ओना सभ साहित्यिक कृतिमे आन भाषाक प्रयोग ठाम-ठाम कएल जाइत अछि मुदा मात्र पात्रक दशा आ परिस्थितिमे तारतम्य स्थापित करैले। मलंगियाजी ऐ पोथीमे हिन्दीक प्रयोग कोन रूपेँ केने छथि ई गप झारखंडक अंत:स्थ कक्षाक (मैथिली भाषी जौं उपलब्ध होथि) छात्र-छात्रासँ पुछल जा सकैत अछि, किएक तँ ''काठक लोक'' झारखण्ड अधिविद्य परिषद्क मैथिली पाठयक्रममे सम्मिलित अछि। मैथिलीक संग दुर्भाग्य मानल जाए वा विडम्बना जे किछु तथाकथित साहित्यकार आ समीक्षकक दलपुंज भाषापर अपन अधिकार चमौकनि जकाँ जमौने छथि।

''अहाँक सोहर हम गाएब आ हमर डहकन अहाँ बिदबिदाउ''

ऐ परिप्रेक्ष्यमे किछु प्रतिभा झँपले रहि गेल, केतौ कोनो चर्च नै। ऐ वज्रपातक टटका शिकार छथि आधुनिक खाढ़ीक सनसनाइत युगान्कारी नाटककार- ''श्री आनंद कुमार झा''। आनंद जीक अखनि धरि पाँच गोट नाटक प्रकाशित भेल अछि ''टाकाक मोल (२०००)'', ''कलह (२००१)'',

''बदलैत समाज (२००२)'', ''धधाइत नवकी कनियाँक लहास (२००३)'' आ ''हठात् परिवर्त्तन २००५''। ऐ नाटकक संग-संग आनंदजीक अप्रकाशित नाटकक गणना दू अंक धरि पहुँच गेल अछि।

आनंद जीक जनम १९७७ई.मे मिथिलाक सांस्कृतिक सेहंतित भूखण्ड मधुबनी जिलाक मेंहथ गाममे भेल। जौं समस्तीपुर, खगड़िया आ बेगूसराय जिलाक लाल रहितथि तँ उपेक्षाक दंश स्वाभाविक छल मुदा ठामक वासी उपेक्षित भेला, कनेक संत्रास जकाँ लगैत। गाम-गामसँ लऽ कऽ कोलकाता शहर धरि मंचित ऐ नाटक सभक कोनो समीक्षा नै भेल, ई सभ मात्र मैथिली भाषामे संभव छै। जौं बिम्बक उपयोगिताकेँ केन्द्र बिन्दु मानल जाए तँ मैथिली साहित्यक प्रवीण नाटककारक समूहमे आनंद जीक स्थान निश्चित अछि। **टाकाक मोल**: आर्य भूमिक एकटा पैघ व्याधि काटर प्रथाक दु:स्थितिपर केन्द्रित ऐ नाटकमे मिथिला संस्कृतिक कोढ़िक चित्रण नीक ढंगसँ कएल गेल अछि। कन्याक पिताक नाओं गरीबनाथ, संग-संग दरिद्र सेहो। अपन धर्मपत्नी सुमित्राक आश पूर्ण करैले पुत्र कामनार्थ पाँच गोट कन्याकेँ जनम देलनि। पहिल बेटीक बिआहमे डाँड़ टूटि गेलनि, सभटा खेत बिका गेलनि। दोसर बेटीक कन्यादान लेल आतूर छथि, मात्र बारह कट्ठा जमीन बाँचल छन्हि। बेटी प्रभा कौलेजमे पढ़ै छथि, बिआह अपना मोने नै करए चाहै छथि- मात्र समाजक हेय दृष्टिसँ बचैले बेटीक बिआह ऐ शुद्धमे करैले परेशान छथि। हमरा सबहक समाजक केतेक कलुष रूप अछि अप्पन टेटर नै देखि कऽ लोक सभ दोसरक फोसरीपर काग-दृष्टि लगौने रहै छथि। कुमारि बेटी छन्हि गरीब झाक घरमे आ परेशान छथि समाजक लोक। ऐ लेल नै जे मिथिलाक बेटीक उद्धार कएल जाए, मात्र बारह कट्ठा जमीन लिखेबाक लोभमे। प्रभा अपन बहिनक दिअर प्रभाकरसँ सिनेह करै छथि, लेकिन आंडबरधर्मी समाज ऐ सिनेहक मंजूरी नै देत तँए चुप्प।

गरीब झा दलाल काकासँ संपर्क करै छथि। जेहन नाओं तेहने कार्य। हुनक चेला काकासँ बेसी पारखी। दुनूक जोड़ी शुम्भ-निसुम्भ जकाँ दुष्ट आ धृष्टतासँ भरल। हर्षद मेहताक दलाली हिनका लग ओछ पड़ि जाइए। बालकक पिता लीलाम्बरजी वास्तवमे लीलाधारी छथि। भातिज सभसँ कम कैंचा पुत्रक बिआहमे केना लैतथि तँए पचहत्तरि हजारसँ कम टका नै चाही।

दलाल काकाक मोहिनी मंत्रक जादूमे आबि पैंसठ हजारमे बिआह करबाक निर्णए सुनौलनि। शर्त्त छन्हि जे समाजमे पचहत्तरि हजारक उद्घोष कएल जाए। दलाल काकाक कलिजुगी उगना ऐ उद्घोषणाक लाभ लेबाक प्रयासमे सफल भेलनि।

दलालीक दस हजार कमीशन दुनू चेला-गुरुक पेटमे। गरीब झा अपन बाँचल जमीन ५० हजारमे बेचि लेलनि। मित्र गुणानंद जीसँ दस हजार टाकाक मदति भेटलनि, शेष प्रश्न ओझराएल, पंद्रह हजार आब केना हएत? येन केन प्रकारेण बरियाती दलान लागल। फेर धमगिज्जड़ि। माथक पाग खसि पड़लनि मुदा बरियाती आपिस। अंतमे प्रभाकरक संग प्रभाक बिआह होइत अछि। लीलांवरजी काटरक टाका, पचास हजार, कन्यागतकेँ आपिस केलनि। मुदा नाटककार ई स्पष्ट नै कऽ सकला जे दलाल काका दलालीक दस हजार कन्यागतकेँ देलनि वा नै! कथानकक किछु तथ्य वास्तविकता नै भऽ कऽ कल्पना मात्र लागल। गरीब नाथक बेटी प्रभा कौलेजमे पढ़ै छथि आ छोट मांगल-चांगल भाए महिंस चरबै छन्हि। ओना तँ पुत्रक आकांक्षामे पाँच गोट पुत्रीक जनम देमएबला माए-बापक अर्थबेवस्था अबेवस्थित हएब स्वाभाविक अछि। परंच मैथिल संस्कृतिक ग्रामीण बेवस्थामे रहनिहार माता-पिताक जीवनमे संतानक रूपेँ पुत्रसँ पुत्रीक बेसी महत देब कल्पना मात्र छै, वास्तवमे तँ बेटी जन्मेसँ आनक धरोहरि मानल जाइत अछि तँए बेटा महिंस चराबथि आ बेटी कौलेजमे पढ़थि, आश्चर्य जनक लागल।

कथानकक बीच-बीचमे अंग्रेजी शब्दक प्रयोग कऽ नाटककार आधुनिकता लेपन करबाक प्रयास केलनि, ई उचित अछि वा नै, पाठकपर छोड़ि देबाक चाही। एकटा अनसोहाँत अबस्स लागल जे मैथिलीमे ''चुकल'' शब्दक प्रयोग कहिया धरि रहत। निष्कर्षत: ई नाटक मंचनक योग्य अछि।
कलह : कलह आनंदजी लिखित दोसर नाटक छी। समाजमे जीवन्त घटना सभकेँ एक सूत्रमे जोड़ि कऽ ऐ नाटकक सृजन कएल गेल। आकाश एकटा बेरोजगार नौजवान छथि। टाकाक लोभमे पिता सुरेश्वर हिनक बिआह करा दइ छथिन। आकाश सुरेश्वर जीक पहिल पत्नीक संतान छथि तँए विमाता सुमित्राक दृष्टिमे हिनक कोनो स्थान नै। सुमित्रा तँ अपन कोखिसँ जनमल पुत्र राजीव आ ओकर कनियाँ कोमल लेल ज्येष्ठ पुत्रक संग यातनाक सभटा

बान्ह लांघि देलनि। प्रौढ़ पिता मूक परिस्थितिक मारल मात्र दर्शक बनि कऽ रहि गेला। कालक मारिसँ भटकैत-भटकैत दुनू परानीक निर्मम अंत होइत अछि। एकटा अबोध नेनाक जनम भेल जे आकाशक अंतरंग मित्र योगेशक कोरमे कथाक अंत धरि...।

नाटककार ऐ नाटकक रचना भऽ सकैत अछि जे कथानकमे संत्रास भरबाक संग-संग दर्शकक मध्य लोकप्रिय बनबैले केने होथि मुदा ऐ सभसँ नाटकक प्रासंगिकतापर प्रश्न चिन्ह नै लगौल जा सकैत अछि। कत्तौ-कत्तौ बिम्ब विश्लेषण चलंत आ हिन्दी भाषाक बेवसायिक चलचित्र जकाँ लागल मुदा मैथिलीमे नवल प्रयोगकेँ कियो झाँपि नै सकै छथि, जेतए-जेतए ऐ नाटकक चित्रण हएत, अबस्स छाप छोड़त।

बदलैत समाज : बदलैत समाज नाटकक आरम्भ एकटा ब्लड कैंसर पीड़ित बालकक अपन पत्नीक संग वार्तालापक संग होइत अछि। कर्जसँ मुक्ति लेल घूरनजी अपन बीमार पुत्रक बिआह करा दइ छथि। हुनका ओना बूझल नै छेलनि जे पुत्र अवधेश ब्लड-कैंसरसँ पीड़ित अछि। भजेन्द्र मुखियाक पुत्र दीपक अवधेशक बाल संगी छथि। ओ पहिनेसँ जनै छला जे अवधेशक मृत्युक दिवस नजदीक छन्हि। तथापि ओ खुलि कऽ नै बजला किएक तँ घूरनजी स्वयं बूढ़ लोक छथि। एकटा पिता अपन कान्हपर पुत्रक लाशक कल्पना मात्रसँ सिहरि सकै छथि, वास्तविकता...।

विविध घटनाक्रममे अवधेशक मृत्युक भऽ गेलनि। समाज हुनक विधवा शोभापर चरित्र दोष सेहो लगौलक। समाज की, जइ अबलापर ओकर सासुक बिसवास नै हुअए ओकरापर आन के बिसवास करत? नाटकक अंतमे सबहक भ्रम टुटैत अछि, जखनि शोभा दीपककेँ भैया कहि कऽ अश्रुलाप करै छथि। अंतमे विधवा शोभाक एकटा सच्चरित्र युवक वीजेन्द्रसँ पुर्नविवाहक कल्पना कएल गेल। ओना तँ ऐ नाटकमे जात-पातिक कोनो चर्च नै मुदा प्रसंगसँ स्पष्ट होइत अछि जे सवर्ण परिवारक पृष्ठभूमिमे नाटक केन्द्रित अछि। नाटककारक ई कल्पना नीक लागल जे सवर्ण घरक विधवा युवतीक पुनर्विवाह भऽ सकैत अछि। नाटकक संवादमे ठाम-ठाम अलंकार आ लोकोक्तिक लेपन नीक लागल। ‘‘सम्भावनाक आधारपर मनुख कल्पना करैत अछि। मुदा प्रकृतिक शाश्वत निअमकेँ कियो नै बदलि सकैत अछि’’, ऐ

संवादक माध्यमसँ अवधेश अपन मृत्युक संकेतकेँ बूझि रहल छथि। हुनक दोसर संवादमे-

''हम मृत्युसँ भयभीत नै छी। भय अछि ओइ निस्सहाय अबला नारीक असीम दु:ख, पीड़ा आ वेदनासँ। भय अछि अनजानमे हमरासँ भेल गलतीसँ।''

श्रृंगारक प्रबल लालसा रहितो परिस्थिति मनुखकेँ वैरागी बना दइत। जनतंत्रक कुटिल बेवस्थापर सेहो ऐ नाटकमे कटाक्ष कएल गेल। भजेन्द्रजी सन कुटिल गामक मुखिया छथि तँ विपक्ष हुनकोसँ बेसी कुटिल। तँए ने फुराइतो छन्हि हुनका

''ओ बनियाँ बुड़िबक होइत अछि जे पलड़ापर बटखड़ा रखलासँ पहिने समान चढ़ा दैत अछि।''

धधाइत नवकी कनियाँक लहास :

मात्र किछु गहनाक खातिर शिखाक आत्महत्याक प्रयास अजीब कहल जा सकैत।

हठात् परिवर्त्तन :

देशभक्ति मूलक नाटक छी।

निष्कर्षत: ई कहल जा सकै छथि जे आनंद जीक नाटक शैलीमे गोविन्द झाक हास्य समागम, ईशनाथ झाक अलंकार, जगदीश प्रसाद मण्डल जीक साम्यवाद, अक्कूजीक आधुनिकता, लल्लन ठाकुर जीक मंचन शैली आ शेखर जीक जनभाषा कलकल अछि। मुदा जौं आनन्दजी सन युवा नाटककारसँ प्रयोगवाद वा क्रान्तिक आशा रखि हिनक नाटक पढ़ल जाए तँ निश्चित निराश होमऽ पड़त। किएक तँ दृष्टिकोण परम्परावादी छन्हि जे पाँचो नाटकमे व्याप्त अछि। ओना मात्र अनन्दजी टा नै, जौं प्रयोगकेँ वादक धरातलपर रखि मूल्यांकन कएल जाए तँ मैथिली नाट्य-विधामे नचिकेताक ''नो एण्ट्री: मा प्रविश'', श्रीमती विभा रानीक बलचन्दा, रविभूषण पाठकक रिहर्सल, केँ छोड़ि आन सभ नाट्य कृतिमे पूर्णता नै देखैमे अबैत।

१२.

समीक्षा-मैथिली कविता संचयन- (संपादक- गंगेश गुंजन)

स्वतंत्रतासँ पूर्ब जनम नेनिहार साहित्यकारक समूहमे एकटा नाओं अद्भुत मानल जा सकैत अछि, जनिक लेखनी सरस्वतीक वरद् पुत्र जकाँ अखनो मैथिली साहित्यकेँ अपन अर्चिससँ प्रकाशित कऽ रहल अछि। ओ छथि साहित्यक सभ विधाक पारखी रचनाकार- श्री गंगेश गुंजन। अरसैठम बर्खमे अपन कोसक पाथर सदृश कृर्ति 'राधा'सँ विदेहक संग-संग मिथिला-मैथिलीक ध्वजकेँ आरोहित करबाक हिनक प्रयाससँ एकैसम शताब्दीक प्रथम दशांश गमकैत विदा लऽ रहल छथि।

समग्र साहित्यिक क्षेत्रकेँ ज्योर्तिमय बनेबाक संग-संग गुंजनजी संपादकक काज सेहो केलनि। हिनक संपादकत्वमे नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडियाक सौजन्यसँ एकटा पोथी २००५ई.मे बहार भेल- 'मैथिली कविता संचयन'।

महाकवि विद्यापतिसँ लऽ कऽ तारानंद वियोगी धरिक सर्वकालीन कवि-कवयित्रीक रचनाकेँ ऐ पोथीमे संकलित कएल गेल अछि। भूमिकामे गुंजनजी कवीश्वर चंदा झासँ लऽ कऽ संजय कुंदन धरिक चर्च केने छथि मुदा संजय कुंदन जीक रचना ऐ पोथीमे प्रयागराजक सरस्वती नदी जकाँ विलोपित अछि, प्रत्यक्ष दर्शनीय नै।

जहिना आदि पुरुषक मात्र चरण स्पर्श कएल जा सकैत, मॉथपर पाग नै देल जा सकैत अछि, ठीक ओहिना महाकवि विद्यापतिक रचनापर कोनो प्रकारक प्रश्न चिन्ह ठाढ़ करब उचित नै।

हुनक फुलवारीमे सभटा फूल सुन्नर आ सुगंधित अछि। कोनो रचना एक-दोसरसँ कमजोर नै। गुंजनजी जइ रचना पुष्प सभकेँ चुनलनि ओ बड़ नीक लागल। एक दिस प्रथम रचनामे भावक संगम तँ दोसर 'वसंत चुमौन'मे प्रकृति वर्णनक बिम्बक मध्य राजधर्म आ देवक तुलना अनमोल लागल। 'रूपक वर्णन'मे श्रैंगारिक भावक धवल चित्रण कएल गेल अछि। अभिसारमे विरह समागमक झलकि मनोहारी तँ शांति पदमे विचार मूलक स्पष्ट परिदृश्य वातावरणकेँ भक्तिमयी बना दैत अछि।

महाकविक पश्चात् गोविन्ददासक स्थान जेना मैथिली साहित्यमे विलक्षण अछि,

ओहिना ऐ पोथीमे हुनक छ: गोट कविताक चयन संपादक जीक प्रतिभाक संग-संग चयनक अद्वैत दृष्टिकेँ पारदर्शी बना देलक। मनबोधक एकमात्र कविता 'शिशु' मैथिली साहित्यमे बाल साहित्यक न्यूनताकेँ किछु दूर तक भरबाक प्रयास कऽ रहल अछि।

कवीश्वर चंदा झाक तीनपद भक्तिसँ सम्बन्धित मानल जा सकैत अछि। आशु कवित्त्वमे चंदा झाक स्थान मैथिली साहित्यमे सूर-तुलसी जकाँ प्रांजल, तँए तीनू पद गेय। शिव राग आ महेशवाणीमे भक्तिक आवाहन कएल गेल। 'राधा विरह' भक्तिक आड़िमे वेदनाक भाव सरितासँ नयनकेँ सरावोरि करैले पर्याप्त बुझना जाइत अछि।

कविवर सीताराम झाक पद्य सभमे झंकार अनायास भेट जाइत अछि। कवि चूड़ामणि काशीकांत मिश्र 'मधुप'केँ जौं मैथिली साहित्यक आदि लोकगीतकार कहल जाए तँ कोनो अतिशयोक्ति नै। विद्यापति जीक पश्चात् पद्य विधामे मधुपजी सभसँ जनप्रिय कवि मानल जाइ छथि। हुनक 'पतित पीक' आ 'छुतहर' कविताक संकलन ऐ पोथीमे कएल गेल अछि। दुनू पद्यमे बिम्बक चयन आ विश्लेषण सरल मुदा अर्थपूर्ण लागल। कांचीनाथ झा 'किरण' जीक 'मिथिलाक वसंत' अपन माटि-पानिक तात्विक विवेचन करैत अछि। साहित्य सरोजजी भुवनेश्वर सिंह भुवन, सरस कवि ईशनाथ झा, सुमनजी सबहक कविता सभक चयनमे संपादक जीक दीर्घ इच्छा शक्तिक संग-संग अध्ययनशीलताक दृष्टिकोण नीक मानल जा सकैत।

यात्रीजी सर्वकालीन मैथिली कविमे अपन अलग स्थान रखै छथि। हुनक लिखल पद्य सभ चित्रामे हुअए वा पत्रहीन नग्न गाछमे- सभटा एकपर एक अछि। संभवत: हुनक श्रेष्ठ छ: गोट कविताक चयनमे गुंजनजी किंकर्तव्यविमूढ़ भऽ गेल हेता। मुदा जे पद्य सभ चुनल गेल सभ प्रासंगिक लागल। कनेक कमी यएह जे 'मिथिले' शीर्षक कविताक मात्र छ: पाँति देल गेल जखनि की अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद् प्रयागसँ बहराएल 'चित्रा' पोथीक आधारपर 'मिथिले' शीर्षक कविता बियालिस पाँतिक अछि। हमरा मतेँ कोनो रचनाकारक अपूर्ण रचना संकलित करब उचित नै।

आरसी प्रसाद जीक दुनू कविताक चयन शांतिभावसँ कएल गेल। आरसी प्रसादजी स्वयं अपन रचना 'शेफालिका'केँ अपन सर्वश्रेष्ठ कविता मानै छला।

तँए ऐ कविताकेँ संकलित करैले गुंजनजी धैनवादक पात्र छथि।
साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित 'समकालीन मैथिली कविता'मे संपादक द्वय डॉ. ब्रज किशोर वर्मा मणिपद्मकेँ बिसरि गेल छला मुदा ऐ पोथीमे हुनका 'मृग मयूर आ कोकिल मन हे' रूपमे स्मरण कएल गेल अछि। वास्तवमे मणिपद्मजी आधुनिक मैथिल साहित्यक पद्मनाभ छथि। गोविन्द झा, रामकृष्ण झा किसुन आ अमर जीक पद्यक चयन ऐ पोथीकेँ नूतनता प्रदान कएलक। राजकमल चौधरी मूलत: कथाकार छथि। पद्यविधामे सेहो हिनक रचना नीक होइत अछि, तँए सर्वकालीन कविगणमे हिनक स्थानपर कोनो संदेह नै। संगहि एकटा गप खटकि गेल जे राजकमल जीक आठ गोट कविताकेँ ऐ पोथीमे समाबिष्ट कएल गेल आ समकालीन कवि गोपालजी झा गोपेशक केतौ चर्च नै। राजकमल जीक कविताक गणना कम कऽ गोपेश जीकेँ ऐ पोथीमे जौं स्थान देल गेल रहितए तँ आर विलक्षण भऽ सकै छल। मायानन्द झा, सोमदेव, धीरेन्द्र हंसराज, रामदेव झा, गुंजन जी, धूमकेतु, कीर्ति नारायण मिश्र, जीवकान्त, रेणु जी, प्रवासी जी, मंत्रेश्वर झा, कुलानंद जी, विनोद जी, उपेन्द्र दोषी, रामलोचन ठाकुर, भीमनाथ झा, नचिकेता, महाप्रकाश, ललितेश मित्र, विभूति आनंद, केदार कानन, ज्योत्सना चंद्रम, देवशंकर नवीन, सुस्मिता पाठक जीक प्रतिभापर कनेको संदेह नै।

रामानुग्रह झा, सुकान्त सोम, पूर्णेन्दु चौधरी, महेन्द्र, रमेश, अग्निपुष्प, हरेकृष्ण झा आ नारायणजी सन रचनाकारक रचना जखनि ऐमे देल गेल तँ तंत्रनाथ झा, उपेन्द्र ठाकुर मोहन, उपेन्द्र नाथ झा व्यास, राधवाचार्य, अणुजी, रमाकरजी, श्रीमती श्यामा देवी, इन्द्रकान्त झा, हासमीजी, डॉ. शेफालिका वर्मा, रवीन्द्र नाथ ठाकुर, सियाराम झा 'सरस', इलारानी सिंह, डॉ. लाभ, डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र, नवलजी सन रचनाकारकेँ गुंजनजी केना बिसरि गेला। भऽ सकैत अछि जे हुनक तर्क हुअनि जे स्थापित रचनाकारक संग-संग किछु विस्मृत आ नवतुरिया रचनाकारकेँ सेहो स्थान देल जाए।
जौं एहेन गप तैयो स्तरीय संपादन नै मानल जा सकैत अछि। विस्मृत आ नवतुरियो रचनाकार वर्गक किछु रचनाकार ऐ पोथीमे छूटल छथि जनिक रचना ऐमे संकलित किछु रचनासँ बेसी महत रखैत अछि। श्री चन्द्रभानु सिंह

जीक कविताक किछु पाँति एकर प्रमाण स्वरूप देखल जा सकैत अछि-

तोरे स्वरक टघार सहारे रटय पपिहरा पी-पी
ककरा ने ई छैक सेहन्ता तोहर बाजब टी-पी
बेसुराह मनुखक समाजसँ तोहर फराके टोल छौ
की कहियौ गे करिकी तोहर बाजब बड़ अनमोल छौ।
(कोइली शीर्षक कवितासँ)

ऐ कविताक उत्तर देनिहार कवि प्रो. नरेश कुमार विकल जीक रचना सेहो ऐ पोथीमे नै देल गेल अछि-

युग-गुग सँ चलि आवि रहल छौ
बाजब मिसरीक घोल सन
हमरा आब लगैए कोइली
बाजब तोहर ओल सन...।

ई कविता 'कोइली' शीर्षक नाओंसँ विकल जीक कविता संग्रह 'अरिपन'मे सन १९९५ई.मे प्रकाशित भेल अछि। विलट पासवान विहंगम, रमाकांत राय 'रमा' कवि चंद्रेश, जियाउर रहमान जाफरी सन आधुनिक कविक रचना ऐ पोथीमे समाविष्ट कएल नै गेल।

आशु गीतमे काली कान्त झा 'बूच'क रचनाकेँ समीक्षक वा संपादक बिसरि सकै छथि मुदा जे पाठक पढ़लनि ओ कहियो नै बिसरता। हुनक जागरण गान, माला, एक्केगीत, तोहर ठोर, उदासी, परिचए-पात सन सभ विधासँ युक्त कविता मिथिला मिहिरमे प्रकाशित भेल छल।

भूमिकामे गुंजनजी स्पष्ट केने छथि जे ऐमे संकलित ५१ गोट कविक संग-संग आर कवि छथि। हुनक रचना नै देबाक पक्षमे पोथीक सीमित आकार आ कविपय रचनाकारक सहयोगक प्रति उदासीनताक तर्क देल गेल अछि। हमरा मतेँ ऐ तर्कमे वास्तविकताक कमी बुझना गेल। पहिने मिथिला-मैथिलीक साहित्यकारक रचनाक प्रकाशन स्त्रोत मात्र किछु पत्र पत्रिका छल। गुंजन जीक रचना सभ सेहो निश्चित ऐमे छपै छेलनि, तखनि असहयोगक गप केतए सँ आएल? विकल जी, बूच जी, शेफालिका जी, हासमी जी, चन्द्रभानु सिंह, चन्द्रेश सन कवि सत्तरिसँ अस्सी दशकमे मिथिला मिहिरक बहुत रास अंकमे

कविक रूपेँ उपस्थित छला। हमर कहब ई नै जे रमेशजी आ नारायणजी सन रचनाकारक रचना ऐ पोथीमे किएक देल गेल?

कहबाक तात्पर्य जे जनिक कविता बेसी देल गेल अछि हुनक कविताक गणना किछु कम कऽ छूटल कविकेँ सम्मलित कएल जा सकै छल। महाकवि विद्यापति, गोविन्द दास, यात्री, राजकमल, कीर्ति नारायण मिश्र कोनो परिचएक मोहताज नै छथि हुनक कविता जौं एक-एक टा कम्मे रहितए तँ कोनो हुनका लोकनिक प्रतिष्ठा कम नै भऽ जेतनि छल? मुदा कोनो विषए-वस्तुक मात्र नकारात्मक स्वर नै देखबाक चाही। मैथिली साहित्यमे सर्वकालीन कविता सभक संकलन अत्यल्प अछि, तँए गुंजन जीक प्रयास सराहनीय लागल। पूर्णता केतौ नै भऽ सकैत अछि। प्राचीन कविक रचना सभक चयनमे कोनो पूर्वाग्रह वा पक्षपात नै देखैमे आएल। मात्र आधुनिक कालक किछु रचनाकारक महतपूर्ण रचना ऐ पोथीमे नै देल गेल। गुंजनजी धैनवादक पात्र छथि जे असगरे अंशत: कुशल संपादन केलनि। ऐ तरहक अर्न्तद्वन्द्वसँ बँचैले कोनो पोथीक संपादन एक बेक्तीसँ नै करबा कऽ तीन-चारि बेक्तीक संपादक मण्डल द्वारा करेबाक चाही। जौं ऐ तरहक प्रयास कएल जाए तँ त्रुटिक संभावना क्षीण भऽ सकैत अछि। अंतमे स्वर्गीय रचनाकार सभकेँ पुष्पांजलि जीवित रचनाकार सभकेँ नमन संग-संग नेशनल बुक ट्रस्ट आ गंगेश गुंजन जीककेँ साधुवाद।



पोथीक नाओं- मैथिली कविता संचयन

संपादक- गंगेश गुंजन

प्रकाशक- नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया

प्रकाशन बर्ख- २००५

मूल्य- एक सए टका मात्र

१३.

तरेगन

वर्त्तमान युगक मानव-जीवन ''अर्थनीति''क उक्खड़िमे तेना कऽ कुटा रहल अछि जे गाँधी आ लेनिनक सिद्धान्त मटियामेट भऽ गेल। नीति आ धर्मक गप केनिहार लोक अतिवादी आ कर्महीन मानल जाइ छथि। ऐ भागमभाग भरल जीवनमे ''साहित्य'' सन शब्द हास्यास्पद जकाँ बुझा रहल अछि। स्वाभाविके छै, बिनु दाम सभ सुन्न! ऐ परिस्थितिमे साहित्यिक अवधारणा सेहो बदलि रहल अछि। आब महाकाव्य पढ़निहार लोक बड़ अल्प छथि किएक तँ सबहक जीवनमे समयाभाव छै। हमहूँ ऐ गपकेँ मध्यकालिक रातिमे लिखि रहल छी, किएक तँ दिनमे लिखब तँ खाएब की?

ऐ सभ कारणसँ विहनि कथा आ लघुकविताक अनिवार्यता प्रतीत भऽ रहल अछि। साहित्य समागममे लघुकथाक स्थान बड़ महतपूर्ण मानल जाइत। मैथिलीमे अखनि धरि परंपरा जकाँ रहल जे छोट कथा चाहे ओ बिम्बित हुअए वा नै विहनि कथा छी। किछु साहित्यकार मात्र ऐ दिशामे संकलन कऽ सकला। जइमे मनमोहन झा अग्रगन्य छथि। तारानंद वियोगी जीक विहनि कथा संग्रह ''शिलालेख'' आ अमरनाथ रचित ''क्षणिका'' उत्तम श्रेणीक मैथिली विहनि कथा संग्रह अछि। मुदा जौं साहित्यक सकल अवधारणा वा विधाक बिम्बित छायाक चर्च कएल जाए तँ श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखित विहनि कथा संग्रह ''तरेगन'' मैथिली साहित्यक प्रथम सम्पूर्ण विहनि कथा मानल जाएत। ऐ पोथीमे एक सएसँ बेसी विहनि कथा देल अछि।

छोट-छोट ताराकेँ मैथिलीमे ''तरेगन'' कहल जाइत अछि। रातिमे चित भऽ कऽ वसुन्धरापर लेटि स्वतंत्र गगनकेँ दिव्यदर्शन केलापर तरेगनक समूह सबहक मध्य स्थापित सम्बन्धकेँ देखल जा सकैत छै। लगैत अछि जे एक तरेगन दोसर तारासँ सटल छै मुदा विज्ञानक अनुसंधानसँ ई स्पष्ट भऽ सकल जे अकाशक तरेगनक समूहक बीचक दूरी पृथ्वी आ अकासक बीचक दूरीसँ बेसी छै। ओहिना ऐ कथा संग्रहमे लिखित सभटा कथा एक दोसरसँ सटल रहितो एक-दोसरसँ बहुत दूर अछि। न्याय, कर्म, मीमांसा, नीति आ बाल मनोविज्ञान सन बिम्बकेँ अनचोकेमे जगदीशजी एक संग बान्हि देलनि।

मैथिलीमे नैतिक शिक्षाक अभावकेँ तरेगन बहुत हद धरि पूर्ण करबाक प्रयास कएलक।

मूल रूपसँ ई संग्रह नेना सभले लिखल गेल अछि मुदा पैघो लोक जौं ऐ सिद्धान्तक अनुपालन करथि तँ समाजक विगलित मनोवृत्तिक रूपमे परिवर्त्तन अवश्यंभावी अछि। कोनो पोथीक समीक्षात्मक विवरणमे सम्पूर्ण रचनाक चित्रण करब अनिवार्य नै मुदा रचनाक समाजमे प्रभावक दर्शन कराएब वांछित होइत छै।

सम्पूर्ण पोथीक अवलोकन केलापर एकरा मात्र नेना-भुटकाक कथा संग्रह नै मानल जा सकैत। कथा -उत्थान पतन- मे नीति शिक्षा नेना भुटकाक संग-संग गृहस्थधर्मी लोक लेल प्रेरणादायी लागल। संयम जीवन जीबाक कलासँ धर्म, अर्थ, काम आ मोक्षक अवलंबन सहज होइत अछि। -प्रतिभा- मे डॉ. राममनोहर लोहियाक माध्यमसँ जगदीशजी ज्ञान आ समैक मध्य तारतम्य स्थापित करबाक प्रयास केलनि। ऐ कथाकेँ मौलिक रचना (Creative writing) नै मानल जा सकैत अछि, किएत तँ कोनो महापुरुषक जीवन शैलीक चर्च कोनो पोथी पढ़ि कऽ कएल गेल अछि। मुदा नीक लागल जे जगदीश प्रसाद मण्डलजी साम्यवादी प्रवृत्तिक मनुख छथि आ लोहिया समाजवादी छला। ओना तँ समाजवादेसँ साम्यवादी धाराक परिकल्पना कएल जा सकैत, परंच सैद्धान्तिक रूपसँ भारत बर्खमे दुहू राजनैतिक धारामे विलग नीति अछि। अपन अध्ययनशीलतासँ सम्पूर्ण मानव जातिकेँ एकसूत्रमे बान्हबाक जगदीशजी प्रयास कऽ रहल छथि। मर्म कथाक बिम्ब पढ़लासँ स्वामी विवेकानंदक सरल राजयोगक सिद्धान्तक दर्शन होइत अछि। हेलैक कलासँ सांसारिक जीवन जीबाक तुलना, वैभवक कुप्रभावक छोट मुदा विशेषार्थ प्रस्तुति नीति अनुपालनमे सफल प्रयास कहल जाए। अज्ञ नीक नै तँ खराब सेहो नै, सर्वज्ञ कियो नै भऽ सकैत अछि बहुज्ञ समाजक पथ प्रदर्शक परंच अल्पज्ञ जेकरा देसिल बयनामे ''अधखड्डुआ'' कहल जाइत अछि ओ समाजक विकासमे बाधक होइत छथि।

अंग्रेजी साहित्यक प्रखर हास्य रचनाकार सर एलेक्जेंडर पोप सेहो कहने छथि- little knowledge is a dangerous thing. अर्थात् अर्द्धज्ञान बड़ खतरनाक वस्तु होइत छै। पहिने तप तखनि ढलिहैँ- शीर्षक

कथामे कुम्हारक आचार्य रूपक आ माटिकेँ शिष्य मानि नैतिक विश्लेषण नीक लागल। नीति-धर्म आ शैक्षणिक दर्शनसँ भरल दोहासँ ऐ कथाक तुलना अपेक्षित भऽ सकैत-

गुरुवार कुम्हार शिश कुम्ह है, गढ़ि-गढ़ि काढ़े खोट
अंतर हाथ सहार दे, बाहर मारे चोट।

ऐ प्रसंगमे ज्ञानपीठ पुरस्कारसँ पुरस्कृत हिन्दी साहित्यक प्रांजल कवि श्री नरेश मेहताक कविता -मृत्तिका-क चर्च करब अनुकूल लागल। नरेश जीक रचनाक अनुसार माटि कहै छथि- हम तँ मात्र माटि छी, जखनि अहाँ अपन चरणसँ पददलित करै छी आ हऽरक फाढ़सँ चीड़ दइ छी तखनि हमरामे मातृत्वक बोध होइत अछि आ मातृत्वक प्रेरणा आ संसर्गसँ शस्य श्यामला धन धान्य अन्न हरियरीक रूपेँ संसारकेँ जीवन प्रदान करैत अछि।

कर्मपथपर क्रियाशील मनुख लेल कालक आ प्रहरक कोनो बान्ह नै होइत छै। -जखने जागी तखने परात- शीर्षक लघुकथामे डॉ. क्रोनिनक जीवन दर्शनक माध्यमसँ रचनाकार नेना-भुटकामे काकचेष्टा आ श्वान निद्राक झाँपल दर्शन करबैले आतूर छथि। जे बेकती सत्य कर्मी होइत छथि ओ सदिखन सत्यकेँ जितबैले प्रयास करै छथि। महाभारतक कथाक गर्भसँ एहेन कालजयी बिम्बकेँ निकालि कऽ -उग्रधारा- कथाक रूप देबाक कलासँ जगदीश जीकेँ हंस मानल जा सकैत अछि। जेना हंस नीर दुग्ध मिश्रणमे सँ क्षीरकेँ सोँटि लैत अछि आ नीर पात्रेमे रहि जाइत ठीक ओहिना महाभारतक सम्पूर्ण कथा बिम्बकेँ नीर, अमिय आ मधु मानल नै जा सकैत अछि। अर्जुनकेँ विजयी बनबैले श्रीकृष्ण अपन पाँजरपर हनुमानक अगम देह भारकेँ रोकि "भारत"केँ विजयी बनौलनि। ई कथा छात्रक संग-संग शिक्षक लेल अनुकरणीय अछि। बेवहारिक, समर्पण, देवता, पाप आ पुण्य शीर्षक कथामे उदयनाचार्यक न्याय कुसुमांजलिक क्षणिक स्पर्शक अनुभव बुझना गेल।

अढ़ाइ आखरक शब्द प्रेमक रूप वास्तविक जीवनमे अर्थनीतिक आहिमे अप्रासंगिक भऽ गेल हुअए मुदा रचनामे अखनि धरि जीवित अछि। हिन्दी साहित्यमे प्रेमचन्द्र रचित कथा ईदगाह, नागार्जुन रचित कविता गुलाबी चूड़ियाँ आ माखनलाल चतुर्वेदी रचित कविता प्रेमकेँ पढ़ि कऽ तिरपित होइत तँ छेलौं परंच हरिवंश राय बच्चन जीक आ रही रवि की सवारी अंतिम पद्य मोन

पड़िते क्षणहिंमे अकुला जाइ छेलौं जे हिन्दी विजयी भऽ रहल छथि सूर्यक समान मुदा मैथिली उषाकालक चन्द्रमा सन झँपा रहली। जगदीश जीक प्रेम पढ़ि गुमानक अनुभव भऽ रहल अछि जे हमरा सभक भाषामे ऐ बिम्बपर जे कथा लिखल गेल अछि ओ केतए-केतए आन भाषामे भेटत, हेरबाक चाही? ओना ई कथा मौलिक रचना नै भऽ कऽ अंग्रजीक प्रख्यात लेखक ओ. हेनरीक एकटा कथापर आधारित अछि।

श्रमक सम्मान तखनि भऽ सकैत अछि जखनि श्रमजीवी सम्मानित कएल जाथि। वंश, तियाग, सद्विचार, साहस, बरदास्त, भूल, धैर्य, मनुखक मूल्य, मेहनतक दरद सन भाववाचक संज्ञाक दर्शन मात्र दार्शनिके कऽ सकै छथि मुदा ऐ पोथीमे पाठक सेहो ई देखि सकै छथि।

एकाग्रता छात्र जीवनक धरोहरि होइत अछि। भाषण तँ सभ कियो दऽ सकै छथि मुदा पाँच पाँति लिखबाक कला केतेक लोकमे छन्हि। हमरा बिसवास अछि जे एकाग्रचित बिम्बकेँ रचनाकार पढ़थु, मतिभ्रम दूर भऽ जेतनि। अनुभव, सौन्दर्य, धर्म, आत्मबल सन मौन विषएकेँ कथाक रूपमे बिम्बित करब असंभव तँ नै मुदा आश्चर्यजनक। समाजमे क्रांतिक दीप प्रज्वलित करैले नेना-भुटकामे क्रांतिदीप जराएब आवश्यक अछि। ऐ लेल समाजक कुप्रथाक गर्भावलोकन करेबाक प्रयास प्रासंगिक मुदा केतेक रचनाकार मैथिली साहित्यमे ई काज केलनि। विधवा बिआह, देश सेवाक व्रत, नारीक सम्मान, सादा जीवन, पत्नीक अधिकार, जाति नै पानि शीर्षक कथा सभकेँ बाल मनोविज्ञानक मौलिक कथा मानल जाए।

निष्कर्षत: जीवनकेँ जीवन्त बनबैले जेतेक प्रकारक तारत्म्य हेबाक चाही जगदीशजी ओइ सभ बिम्बकेँ बिम्बित केलनि। ऐ पोथीमे दर्शनक सभ विधाक सरल भाषामे चित्रण केलनि। खटकल तँ मात्र एक अर्थमे जे बाल मनोविज्ञानक विकास करैले जे सरस विश्लेषण हेबाक चाही ओ ऐ पोथीमे नै देल गेल। गरीबक दीनतामे हास्यक समागम सेहो होइत अछि। बाल साहित्यमे दर्शनक विश्लेषणमे केतौ-केतौ रीति आ प्रीतिकेँ हास्य रससँ बोरबाक चाही। पंडित हरिमोहन झा तँ विहनि कथा नै लिखलनि मुदा हुनक जे गद्य साहित्य उपलब्ध अछि ओइ सभमे दर्शनक बिम्बपर हास्य आ श्रृंगारक माखन चढ़ल भेटैत अछि। जगदीश जीक रचना तँ अनुशासित होइत छन्हि

मुदा तरेगन मे बाल मनोविज्ञानक सरल प्रस्तुति करितो कनेक चूकि गेल छथि। एक अर्थमे ई पोथी मैथिली साहित्य लेल पथ प्रदर्शक पोथी अछि, तँए जगदीश प्रसाद मण्डलजी प्रशंसाक पात्र छथि। सम्पूर्ण पोथीक अर्न्तदर्शन लेल योग्य आचार्यक, जिनकामे अनुशासनक संग-संग संतुलित अनुशीलन हुअए, अनिवार्यता प्रतीत होइत अछि। निष्कर्ष रूपेँ मैथिली भाषा-साहित्यमे तरेगन कें बेछप्प नैतिक शिक्षाप्रद रचना मानल जाए। बालकथाक वास्तविक रूप अछि जे रचनाकारकेँ प्रश्नसँ बेसी समाधानपर धियान देबाक चाही। ऐ पोथीमे सभसँ नीक लागल जे रचनाकार प्रश्न ठाढ़े नै केलनि।



पोथीक नाओं- तरेगन
विधा- बाल प्रेरक कथा संग्रह
रचनाकार- जगदीश प्रसाद मण्डल
प्रकाशक- श्रुति प्रकाशन, दिल्ली
पोथी प्रप्ति स्थान- पल्लवी डिस्ट्रीब्यूटर्स, निर्मली (सुपौल)
प्रकाशन बर्ख- २०१०
दाम- १००टाका मात्र

१४.
गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा

किछु अर्थमे सन् २००८ कें मैथिली साहित्यक विकास लेल क्रांतिकाल मानल जा सकैत अछि। सन् २००८ई.मे मैथिली साहित्यमे एक गोट बाल साहित्यक रचना मैथिलीक प्रवीण समीक्षक श्री तारानंद वियोगीजी केलनि पोथीक नाओं- ई भेटल तँ की भेटल। साहित्य अकादेमी द्वारा नव सृजित बाल साहित्य पुरस्कारसँ ऐ पोथीकेँ पुरस्कृत कएल गेल अछि। जौं किछु बर्ख पूर्बमे साहित्य अकादेमी ऐ पुरस्कारकेँ स्थापित करितए तँ भऽ सकै छल जे मैथिलीक स्थान रिक्त रहितए किएक तँ कोनो-कोनो बर्खमे मैथिली साहित्यमे बाल साहित्यक रचना भेले नै छल। सन २००९ई.मे मैथिलीमे कोनो महिला रचनाकार द्वारा पहिल नाटक लिखल गेल। रचनाकार छथि मैथिलीक प्रसिद्ध साहित्यकार श्रीमती विभा रानी आ नाटकक नाओं- भाग रौ आ बलचन्दा। हर्खक गप जे ऐ नाटकमे बाल आ नारी मनोविज्ञानकेँ बिम्वित कएल गेल अछि। ओना तँ श्रीमती इलारानी सिंह सेहो नाटक लिखने छथि मुदा ओ सृजनात्मक नै भऽ कऽ अनुदित अछि। तँए श्रीमती विभारानीकेँ मैथिली साहित्यक पहिल महिला नाटककार मानल जा सकैत अछि। ओना श्रीमती उषा किरण खान लिखित -भुसकौल वाला- पहिने छपल। क्रांतिक दीप कोनो योजना बना कऽ नै जरौल जा सकैत अछि। एकर प्रत्यक्ष प्रमाण मैथिलीमे पहिल चित्रकथा- गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा प्रस्तुत करैत अछि। ऐ चित्रकथाक सृजन श्रीमती प्रीति ठाकुर केलनि। प्रीति जीक नाओं ऐ चित्रकथाक लेखनसँ पूर्ब कोनो साहित्य वा चित्रांकनमे झाँपल जकाँ छल। पहिलुक रचना आ ओहो मैथिली साहित्य लेल आदि विषए मूलक। भारतीय संविधानक आठम अनुसूचीमे रहितो हम सभ केतौ-केतौ गुम्म छेलौं। प्रवर भाषा समूहक भाषा मैथिलीमे किछु रचनाक वर्ग अछूत छल। आश्चर्य लागल संगे विस्मित भेलौं जे हमरा समाजक एकटा महिला ऐ नवल विषएपर केना केन्द्रित भऽ गेली?

ऐ चित्रकथामे सम्पूर्ण मिथिलाक संस्कृतिकेँ बिम्बित करैत जनश्रुति आ ऐतिहासिक कथाक १६गोट खंडपर चित्रकथा प्रस्तुत कएल गेल। पहिल नौ

गोट कथा गोनू झाक करनीपर लिखल गेल अछि। गोनू झा कोनो अनचिनहार नाओ नै। मुगल दरबारमे जे स्थान वीरबलकेँ भेटल अछि मिथिलाक बाक्-पटुमे ओ स्थान गोनू झाकेँ देल गेल। गोनू विदूषक छला मुदा केकरो महिमामंडित मात्र करैबला विदूषक नै। अपन बुधि आ चातुर्यसँ केकरो विस्मित करबाक कारणेँ हिनक कोनो जोड़ नै। दुर्भाग्य जे गोनू मैथिल छला जौँ अंग्रेज वा कोनो आन पाश्चात्य देशक रहितथि तँ वीरबलसँ हिनक तुलना नै भऽ कऽ वीरबलक तुलना हिनकासँ कएल जाइत। हिनक ई दुर्भाग्य हमरा सबहक लेल सौभाग्य भेल जे ऐ मिथिलाक भूमिपर महाकवि विद्यापति, गोनू आ राजा सलहेस सन महामानवसँ हमरा सभकेँ आन लोक जनैत अछि।

ऐ पोथीमे संकलित पहिल चित्रकथा गोनूझा आ माँ दुर्गाजीसँ गोनू झाक बौद्धिक साक्षात्कारक चर्च कएल गेल अछि। ऐ कथाकेँ तँ ऐतिहासिक मान्यता नै देल जा सकैत अछि किएक तँ इतिहास आ विज्ञानमे भगवान मात्र प्रकृतिस्थ होइत छथि, कोनो वैधानिक नै। मुदा जौँ भावक शतदलक संग देखल जाए तँ नेना-भुटका लेल ई प्रश्नसँ भरल कथा जिज्ञासा अबस्स उत्पन्न कराएत जइसँ अंतत: मैथिली साहित्य आ भाखा लेल लाभ स्वाभाविक मानल जा सकैत। चित्रक स्तर तँ नीक, रंग-नीक प्रदर्शन नीक मुदा सिंहक चित्र विलाड़ि जकाँ लागल। कोनो राजदरबार हुअए वा कोनो पितृ आ देव कर्मक स्थल, ब्राह्मणक संग-संग ठाकुर अर्थात् हजामक भूमिका आन लोकसँ बेसी मानल जाइत अछि। ''गोनू झा आ स्वर्गकथा''मे एकटा ठाकुर गोनूकेँ पछाड़ए चाहै छथि मुदा स्वयं चित्त। छोट चित्रकथामे नीक चुटुक्का जकाँ प्रस्तुति।

गोनू झासँ सम्बन्धित आन सात गोट कथा सेहो चोहटगर देल गेल अछि। जनश्रुतिक आधारपर लिखल गेल कथा सभ मात्र बालमनोविज्ञानक सेहंतित छायाचित्र प्रस्तुत करैत अछि किएक तँ लिखलो मात्र नेना भुटका लेल गेल अछि।

रेशमा चूहड़मल कथा ऐतिहासिक कथा छी। भऽ सकैत अछि आर्यावर्त्तक इतिहासकार एकरा मान्यता नै देथु मुदा मिथिलाक गाम-गाममे चर्चित अछि।

दूधवंशी जातिसँ यदुवंशक तादात्म्य होइ छै मुदा ऐ साहित्यक चूहड़मल

दुग्धवंशी दुसाध छथि आ नायिका रेशमा भूमिहार ब्राह्मण। नीक लागल जे मोकामाघाटक कथाक सृजन करैमे पूर्णियाक वणिता आ मधुबनीक पुत्रवधूकेँ कोनो संकोच नै भेलनि। सिनेहकेँ समाजक जातीय बेवस्थामे पददलित करबाक दृष्टिकोणकेँ ऐ चित्रकथामे तोड़ल गेल अछि।

नैका बनिजारा कथापर डॉ. मणिपद्म जीक लेखनी मैथिलीमे सन १९७३ई.मे फुजि गेल अछि तँए ऐ कथासँ लोकजन सभ निश्चित परिचित छथि। प्रवेशिका स्तरपर मणिपद्म जीक ई कथा मैथिलीमे देल गेल छल। ऐ पोथीमे सरल भाषा आ बालोनुरागी चित्रांकन नीक लगैत अछि। भगता जोगिन पँजियारक चित्रांकन सेहो नीक रूपेँ बिम्वित कएल गेल अछि। प्राचीन जनश्रुतिक लुप्त कथा महुआ घटवारिन आ छेछन महाराज पढ़ि आ एकर चित्रांकन देखि नवका पिरहीक नेना भुटका सभ निश्चित रूपसँ मिथिलाक संस्कृतिक कोखिमे प्रवेश करबाक प्रयास करतथि।

राजा सलहेस सन चराचर चर्चित विषए-वस्तुक छायांकन आ कालिदासकेँ मिथिलाक संस्कारसँ सम्बन्धक प्रदर्शन मनोवांक्षित लागल।

निष्कर्षत: प्रीति जीक नव प्रयास नवल सोच आ बहुआयामी विषए-वस्तुक प्रस्तुति सराहनीय अछि। मैथिली साहित्यमे नव प्रकारक रचना छी गोनू आ आन चित्रकथा तँए सम्यक् समीक्षा करब हम उचित बुझै छी।

श्रुति प्रकाशनक समग्र दल धैनवादक पात्र छथि जे मैथिलीमे जौं पहिल चित्रकथाक नाओं- गोनू आ आन मैथिली चित्रकथा अछि तँ प्रकाशक श्रुति प्रकाशन।



१५.

हम पुछैत छी- कविता संग्रह (विनीत उत्पल)- समीक्षा

एकैसम शताब्दीक दशांशक परिसमाप्तिक अवलोकन केलापर परिणाम भेटल जे ऐ अवधिमे किछु एहेन तरूण रचनाकारक पदार्पण मैथिली साहित्यमे भेल जनिक रचना सभसँ हमर साहित्य पुलकित भऽ रहल अछि। श्री गजेन्द्र ठाकुर ऐ अत्याधुनिक पिरही लेल पथ प्रदर्शक छथि, जनिक कुशल नेतृत्वमे श्री विनीत उत्पल, श्री उमेश मण्डल, श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरी, श्रीमती प्रीति झा ठाकुर सन रचनाकारक मंडली मैथिलीकेँ नवल ज्योति प्रदान कऽ रहल छथि।

सन २००९ई.मे विनीत उत्पल जीक पहिल कविता संग्रह ‘‘हम पुछैत छी’’ श्रुति प्रकाशनक सौजन्यसँ प्रकाशित भेल। विनीत जीक जन्म मधेपुरा जिलाक आनंदपुरा गाममे भेल। प्रारंभिक शिक्षा दीक्षा मुंगेर आ स्नातक भागलपुरमे। व्यावसायिक पाठ्यक्रम नई दिल्लीसँ प्राप्त कऽ सम्प्रति राष्ट्रीय सहारा नोएडामे वरिष्ठ उपसंपादक छथि। मैथिली-मिथिलाक सांस्कृतिक गति विधि आ अभिबेक्तीक समायोजनक आधारपर दरिभंगा आ सहरसाकेँ मुख्य केन्द्र भूमि मानल जाइत अछि। दरिभंगा जिलासँ विभक्त भेलापर उपेक्षाक जे दंश समस्तीपुर जिला वासीकेँ भेटलनि, वएह दंश मधेपुराक लोक सेहो अनुभव कऽ रहल छथि। कविक जनम मधेपुरामे आ प्रारंभिक शिक्षा अंग प्रदेशमे, परंच कविता सभ खाँटी मैथिलीमे, अजगुत तँ अबस्स लागल मुदा विनीत जीक मातृभाषानुरागसँ तीत-भीज गेलौं।

ऐ कविता संग्रहक भूमिका सिद्धहस्त साहित्यकार श्री गंगेश गुंजनजी ‘‘कविक आत्मोक्ति : कविताक अएना’’ शीर्षक दऽ लिखने छथि। गुंजन जीक बेक्तीत्व आ कृतित्व मैथिली साहित्य लेल कालजयी मुदा कविक आत्मोक्तिक विवेचनमे श्री गुंजनक लेखनी कनेक कंजूस बनि कऽ रहि गेल। हमरा मतेँ कोनो नवतुरिया रचनाकारकेँ हृदैसँ प्रोत्साहित करबाक चाही। ओह्रूमे जै भाषामे पाठकक संख्या लगातार घटि रहल हुअए।

पचास कविताक संग्रहमे पहिल कविता ‘‘ककर गलती’’ विधवाक अवस्थापर बेथित कविक लेखनी मैथिली वर्गक तथाकथित आगाँक जातिक मध्य प्रश्न

ठाढ़ करैत अछि। ठोप, चानन आ पाग मैथिलक सवर्ण समाजमे पुरुष कतेको बेर धारण कऽ सकै छथि मुदा स्त्री तँ अवला...। बिआहक क्षणहिंमे जौं पतिक मृत्यु भऽ जाए तँ जीवन भरि सतीत्वक दंश झेलए पड़तनि। लार्ड विलियम बेंटिक केर सुधारवादी आन्दोलनमे बंगालक ब्राह्मण सुधरि गेला मुदा मैथिल ब्राह्मण अपन सनातन संस्कृतिक रक्षक छथि, अवलाकेँ सबला बनेबामे धर्म नष्ट भऽ जेतनि। नाओं गौरी दाइ मुदा समाज लेल डाकिनी भऽ गेली-

की करती गौरी दाइ
केओ हुनका देवी कहतन्हि
तँ डाइन जोगिन कहवासँ
लोक वेद पाछुओ नै रहतन्हि।

कहैले तँ हमरा सबहक संस्कृतिमे शक्तिक उपासना प्रासंगिक अछि मुदा हम सभ अपने घरक शक्तिकेँ अपमानित आ मर्दित कऽ रहल छी। ‘‘मनुक्खो नै भेल’’ शीर्षक कवितामे भौतिकता आ बौद्धिकताक आड़िमे जीवन अवस्थाक अबेवस्थित रूपक प्रदर्शन नीक लागल-

राति मे घर मे नै रहैत छी
जखनि कि चिड़ै चुनमुनी सेहो
साँझ पड़ैत घर घुरैत अछि।

‘‘की फर्क पड़ैत अछि’’ शीर्षक कविता बौद्ध संस्कृतिक केन्द्र वैशालीसँ तथागतक संदर्भमे लिखल गेल। बिम्ब तँ नीक मुदा विश्लेषण स्पष्ट नै भऽ सकल। सभ पाठक तँ इतिहास विद् आ दार्शनिक नै छथि तँए कविताकेँ उपयुक्त आ पूर्ण नै मानल जा सकैत। विनीत जीकेँ कनेक फरिछा कऽ लिखबाक चाही छल। पहिने समाज दाणवीर कर्णकेँ सुतपुत्र मानै छल जखनि महाबली भऽ गेला तँ सूर्यपुत्र मानल गेला। वास्तविकता जे हुअए मुदा अंग प्रदेशकेँ कर्णक कर्मभूमि मानल जाइत अछि। कविक प्रारंभिक शिक्षा मुंगेरमे भेलनि तँ अपन कर्मभूमिक वर्तमान अवस्थासँ मर्माहित छथि-

दल मलित होइत अछि
अंग प्रदेशक आत्मा
आ बजबैत अछि
तारणहार केँ...।

अंशु

अपन संस्कृतिक रक्षाक तादात्म्यमे हम सभ अनसोहाँत काज सेहो करै छी। धार्मिक आडंम्बरक एकटा प्रमाण अछि- मधुश्रावणी। कहैले तँ ऐ पर्वकेँ मिथिलाक संस्कार पर्व मानल जाइत अछि मुदा वास्तवमे मैथिल ब्राह्मण आ मैथिल कर्ण कायस्थक मध्य मधुश्रावणी पर्व मनौल जाइत अछि। ''परीक्षा'' शीर्षक कविताक माध्यमसँ कवि ऐ पावनिमे पतिव्रताक प्रमाणपत्र-टेमी प्रथापर प्रहार केलनि। पुरुष भेलाक पश्चात् सेहो कवि परीक्षासँ डराइत छथि तखनि नारीकेँ अहिल्या जकाँ बेर-बेर परीक्षा किए लेल जाइत अछि।
''गाम डूबि गेल'' शीर्षक कविता बाढ़िक विनाश लीलाक औसत प्रदर्शन मात्र मानल जा सकैत।
संग्रहक सभसँ कलात्मक आ प्रासंगिक कविता- हम पुछैत छीकेँ मानल जाए। वास्तविक सेहो जे जै कविताक शीर्षककेँ कविता संग्रहक शीर्षक दऽ देल गेल ओइ कवितामे कविक आंतरिक जुआरि अबस्स हेतनि। ऐ कविताक माध्यमसँ कवि समाजक समीक्षा लेल उद्यत छथि। समाजक सभटा व्याधिपर कविक लेखनी स्वच्छन्द भऽ विचरण केलक।
सरिपौं विनीतजी पत्रकार छथि देशकालक दशाक विवेचन नित्य करै छथि तखनि रचना झाँपल केना रहत। ''मनुख आ माल'' एवं ''समाजक ई रूप'' वर्तमान मनुखक ओझराएल मानसिकताकेँ देखबैत अछि। अर्थनीति विलोकित भऽ गेल, भौतिकता समाजकेँ बाँटि रहल अछि, अधिक प्राप्तिक आशमे कुकर्म बढ़ि रहल अछि। एवं प्रकारे ऐ दुनू कविताक दृष्टिकोण नीक लागल। ''मरलाक बाद'' शीर्षक कवितामे दर्शनशास्त्रक अनुभूति होइत अछि। पुष्कर कवितामे भारतीय इतिहास आ अपन संस्कृतिक शीतल बातसँ गौरवान्वित भेलौं।
ऐ कविता संग्रहक सबल पक्ष अछि बिम्बक चयन आ विश्लेषण। भाषा सेहो सरल आ मैथिलीक खाँटी शब्दसँ ओत-प्रोत अछि। मुदा दुर्बल पक्ष भेटल प्रवाहक कमीक रूपमे। कविता आशु कविता हुअए वा अतुकांत- छंदक लेपन आवश्यक होइत छै। ऐ कविता संग्रहमे छंदक समायोजन समुचित रूपेँ नै कएल गेल कोनो-कोनो कविता तँ गद्य जकाँ बुझना गेल। कविकेँ आगाँ ऐ बिन्दुपर धियान राखए पड़तनि। निष्कर्षत: तरूण कविक प्रांजल मुदा प्रवीण प्रस्तुति, विनीत जीकेँ कोटि-कोटि साधुवाद...।



पोथीक नाओं- हम पुछैत छी
प्रकाशक- श्रुति प्रकाशन
मूल्य- १६० टका मात्र
बर्ख- २००९

१६.
समीक्षा-अरिपन (कविता संकलन)

मैथिली भाषा साहित्यमे किछु एहेन रचनाकारक पदार्पण भेल अछि जनिक रचना सभमे बिम्बक धरातल तँ हरियरीसँ पाटल अछि मुदा हुनक नाओं मिथिलाक साहित्यिक पृष्ठभूमिसँ कात लागल रहल। एहेन रचनाकारक समूहमे सँ एकटा नाओं डॉ. नरेश कुमार 'विकल' केर सेहो लेल जा सकैत।

विकल जीक शिक्षाक क्षेत्र मैथिली आ राजभाषा हिन्दी रहल मैथिलीक प्राध्यापक छथि, तँए रज-कणमे मातृभाषाक प्रति सिनेह स्वाभाविक। सन पचासमे जनम नेनिहार विकलजी अपन गामसँ लऽ कऽ सम्पूर्ण समस्तीपुर जिलामे मिथिला मैथिली लेल संघर्षरत छथि। मंच उद्घोषक आ गायक रहबाक संग-संग आशु गीतकार बनि छात्र जीवनसँ लगातार लिखि रहल छथि। सन् सत्तर-अस्सीक मध्य मिथिला मिहिरमे हिनक केतेक रास कविता प्रकाशित भेल अछि। हिनक लिखबाक कलाक सभसँ पैघ विशेषता रहल जे मिथिलाक माटि-पानिसँ सम्बन्धित रचनाक संग-संग बाल साहित्यपर अपन लेखनीक खुलि कऽ प्रयोग केलनि। ओना तँ मैथिलीक संग हिन्दीमे हिनक बहुत रास पोथीक प्रकाशन भेल अछि मुदा 'अरिपन' हिनक पहिल चर्चित काव्य संकलन छी जइमे १९८३ई.सँ पूर्ब धरिक लिखल हिनक ४५गोट पद्य संकलित अछि।

ऐ पोथीक पहिल पद्य 'अर्चना'मे एकटा बालकक अपन मातृक प्रति सिनेहकेँ बिम्ब बनौल गेल अछि। 'निष्ठुर करेज तोहर हमहूँ जनै छी'मे अवोधकेँ अपन माएसँ आक्रोश अछि। बिम्बक विश्लेषण सामान्य जनभाषामे कएल गेल। 'अपन पान आ मखान' कवितामे पाश्चात्य संस्कृतिसँ अपन गामक तुलना नीक बुझना जाइत अछि। 'वसल मिथिला छै सीताक परानमे' काव्यक विनोदी प्रवृति की अपन वास्तविक अवस्थाकेँ झाँपि सकत? एक दिस ऐ कवितामे मातृभूमिकेँ सभसँ ऊँच देखएबाक प्रयास तँ दोसर दिस 'वसन्त उपहार केतए अछि'मे हृदैमे पछबाक तप्त वायुक समावेशमे वसन्तक प्रयोजनमे मर्मक दर्शन भेल। एक्के बेक्तीमे क्षणहिंमे सिनेह आ क्षणहिंमे छोह?

वास्तविक जीवनमे हुअए वा नै परंच कविक चंचल मनमे एना सभ भऽ सकैत अछि। 'नहलापर अछि दहला' शीर्षक कविता बाल साहित्य आ बाल मनोविज्ञानक मनोहारी दृश्य प्रस्तुत करैत अछि। ऐ कविताक आखर-आखरमे झाँपल बिम्बकेँ नेना-भुटका बूझि सकै छथि, किएक तँ भाषा अत्यन्त सरल। मुदा ऐ कवितामे आशुत्वक प्रवेशक प्रयास आ स्वर सरगमकेँ साक्ष्य बनबैले बिम्बकेँ विस्मित कएल गेल अछि। जइसँ कविताक स्तर कमजोर भऽ गेल। संकलनमे एकटा देल गेल 'गजल' बड़ नीक लागल। गजलकेँ शीर्षकसँ नै बान्हल जा सकैत। मुदा ऐ गजलक विशेष मनोरम बिन्दु अछि जे कवि एकरा एक्के बिम्बमे बन्हबाक सफल प्रयास केलनि।

'संग रहि कऽ ने अहाँ बजै छी किऐ
प्राण वीणाकेँ तारे तोड़ै छी किऐ?

मैथिलीमे ओइ काल धरि ऐ प्रकारक गजलक अभाव जकाँ छल। देशज भाषामे लिखल गेल गजल खूब नीक लागल।

'तोरा लेल' शीर्षक गीतकेँ बाल साहित्यपर सामान्य प्रस्तुति मानल जा सकैत अछि किएक तँ स्वर आबद्ध करबाक क्रममे कवि बिम्बसँ भटकि गेल छथि। 'भागि गेल मिथिलासँ...' शीर्षक कवितामे अपन संस्कृतिपर पाश्चात्य सभ्यताक प्रभावक वर्णन कएल गेल अछि ओ नीक मानल जा सकैत। ' चिहुँकल मन' सपनामे विरह वेदनाकेँ देखबैत अछि।

ऐ संकलनमे देल गेल कवितामे सभसँ नीक कविता 'कोइली' शीर्षक कविताकेँ मानल जा सकैत। ओना तँ 'कोइली'क मधुर स्वर कविकेँ कटाह लगै छन्हि मुदा वास्तवमे कोइलीक स्वर मिथिला-मैथिलीक दयनीय दशाक विवेचन मात्र छी।

सभ दिन सुखमे संग दैत छँ
दु:खमे खाली डोल सन
हमरा आब लगैए कोइली
बाजब तोहर ओल सन।

'बाजि उठल कंगना'मे श्रृंगारक सेज सुक्खल जकाँ बुझना गेल। 'धरतीपर उतरल चान'मे कवि चूड़ामणि मधुपक शब्दक झंकार स्पष्ट देखऽ मे आएल। 'मलार' शीर्षक गीत मूलत: लोकगीक रूपक बुझना गेल। अभिसार पथपर

कुपित बालाक पीड़ा हृदैकेँ झकझोरि दैत अछि-

रूसलौं मलान मुँह भऽ गेलै चानकेँ
पाथरसँ फोड़ू नै फोंका मखानकेँ

कोहबरक दृश्य प्रणय लीलाक द्योतक होइत अछि मुदा ऐ संकलनमे समाहित कोबरक बिम्बपर लिखल दुनू कविता मर्मस्पर्शी अछि। केकरोसँ भेटल पीड़ामे कवि तपल छथि वा आनक बेथाक उद्बोधन करै छथि, ई स्पष्ट नै भऽ सकैत।

एवं प्रकारे विकलजी ऐ पोथीमे गीत गगनक सभ उल्का, सहस्त्रबाढ़नि आ तरेगनकेँ स्पर्श करबाक प्रयास केलनि। जीवनक विविध विधामे पद्य लिखि कऽ गीतक रूप देबाक हिनक प्रयास बहुत हद धरि सफल मानल जा सकैत अछि। मैथिली साहित्यमे सभसँ बेसी दरिद्र विषए छी बाल साहित्यक सृजनशीलता। ओना तँ बहुत रास कवि ऐ विषएपर कविता लिखलनि मुदा भाषा क्लिष्ट तँए बाल पद्य रहितो नेना भुटकासँ दूर रहल। ऐ पोथीमे जे बाल रचना देल गेल ओ सभ सरल आ सुगम्य अछि। तँए हिनक प्रयासकेँ सार्थक बुझबाक चाही। अपन संस्कृति, श्रृंगार आ किछु भक्ति पद्य सेहो नीक लागल। ओना तँ ऐ संकलनकेँ विकलजी 'काव्य संकलन' घोषित केने छथि मुदा कविता कम आ गीत बेसी तँए 'गीत संग्रह' मानव प्रासंगिक हएत। राग आ लयमे आबद्ध करबाक प्रयासमे केतौ-केतौ बिम्बक समुचित विश्लेषण नै भऽ सकल। गीतमे एना होइते अछि, ओना ई सभ गीत एक-कालक नै भऽ कऽ विविध कालमे लिखल कविक रचनाक संकलन मात्र छी तँए एकर महतकेँ कम नै बुझबाक चाही।

हिनक रचनाक वैशिष्ठ्यता अछि भाषा सम्पादनक आड़िमे देशज शब्दकेँ अवरोहित नै कएल गेल।

अधिकांश कवितामे मातृभाषाक लहरि जगमगाइत भेटल, जेना-

पियास मिझा ने सकै छी ककरो
सुखल सोतीक धारा छी
नजरि उठा कियो देखि सकय नै
सांझक एकसर तारा छी'

ऐ प्रकारक रचनासँ साहित्यक सम्यक् समृद्धि हुअए वा नै मुदा भाषाक विकासमे ऐ प्रकारक पोथीक महत अबस्स अछि। एहेन रचनासँ पाठक आ श्रोता नव रूपमे भेटत तँए एकरा प्रासंगिक मानल जा सकैत।

❍❍❍

पोथीक नाओं- अरिपन
रचनाकार- डॉ. नरेश कुमार विकल
प्रकाशक- मिथिला भारती
भगवानपुर देसुआ समस्तीपुर
प्रकाशन बर्ख- १९९४
दाम- १६ टका मात्र

१७.

समीक्षा-बिन बाती दीप जरय

साहित्यक विकास तँ काव्यक विविध श्रेणीक संग-संग गद्यक कांतिसँ होइत अछि मुदा भाषाक विकास तखने संभव भऽ सकैत जखनि ओइमे रसक सेहंतित सुगंध हुअए। रसास्वादन लेल वैरागी साहित्यकार सेहो कखनो-कखनो गीत लिखए लगै छथि किएक तँ गीत मानवकेँ पारिवारिक जीवनमे समाहित विविध समस्यासँ क्षणिक मुक्ति लेल तिलकोर नै तँ चटनीक काज अबस्स करैत अछि। मैथिली साहित्यमे किछु गीतकार एहेन भेल छथि जनिक लेखन कलाक समुचित विवेचन नै भऽ सकल, किएक तँ ओ सभ गीतकार संग-संग गायक वा मंच उद्घोषक सेहो रहला तँए समीक्षक लोकनिक दृष्टिमे हुनक प्रतिभा मात्र गबैया जकाँ रहि गेल। जखनि की जे श्रोता वा पाठक हुनका सबहक गीतक आनंद उठौने छथि, वएह व्याख्या कऽ सकै छथि जे हिनका लोकनिक गीतसँ मिथिला-मैथिलीकेँ की-की भेटल? ऐ गीत गगनक चन्द्र-तरेगनक समूहमे रवीन्द्र नाथ ठाकुर, चन्द्रमणि, प्रदीप मैथिलीपुत्र, श्यामल सुमन, अरविन्द अक्कू, चन्द्रशेखर कामति, रामदेव प्रसाद मण्डल झाड़ूदार, रामसूरत दास, रामपुनीत ठाकुर तरुण, परमानन्द प्रभाकर, जयप्रकाश चौधरी जनक, नवलजी, सियाराम झा सरस, चन्द्रभानु सिंह, कमलाकांत, कालीकान्त झा बूच'क संग-संग डॉ. नरेश कुमार विकल जीक नाओं देल जा सकैत अछि। आन ऊपर लिखित गीतकार जकाँ विकल जीक गीतमे केतौ फूहड़ वा अभद्र भाषाक प्रयोग नै। श्रृंगार, विरह, हास्य, अर्थनीति, बाल साहित्य आ गजल सन बहुआयामी गीतक विधामे विकलजी सिद्धस्त छथि। शुद्ध देशज वा देसिल वयनामे लोकधुनकेँ स्पर्श करैत हिनक गीत संग्रह- बिन वाती दीप जरय- सन् २००१ई.मे प्रकाशन संस्थान नई दिल्लीसँ प्रकाशित भेल।

ओना तँ ऐ पोथीक आमुखमे डॉ. हरिवंश तरूणजी एकरा काव्य कृति लिखने छथि मुदा वास्तवमे ई गीत संग्रह छी। सभ प्रकारक सुवासित गंधक संग-संग करूणा, वेदना, समाजक विषए दशाकेँ गीतक बिम्बमे सरिया कऽ विकलजी ५१गोट गीतकेँ पोथीक रूप देने छथि। प्रथमं ग्रासे मक्षिका

पात्रम' सभसँ पहिलुक गीत वेदनासँ ओत-प्रोत नीक लागल। पहिल पद्य 'चुमलौं सभ दिनकाँट'क बिम्ब विचार मूलक अछि, छंद आरोही आ धुन लोक धुन संग-संग गेय। संग्रहक अंतिम पद्य वसंत मुदा पहिल वेदना। भऽ सकैत अछि अपन बेथित रूपकेँ प्रथमत: ज्वलित कऽ शनै-शनै: रसक क्षीर सागरमे पाठककेँ सराबोरि करबाक हिनक योजना हुअए मुदा हमरा मतेँ ऐ गीत संग्रहक पहिल गीत आनंदित करैबला हेबाक चाही। दोसर गीत- सूखल सिनेहक स्त्रोत' सेहो करूण रससँ भल अछि।

अन्तर्मन अतृप्त ज्वार सभ
सरित स्त्रोत केर बात कहाँ
श्याम सघन घन घुमड़ि रहल छी,
होइछ मुदा बरसात कहाँ!

गीतकार कोन पीड़ासँ उद्वेलित मुदा गुम्म छथि? पद्यसँ स्पष्ट होइत अछि जे ओ अत्यन्त भावुक छथि। कहलो गेल अछि गद्यकार अपन जीवनक रूपकेँ झाँपि सकै छथि मुदा कवि नै। कविक कविता हुअए वा गीत प्रबुद्ध पाठक कविक मोनक उद्वेग आ हृदयक जुआरिकेँ हुनक पद्यमे स्पष्ट ध्वनित सुनि सकै छथि। झरकि रहल मन' आ उसठल फागमे सेहो वेदनाक ध्वनि मार्मिक अछि मुदा कलुषित नै। दोहा गीत'मे गीतकारक वेदना स्वयंसँ उपटि कऽ समाजक आ देशक कालगतिक आड़िमे परिवर्तित मानसिकताकेँ स्पष्ट करैत अछि-

उड़न खटोला खाट बनि, रहल भूमिपर सूति।
सत्ते कहय जे कालपर, चलयने ककरो जूति।

'उनटा वसात' शीर्षक पद्यमे बिम्ब विश्लेषण तँ नीक बुझना जाइत मुदा शीर्षक कनेक अनसोहाँत लागल। बसात कखनो उनटा नै बहैत अछि, मनुखक बेक्तिगत जीवनमे सुख: दुखक उद्भव आ इतिश्री इहलौकिक होइत मुदा बसात तँ शास्वत होइत तँए अपन वैयक्तिक दु:खक दोष प्रकृतिपर नै देबाक चाही मुदा कविक मन मार्मिक आ चंचल होइत आ संग-संग विकलजी आशु कवि छथि तँए हिनक दोषारोपणक भाव क्षम्य। ऐ पद्यक पाँति-पाँतिमे स्वातीक बूनक आशमे सितुआक टकटकी तृप्तिक जुआरि बड़ नीक लागल-

पुरैनक पातपर छी ओंघराएल

ने तन सुगबुगायल ने मन उजबुजाएल।

'अगिआयल सख सेहन्ता, मोनक पीर नीर बनि आएल, नोर सनल जिनगी सबहक बिम्ब सामान्य लागल। ओना तँ गीत-गजलमे बिम्बक प्रधानता नै होइत अछि किएक तँ ध्वनि, राग आ छन्दक समंजनमे रचनाकार बान्हल रहै छथि तँए सुधि प्रभंजित हेबाक संभावना अधिक।

ऐ संग्रहमे दूटा बसंत गीत देल गेल मुदा दुनू नीक मानल जा सकैत अछि। पहिल बसंत गीतमे बेथाक पराभवसँ सिनेह निकसैत अछि तँ दोसरमे सुखक दुग्धमे अमृतक बून्न स्वत: टपकि रहल। वास्तवमे पद्यक रूप ऐ प्रकारक हेबाक चाही।

ऐ संग्रहमे जे सभसँ नीक गीत देल गेल अछि ओ छी-

प्रोषित पतिका'। दू तीन बेर समस्तीपुरमे विविध काव्य संध्यामे विकलजीक मुखसँ ऐ गीतक गायन सुनने छेलौं। सन २००१ई.मे समस्तीपुरमे साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित- काव्यसंध्या'मे ई गीत बड़ लोकप्रिय भेल छल-

पहुना कहुना कऽ चलि आउ अपन गाम।
आब ने रहि गेलै तेहन आसाम।

ऐ गीतक माध्यमसँ गीतकार पड़ाइनवादक प्रबल विरोध करै छथि। अप्पन घरक नोन-रोटी आन ठामक मलपूआसँ बेसी नीक किएक तँ आन लोक हमरा सबहक बेथाकेँ नै बुझै छथि। जइ कालमे विकलजी ऐ गीतक रचना केने छला ओइ काल आसाममे बिहारी लोक सभकेँ बहुत पीड़ित कएल जाइ छल। ओना तँ अखनो स्थिति वएह आब तँ महाराष्ट्रमे सहो स्थिति भयावह भऽ गेल अछि। तँए ऐ प्रसंगमे 'प्रोषित पतिका' गीतक महतकेँ नजरअंदाज नै कएल जा सकैत अछि।

समाजमे पसरल व्यभिचार, भ्रष्टाचारपर आशुगीतकारक लेखनी अनायास नै टपकल, सहैत-सहैत देशकालक दशापर अंतत: 'छद्मबेसी' शीर्षक कविता लिखि अपन गीतकेँ नवल सोचसँ पुलकित कऽ देलनि-

असल रूप परदा केर भीतर
सभ परदा रंगीन छै
देखबामे अछि चिक्कन चुनमुन

करनी नम्बर तीन छै।

देशकालक घोघटकेँ उघारैत समाजक कलुषित रूपपर किछु पद्य जेना अपन गणतंत्र, लतरि रहल विद्रोहक लत्ती, नव प्रभात, राखू बँचा हिमालय, दिल्ली कने सुनू आ न्यूनतम मजदूरी पद्यक बिम्ब आ विवेचन दुनू नीक मानल जा सकैत। समाजक दशापर कविता लिखल जा सकैत अछि गीतक बिम्ब दुष्कर तँए ऐ सभ पद्यकेँ पूर्णत: गीत नै मानल जाए। मुदा छंदक मात्रा संतुलित तँए गेय भऽ सकैत।

ऐ पोथीमे चारि गोट गजल सेहो देल गेल अछि। मैथिली पद्य विधामे हाइकू आ गजल लेखनक अभाव जकाँ अछि। तँए ऐ सभ गजल केर महतकेँ नकारि नै सकै छी-

पसारल छैक परतीमे हमर पथार सन जिनगी,
कहू हम लऽ कऽ की करवै एहेन उधार सन जिनगी...

उपर्युक्त गजलक संग-संग आन दूटा गजलकेँ नीक कहल जा सकैत। गजलक पाँति-पाँतिमे अलग-अलग बिम्ब होइत अछि तँए एकरा शीर्षकसँ आबद्ध करब असंभव आ अनुपयुक्त।

एकटा गजल मूलत: गीत मानल जा सकैत अछि किएक तँ एक्के पाँतिक बेर-बेर प्रयोग कएल गेल। एकरा गजल नै मानल जाए। विकलजी गायक सेहो छथि, एहेन चूकि कोनो भऽ गेलनि।

तन भिजा कऽ मन जराबय,
आबि गेल साओन केर दिन
विरह वेदन तान गाबय,
आबि गेल साओन केर दिन
खोलि कऽ बरसात अप्पन
वस्त्र फेंकल सूर्यपर
चानकेँ सेहो लजाबय,
आबि गेल साओन केर दिन...।

उपर्युक गीतकेँ गजलक रूप देबाक प्रयास कएल गेल मुदा सीमाक उल्लंघन कएल गेल तँए ई गीत अछि गजल नै।

व्याकरणक हिसाबे ई सभ पूर्ण गजल नै मुदा हिनका लोकनिक प्रयाससँ बाट

तँ अबस्स चुनमुन भऽ गेल जेकर परिणाम ई जे वर्तमान मैथिली साहित्यमे विदेह साहित्य आन्दोलनक एकटा अध्याय ''गजल'' रूपेँ साहित्यिक वृक्षकेँ पुष्पाच्छादित कऽ रहल अछि। आशीष अनचिन्हारक नेतृत्वमे वर्तमान पिरहीमे ''नहला पर दहला'' बनि नव-नव गजलकार परिपक्व भऽ रहल छथि जे पद्य विधा लेल अत्यन्त अनिवार्य अछि।

'बेथित हृदए' पद्य, पोथीक शीर्षककेँ स्पर्श करैत अछि-

बाती नेहक जरि ने पावय,
खाहे तिल-तिल देह जरय
बेथा वेदना उर अंतरमे,
दय उपकार करय।

ऐ प्रकारे सभटा पद्यक अपन-अपन महत अछि। केतौ-केतौ त्रुटि सेहो भेटल। गीतकेँ बिम्ब आ स्वरसँ आबद्ध करबाक क्रममे एहेन त्रुटि स्वाभाविक होइत अछि।

अपन तरूण जीवनकालसँ विकलजी गीत, कविताक रचना करै छथि। धैनवादक पात्र छथि जे अखनि धरि नीतिक संग-संग श्रृंगार आ छोहसँ भीजल रचना पाठक धरि पसारैत रहला। पूर्ण तँ कियो नै भऽ सकैत अछि, जखनि पूनमक चानमे सेहो दाग तँ त्रुटि केकरोमे भऽ सकैत अछि।

रचनाक बिम्बमे केतौ-केतौ कमी भेटल मुदा रचनाकार अपन भावकेँ मैथिलीक प्रति श्रद्धेय रखलनि तँए ऐ त्रुटिक व्यापक विवेचन करब प्रासंगिक नै। निश्चित रूपसँ ऐ पद्य संग्रहमे मिथिला मैथिली संस्कृतिक ध्वनिक संग-संग लोकधुन द्रष्टव्य मानल जाए।

पद्य संग्रहक शीर्षक- बिनु वाती दीप जरय'मे रीतिकालक पद्यक रूप झलकैत अछि। वास्तवमे जेना निर्वातमे ध्वनिक गमन संभव नै तहिना बिनु वातीक दीपकक कल्पनो अवांछित मुदा कविक दृष्टकोण रीतिक प्रयोगात्मक अवलम्वन तँए एना संभव भऽ सकल।

❍❍❍

पोथीक नाओं- विनु वाती दीप जरय
रचनाकार- डॉ. नरेश कुमार विकल
प्रकाशक- प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली
मूल्य- ८०टाका मात्र
प्रकाशन बर्ख-

१८.
मैथिलीक विकासमे बाल कविताक योगदान

वाल्यावस्था जीवन रूपी नाटकक प्रथमांक होइत अछि। जौं कोनो नाटकक प्रथम अंक बेवस्थित आ सरल हुअए तँ स्वत: आकर्षणक केन्द्र बनि जाइत। कहलो गेल अछि "Morning shows the day" प्रभातसँ दिवसक पूर्ब आभास स्वभाविक होइत छै। हमरा सबहक लेल सौभाग्यक कथा जे मैथिली सत्व, तम आ रजो गुणसँ ओत प्रोत सरस भाषा मानल जाइ छथि। जीवनक प्रथम पाठशालाक छात्रमे ऐ गुणक समावेश आवश्यक अछि। तँए एहेन पद्यक रचना अनिवार्य जे शैशवसँ नेनपनमे प्रवेश करैबला नेना-भुटकाकेँ मातृ सिनेहसँ तृप्ति कऽ दिए। नेना भुटकाक जीवनमे महाकाव्य, प्रबंध काव्य वा उपन्यासक कोन प्रयोजन? ओ सभ तँ बिनु अन्तर्मस्तिष्कपर दाब देने अपन संसारकेँ जीवन्त राखए चाहै छथि।
वर्त्तमान समैमे सभ्यता आ संस्कृतिक भूमंडलीकरणसँ आर्य परिवारक किछु भाषाक अस्तित्व संकटमे पड़ि गेल अछि। संभवत: ऐ प्रभावसँ सभसँ बेसी मैथिली प्रभावित छथि। हमरा सबहक समाजक रूप इन्द्रजालसँ तेतेक आबद्ध भऽ गेल अछि जे दू गोट भाषाक प्रासंगिकतामे ओझरा रहल छी। गैर हिन्दी भाषा क्षेत्रक लोक तँ अपन मातृभाषाक संग-संग अंग्रेजीकेँ आत्मसात् कऽ रहल छथि। हमरा लोकनि किंकर्त्तव्यविमूढ़ छी जे अंग्रेजी तँ स्वीकार करैए पड़त मुदा हिन्दीकेँ छोड़ि मैथिली केना पढ़ी? वर्तमान पीढ़ी तँ किछु-किछु मैथिलीक लाज रखने छथि मुदा ऐ पिरहीक प्रांजल साहित्यकारक लोकनि अपन करेजपर हाथ रखि कऽ कहथु जे अपन-परिवारक नेना-भुटकामे देसिल वयनाक प्रति निष्ठासँ ज्योति प्रज्जवलित करै छथि? जखनि साहित्यकारक परिवारक ई स्थिति तँ आम मैथिलीक स्थिति केना कहब? दशा तेतेक मर्मस्पर्शी भऽ गेल जे किछु पिरहीक बाद नेना-भुटका पूछत मैथिलीकेँ छलि?

हमरा हिन्दीसँ कोनो पीड़ा नै। बेर-बेर प्रश्न उठैए आ उत्तर सेहो स्वत:स्फूर्त जे हिन्दी राजभाषा छथि मुदा मातृभाषा नै। तखनि मातृभाषक रूपमे एकर प्रयोग किए कएल जा रहल अछि।
ऐ दशा लेल जौं अभिभावक सभ दोषी छथि तँ साहित्यकार सेहो कोनो कम

नै। मैथिली साहित्यमे बाल मनोविज्ञानकेँ स्पर्श करैबला रचना अत्यन्त न्यून। जौं नेना भुटका लेल साहित्य नै तँ ओ साहित्यक मर्मकेँ केना बूझथि?

कहैले तँ ऐ बिम्बपर बहुत रास कवि कविताक रचना केने छथि मुदा प्रथमत: तत्सम् शब्दक रूपेँ बिम्ब विश्लेषण। सभ नेना-भुटका तँ अयाची मिश्रक पुत्र शंकर नै भऽ सकै छथि जे बालोहं जगदानंद...क अर्थ बूझि जेता। जौं तत्सम् नहिओ तँ एहेन रचना जे कवि स्वयं बुझता, समीक्षक दिग्भ्रमित भऽ जाइ छथि तँ नेना ओइ रस सरितामे विचरण करथि प्रश्नवाचक अछि। मैथिलीमे बाल साहित्यक रचनाक न्यूनताकेँ भरैले समीक्षक वा साहित्यक अधिष्ठाता लोकनि नीति सम्वन्धी पद्य आ वंदना सभकेँ बाल साहित्यसँ जोड़ि दइ छथि। हम ऐ दृष्टिकोणकेँ उचित नै मानै छी। बाल कविता तँ एहेन हेबाक चाही जइमे मिथिला-मैथिलीक खाँटी शब्दकेँ बिम्वित कएल गेल हुअए। कोनो आवश्यक नै जे बिम्ब साहित्य रसकेँ छूबैत तात्विक हो, जखनि बाल मन चंचल तँ नीति आ वैराग्यक समावेश अनिवार्य नै। ऐ तरहक रचनामे बाल श्रृंगार अवश्यांभावी छै। जेना कोनो कविक कविताक किछु पँति-

''आम छू अमरौरा छू/ बाबा गाछीक औड़ा छू/ नेनपन बीति गेलै/ ककरा कानमे कहबै कू/'' वा ''सूति रहँ नूनू बिलैया एलौ/ रहू माछ लऽ तोहर भैया एलौ/''

हमरा बुझने ई छी बाल कविताक वास्तविक रूप मुदा अखनि धरि केतए-केतए की-की लिखल गेल ओकर चर्च सेहो आवश्यक अछि। हमर अध्ययनशीलता व्यापक नै, अखनि धरि मैथिली कवि वा कवयित्री लोकनिक रचना सभ बहुत रास नै पढ़ने छी तँए हमर विवेचनकेँ अन्यथा नै लेल जाए। हम वएह कवि वा कवयित्री सबहक चर्च करब जनिक रचनासँ अवगत भेल छी।

नीति सम्बन्धी बाल साहित्यक अन्तर्गत कविवर सीताराम झाक शिक्षा सुधा, जनसीदनजीक नीति पदावली, पंडित वेदानंद झाक रत्नवटुआ अछि प्रमुख अछि। शिक्षा प्रधान बाल साहित्यमे श्री गोविन्दक पाकल आम आ श्री कांचीनाथ झा किरण जीक ''प्रभात'' कविता महतपूर्ण अछि। ओना तँ सुमनजी बाल साहित्यमे किछु छिटफुट तत्सम मिश्रित कविताक रचना केलनि

मुदा शिशु मासिक पत्रिकाक प्रकाशनमे हुनक उल्लेखनीय योगदान अछि जइमे तन्त्रनाथ झाक वानर आ ईशनाथ झाक ''वन्दना'' कविता छपल छल। ओना तँ तन्त्रनाथ झा रचित ''मुसरी झा'' कविता तरूण पाठक लेल लिखल गेल मुदा ऐसँ शिक्षाक मध्य पएर पसारैत नेना सेहो प्रभावित भेल छथि। कवि चूडामणि मधुप तँ श्रृंगार आ विचारमूलक भावनासँ भरल गीतक रचनाकार छथि मुदा हिनक किछु गीत बाल बिम्बसँ ओत-प्रोत नै रहितो तेतेक लोकप्रिय भेल अछि जे मिथिलाक नेना-भुटका चाहे ओ शिक्षित परिवारसँ सम्बन्ध राखथु वा नै स्वत: गबैत अपन कर्मपथपर मिथिलाक गाम-गाममे गतिमान अखनो रहै छथि। ''बटुक आ धीयापूता'' सन पत्र-पत्रिका बाल साहित्यकेँ प्रोत्साहित अबस्स कएलक अछि जइमे सरस कवि ईशनाथ झा, सुमन, किरण, मणिपद्म, यात्री बुद्धिधारी सिंह रमाकर, चन्द्रनाथ मिश्र अमर, श्री धीरेन्द्र सन कविक कविता छपै छल। मिथिला मिहिर निश्चित रूपेँ मैथिलीमे बाल साहित्यक धाराकेँ नवल गति देलक। ऐ पत्रिकाक पैघ विशेषता छल जे नवतुरिया कवि वा कवयित्री सभकेँ सेहो ऐ पत्रिकामे स्थान देल गेल। मिथिलाक गाम-गाममे ऐ पत्रिकाक वितरण बेवस्था छल जइसँ ऐमे छपल रचनाक व्यापक प्रचार-प्रसार भेल। राज दरिभंगा द्वारा स्थापित एवं संरक्षित रहबाक कारणेँ रचनाकारकेँ उपहार वा पारिश्रमिक रूपेँ किछु कैंचा सेहो भेट जाइ छल जइसँ बाल साहित्यक कोन कथा मैथिली साहित्यक सभ विधाक विकासमे मिथिला-मिहिरक योगदान अविस्मरणीय अछि। बाल स्तंभमे अनेकानेक बालोपयोगी कविता संग्रहक दृष्टिएँ डॉ. श्रीकृष्ण मिश्रक अग्रदूत उल्लेखनीय अछि। मैथिली साहित्य मंजरी, मैथिली साहित्य बोध आदि साहित्यक पाठ्यपुस्तकमे सुमनजी, तंत्रनाथ झा, ईशनाथ झा, हरिमोहन झा, आरसी प्रसादजी आ गोविन्द झा सन कविक बालोपयोगी रचना देल गेल अछि।

बाल साहित्यमे व्यापक कवित्वक प्रदर्शन आधुनिक कालक कवि आ कवयित्री पूर्बकालक रचनाकारसँ बेसी केलनि अछि। ऐमे जीवकान्तजी प्रमुख छथि। जीवकान्त जीक तीन गोट बाल कविता संग्रह छपल अछि जइमे गाछ झूल-झूल आ छॉव सोहावनि प्रमुख अछि। हिनक पश्चात् जे कवि ऐ दिशामे क्रियाशील भेल छथि- ओइमे श्रीचन्द्रभानु सिंह, मार्कण्डेय प्रवासी, डॉ. बुद्धिनाथ

मिश्र, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, सियाराम झा सरस, मंत्रेश्वर झा, हंसराज, मायानंद मिश्र, रामलोचन ठाकुर, भीमनाथ झा, कालीकान्त झा बूच, गोपालजी झा गोपेश, डॉ. नरेश कुमार विकल, डॉ. केदारनाथ लाभ, डॉ. इन्द्रकांत झा, रमाकान्त राय रमा, उपेन्द्र ठाकुर मोहन सन स्थापित कविक नाओं प्रमुख अछि।

दुर्भाग्य अछि जे ऐ कवि लोकनिक बाल साहित्यपर कोनो संकलित कविता संग्रह नै भऽ कऽ मात्र किछु छिट-फुट कविता वा गीत नेना भुटका लग परसल गेल अछि। कवयित्रीमे ''शिशु कलकत्ता'' शीर्षक कविताक रचनाकार इलारानी सिंह, डॉ. शेफालिका वर्मा, वाणी मिश्र, रोटी शीर्षक कविताक कवयित्री कामिनी, विभारानी, एकटा भीजल बगरा शीर्षकक कवयित्री ज्योति सुनीत चौधरी आदिक नाओं प्रमुख अछि मुदा हिनको लोकनिक वएह हाल कोनो संकलित कविता संग्रह नै मात्र छिट-फुट कविता।

सन् २००८ई.मे विदेह पत्रिकाक आगमनक संग-संग बाल साहित्यमे क्रांति आबि गेल। ऐ पत्रिकाक संपादक श्री गजेन्द्र ठाकुर बाल साहित्यक उत्प्रेरण लेल उद्यत छथि। हुनक सप्त विधामे लिखल रचना संग्रह कुरूक्षेत्रम अन्तर्मनक सातम खण्ड ''बाल मंडली आ किशोर जगत'' नेना भुटका लेल समरपित अछि। ऐ खण्डमे एक सएसँ ऊपर कविता देल गेल अछि। कविता सभ पढ़ला पछाति बाल साहित्यक तादात्मयकेँ निश्चित रूपेँ बूझल जा सकैत अछि। ऐ संकलनमे वातानुकूलित महलमे रहनिहार नेना भुटकासँ लऽ कऽ गामक सोती-नदीक कातमे घोंघा बिछनिहार बालक-बालिकाक मनोदशाक विवेचन कएल गेल अछि। मैथिलीक संग ई विडम्बना रहल जे ऐमे अर्थनीति आ सामाजिक समरसताकेँ व्यापक रूपेँ बिम्बित नै कएल गेल। सामंतवादी प्रवृतिक लोकसभ चाहे ओ कोनो जातिक होथु हुनके मानसिकताकेँ समाजक मानसिकता मानि लेल गेल। जगतजननी सीताक लोकगााथापर तँ कियो बँचि सकै छथि मुदा सलहेस, बहुरा गोढ़िन आ नटुआ दलालक संग-संग मोती दाइक बेथा ककरा मुखसँ सुनै छी? यएह दशा बाल साहित्यमे सेहो भेल। हिन्दी भाषा साहित्यमे राष्ट्र कवि दिनकर ''बच्चों का दूध'' शीर्षक कवितामे समाजक अंतिम पाँतिक नेनाक भूखसँ कल्हाइत मर्मस्पर्शी दशाक चित्रण केलनि मुदा मैथिलीमे ऐ प्रकारक रचनाक अभाव खटकि रहल छल, किछु

लिखलो गेल तँ ओकरा साहित्यिक मान्यता नै भेटल। गजेन्द्रजी ऐ भ्रमकेँ तोड़बाक प्रयास केलनि अछि, जइले धैनवादक पात्र छथि।
गजेन्द्र जीक संग-संग बहुत रास तरूण कवि कवयित्री सबहक बाल रचना विदेहमे छपल अछि। वर्तमानकालक बाल रचनाकार कवि, कवयित्रीमे चन्द्रशेखर कामति, अनमोल झा, श्रीमति मृदुला प्रधान, डॉ. जया वर्मा, राजदेव मण्डल, कुमार मनोज कश्यप, डॉ. शंभू कुमार सिंह, अमित मिश्र, रवि भूषण पाठक, कामिनी कामयिनी, उपेन्द्र भगत नागवंशी, मनोज कुमार कर्ण उर्फ मुन्नाजी, धीरेन्द्र प्रेमर्षि, रूपा धीरू, हिमांशु चौधरी, रूपेश कुमार झा त्योंथ, विनीत उत्पल, श्रीमती कुसुम ठाकुर, अशोक दत्त, राजेश मोहन झा गुंजन, किशन कारीगर आ उमेश मण्डल सन नव साहित्यकार प्रमुख छथि। ओना वर्तमान कालक परिधिमे किछु स्थापित रचनाकार जेना गंगेश गुंजन, विभूति आनंद, ज्योत्सना चंद्रम, जयप्रकाश जनक, रामसेवक ठाकुर, कमलाकान्त, अरविन्द अक्कू, परमानंद प्रभाकर, रामपुनीत ठाकुर तरूण, प्रो. रवीन्द्र कुमार चौधरी सन रचनाकारक लेखनी ऊपर वर्णित सभ रचनाकारक संग-संग ऐ विधामे क्रियाशील अछि। सभसँ आश्चर्यक गप जे मात्र नौ गोट वसंत देखलि बालिका सुश्री संस्कृति वर्माक लेखनी प्रथमत: बाल साहित्येकेँ स्पर्श कएलक अछि। अखनि आशीष अनचिन्हारक नेतृत्वमे मात्र बाल कविते टा नै, मैथिलीक पटलपर ''बाल गजल'' सेहो लहलहा रहल अछि जे विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलनक एकटा क्रान्तिकारी अध्याय मानल जाए। ऐ लेल अनचिन्हार जीक संग-संग अमित मिश्र, सुमित मिश्र, बाल मुकुन्द पाठक, शान्ति लक्ष्मी चौधरी, इरा मल्लिक, आशुतोष मिश्र आदि बधाइक पात्र छथि।

किछु आर बाल मनोविज्ञानकेँ स्पर्श करैबला कवि कवयित्रीक रचना विदेह शिशु उत्सवक संग-संग वर्तमान मैथिली बाल साहित्यकेँ जनप्रिय बना रहल अछि, ओ छथि- अनिल मल्लिक, डॉ. शशिधर कुमर, सद्रे आलम गौहर, जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल, इरा मल्लिक, रुबी झा, नवीन कुमार आशा, मुन्नी कामत, चन्दन कुमार झा, प्रभात राय भट्ट, मनोज कुमार मण्डल, दुर्गानन्द मण्डल, आशुतोष मिश्र आदि।

ऐ प्रसंगमे किछु एहेन रचनाक उल्लेख करब आवश्यक बुझै छी जे छेहा मैथिलीमे मात्र नेना-भुटका लेल लिखल गेल हुअए-

(क) ''खेत टी खरिहान टी/ आँगन टी दलान टी/ बाबा आब अहींक कानमे/ टिटही टहकय टी-टी-टी../''

(ख) ''बापे तोहर बनलौ परदेशी/ चिट्ठी ने एलौ भेलौ दिन बेसी/ माँक निनायल बेथा जगबै छौ/ सुनही रौ तोरे कुचरि सुनबै छौ/'' **(काली कांत झा बूच रचित- पोताक अट्ठास आ दिनक नेना कवितासँ)**

(क) ''साले-साल किए अबै छी/ झणे-झण अबैत रहू/ हर क्षण हर मनकेँ/ अमृतसँ भरैत रहू/ क्षणे-क्षण.../ नव शक्तिक नव उत्साह दऽ/ सृजन शक्ति भरैत रहू/ कर्म-ज्ञानकेँ घोड़ि-घोड़ि/ सिनेहसँ सिनेह सटैत रहू/ क्षणे-क्षन.../ जे हूसल से हम्मर हूसल/ तइले किए छी कलहन्त/ सभ जागैए सभ सुतैए/ एक दिन हेतै सबहक अंत/ नजरि-उठा देखैत रहू/ क्षणे-क्षण.../ देवी अहाँ, मैया अहाँ/ भेदि केतौ अछि कहाँ/ जोड़ल आँखि उठा-उठा/ पले-पल देखैत रहू/ क्षणे-क्षण अबैत रहू।''

(ख) ''आँखि पुछलक/ दीदी, सभ किछु देखितो/ किछु ने देखै छी/ कलपैत मन देख/ भिर-भरि दिन कनै छी/ नजरिक उत्तर/ सगतरि तँ फूल छिटाएल-ए/ गुणसँ भरल-पुरल/ रस चुसैक ज्योति बनाउ/ भेटत तखने मीठका फल।/ **(जगदीश प्रसाद मण्डल, ''सरस्वती बंदना'' आ ''नजरि'' कवितासँ)**

''बड़ जे जतनसँ हम पोसली पुताकेँ/ भुखे सुतली अपन घर मर ओकरा सुतौली खुआकेँ/ अपने हम मुरूख मुदा बौआकेँ पढ़ौली/ काटि कष्ट पोथी लेल ढौआ जुटौली/'' **(रूपेश कुमार झा त्योंथ)**

(क) ''चारिटा छौंड़ा छल गाछ तर फनैत/ जिद लगौने डरिकेँ गनैत/ पहुँचल पाँचम- हे रौ की गनै छेँ/ ई कथीक गाछ छिऐ से जनै छँ?। सभ भेल अवाक/ अपन जमौलक धाक। सुनने रहि ई गाछ छिऐ। अनचिन्हार...।/

(ख) ''बच्चा जनमि गेल/ बेटा भेल/ सुनिते घर खुशीसँ भरि गेल/ सौंसे टोल खबरि पसरि गेल। बढ़ए लगल उछाह। कहलक लोग-वाह-वाह। मुनियाँ अछि लछमिनियाँ/ तब ने एकरापर सँ जनमल छौंड़ा...। **(राजदेव मण्डल, कथीक गाछ आ मुनियाँक चिन्ता शीर्षक कवितासँ)**

''छुनछुन-छुनछुन बौआ हम्मर/ फुदकैत फुदही जकाँ रहैए/ कखनो मुस्की कखनो मटकी/ कखनो दिदीकेँ चुप्पी कहैए/'' **(अशोक दत्त)**

टुन्ना गेंग पसारै यै/ मुन्ना दॉत चियाड़ै यै/ गुड्डू-टिंकू-बबलू-सबलू/ मुइयो मोंछ उखारै यै/ आब की कहू भाय/ हुरपेट्टे लगै यै/ बाजै छी केना... ।/ **(चन्द्रशेखर कामति)**

''एक दू तीन/ बौआ गेल सुनि/ चारि पॉच छह/ सुनि भेल भयावह.../'' **(गजेन्द्र ठाकुर)**

''नहला पर अछि दहला/ बौआ बाबू हमरा कहला/ पढ़ू जोरसँ.../'' **(डॉ. नरेश कुमार विकल)**

''कोन दिशासँ उतरि पपिहरा/ घैल पदक ढरकाबै छैँ/ बिजुवन केर पंछी तों हमरे/ जरल जिआ तरसावै छैँ.../'' **(चन्द्रभानु सिंह)**

''पोथी पढ़ि किछु हैत नहि/ तोड़ऽ चाही रोट/ जोड़ू नोट बकोटि कऽ/ भोट बटोरू मोट.../''

(आरसी प्रसाद सिंह)

''एकर चोरौलक ओकर हेरौलक/ बापो माइक नाम बुड़ौलक/ पोथी फाड़य थोथी झाड़य/ एकरा ओकरा झगड़ा लाड़य.../'' **(उदयनाथ झा अशोक)**

''चलू तिरंगा कने उड़ा ली हर्जे की/ आजादी केर रश्म पुरा ली हर्जे की.../'' **(रामलोचन ठाकुर)**

''देव पितर आ पातरि-खरना कहिया धरि?/ बैसल खैबें रे रमचरना कहिया धरि?/ पोथी पतरा गामक गाम उपासल अछि/ प्रबल धारमे बड़का-बड़का भासल अछि/'' **(डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र)**

''मातृभूमि केर करी बंदना/ ऋतुरानी गुण गान करी/ जननी जन्मभूमि केर खातिर/ अर्पण अप्पन प्राण करी.../'' **(अर्जुन लाल कर्ण)**

''तू लोरी गा हम सूति जाएब/ माए लोरी गा हम सूति जाएब.../'' **(डॉ. शंभू कुमार सिंह)**

''नेहरू चाचा, अहाँ कतऽ चलि गेलौं/ देखि लिअ अहाँ नेना सभकेँ की कऽ गेलौं/ हमर पीठ पर भारी बस्ता/ ओइमे किताब कॉपीक ठेलमठेल देखू.../'' **(सुश्री संस्कृति वर्मा, वएस नौ बर्ख)**

''एक टोलमे बबलू अकलू/ दू नेना छल/ समतुरिया छल/ बबलूकँ छल बन्तिक खुट्टी/ आमक तख्ता केर पिटना छल.../'' **(जीवकान्त)**

''नन्हें भाय खेलए चललनि/ हाथ नेने बंदूक/ लगलनि दनदन फायर करए/ ओ पक्षी देखि उलूक.../'' **(रमाकान्त राय रमा)**

''जाड़क रौदी सन वेटी/ गरमीक छाहरि सन वेटी/ जीवनक गीत-संगीत बसैत अछि/ ओइमे/ नहि तँ रसहीन अछि जिनगी/'' **(डॉ. जया वर्मा)**

''राम छू रहमान छू/ गीता आर कुरान छू/ मोल विकयबैं नहि बजारमे/ पहिने बौआ कान छू.../'' **(डॉ. ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म)**

''हे भाय हमरा जुनि मारह/ हम छी तोरे भ्राता/ अग्रज वा अवरज.../'' **(फजलुर रहमान हरसमी)**

''बालुक करेजपर बसा लेलौं गाम/ बेरि-बेरि ऑगुरसँ लिखलौं जे नाम.../'' **(विलट पासवान विहंगम)**

''कोंचा लेटाइत छनि केश फहराइत छनि/ मोछो हुनक कलकत्ते/ ईहो पुरुष अलबत्ते.../'' **(रवीन्द्र नाथ ठाकुर)**

गोरसपट टकधियान लगेने/ मुन्निया बैसलि अकानैए। घर-अंगन, द्वारि-दरबज्जा/ भोरे सभ दिन बहारैए/ बर्तन-वासन, छिपली-कटोरी/ सभ दिन चमका कऽ मांजैए/ झक-झक झलकैत/ थारी-बाटी देख/ मुन्नियामाए गुनगुनाइए/ गुनगुन्नीमे अह्लाद भरल छै/ सुख-दुख सेहो उमरल छै/ मुन्निया आब छोड़त ई दुनियाँ...। (**उमेश मण्डल रचित नोर कवितासँ..)**

''खेल खेल खेल/ खेल बौउआ खेल/ चोरा-नुकी खेल/ अज्ञानक अन्हारमे/ नुकाएल चोरबा/ ज्ञानक किरनसँ/ पकड़ल गेल/ खेल खेल खेल/ खेल दाय खेल/ कनियाँ-पुतरा खेल/ बेइमानक नगरीसँ/ नकलल बहुरिया/ शैतानक माफापर/ बैठा देल गेल/ इमानक चौबटियापर.../'' **(मनोज कुमार मण्डल)**

''जगदंब अहीं अवलम्व हमर/ हे माय अहाँ बिनु आश ककर.../'' **(प्रदीप मैथिली पुत्र)**

''पढ़ि-लिखि बनिहैं एहेन सिपाही/ सभ तरि लोक करौ वाहवाही/ एहेन संतानक अलगे धाही/ खगता छै भगत सिंह चाही.../'' **(महाकांत ठाकुर)**

''माँ गै माँ/ घरक ऊपर/ चारक तर/ बगरा बनेलकऊ/ एकटा घर/ माँ गै माँ/ घरक पाछू/ बारीक बिच/ सुगा अनलकऊ/ एकटा फर/ माँ गै माँ/ गामक भीतर/ टोलाक बिच/ नटुआ नचलऊ/ एकटा नाच/ माँ गै माँ/ गामक

बाहर/ पोखरिक बिच/ पुरैनिक पातपर/ झिलमिल जल/ माँ गै माँ/ आँगन कात/ ढेकी लग/ बिहरिमे छौ/ गहुमन साँप/ माँ गै माँ/ बस्तुनिया लय/ हम कहलियौ/ सब हाल-चाल/ जल्दीसँ दऽ दहीं/ बस्तुनिया हमर/ हम चललियऊ/ खेलय लेल.../ **(पंकज कुमार झा)**

''दाइ गे दाइ तौँ बड़ हरजाइ/ भागेँ ओइ दिस देखए जत्तहि/ ढेपा गुड़क गुड़कल जाए.../'' **(राजेश मोहन झा गुंजन)**

ठोहि पारि कऽ चिन्नी कानय

हा हमरा कुकुड़ो नहि मानय
खाजा मुंगबा नोर चुआबय
लै छै कियो नहि हम्मर नाम
पाकल आम पाकल आम
खो रौ बौआ पाकल आम **(शम्भूनाथ झा)**

ई लिखबाक हमर उदेस अछि बाल कविताक किछु रूपक दर्शन मात्र। ऐसँ इतर सेहो अनेकानेक बालगीत आ कविता मिथिला गाम-गाममे लोरी आ रीति गीतक रूपमे चर्चित अछि। मैथिली साहित्यमे तँ साहित्यक कृतिक विविध विधाक संपादन वा चित्रण पहिनेसँ बेसी भऽ अछि मुदा मर्मस्पर्शी कथा जे पाठकक गणनामे लगातार कमी आबि रहल अछि। गोलमेज सम्मेलन कऽ कऽ तँ हम मैथिल अपन पाठक लोकनिक गणना चारि करोड़ धरि पहुँचा दइ छी मुदा सभ गोट मैथिल जौं मात्र अपन परिवारेक अवलोकन करथु तँ सत्यतासँ अवगत भऽ सकै छथि मात्र माता-पितासँ वैदेहीक अस्तित्व नै बाँचत तँ...। जौं बाल भावनाकेँ देसिल वयनामे प्रचार-प्रसार नै हएत तँ भऽ सकैत अछि जे कवि कालीकान्त झा बूच जीक कविता देसिल वयनाक अस्तित्वक बिम्ब सत्य प्रमाणित भऽ जाए। एकर किछु पाँति-

''चन्दा-सुमन-यात्री-मधुपक/ जुनि करू भावना पर आधात/ दिवस निकट ओ आवि रहल अछि/ हेती मैथिली सभसँ कात.../''

नेना-भुटकामे देसिल वयनाक प्रति सिनेह जगाएब आवश्यक अछि। ऐ लेल बाल साहित्यकेँ प्राथमिकता देब अति आवश्यक अछि। विशेष कऽ कऽ वर्त्तमान पिरहीक साहित्यकारकेँ ऐ दिशामे सजग रहए पड़त।

शिव कुमार झा ''टिल्लू''



१९.

पोथी- समीक्षा भावांजलि

नैसर्गिक आ आत्मिक भावसँ निकसैत कविताकेँ आशु कविता कहल जाइत अछि। ऐ भावक सृष्टि आशुकवि वा आशु कवयित्री मानल जाइ छथि। आशु कवितामे मैथिली साहित्यक स्थान एकात परंच विलक्षण। कवि कोकिल विद्यापति, कविशेखर बदरीनाथ झा, कविवर सीताराम झा, सरस कवि ईशनाथ झा, कवीश्वर चन्दा झा, कवि चूडामणि मधुप, कवि सरोज भुवन, यात्री, आरसी, अणु, गोपेश, श्रीमति श्यामा देवी, चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', रवीन्द्र, सरस, नवल, श्रीमति इलारानी, सुरेश सिंह सिनेही, जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रवासी, विभूति आनंद, प्रदीप मैथिली पुत्र, मणिपद्म, नचिकेता, डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र, राजदेव मण्डल, श्रीमति ज्योति सुनीत चौधरी, विलट पासवान विहंगम, हासमी जी, मंत्रेश्वर झा, राजकमल, अशोक दत्त, रूपेश कुमार त्योंथ, चन्द्रशेखर कामति, उमेश मण्डल, कीर्ति नारायण मिश्र, मायानंद मिश्र, कुमार पवन, डॉ. शंभु कुमार सिंह, श्रीमती मृदुला प्रधान, श्रीमती कुसुम ठाकुर, विवेकानंद ठाकुर, चन्द्रभानु सिंह, कालीकान्त झा 'बूच', रमाकान्त राय रमा, डॉ. केदारनाथ लाभ, जय प्रकाश जनक, डॉ. नरेश कुमार विकल, गजेन्द्र ठाकुर प्रभृत आशु कवि आ कवयित्री सभसँ जगमगाइत मैथिली साहित्य सरितामे एकटा चंचला मुदा अर्न्तमुखी नक्षत्रक उदय मैथिली साहित्यकेँ घृतगंधा बनौने अछि- ओ छथि डॉ. शेफालिका वर्मा।

हिनक तृण-तृणमे काव्य धारा अविरल गतिसँ गतिमान अछि। ओना तँ विप्रलब्धा आ मधुगंधी बसात सन कविता संग्रहक रचना कऽ अपन विशेष स्थान बनौने छथि शेफालिका जी। मुदा हिनक एकटा गद्य गीत संग्रह 'भावंजलि' मैथिली भाषा साहित्यमे कविवर रवीन्द्रनाथ टैगोरक स्थान शून्यताकेँ भरैले पूर्णत: नै तँ आंशिक रूपेँ अबस्स प्रतीत हएत।

जीवनक वास्तविक संरचना, उदेस, दुख-दुख, आश-छोहसँ ऐ रचनाक कोनो सम्बन्ध नै। ककरा प्रति अनचिन्ह सिनेह, अकथ्य मर्मक अकुलाएल अनुभूतिकेँ ऐ गद्य-गीतमे प्रदर्शित कएल गेल अछि- ई संभवत: त्रिवेणीक वाक् धारा जकाँ मात्र अनुभूति एकल जा सकैत, प्रत्यक्ष दर्शन नै। स्वभाविक

अछि पुष्प, नीर, क्षीर आ अमिय-गुग्गुलक अंजलि तँ देखबाक योग्य होइत अछि, 'भावांजलि'कैँ केना देखल जाए? हिन्दी काव्य गगनक आत्मा- 'एक भारतीय आत्मा'क प्रेमक विवेचन असंभव तँ नै मुदा अति क्लिष्ट- है कौन सा वह तत्व जो सारे भुवनमे व्याप्त है, ब्रह्माण्ड पूरा भी नहीं जिसके लिए पर्याप्त है?

कवयित्रीक हंसिनी मोन विरहक शंकामे जरैत अछि तँ दोसर दिस मिलनक उन्मादसँ दीपित अछि। सिनेहिल स्पर्शक आश तँ करै छथि मुदा स्पर्शनक कल्पना मात्रसँ सिहरि जाइ छथि। समस्त तन सितारक तार जकाँ झंकृत भऽ जाइ छन्हि।

ऐ सिनेहक बिम्ब तँ अनमोल मुदा ककरासँ सिनेह? केतौ नाथक रूपेँ भगवान बुझना जाइ छथि तँ केतौ कंतक भान। केतौ स्पर्शनसँ वैराग्य भावक प्रदर्शन तँ केतौ स्पर्शनक आशमे नैका वनिजाराक नायिका जकाँ-
'उत्ताप प्रेम तिल सुनगि रहल नै आब ई यौवन अछि वशमे'
मात्र एकावन पृष्ठक पोथीमे राजा भर्तृहरिक नीति, श्रृंगार आ वैराग्य तीनू गोट शतकक दर्शन ऐ गद्य गीतकेँ विलक्षण बना देलक।

मृत्युसँ वएह प्रेम कऽ सकैत अछि जे जीवनसँ उबि गेल हो वा जीवनक पूर्णताकेँ देखि नेने हुअए। जइ कालमे शेफालिकाजी ऐ पोथीक रचना केलनि ओइ काल जीवनमे शून्यता तँ नै छल। पूर्णता ऐ दुआरे नै कहि सकै छी जे ओइ समैकेँ छोड़ल जाए हिनक लेखनी अखनि धरि गतिशील अछि। आब प्रश्न उठैए जे जीवनक गति आ नियतिमे जीवंत नारीक जीवनक कोन अकथ्य बेथाक चित्रण ऐ पोथीमे कएल गेल जे मृत्युक अवाहन कऽ लेली।

ऐठाम तीर्थस्थानक बिम्बक विश्लेषणमे गृहस्थ जीवनकेँ परम तीर्थ स्थल बना देल गेल। कवयित्रीक लघुआत्मामे सभ देव-देवी समाएल अछि। अंतिम पद्यमे संभवत: अपन पतिकेँ अपन इष्टदेवक संग-संग प्रेरणा स्त्रोत, रक्षक, पिता भाय सभ रूपमे मानने छथि। तखनि अदृश्य मृगमारीचिका केतए सँ आएल?

रचनाक सभटा पक्ष तँ बड़ नीक अछि मुदा दुर्बल पक्ष अछि अनुत्तरित प्रश्न पाठक धरि केना परसल गेल? ई सत्य अछि जे आदित्यक

अंशु

अंशु सेहो कविताकेँ इजोरिया नै दऽ सकैत अछि मुदा एहेन कवित्वक प्रदर्शन समीचीन नै लागल। भऽ सकैत अछि जे आशु कविताक नवल धारा कवयित्रीक गातसँ स्वत: स्फूर्त रूपेँ अंकुरित भेल हुअए।

भौतिकता आ बौद्धिकतापर सिनेह भारी बुझना गेल। सिनेहक प्रकार भिन्न-अकथ्य सिनेह। स्व. मनमोहन झा'क 'यात्राक स्मृति'क नायकक दृष्टिसँ सुमित्राक प्रति उपटल सिनेहो ऐ काव्य गीतक आगाँ ओछ पड़ि जाइत अछि। अपराध केलापर अपराधबोध प्रासंगिक मुदा बिनु अपराध केने अपराध लेल क्षमायाचना, ककरासँ क्षमायाचना इहो स्पष्ट नै।

सम्पूर्ण रचनामे प्रश्न- नव-नव प्रश्न मुदा केकरो दोसर लेल प्रश्न नै कवयित्री तँ अपन जीवनसँ प्रश्न पुछै छथि।

हमरा मतेँ देसिल वयनामे 'भावांजलि' नव प्रकारक रचना छी। अपन आत्मासँ साक्षात्कार, निर्विकार ब्रह्माण्डसँ साक्षात्कार...।

आत्मीयतासँ ऐ साक्षात्कारकेँ अनुभव तँ कएल जा सकैत मुदा साहित्य लेल ई कखनो विचारमूलक नै। कवयित्री जानि-बूझि कऽ तँ नै मुदा अनचोक्केमे पाठककेँ ओझरा देली। अपन भावकेँ अपन मोनेमे जौं रखबाक छेलनि तँ काव्य रचनाक कोनो आवश्यकता नै। ''भावांजलि'' कोनो छंद आ लयात्मक गीतिका नै तँए एक भावक स्पष्टतः प्रदर्शन उचित छल जे नै कएल गेल।

❍❍❍

पोथीक नाओं- भावांजलि
कवयित्री- डॉ. शेफालिका वर्मा
प्रकाशन बर्ख- १९९६

२०.

कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक- (समीक्षा)

किछु लोकक ई प्रवृत्ति होइत अछि जे सदिखन अपन चल जीवनमे नव-नव प्रकारक प्रयोग करैत रहैत अछि। ऐ नव प्रयोगक कारण जहानमे अपवर्गक विहान देखैमे अबैत अछि। प्रयोग धर्मिता बेक्तीक इच्छासँ नै जनम लऽ सकैत, ई तँ नैसर्गिक प्रतिभाक परिणाम छी। मैथिली साहित्यमे प्रयोगधर्मी सरस्वती पुत्रक अभाव नै परंच वर्तमान कालमे एकटा एहेन प्रयोगधर्मी मिथिला पुत्रकेँ माँ मिथिले अपन आँचरमे सक्रिय कऽ देलखिन, जे तत्कालिक मैथिलीक दशा वदलबाक प्रयास कऽ रहल छथि। क्रांतिवादी आ सम्यक् विचारधाराक सम्पोषक ओ बेकती कियो अनचिन्हार नै- मैथिली साहित्यक प्रथम अंतर्जाल पाक्षिक पत्रिका विदेहक सम्पादक श्री गजेन्द्र ठाकुर छथि। भऽ सकैत अछि जे किछु लोक मैथिली साहित्यकेँ अन्तर्जालसँ जोड़बाक प्रयास कए रहल हेता परंच एकटा मूर्त्त रूप दऽ लगातार ११४ अंक (अखनि धरि) पहुँचेबाक कार्य गजेन्द्रेजी केलनि। साहित्यक नव-नव विधा आ समाजक वेमात्र वर्गकेँ मैथिलीक आलिंगनमे आबद्ध कऽ साम्यवाद आ समाजवादकेँ वैदेहीक माटिपर आनि हमरा सबहक माथपर लागल अनसोहाँत कलंककेँ धो देलनि। मात्र ११४ अंकमे जे कार्य भेल अछि ओ केतए-केतए पहिने भेल छल, आत्म-अवलोकन करबाक पश्चात् जानल जा सकैत अछि। समाजक फूजल, बेछप्प आ उदासीन वर्गकेँ अपन बयनाक मानस पटलपर आच्छादित करैले साहस सभ कियो नै जुटा सकैत अछि। मात्र भाँज पुरबैले मानस पुत्र एहेन कार्य नै केलनि, ओइ उपेक्षित वर्गक रचनाकारक रचनामे विषए-वस्तुक गतिशीलता आ तादात्म्य बोध केकरोसँ कम नै अछि। प्रयोगधर्मी गजेन्द्र जीक कर्मक दोसर आमुख छी हिनक लेखनीक धारसँ निकसल इन्द्रधनुषक सतरंगी गुलालसँ भरल भावक आत्म-उदवोधन- ''कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक''। ऐ पोथीकेँ की कहल जाए उपन्यास, गल्प, बाल साहित्य, समालोचना, प्रबन्ध वा काव्य? साहित्यक सभ विधाक अमृत रसकेँ घोरि बंगोपखाड़ी बना देलनि जेतए ई कहब असंभव अछि जे गंगा, कोसी, यमुना वा हुगली ककर नीर केतए अछि?

शीर्षक देखि अकचका गेल छेलौं, ई महाभारत मचौता की! मुदा अपन हृदैसँ सोचल जाए, प्रत्येक मानवक हृदैक दूटा रूप होइत अछि, मुदा अन्तर्मन सदिखन सत्य बजैत अछि ओइठाँ मिथ्याक स्थान नै। कुरूक्षेत्र रणभूमि अबस्स छल परंच ओइठाँ सत्यक विजय लेल युद्ध भेल। ओइठाँ धर्मसंस्थापनार्थ विनाश लीला मचल छल। हमरा सभकेँ अपन अन्तर्आत्मामे कुरूक्षेत्रक दर्शन करबैले दिशा निर्देशन कऽ रहल छथि गजेन्द्र जी।

मैथिली साहित्यक कोन असत्यकेँ तियाग करबाक चाही? किए सुमधुर बयनाक एहेन दशा भेल? नव पथक निर्माण नवल दृष्टिकोणसँ हएत। हमरा बुझने ऐ पोथीमे साहित्य समागम लेल दृष्टिकोणकेँ प्राथमिकता देल गेल अछि। एहेन विलक्षण साहित्यपर आलेख लिखब हमरा लेल आसान नै अछि- मुदा दु:साहस कऽ रहल छी-

भऽ रहल वर्ण-वर्ण नि:शेष
शब्दसँ प्रकटल नहि उदेस
मोनमे रहल मनक सभ बात
अछिंजलसँ सद्य: स्नात।

सात खण्डमे विभक्त ऐ पोथीकेँ सम्पूर्ण परिवार लेल सनेश कहि सकै छी। सम्भवतः मैथिली साहित्यमे भाव आ विचारक उन्मूलनसँ भरल संगम रूपेँ ''विविधा'' ऐसँ पूर्व विलक्षण कृतिक स्वरूप नै धेने छल।

प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना:- ऐ खण्डक आदि लोकगाथापर आधारित कथा सीत-वसंतसँ कएल गेल अछि। उत्तर मध्यकालीन इतिहासमे अल्हा-ऊदल, शीत वसंत सन केतेक कथा प्रचलित छल, जेकर मंचन पद्यक रूपमे वर्तमान कालमे बिहारक गाम-गाममे भऽ रहल अछि। एक राज परिवारक विषए-वस्तुक चित्रण करैत लेखक सतमाएक सिनेहपर प्रश्न चिन्ह लगैबाक प्रयास केलनि अछि? कथाक आरम्भसँ इति धरि मर्मस्पर्शक अनुभव होइत अछि। कथाक अंतमे विमाताकेँ ओइ पुत्रक छाया भेटलनि जेकर पराभव ओ कऽ देने छेली।

श्री मायानन्द मिश्र मैथिली साहित्यक सभ विधाक माँजल साहित्यकार मानल जाइ छथि। हुनक इतिहास बोधक चारू प्रमुख स्तंभ प्रथमं शैलपुत्री च, मंत्रपुत्र, पुरोहित आ स्त्रीधनपर सम्यक् आलेख प्रस्तुत कऽ गजेन्द्रजी

पूर्बमे लिखल गेल प्रबंधक दृष्टकोणकेँ चुनौती दऽ रहल छथि। ॠग्वैदिक कालीन इतिहासपर आधारित मंत्रपुत्र मायानन्द जीक प्रमुख कृति मानल जाइत अछि। ऐ पोथी लेल मायानन्द जीकेँ साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटल अछि। मंत्रपुत्र पाश्चात्य इतिहाससँ प्रभावित अछि। मंत्रपुत्रक संग-संग पुरोहितमे सेहो पाश्चात्य संस्कृतिक झलकि देखैमे अबैत अछि। अपन समालोचनाकेँ गजेन्द्रजी अक्षरश: प्रमाणित कऽ देने छथि, मायानन्द झाक इतिहास बोधपर प्रश्न ठाढ़ कऽ देने छथि मुदा हुनकर रचना संसारपर कोनो तरह प्रश्न चिन्ह नै ठाढ़ केलनि। समीक्षाक रूप एहने हेबाक चाही। समीक्षककेँ पूर्वाग्रह रहित रहलासँ साहित्यिक कृतिक मर्यादा भंग नै होइत अछि।

केदारनाथ चौधरी जीक दू गोट उपन्यास 'चमेली रानी' आ 'माहुर' पर गजेन्द्र जीक समीक्षा पूर्णत: सत्य मानल जा सकैत अछि। मैथिली साहित्यमे बहुत रास रचनाक बिक्री सम्पूर्ण मैथिल समाजमे जेतेक नै भऽ सकल, 'चमेली रानी'क ओतेक बिक्री मात्र जनकपुरमे भेल। ऐसँ ऐ साहित्यक प्रति पाठकक श्रद्धाकेँ देखल जा सकैत अछि। 'माहुर' मैथिली साहित्य लेल क्रांतिकारी उपन्यास छी। अरविन्द अडिगक कृतिक चरित्रसँ ऐ उपन्यासक एक पात्रक तुलना लेखकक भाषायी समृद्धताकेँ प्रदर्शित करैत अछि।

विदेह-सदेहक सौजन्यसँ श्रुति प्रकाशन द्वारा नचिकेता जीक एकटा नाटक 'नो एण्ट्री मा प्रविश' प्रकाशित भेल अछि। ऐ नाटकक लेखनपर नचिकेता जीकेँ कीर्ति नारायण मिश्र सम्मान देल गेल अछि। नाटकक चारू कल्लोलक तर्क पूर्ण विश्लेषण कऽ गजेन्द्रजी समीक्षाक रूप बदलबाक प्रयास केलनि अछि। ऐ नाटकमे तार्किकता आ आधुनिकताक विषए-वस्तु निष्ठताकेँ ठाम-ठाम नकारल गेल अछि।

रचना लिखबासँ पहिने अध्यायमे गजेन्द्रजी मैथिली साहित्यमे भाषा सम्पादनपर विशेष धियान देबाक आग्रह केलनि। अपन साहित्यमे भाषायी त्रुटिपर पूर्णरूपसँ धियान नै देल जा रहल अछि। कविशेखर ज्योतिरीश्वर, विद्यापति शब्दावली, रसमय कवि चतुर्भुज शब्दावली आ बद्रीनाथ शब्दावली द्वारा मिथिला-मैथिलीक सर्वकालीन शब्द विन्यासक आ शब्द भंडारक विस्तृत वर्णन कएल गेल अछि। ऐसँ निश्चय भाषा सम्पादनमे सहायता भेटल।

केतेक रास एहेन शब्द अछि जेकर विषएमे हम की साहित्यक पैघ-पैघ वेत्ता पहिने नै जनैत हेता। निश्चित रूपसँ ई अध्याय पाठकक संग-संग साहित्यकार आ असैनिक सेवाक ओइ प्रतियोगी लेल उपयोगी हएत जे मैथिलीकेँ मुख्य विषएक रूपमे लऽ कऽ प्रतियोगितामे सम्मिलित होइले प्रयत्नशील छथि। समीक्षक हमरा सबहक मध्य एकटा नव पद्य विधाक चर्च कऽ रहल छथि- हाइकू। ऐ विधापर मैथिलीमे पहिनो रचना होइत छल, कखनो ऐ विधाकेँ क्षणिकाक नाओंसँ जानल जाइ छल। जापानी साहित्य द्वारा सृजित ऐ पद्य रूपक वास्तविक चित्रण मैथिली साहित्यमे गजेन्द्रजी आ ज्योति झा चौधरी केलनि अछि।

गजेन्द्रजी द्वारा मैथिली साहित्यमे सैद्धान्तिक रूपेँ हाइकू, शेनर्यू, हैबून आ टनकाक प्रवेश क्रान्तिकारी रूप लऽ लेलक, जेकर परिणाम भेल जे वर्तमान पिरहीक नवडरिया कवि लोकनि सेहो हाइकू सन प्रासंगिक विधामे प्रवीण भऽ रहल छथि।

मिथिला लेल प्रलय कहल जाए वा विभीषिका- 'बाढ़ि' ई शब्द सुनिते कोसी, कमला, बलान, गंडकी, बागमती आ करेहक आँतसँ ओझराएल लोक सभ काँपि जाइ छथि। ऐ समस्याक स्थिति, सरकारी प्रयासक गति आ दिशाक संग-संग बँचबाक उपाएपर लेखकक दृष्टिकोण नीक बुझना जाइत अछि।

कोनो ठाम आ कोनो आन धाममे जौं हमरा लोकनिक विषएमे पता चलए कि मैथिल छथि, लोकक दृष्टकोण स्पष्ट भऽ जाइत अछि- हम सभ मछगिद्धा छी। एकर कारण जे धारक कातमे रहनिहार जीवक जीवन जलचरे जकाँ होइत अछि। जलीय जीवक भक्षण अधिकांश बेकती करै छथि। तँए ने हमरा सभकेँ माँछ आ मखानक प्रेमी बूझल जाइत अछि आ वास्तवमे हम सभ माँछक प्रेमी छी। अधिकांश मैथिल ब्राह्मण परिवारमे सोइरीसँ श्राद्ध धरि माँछक भक्षण अनिवार्य अछि। आन जातिमे अनिवार्य तँ नै अछि मुदा ओहू वर्गक अधिकांश लोक माँछक प्रेमी छथि। लेखक ऐ लोकक भक्षण धारकेँ धियान धरैत कृषि मत्स्य शब्दावली लिखलनि अछि। ऐमे सभ प्रकार माँछक आकार, रंग, रूपक विश्लेषण कएल गेल अछि। कृषि कार्य लेल जोड़ा बड़दक संग हर पालो इत्यादिक ज्वलन्त बेवस्थापर लेखकक विचार नीक

मानल जा सकैत अछि। करैल, तारबूज आ खीराक विविध प्रकारक नाओं सुनि गामक जिनगी स्मरण आबि जाइत अछि।

ऐ खण्डक सभसँ नीक विषए जे हमरा अन्तर्मनकेँ हिलकोरि देलक ओ अछि विस्मृति कवि पंडित रामजी चौधरीक रचना संसारपर प्रवाहमय आ विस्तृत प्रस्तुति। हमरा सबहक भाखाक संग किछु विषमता रहल जे ऐमे केतेक रास एहेन रचनाकार भेल छथि जे अपने संग अपन रचनाकेँ गेंठ बन्हने विदा भऽ गेला। एकर कारण ऐमे सँ किछु रचनाकारक रचनाक संकलन नै भऽ सकल वा भेबो कएल तँ पाठक धरि नै पहुँचल। ऐ लेल ककरा दोष देल जाए रचनाकारकेँ आ हमरा सबहक भाषाक तत्कालीन रक्षक लोकनिकेँ? ऐ भीड़मे रामजी चौधरीक नाओं सेहो अछि। मैथिली साहित्यमे रागपर लिखल रचनामे रामजी बाबूक रचना सेहो अछि। भक्तिमय राग विनय विहाग, महेशवाणी, ठुमरी, तिरहुता, ध्रुपद, चैती आ समदौनक रूपमे हुनक लेखनीसँ निकलैत गीत सभ अलभ्य अछि। शास्त्रीय शैलीक मैथिली गायनमे वर्तमान पिरही लेल अत्यन्त उपयोगी रचना सभकेँ प्रकाशमे आनि गजेन्द्रजी मिथिला, मैथिली आ मैथिलपर पैघ उपकार केलनि अछि।

सत्यकेँ स्वीकार करबाक सामर्थ्य मात्र किछुए लोकमे होइत अछि। गजेन्द्रजी ओइ लोकक पातरिमे ठाढ़ एक बेकती छथि परिणामत: मैथिली साहित्य भोजपुरीसँ आगाँ मानल जाइत अछि मुदा गुणवत्ताक दृष्टिए भोजपुरी रास परिमार्जित अछि। भोजपुरी साहित्यक काल पुरुष भिखारी ठाकुरक मर्म स्पर्शी बिदेसियासँ ऐ भाषाकेँ अलग पहिचान भेटल। मैथिली भाषामे विदेशियाक कमीक मुख्य कारण रहल-प्रवासक प्रति उदासीनता। जौं लिखलो गेल तँ महाकाव्यक रूप दऽ देल गेल। बिदेसिया पद्य आ विद्यापतिक लिखल? हमरो बिसवास नै भेल छल। विद्यापतिकेँ मुख्यत: श्रृंगारिक कवि मानल जाइत अछि। ओना हुनक रचनाकेँ भक्ति रससँ सेहो जोड़ल जाइत अछि। कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक पोथी पढ़लासँ नव सोच मोनमे आबि गेल। जेकरा भोजपुरी साहित्यमे बिदेसिया कहल गेल वास्तवमे मैथिलीमे ओ छी-पिआ देशान्तर। विद्यापतिक नेपाल पदावलीमे ऐ प्रकार रचना सभ संकलित अछि मुदा कहियो ऐ रूपे ओकरा महिमा मंडित नै कएल गेल। कारण स्पष्ट अछि, पिआ देशान्तरक नाट्य रूप मिथिलाक पिछड़ल जातिक मध्य प्रदर्शित

कएल जाइत अछि। तँए अग्रसोची लोकनि एकरासँ दूरे रहब उचित बुझैत छथि। ऐसँ मैथिलीक दशा-दिशाकेँ नव गति केना भेटि सकैत अछि। मैथिली लोकभाषा अछि, लोक संस्कृतिकेँ बढ़एबाक प्रयास करबाक चाही। गजेन्द्र जीक सोझ दृष्टिकोणकेँ बिम्बित करबाक चाही। ''एतहि जानिअ सखि प्रियतम बेथा'' श्रैंगारिक-विरह बेथाक वर्णन मुदा अछि तँ पिआ देशान्तर।

सुभाष चन्द्र यादव जीक कथा संग्रह 'बनैत-बिगड़ैत' पर गजेन्द्र जीक समीक्षा अपूर्व अछि। प्रवेशिकामे हुनक कथा 'काठक बनल लोक' पढ़ने छेलौं। काठक बनल लोकक नायक बदरियाक मर्म देखि पाथरो पिघलि जा सकैत अछि। वास्तवमे सुभाषजी मैथिली साहित्यक फणीश्वर नाथ रेणु छथि। महिमा मण्डनक कालमे मात्र भाँज पुरबैले हिनक कथा पाठ्यक्रममे दऽ देल जाइत अछि। आंचलिक रचनाकेँ कहिया धरि उपहासक पथियामे झाँपि कऽ राखल जाएत? एक नै एक दिन छीप उधिया जाएत आ सत्यक सामना करए पड़त। लोकधर्मी कथाकार चाहे ओ धूमकेतु, कुमार पवन, कमला चौधरी, सुभाष चन्द्र यादव, जगदीश प्रसाद मण्डल वा कोनो आन होथु-हुनका सबहक रचनाक उपेक्षा नै हेबाक चाही। सुभाष जीक कथा कनियाँ-पुतरा, बनैत-बिगड़ैत आ दृष्टिक समीक्षा देखि समए-कालक दशाक अविरल द्वन्द्व उपस्थित भऽ जाइत अछि। ऋणी छी जे गजेन्द्र ठाकुरजी ऐ पोथीपर समीक्षा लिखलनि।

इंटरनेट लेल अन्तर्जालक प्रयोग नीक लागल। वेबसाइट बनेबाक तकनीकसँ गजेन्द्र जीक उद्बोधन आ नियमन नै बूझि सकलौं। तीन बेर पढ़लौं मुदा जेठक तेज बिहारि जकाँ माथपर सँ उड़ि गेल। नव-नव नेना भुटका बूझि जेता। तकनीकी युगक नेनाक स्मरण शक्तिक आँगन पैघ होइत अछि तँए हुनके सबहक लेल ऐ अध्यायकेँ छोड़ि देलौं।

लोरिक गाथा समाजक उपेक्षित वर्गक संस्कृतिपर आधारित अछि। सहरसा-सुपौलक वीर आदि पुरुष लोकिकक परिचए-पातमे पौराणिक मैथिल संस्कृतिक दर्शन होइत अछि।

मिथिलाक खोजमे जनकपुर, सुग्गा धनुषा सन नेपालक स्थलसँ लऽ कऽ मधुबनी जिलाक कतेको उत्तर मैथिल गामसँ दक्षिणमे जयमंगलागढ़ (बेगूसराय)क चर्च कएल गेल अछि। पूबमे पूर्णिया किशन गंजक केतेक

स्थलसँ लऽ पश्चिममे चामुण्डा (मुजफ्फरपुर)क माँ दुर्गाक मंदिरक चर्च कएल गेल अछि। मिथिलाक किछु स्थानक वर्णन ऐ सूचीमे नै भेटल जेना- सती स्थान (गाम-शासन प्रखंड-हसनपुर जिला- समस्तीपुर) आ उदयनाचार्यक जनम स्थली (गाम-करियन जिला- समस्तीपुर)। ऐ लेल लेखककेँ दोष नै देल जा सकैत अछि, किएक तँ मिथिलाक खोज विदेहसँ लेल गेल अछि, जइमे गजेन्द्रजी अवाहन केने छथि, जे जिनका लग कोनो प्रसिद्ध स्थलक विषएमे जानकारी हुअए जे ऐमे सम्मिलित नै अछि तँ ओकर छाया चित्रक संग सूचना पठौल जाए। किछु स्थल आर छूटल भऽ सकैत अछि, प्रबुद्ध पाठक ऐ विषएपर कार्य कऽ सकै छथि।

सहस्त्रबाढ़नि (उपन्यास):- सहस्त्रबाढ़नि एकटा आकाशीय पिण्ड होइत अछि, जेकर दर्शन आर्यक धार्मिक दृष्टिकोणमे अछोप बुझना जाइत अछि मुदा उपन्यासकार एक अछोप पिण्डकेँ आत्मसात् करैत एकरा सावित्री बना देलनि। सावित्री अपन पातिव्रृत्य आ दृढ़ निश्चयसँ सत्यवानक प्राण यमराजसँ छीनि नेने छेली। ऐ उपन्यासक दृष्टिकोण तँ एहेन नै अछि परंच उपन्यासक नायक आरूणिक मृत्युपर विजयमे सहस्त्रबाढ़निक उत्प्रेरणक उद्बोधन कएल गेल अछि। कुरूक्षेत्रम अन्तर्मनक मूल पृष्ठपर सहस्त्रबाढ़निक चित्र देल गेल अछि। ऐसँ प्रमाणित होइत अछि, रचनाकारक दृष्टिमे सम्पूर्ण पोथीक सातो खण्डमे ऐ उपन्यासक विशेष महत अछि। सहस्त्रबाढ़निमे उन्नैसम शताब्दीक उत्तरांशसँ वर्तमानकाल धरिक वर्णन कएल गेल अछि।

एक परिवारक एक सए पंद्रह बर्खक कथाक वर्णनकेँ कल्प कथा मानब निश्चित रूपसँ रचनाकारक भावनापर कुठाराघात मानल जाएत। सद्य: ई कथा रचनाकारक पाँजड़िक कथा अछि। जौं एकरा गजेन्द्र ठाकुर जीक आत्मकथा मानल जाए तँ संभवत: अतिशयोक्ति नै हएत।

उपन्यासक आदि पुरुष झिंगुर बाबू एकटा किसान छथि। जनिक घरमे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसक स्थापना बर्ख सन् १८८५ई. मे एकटा बालक जनम लेलनि- कलित। कलितक नेनपनसँ ऐ उपन्यासक श्री गणेश कएल गेल। कलितकेँ ओइ कालमे बंगाली शिक्षकसँ अंग्रेजीक शिक्षण बेवस्था दरिभंगामे कएल गेल। ऐसँ दू प्रकारक भावक बोध होइत अछि। पहिल जे झिंगुर बाबू समृद्ध लोक छला। ओइ कालमे अवहट्टक शिक्षा सेहो गनल

गुथल परिवारमे देल जाइ छल, अंग्रेजीक कथा तँ अति विरल छल। दोसर जे बंगाली लोक हमरा सभसँ शिक्षाक दृष्टिमे आगाँ छला। बंगाली जातिक अंग्रेजी शिक्षक, हम सभ केतेक पाछाँ छेलौं जे हमरा सबहक संस्कृतिक राजधानी दरिभंगामे कोनो मैथिल अंग्रेजी शिक्षक झिंगुर बाबूकेँ नै भेटलनि।

सौराठ आ ससौलाक सभा गाछीक चर्च तँ बेर-बेर कएल जाइत अछि मुदा ऐ पोथीमे विलुप्त सभा बलान कातक गाम परतापुरक सभा गाछीसँ कथाकेँ जोड़बाक दृष्टिकोण अलग मुदा नीक बुझना जाइत अछि। कलितक बिआहमे बर महफामे, बूढ़ वरियाती कटही गाड़ीमे आ जवान लोकक पैदल जाएब वर्तमान पीढ़ी लेल अजगुत लागत मुदा अपन पुरातन संस्कृतिसँ नेना-भुटकाकेँ आत्मसात कराएब आवश्यक अछि। कलितक मृत्युक पश्चातक कथा हुनक छोट पुत्र नंदक परिधिमे धूमए लगल। नंदक पारदर्शी सोच, अपन कनियाँसँ प्रत्यक्षत: गप करब, तृतीय पुरुषक रूपे संबोधन नै। मिथिलामे बर-कनियाँ, सासु-पुतोहु, सासु-जमाएक गपमे तृतीय पुरुषक संबोधन अनिवार्य होइत अछि। ऐ प्रकारक बेवस्थाक विरूद्ध नंदजी अपन नवल सोचकेँ केन्द्रित केलनि। बर-कनियाँक सम्बन्ध स्वाभाविक रूपेँ तँ समझौता मात्र होइत अछि परंच संसारक बेवस्थामे सभसँ पवित्र आ अपूर्व सम्बन्ध यएह होइत अछि। जीवन भरि निर्वहन कोनो एक जनक संग छुटलापर दोसरमे बेथा... अकथ्य बेथा। तँए ऐ सम्बन्धमे प्रत्यक्ष संबोधन हेबाक चाही। हमर दृष्टिकोण ई नै जे अपन संस्कृति पराभव कऽ देबाक चाही मुदा संस्कृति आ बेवस्थाकेँ सेहो कालक गतिमे परिवर्तनक अनिवार्यता प्रतीत होइ छै।

आर्यावर्त्त न्याय, कर्म, मीमांसा सन प्रांजल दर्शनक आर्विभाव भूमि मानल जाइत अछि। ऐ खण्डमे एकटा नव दर्शनसँ मिथिलाक भूमिकेँ वैशिष्ट्ता प्रदान कएल गेल ओ अछि- इमान आ मर्मक बिम्बमे सम्बन्धक मर्यादा। नंद बाबू इंजीनियर छला। जौं अपन धर्मकेँ किछु ढील कऽ दैतथि तँ भौतिकताक बाढ़िसँ परिवार ओत-प्रोत भऽ सकै छला। मुदा एना नै कऽ सतत अपन कर्मकेँ साकार सत्यसँ बान्हि लेलनि। स्वाभाविक अछि अर्थयुगमे इमानक प्रासंगिकता बड़ ओछ भऽ जाइत अछि। असमए मृत्युक पश्चात् परिवारक दशाक विवेचन मर्मस्पर्शी लागल। हुनक सत् कर्मक प्रभाव यएह भेल जे संतान सभ विशेषत: आरूणि भौतिक रूपसँ संपन्न तँ नै भऽ सकला

मुदा पिताक छत्र-छायाक आँगनमे मनुख भऽ गेला। कर्मक गतिसँ लोक राज भोगकेँ प्राप्त तँ कऽ सकैत अछि मुदा मनुख बनैले नैसर्गिक संस्कार बेसी महतपूर्ण होइत अछि। तँए कहलो गेल अछि-

''बढ़ए पूत पिताक धर्मे।''

केतौ-केतौ नीच विचारक मानवक संतान मनुसंतान भऽ जाइत अछि, ऐमे दैहिक संस्कार आ प्रकृतिक लीला होइत अछि। आरूणिक दृढ़ बिसवासपर केन्द्रित ऐ उपन्यासक कथामे सतत प्रवाहक गंगधारा खहखह आ शीतल बुझना गेल। जँ कथाकेँ आत्मसात् कएल जाए तँ कोनो अर्थमे एकरा काल्पनिक नै मानल जा सकैत। आत्मकथा स्पष्टत: नै मानि सकै छी, किएक तँ उपन्यासकार कोनो रूपेँ एकर उद्बोधन नै केलनि अछि। भऽ सकैत अछि समाजक अगल-बगलक रेखाचित्र हुअए मुदा हमरा मतेँ ई कल्पना नै, सत्य घटनापर आधारित अछि।

उपन्यासमे एकटा कमी सेहो देखलौं। अंग्रेजी आखरक ठाम-ठाम प्रयोग कएल गेल जेना- एनेश्थेशिया, ओपिनियन, इम्प्रेशन आदि। ऐ सभ शब्दक स्थानपर अपन शब्दक प्रयोग कएल जा सकै छल मुदा नै कएल गेल। हमरा बुझने हम दोसर भाखाक ओइ शब्द सभकेँ मात्र आत्मसात करी जेकर स्थानपर हमर अपन भाखामे शब्दक अभाव अछि।

सहस्त्राब्दीक चौपड़पर:- कुरूक्षेत्रम अन्तर्मनकक तेसर खण्ड कविता संग्रहक रूपमे अछि, जेकर शीर्षक 'सहस्त्राब्दीक चौपड़पर' देल गेल। मात्र तैंतालीस गोट कविताक सम्मिलनमे श्रृंगार, विरह, हाइकू, विचार मूलक कविताक संग-संग एकटा ध्वज गीत सेहो अछि। इन्द्रधनुषक आसमानी रंग जकाँ प्रथम कविता 'शामिल बाजाक दुन्दुभी वादक' मे क्षणिक प्रकृतिक आवरणमे स्वर-सरगमक भान होइत अछि मुदा अन्तरक अवलोकनक पश्चात् दशा पूर्णत: विलग। राजस्थानक वाद्य संस्कृतिमे एकटा दर्शक वाद्य यंत्रक प्रासंगिकताक केन्द्रमे कविक भाव अस्पष्ट लागल। सहज अछि 'जेतए नै पहुँचथि रवि, ओतऽ गेल कवि'। कवि स्वयं दुन्दुभी वादक छथि, तँए स्पष्ट दर्शन केना हएत। संभवत: समाजक पथ प्रदर्शकक मूक दृष्टकोणकेँ कविताक केन्द्र बिन्दु बनौल गेल अछि। बहुआयामी बेक्तित्वक धनी बेकती सेहो जीवनक गतिमे दबावक अनुभव करैत केतौ-केतौ अपन संवेदनाकेँ दबा

कऽ दुन्दभी बनबाक नाटक करै छथि। कियो-कियो दोसरकेँ संतुष्ट करैले अपन विचारधारा बाह्य मनसँ बदलि लइ छथि। संतुष्टीकरण प्रवृत्ति वा कोनो प्रकारक मजबूरी हुअए, हमरा सभकेँ परिस्थितिसँ सामंजस करबाक बहाने अपन सम्यक् विचारकेँ माटिक तरमे नै झँपबाक चाही। समाज जौं एकरा पूर्वाग्रह मानए तँ अपन पक्षक विवेचन कएल जाए मुदा अनर्गल प्रलापकेँ मूक समर्थन नै देबाक चाही।

मोनक रंगक अदृश्य देबालमे परिस्थितिजन्य विषमताक विषए-वस्तुक दर्शन आशातीत अछि। मन्दाकिनी... आ पक्का जाइठ शीर्षक कवितामे प्रकृति आ समाजक स्थितिक मध्य विगलित मानवतापर मूक प्रहारमे कविक नैसर्गिक मुदा अदृश्य सोच हमरा सन साधारण समीक्ष लेल अनुबूझ पहेली जकाँ अछि। अपन पुरातन इतिहासक ओइ दिवसकेँ लोक स्मरण नै करए चाहै छथि, जइसँ अतुल पीड़ाक अनुभव होइत अछि। त्रेता युगक घटना, कलियुग धरि पाछाँ धेने अछि। शतानंद पुरोहित सीता जीक बिआह अगहन शुक्ल पक्ष पंचमीकेँ करौलनि, परिणाम सोझाँ अछि। खरड़ख वाली काकीक बिआह ओइ तिथिमे भेल। भऽ सकैत अछि हुनक भाग्यमे सीताजी जकाँ गृहस्थ सुख नै लिखल। मुदा कलंक तँ 'विवाह पंचमी' तिथिकेँ देल गेल। ऐ कवितामे कविक दृष्टकोण तँ विधवा बिआहक समर्थन करबाक अछि मुदा सवर्ण मैथिल नै स्वीकार कऽ रहल छथि। अपन पुरान सांगह लऽ कऽ हम सभ हवड़ाक पुल बनेबाक कल्पनामे कहिया धरि ओझराएल रहब?

ऐ कविता संग्रहमे जे नव विषए बुझना गेल ओ अछि 'बारह टा हाइकू'। गिदरक निरैठ, राकश थान, शाहीक मौस आ विधि लेल शब्द-शब्द बजैत अछि। हाइकूक सार्थक अर्थ लगाएब अत्यन्त कठिन होइत अछि मुदा हमरा बुझने जौं एहेन हाइकू लिखल जाए तँ नेनो सभ जे मैथिलीमे माए परिवार कुटुम्बक संग बजै छथि, अबस्स बूझि जेता।

मिथिलाक ध्वज गीतमे मातृभूमिसँ कर्मक सार्थक गति मांगल गेल अछि। मातृ वंदनाकेँ कविता संग्रहमे देबाक हिनक दृष्टिकोण रचनाक्रममे उपयुक्त हुअए मुदा हमरा मतेँ एकरा कुरूक्षेत्रम अन्तर्मनक प्रथम पृष्ठपर वंदनाक रूपमे देल गेल रहितै तँ बेसी सुन्नर होइतए।

'बड़का सड़क छह लेन बला'मे मिथिलाक विकासक स्थितिक वर्णन कएल गेल अछि।

सम्पूर्ण कविता संग्रहक अवलोकनक बाद कोनो पद्य अकच्छ करैबला नै लागल। 'पुत्र प्राप्ति' शीर्षक कवितामे लुधियानामे हमरा सबहक समूहक एकटा पंडितक ठकपचीसीक चर्च कएल गेल अछि। एहने ठकक कारण 'बिहारी' बेक्तीकेँ आठ ठाम लोक शंकाक दृष्टिसँ देखै छथि। मुदा गजेन्द्रजी सँ हमर आग्रह जे ऐ कविताक पंजाबी भाषामे अनुवादक अनुमति नै देल जाए नै तँ कतेको भलमानुष बनल मैथिल घुरि कऽ गाम आबि जेता आ हमरा सबहक समाजमे कुचक्र आरो बढ़ि जाएत।

गल्प गुच्छ- २३ गोट लघुकथा- विहनि कथाक सम्मिलन कऽ गल्प गुच्छक नाओं देल गेल। चौंसठि पृष्ठक ऐ खण्डमे समै-सालक सभ रूपकेँ बिम्बित करैत कथाकार साहित्यक समग्र विधापर लेखनक प्रयास केलनि अछि। सर समाज कथामे अर्थनीतिक मौन प्रस्तुति नीक लागल मुदा कलात्मक शैलीक अभाव बुझना गेल। घरक मरम्मतिक बिम्बित खिस्सामे कनेक रस-प्रवाह रहितए तँ कथा आर नीक भऽ सकै छल। हम नै जाएब विदेशमे पड़ाइनवादक विरोध कएल गेल अछि बिम्ब तँ नीक अछि मुदा विश्लेषणमे अलंकारक तादात्म्य नै भेटल। एहेन मार्मिक विषए-वस्तुक कथा तँ ओइ प्रकारक हेबाक चाही जइसँ हियमे हिलकोरि उत्पन्न भऽ जाए। राग भैरवी छोट मुदा संस्कृतिकेँ छूबैत अछि। काल स्थान विस्थापन आ वैशाखीपर जिनगीकेँ औसत मानल जा सकै छै।

कोनो साहित्यकेँ ताधरि पूर्ण नै मानल जा सकैत जाधरि समाजक अंतिम बेक्तीसँ सम्बन्ध भाषा साहित्यकेँ जोड़ल नै गेल हुअए। सर्व शिक्षा अभियान कथाकेँ पढ़ला पछाति मैथिली साहित्यमे दलित, पिछड़ा आदि वर्गक प्रति सरकारी योजनाक निष्फल हेबाक कारण केर स्पष्टीकरण वास्तविक लगैत अछि। पेटमे अन्नक फक्का नै हुअए आ पोथी मुफ्तमे भेटए, एहेन शिक्षाक स्थितिपर प्रश्न चिन्ह ठाढ़ करब स्वाभाविक अछि। साम्यवादी सोच राखएबला कथाकार कथाक बहाने स्पष्ट करए चाहै छथि जे गरीबक मध्य जातिक आधारपर विभाजन हमरा सबहक समाजक कलुषित रूप छी। छोट उदेसपूर्ण कविताकेँ क्षणिका वा हाइकूक नाओं देल गेल मुदा विहनि कथाकेँ

की कहल जाए? विहनि कथामे बिम्बक विश्लेषण अति क्लिष्ट होइत अछि मुदा ‘‘जातिवादी मराठी’’मे मैथिली भाषाक अस्तित्वपर लागल जातिक कलंकक प्रस्तुति सराहनीय अछि। थेथर मनुख, बहुपत्नी बिआह आ हिजड़ा, स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, अनुकम्पाक नौकरीक सभक विषए-वस्तु छोट-छीन परंच सारगर्भित लागल। जेना हिन्दी साहित्यक पत्र-पत्रिकामे चर्चित लेखक खुशवन्त सिंह मात्र दू पाँतिमे बहुत-रास गप लिखि जाइ छथि ठीक ओहिना ऐ सभ लघुकथाकेँ पढ़ि बुझना गेल।
जाति-पाति लघुकथा तँ पूर्णत: बेच्छप लागल। एकटा डोम जातिक आइ.पी.एस. परिवीक्षाधीन अधिकारीमे जातिक गरानि कोनो आत्मीय मनुखकेँ मर्माहित कऽ सकैत अछि।

मृत्युदंड आ वाणवीरक सामाजिक बिम्बक संग-संग सामन्तवादी, मीडियासँ सम्बन्धित कथा सभकेँ बेजोड़ तँ नै मुदा मैथिली साहित्य लेल नूतन-धाराकेँ स्पर्श करैबला कथा जौं मानल जाए तँ कोनो दोख नै।

आब प्रश्न उठैए जे गल्प-गुच्छकेँ कोन रूपक मानल जाए। हमरा सबहक भाषाक संग दुर्भाग्य रहल जे कथाक विषए-वस्तुसँ बेसी भाषा विज्ञान, बिम्बक विश्लेषण आ शब्द विन्यासक कलाकारीपर विशेष धियान देल जाइत अछि। साहित्यक अधिकांश अधिष्ठाता एकटा गपपर नै धियान देबए चाहै छथि जे रचनासँ समाजक परिदृश्यमे सम्यक् जीवनक सनेश जाएत वा नै। जातिक संग-संग संतुष्टीकरण केर छद्मसँ ऊपर उठब अनिवार्य अछि नै तँ मैथिलीक अस्तित्वपर प्रश्न चिन्ह ठाढ़ भऽ जाएत। भौगोलिकीकरणक परिधिमे मैथिली सभसँ बेसी प्रभावित भेल छथि। सौतिन भाषाक संग-संग पाश्चात्य संस्कृतिक प्रभावसँ वैदेही टिम-टिमा गेली। ऐ भाषामे नवल अर्चिस जरबैले वर्ग संघर्षक स्थितिसँ ऊपर उठि कऽ कार्य करबाक चाही। पागक अभिप्राय जौं मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक संग-संग बहुल झाँपल मुदा जनभाषाक संरक्षक वर्ग धरि पहुँचबाक प्रयास कएल जाए तँ मैथिलीक दशामे फेर चारि नै आठ गोट चान लागि जाएत।

ऐ कथा सबहक कथाकार कथाक शैली ओ विवेचन जे हुअए एकर निर्णए पाठकपर छोड़ि देबाक चाही मुदा रचनाक उदेस स्पष्ट अछि। गजेन्द्रजी निश्चित रूपेँ ऐ कथा संग्रहक माध्यमसँ समाजमे अपन संस्कृतिक

रक्षा करैत नूतन सम्यक् ज्योति जड़ाबए चाहै छथि, जेतए डोम, चमार, ब्राह्मण, राजपूत, मुसलमान ओ कायस्थ नै, मात्र ''मैथिल'' शब्दक व्योमक परिधिमे मिथिलाक चर्च कएल जाए। दुर्भाग्य अछि जे मैथिली पोथीक समीक्षा करैमे आलोचना-प्रत्यालोचनाकेँ मूल बिम्ब मानल जाइ छै जखनि की आन भाषामे रचनाकारक मनोवृति आ दृष्टिकोणपर धियान देल जाइत अछि।

संकर्षण: मात्र १६ पृष्ठक नाटक, सुनबामे कनेक अनसोहाँत जकाँ लगैत अछि मुदा जौं तन्मय भऽ कऽ पढ़ल जाए तँ स्पष्ट भऽ जाएत जे हिन्दी साहित्यमे मात्र किछु कथाक कथाकार श्री चन्द्रधर शर्मा गुलेरी जीकेँ केना आ किए आत्मसात् कऽ लेल गेल? संकर्षण सन अभिनेता जइ नाटकमे हुअए ओइमे विशेष भावक उपस्थिति स्वाभाविक अछि। अभिनेताक कोनो गुण नै मुदा गजेन्द्रजी एकरा प्रधान नायक बना देलनि। समाजक कुहरैत अवस्थाक यएह सत्य रूप छी, एक दिस महिंसक चरवाह आ दोसर दिस कलक्टरक चाटुकार। मिथिलाक समाजिक बिम्बकेँ स्पर्श करैत छोट नाटक संकर्षणमे नुक्कड़ नाटकक रूप अछि। ''हौ गोनर! पानि केना लागए देबैक एकरा। पएरक चमड़ा सड़त तँ फेर नवका आबि जाएत। मुदा ई सड़ि जाएत तखनि केतएसँ आएत।''

कहबाक तात्पर्य जे जइ बेक्तीकेँ शरीरसँ बेसी किछु कैंचाक जुत्ता विशेष महतपूर्ण लगैत हुअए ओइ बेक्तीमे जीवनक तादात्म्यक कोन प्रयोजन? धर्मनीतिसँ अर्थनीति बेसी महतपूर्ण अछि। कालक बदलैत स्वरूपक चिन्तन करबाक योग्य संभवत: ऐ नाटकक यएह उदेस छी, पर्दा उठत आ आधा धंटामे नाटक समाप्त। जीवनक नाटक मंडलीकेँ केन्द्रित करैबला संकर्षण चिन्तन करबाक योग्य लागल। सभटा नाटकमे कोनो ने कोनो रूपेँ हास्य आ श्रृंगारक सम्मिलन होइत अछि मुदा ऐठाँ अभाव किएक तँ समाजक मनोवृत्तिकेँ छुबैत ऐ नाटककेँ पढ़ि कोनो कविक एकटा कविताक एक पाँति मोन पड़ि गेल-

''ठोप-ठोप चारक चुआठकेँ आँगुरसँ उपछैत रहल छी''
गजेन्द्र जीक प्रयास छोट परंच अनुकरणीय लागल।

त्वञ्चाहञ्च आ असंजाति मन- जेना की नाओंसँ स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे दुनू काव्य ऐतिहासिक धटनाकेँ बिम्बित कऽ लिखल गेल। धर्म आ

कर्मक्षेत्रक परिधिमे आर्य संस्कृतिक विवेचन नीक लागल। ऐ महाकाव्यक विषएमे मात्र यएह कहल जा सकैत अछि जे सुरेन्द्र झा सुमन, वैधनाथ मल्लिक विधु आ मार्कण्डेय प्रवासी जीक काव्य लेखन परम्पराकेँ जीवंत रखबाक प्रयास कएल गेल।

बालमंडली आ किशोर जगत- हम सभ गौरवान्वित छी जे मैथिली भाषा समग्र आर्य परिवारक भाषा समूहमे सभसँ सरस भाषा मानल जाइत अछि। साहित्य चिन्तन सेहो पाठकक गणनाकेँ देखैत केकरोसँ कम नै। मुदा एकटा पक्ष जे सभसँ कमजोर रहल ओ छी मैथिली भाषा साहित्यमे "बाल साहित्यक दरिद्रता।" कहैले तँ बहुत रास लेखक वा कवि अपनाकेँ बाल साहित्यसँ जोड़बाक सतत् वाक पटुता देखबै छथि मुदा जौं पूर्ण रूपसँ बाल साहित्यक रचनाक गणना कएल जाए तँ जीवकांतजी सन मात्र किछु साहित्यकार छथि जिनक लेखनी ऐ दिशामे क्रियाशील रहल। जखनि कि बाल साहित्य जौं परिमार्जित नै हएत तँ निकट भविसमे मातृभाषाक स्वरूप विगलित भऽ सकैत अछि।

ऐ दिशामे गजेन्द्र जीक प्रयाससँ कृतज्ञ हेबाक चाही जे कुरूक्षेत्रम अन्तर्मनक सातो खण्डमे सभसँ नीक खण्ड बाल मंडली अछि। किशोर जगतपर अपन लेखनीकेँ हाथसँ नै हृदैसँ लिखलनि।

ऐ खण्डमे दू गोट बाल नाटक, तैइस गोट बाल कथा, वर्णमाला शिक्षा आ एक सएसँ ऊपर बाल कविता देल गेल अछि। सभ बिम्बकेँ केन्द्रित करैत लिखल गेल रचना सभक भाषा अत्यन्त सरल अछि। नेना-भुटकाकेँ एहने रचना चाही। जौं तत्सममे बाल साहित्य लिखल जाए तँ ओकर कोन प्रयोजन? कविता सभ तँ खूब नीक मानल जा सकैत अछि-

आइ छुट्टी
काल्हि छुट्टी
घूमब फिरब जाएब गाम...।

बाल बोध लेल अलंकारसँ बेसी मनक चंचलता उपयोगी होइ छै तँए ऐ खण्डकेँ आलोचनात्मक स्वरूपसँ देखब उचित नै।

निष्कर्ष- सात खण्डमे विभक्त ऐ पोथीमे साहित्यक समग्र रसक स्वादन करेबाक प्रयास कएल गेल। मुदा एकर सभसँ पैघ नकारात्मक स्वरूप जे

एकरा की मानल जाए? भऽ सकैत अछि सभ धाराकेँ छूबि गजेन्द्रजी मैथिली साहित्यमे एकटा नव रूपक धारा केन्द्रित करए चाहैत होथि।

एकटा पोथीमे प्रबन्ध, समालोचना, उपन्यास, गल्प, कविता संग्रह, महाकाव्यक संग-संग बाल साहित्य, पोथीकेँ विशाल बना देलक। भऽ सकैत अछि समीक्षक लोकनिक संग-संग किछु पाठककेँ नीक नै लगनि मुदा हम ऐ प्रकारक प्रयोगक स्वागत करब उचित बुझै छी। ओना पाठकक सुविधा लेल अलग-अलग सेहो प्रकाशित कएल गेल अछि।

सभसँ बेसी प्रकाशक धैनवादक पात्र छथि जे एतेक विशाल पोथीक नीक रूपेँ आ सम्यक् मूल्यमे प्रकाशन केलनि। भाषा सम्पादन सेहो नीक लागल, शाब्दिक आ व्याकरणीय अशुद्धता अत्यन्त न्यून अछि।

❍❍❍

पोथीक नाओं- कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक
लेखक- गजेन्द्र ठाकुर

२१.
रमाजीक काव्य यात्रा

मैथिली साहित्यक काव्य धरातलपर किछु एहेन कविक पदार्पण भेल अछि जनिक समर्पण आगाँ साक्षात् सरस्वती मूक भेल छथि ओइ साहित्यिकारक समूहमे श्री रमाकान्त राय रमा'क नाओं सम्मानसँ लेल जाइ छन्हि। ५ जनवरी १९४७ ई.कें समस्तीपुर जिलाक विभूतिपुर प्रखण्डक मानाराय टोलमे रमाजीक जनम भेलनि। म.वि. दलसिंहसरायमे शिक्षकक रूपेँ प्रथमत: योगदान देलनि आ अवकाशग्रहण उ.वि. शिरोपट्टी खतुआहाक शिक्षकक रूपमे केलनि। संस्कृत साहित्यमे आचार्य आ विशारद्सँ विभूषित रमाजी मैथिली आ हिन्दीमे कविता अपन छात्र कालहिंसँ लिखि रहल छथि। कविताक संग-संग गद्य साहित्यमे सेहो हिनक किछु योगदान छन्हि। एकटा कथा संग्रह कटैत पाॅखि : हँसैत आॅखि तीनिटा बबाजी (अनुदित कथा)क संग संग विविध पत्र-पत्रिकामे हिनक कथा, निवंध आदिक प्रकाशन भेल। एकटा निवंध संकलन कूटल-छाॅटल आ एकटा नाटक घर-छोड़ू हिनक अप्रकाशित कृति छन्हि।

रमा जीक पहिल कविता १९६४ई.मे मिथिला भूमिक प्रति समर्पण भावसँ मिथिला महान शीर्षक रूपेँ इलाहावादसँ प्रकाशित बटुक पत्रिकामे प्रकाशित भेल छल। लगभग सएसँ ऊपर कविता लिखि रमाजी अखनि धरि साहित्य धारामे गोंता लगा रहल छथि। ऐ यात्राक क्रममे मैथिलीक कोपभाजन सेहो भेला। सन् २००७ई.मे साहित्य अकादेमी आ मैथिली साहित्य संस्कृति विकास परिषद् समस्तीपुरक संयुक्त तत्वावधानमे रमाजी अपन जन्मभूमि मानाराय टोलमे काव्य संध्या आयोजित करबाक योजना बना रहल छला। ऐ क्रममे मैथिली साहित्यक वयोवृद्ध साहित्यकार श्री चन्द्रनाथ मिश्र अमर जीसँ भेँट करैले दरिभंगा जा रहल छला। यात्राक क्रममे अपन गृह स्टेशन नरहनमे रेलगाड़ीसँ पिछड़ि गेलथि आ हिनक दहिना पएर निच्चाँसँ कटि गेलनि। एहेन समर्पणसँ ककर हृदए नै पिघलि जाएत...।

अमरजी अपन आत्मकथा अतीत मंथन'मे ऐ घटनाक उल्लेख केने छथि। अस्पतालसँ छुट्टी भेटलापर रमाबाबू चुप नै बैसलनि आ हिनक इच्छा

पूर्ण भेल। ८ जून २००८कँ मनारय टोलमे काव्य संध्या'क आयोजन कएल गेल। श्री चन्द्रभानु सिंह कवि सम्मेलनक अध्यक्षता केलनि। उद्घाटनकर्त्ताक रूपमे अमरजी आ साहित्य अकादेमीक प्रतिनिधिक रूपमे मैथिली परामर्शदातृ समितिक अध्यक्ष श्री विद्यानाथ झा विदितजी उपस्थित भेल छला।

मात्र एतबे नै विकलांग भऽ गेलाक पश्चात् रमा जीक इच्छा शक्ति आ समर्पणमे कोनो कमी नै आएल, अखनो अपन अर्द्धांगिनीक संग सम्पूर्ण मिथिला क्षेत्रक काव्य गोष्ठी आ कथा गोष्ठीमे उपस्थित होइत छथि। अखनि धरि हिनक दू गोट काव्य संकलन प्रकाशित भेल अछि- फूल पात आ भांगक गोला।

फूलपात- १९७८मे पल्लव प्रकाशन, मानारय टोलसँ प्रकाशित फूलपात'मे १५ गोट कविता संकलित अछि।

यस्याप्रभावमतुलं भगवानन्तो'क नीतिक आधारपर पहिल कविता वंदना मातृभक्तिसँ ओत-प्रोत अछि। देशज छेहा मैथिलीमे लिखल गेल कविताक आवरण तत्सम मिश्रित संस्कृतसँ बनौल गेल। स्वाभाविक अछि साहित्यक ज्ञाताक शब्द तत्समसँ दूर केना भऽ सकैत?

अथिर थिर नर-नारि उर जे
प्रणय लय सिरजन

मिथिला वंदना मातृभक्तिक पश्चात् जन्मभूमिक प्रति निष्ठाकँ देखबैत अछि।

स्वागत सहर्ष हे जनक देश
गौलनि गुण जेकर रमा निवेश
शंकर विमुग्ध सुनि शुकक गान
हे धन्य-धन्य मिथिला महान...।

''जमकल रस सिंधु'' कवितामे रीतिक दर्शन तँ भेल मुदा छन्द आ लयक प्रवाहमे कवि ई बिसरि गेलनि जे कविता मैथिलीमे लिखने छथि आकि हिन्दीमे-

मगन चलय मन्द मन्द
मादक मधुमय मिलिन्द
मंजु मुकुल मृदु मरन्द

वासन्ती मलयानिल...।

स्वाभाविके अछि जे मैथिली साहित्यकमे ई धारणा भऽ गेल अछि जे जै पद्यक अर्थ सामान्य पाठक नै लगा सकै छथि ओ उत्तम पद्य मानल जाइत अछि, तँए संभवत: कवि ऐ कविताक रचना मात्र प्रबुद्ध रचनाकारकेँ अपन लेखनीक धारासँ मुग्ध करैले लिखलनि, सामान्य पाठक लेल ऐ रचनाकेँ कोनो रूपेँ उपयुक्त नै मानल जाए।

बाजल प्रणय वेणु कविताकेँ सरस श्रृंगार पद्य मानल जा सकैत। वसन्त गीत कविताकेँ आरसी प्रसाद सिंह जकाँ प्रकृतिक मनोरम चित्रण करबाक प्रयास तँ कएल गेल मुदा विश्लेषण औसत मात्र भेटल-

मलयानिल नित भोरे सँ बहि
भेल विकल जगत भरि की कहि?
सुनि-सुनि ऑचर ससरय
कुसुमित कानन कण-कण विहुंसय।।

हम अजेय सरल क्रांति गीत बुझना जाइत अछि। डुमैत तरेगन'मे पाक आ बांगला देशक प्रसंगक उल्लेख कएल गेल अछि। जौं ऐ बिम्बकेँ कविताक स्थानपर कथा रूपमे प्रदर्शित कएल गेल रहितए तँ अबस्स नीक भऽ सकै छल।

'शरद निशा' कविताक बिम्ब आ विश्लेषण दुनू प्रासंगिक अछि। मुदा एकटा बात खटकि रहल अछि जे जखनि ऐ कविताक प्रकाशन फूलपातमे १९७८ई.मे रमाजी केलनि तँ पुन: कर्णामृत त्रैमासिक पत्रिकाक नयना जोगिनी अंक अक्टूबर-दिसंबर २००९मे किए प्रकाशन हेतु पठा देलनि। ऐ सँ कविक अपन रचनाक प्रचार-प्रसारक प्रति अविश्वसनीयता झलकैत अछि। जौं एना केलनि तँ संग्रहक प्रति साभार लिखि देबाक चाही।

ओनी-मानी' कविता बालमनोविज्ञानकेँ नीक जकाँ देखबैत अछि-

अएथुन तोहर बाबू बौआ
कौआ बाजय कॉव-कॉव
रूसि रहव जँ एखनेसँ तऽ
के देतन पीढ़ी खरॉव...।

पीढ़ीक स्थानपर पिरही लिखबाक चाही छल।

''नहि आयल चिर चोर'' कविता विद्यापतिक श्रृंगार रससँ ओत-प्रोत रचना जकाँ लिखबाक प्रयास कएल गेल मुदा रमाजी होथु वा कियो आन महाकवि विद्यापतिक नकल करबाक प्रयास नै करबाक चाही।
ग्रीष्म ॠतु आ पावस गीत सेहो सामान्य मानल जा सकैत अछि।
भांगक गोला- भांगक गोला रमाजी हिन्दी साहित्यक महाकवि हरिवंश राय वच्चन जीक मधुशालासँ प्रेरित भऽ कऽ लिखने छथि। ऐ रचनाक प्रकाशन नभम्बर २००४ई.मे भेल। चारि खण्डक ऐ रूबाई संग्रहमे पहिल खण्ड ओरिऔन, दोसर भांगक गोला तेसर धोनइ धांइन आ चारिम परिशिष्ट अछि।

ऐ प्रकारक नूतन प्रयोगकेँ कोन रूपेँ देखल जाए एकर निर्णए पाठकपर छन्हि मुदा अन्तर्मनसँ कएल गेल कविक प्रयासक हम सराहना करै छी। ऐ संग्रहमे सभसँ नीक लागल अपन देसिल वयनामे कविक मनोवृत्तिक सहज प्रदर्शन-
स्वीकार करू हम चढ़ा रहल छी
अपन पहिल भांगक गोला।

रमा जीक दुनू काव्य संकलनक दृष्टिकोण आ विश्लेषणसँ पाठककेँ की भेटल ऐसँ बेसी महतपूर्ण अछि हिनक साहित्य समर्पण।

अपन रचनासँ पाठकक हृदैकेँ स्पर्श करथु वा नै मुदा साहित्यक दधीचि बनि रमाजी मैथिली आ मिथिलाक आत्मामे अबस्स प्रवेश कऽ गेल छथि।

❍❍❍

२२.सूर्यमुखी-

मैथिली साहित्यमे अंग्रेजी अथवा हिन्दी भाषा साहित्य जकाँ पद्य विधाकेँ कालक आधारपर रेखांकित नै कएल गेल अछि। किएक तँ छायावाद, हालावाद, रीति, क्रांति आदि विषए मूलक पद्यक रचना हमरा सबहक वयनामे सभ युगक साहित्यकार कऽ रहल छथि, कोनो विशेष कालकेँ एकवादसँ जोड़ब उचित आ प्रासंगिक नै।

एतदर्थ पद्य विधाक आत्मा जौं आशु कविता आ गीतकेँ मानल जाए तँ किछु पद्य संग्रह मैथिली साहित्यकेँ भारतीय भाषाक प्रवर समूहमे स्थापित करैत अछि ओइमे यात्रीजी रचित चित्रा आ पत्रहीन नग्न गाछ, चंदा झा रचित गीत सप्तसती, सीता राम झा रचित उनटा बसात, भुवन कृत आषाढ़, मधुप कृत शतदल, उपेन्द्र ठाकुर मोहन कृत बाजि उठल मुरली, सुरेन्द्र झा सुमन कृत पयस्विनी, उपेन्द्रनाथ झा व्यास रचित प्रतीक, अमर कृत गुदगुदी, गोपालजी झा गोपेश कृत गुम्म भेल ठाढ़ छी, चन्द्रभानु सिंह रचित के ई गीत अलापि छैं, सोमदेव कृत कालध्वनी, नचिकेता कृत कवयो: वदन्ति, रवीन्द्र नाथ ठाकुर कृत रवीन्द्र पदावली, नवल कृत असमंजस, शेफालिका वर्मा रचित मधुगन्धी वसात, श्यामादेवी रचित कामना, इलारानी सिंह रचित विन्दन्ती, मार्कण्देय प्रवासी रचित एतदर्थ, कीर्ति नारायण मिश्र कृत सीमान्त, सरस रचित आंजुर भरि सिङरहार, कालीकान्त झा बूच जीक संकलित पद्य संग्रह कलानिधि, राजदेव मण्डल रचित अम्बरा, ज्योति चौधरी रचित अर्चिस प्रमुख अछि।

यात्री जीक दुनू पद्य संग्रहमे साम्यवादक धरातल चिक्कन चुनमुन आ उपेक्षितक प्रति विशेष अनुलोम भाव प्रस्फुटित भेल छै मुदा समग्र साहित्यिक विचार धाराकेँ जौं आधार मानल जाए तँ सर्वकालिक मैथिली भाषा साहित्यिक पद्य संग्रहमे सूर्यमुखी केँ सर्वश्रेष्ठ मानल जा सकैत। एकर मुख्य कारण जे यात्री जीक रचनामे समाजमे साम्यवादकेँ मान्यता देबाक प्रयास तँ कएल गेल मुदा यात्रीजी असहज जीवनक मनोवृत्तिसँ केतौ-केतौ उद्वेलित भऽ कऽ पड़ाइनवादक पक्षधर भऽ जाइ छथि हुनक मनोदशासँ केकरो कोनो द्वेष नै, समग्र मिथिला यात्री जीक प्रतिभाकेँ नमन करै छन्हि परंच रचनाकारकेँ अपन

हृएयक बेथाकेँ रचनापर प्रकट नै होमए देलासँ रचनाक स्तर किछु बेसी मान्य भऽ जाइत जेकर प्रत्यक्ष प्रमाण आरसी प्रसाद सिंह रचित सूर्यमुखी अछि। यात्री भुवन, चंदा आ मधुपकेँ छोड़ि कोनो मैथिली साहित्यकारक कविता आरसी प्रसाद जीक सूर्यमुखीक जड़ि धरि नै पहुँच सकल, डाढ़ि आ पातकेँ छूबाक कल्पना सेहो असंभव अछि।

सन् १९६९सँ लऽ कऽ १९८१ई. धरिक रचनाक संकलनमे ६१ गोट पद्यक संग-संग ३६ गोट लधुकविता संकलित अछि। सन् १९८४ई.मे सूर्यमुखी पद्य लेल आरसी प्रसाद सिंहकेँ साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित कएल गेल। रचनाक आरम्भमे २२ पृष्ठक आरसी प्रसाद जीक शब्दमे लिखित प्रवेशिका सन्निहित कएल गेल अछि। ऐ प्रवेशिकाकेँ आमुख वा भूमिका सेहो मानल जाए। कविताक परिभाषाकेँ आन अग्रणी साहित्यसँ जोड़ि कऽ जे बिम्ब तैयार कएल गेल ओकरासँ पाठककेँ काव्यधाराक प्रति निश्चित रूपेँ नव आयाम भेटत। आरसी प्रसाद जीक हिन्दी साहित्यक प्रवीण कवि छथि। कवि सरोज भुवनेश्वर सिंहक प्रेरणासँ आरसी मैथिली साहित्यमे पएर रखलनि। अपन पहिल कविता शेफालिका'क रचना १९३६ई.मे केलनि। ओइकाल धरि आरसी प्रसाद जीक दृष्टिकोणमे मैथिली मात्र एकटा बोली छल मुदा भाषाक हृदैमे प्रवेश करिते कृत-कृत्य भऽ गेला आ हिन्दी जकाँ अपन तृण-तृणमे देसिल वयनाकेँ समाहित कऽ लेलनि। शेफालिकामे आरसीकेँ सत्यक बोध भेटलनि तँ रजनीगंधामे सौन्दर्य बोध। सूर्यमुखीमे साक्षात् मंगल मूर्तिक दर्शनसँ कवि भाव विभोर भेल छथि।

सूर्यमुखी ऐ पोथीक पहिल कविता अछि कोनो एकटा कविताक शीर्षककेँ कविताक संग्रहक शीर्षक बनेबाक दृष्टिकोण कोनो पाठक लेल झाँपल नै भऽ सकैत। निश्चित रूपेँ आरसी सूर्यमुखीकेँ अपन प्रखर कवित्वक आवरण मानै छेलथि। आदित्य आ सूर्यमुखीक मध्यक सम्बन्ध विचारणीय अपन सिनेही दिस मात्र देखैले सूर्यमुखी प्रेरणा स्त्रोत भऽ सकैत। रीति वा प्रीतिक एहेन रूप मूक जीवे टा मे भेट सकैत। साकार रहितो आरसीक जीवन निरंकार जकाँ छल। जलमे रहितो पुरनिपातक जकाँ परंच पुष्पसँ सिनेहकेँ सीख श्रृंगारक भान स्वाभाविक, किएक तँ प्रकृतिस्थ वस्तुमे पुष्पक सौन्दर्यसँ निरंकुशोमे आसक्ति पनपि जेबाक संभावना भऽ सकैत। सूर्यमुखी

पद्यमे ऋृतुराजक अवाहान कालमे आन फूलक सौन्दर्यसँ सूर्यमुखीक तुलनामे परार्थ प्रेमक अनुभव अनुशासित आ निष्ठासँ कएल गेल। वसंतक माधुर्य बेलामे पारिजातकेँ अमरत्व भेटल, हरसिंगार ब्रह्मबोला मे वसुन्धराकेँ स्पर्श कएलक, रजनीगंधा रैनक मादक मधुगंधी बसातकेँ आलोकित कएलक। अभिसार पथक प्रशांत बनि बेला मधुर मिलनक स्पर्श कएलक, संगहि जूही आ चमेली सखी बहिनपा बनि वसंतकेँ उन्मादित कएलक। ऐ पावन परिणयकालमे उपेक्षित रहि गेली तँ मात्र- सूर्यमुखी। ऐ नवल बिम्बित सिनेहक प्रदर्शन मैथिली की सभटा भारतीय भाषामे विरले देखैमे आबैत अछि। सूर्यमुखीकेँ भेटल मात्र तँ दिवाकरक प्रति सिनेहिल दृष्टि। जखनि धरि रवि वसुन्धराकेँ देखै छथि, तखनि धरि सूर्यमुखी हुनक परम समर्पिता प्रेमिका बनि हुनके दिस तकै छथि, रविक, ज्योति दुआरि बन्न होइते सूर्यमुखीक नयन पट बन्न। सूर्यमुखी जकाँ जौं आदित्यक कोनो आन सिनेही तँ ओ पंकज...।

विरले आत्मा कोनो पंकजे सन उठबै छै माथा
जन्म पंक मे लैत, सरोवर-सलिल राशि कऽ लंघन
तोहर सन सौभाग्य ककर जे परम प्रकाश बनौलक
उद्घाटन ले तोहर आनने अपन चेतना दर्पण

प्रभात मे पुनीत प्रेमक झलकि अरूणोदय कविता मे भेटैत अछि। कोनो अनुभव मात्रक बेथित सिनेहसँ कविक मन भीजल छन्हि मुदा अदृश्य विद्युत धारक अनुभव मात्रसँ अपन सुधि-बुधि बिसरि गेल छथि। उगैत सूर्य केँ प्रणाम पद्यक शीर्षकसँ भान होइत जे मात्र सकल साध्य पूर्णकेँ नमन करबाक चाही मुदा कविताक बिम्ब एकदम अलग लागल। प्रभातक लालिमासँ पहिने जगबाक उद्घोष कऽ रहल छथि- आशुकवि। अपन स्वदेश भूमिकेँ वैश्विक मानचित्रपर स्थापित करैले ई कविता जागरण-गान जकाँ छै। चेतना तरंग मैथिली साहित्यमे लिखल गेल छाया गीत रूपक अनुभव करा रहल अछि। प्रकृति सौन्दर्य बोधमे महुआक भंगिमा मिथिलाक बहुत रास संस्कार परम्पराक द्योतक छी, तँए कोइली पपिहा आ चैतीकेँ चेतना तरंगसँ जोड़ब प्रासंगिक लागल। प्रात:कालमे हरसिङार झड़ि कऽ प्रभातकेँ अनुगामी बनबैत अछि, कविक चंचल मन शरत ऋृतुक उषाकाल जकाँ आ प्राण हरसिंगार

बनि गेल। रीतिक निशामे कवि अपन नाओं आ गाओं सेहो बिसरि गेल छथि ऐ आशुगीतक अनुभव हरसिंगार कवितामे भेल सनातन पुरुष कवितामे द्वैत आर्य संस्कृतिकेँ नील नदीक सभ्यतासँ जोड़ि कवि सत्य, अहिंसा, करूणा, मैत्री आ सिनेहक पाठ प्रस्तुत करै छथि। कोनो धर्म यथा-हिन्दू, इस्लाम, बौद्ध, इसाइ पंथक निर्वाह करैबला लोकक आचार विचार कतवो भिन्न हुअए मुदा हृदैक स्पन्दन आ रक्तक प्रवाह सरिता सभमे सम अछि। सनातन पुरुष शीर्षक कविताक माध्यमसँ पाथरमे देवत्वक प्रवेश करेबाक प्रयास केलनि। वर्षा उल्लास शीर्षक कवितामे पावस ऋृतु कालक चराचर जीवनक रंग भावुक लागल। शस्य गान कृषि प्रधान भारत भूमिक हरियरी भरल वसुधाक विप्लव चित्रण करैत। अखण्डता मे एकताक दृष्टिकोण हम एक छी शीर्षक कवितामे देखैमे आएल परतंत्रताक कलुप अध्याय तँ सन् १९४७ई.मे समाप्त भेल मुदा आर्शिक सामाजिक आ वैश्विक दृष्टिसँ हमरा लोकनिक देश सन् १९६२ई. धरि पाछाँ रहल। चीन युद्धमे पराजयक कलंक लागल मुदा शनै: शनै: राष्ट्रीय एकताक रक्षा करैत हम सभ १९६५मे एकटा पड़ोसी राष्ट्रकेँ धराशायी केलौं। तदुपरांत अन्तर्राष्ट्रीय परिदृष्यमे भारत भूमिक चर्च हुअ लगल।

सन् १९६९ई.मे आरसी प्रसादजी ऐ दशापर हमर देश जागल कविताक रचना केलनि। मुदा संगहि-संग किछु व्यभिचारसँ कविक मोन उद्विग्न छन्हि-

जमाना क मोफिल, जुआनीक नटुआ
मगन भेल जनता हेरा गेल बटुआ
घरक बेचि कनियाँ
लेलक कीनि धनियाँ
भगत भेल बनियाँ, जगत ज्ञान जागल
हमर भाग जागल हमर देश जागल

सन् १९७२-७३मे मिथिला दर्शन, गोतिया आ अँजौर सन् पत्रिकामे ई काव्यगीत प्रकाशित भेल आ लोकप्रिय सेहो भेल। एकर प्रमाण जे आरसी प्रसाद जीक कवितासँ प्रेरित भऽ कऽ काव्य जगतमे प्रवेश करैबला एकटा कवि काली कान्त झा 'बूच', ऐ ऊपरलिखित कविताकेँ पढ़ि अपन प्रेरणास्त्रोतकेँ जागरण गान लिखि समरपित केलनि-

असम बंग पंजाब गुजरात जागल
अहीं टा पड़ल छी उठू औ अभागल।

समाजमे जागृति उत्पन्न करैले हिन्दी साहित्यमे जे स्थान दिनकर नेपाली, सुभद्रा कुमारी चौहान आ महादेवी वर्मा सन कवि-कवयित्रीकेँ देल गेल अछि ठीक ओहिना आरसी प्रसाद जीक किछु कविता जेना जन-जागरण, राष्ट्र गीत, युवाशक्ति, राग भारू, हाक, निबोधन, ललकारा, क्रांतिपूत आदिकेँ पढ़ि मैथिली साहित्य लेल हिनका देल जा सकैत। मैथिली मन्दिरमे शीर्षक कविताक माध्यमसँ वैदेहीक संग-संग विदेह आ मिथिलाक वन्दनामे मातृत्वक सिनेह अविरल लागल।

आन भाषा जकाँ मैथिली साहित्यक संग ई बिडम्बना रहल जे कविता सभमे अधिक ठाम रीतिक आड़िमे आसक्तिक रूप अवांछित भेटैत अछि। सुमित्रा नंदन पंत जकाँ मैथिलीमे नगण्य रीति कवि छथि-

मानस मंदिर मे सती, प्रिय की प्रतिमा थाप,
जलती थी प्रिय विरह मे बनी आरती आप।

मुदा सूर्यमुखीक किछु पद्य जेना आसंगिनी, मनोरथ, मनक बात शीर्षक कविता सभमे प्रीतिक आकुलता आ लावण्य स्त्रोत कवि पंतसँ कनेको कमतर नै।

विचार मूलक कविताक रचनामे आरसी प्रसाद जीक एकटा अलग स्थान छन्हि। सूर्यमुखीमे बहुरूपिया, विभावना, आत्मज्योति, सत्यआस्वप्न, अछाह, जगजीवन, विरोधाभास, मिथ्यापाथर, युगवोधक विपति, अस्वीकृतिक आयाम, आनंदक खुजल दुआरि आ जीवन संध्या सन बहुआयामी विचारमूलक कविताकेँ संकलित कऽ पोथीक मर्यादा निश्चित रूपेँ बढ़ल। एक वस्तुकेँ प्राप्त करबाक आशमे कविकेँ कतेको बेर प्रयास करए पड़ै छन्हि। क्षण भरिक तृप्ति लेल सम्पूर्ण जीवनकेँ समाप्त कऽ देलनि। जेकरा लेल लोक संसारक सुख-दुखकेँ किछु नै बुझैत अछि ओ केतए धरि लोकक संग दइ छन्हि।

बहुरूपिया शीर्षक कवितामे समाजक द्वैध नीतिक अनमोल प्रदर्शन कएल गेल। ऐ कवितामे समाजक अन्तर्द्वन्दक मध्य विषम अर्थनीतिकेँ छायावादितासँ झाँपि आरसी प्रसादजी रचनाकेँ अमरत्व प्रदान कऽ देलनि-

एक मंगल रूप मोहन रूप दोसर घोर

एक निर्मम बनि कनौल एक पोछय नोर
के एहेन बहुरूपिया? के कऽ रहल अछि खेल?
जान ककरो जाए, उत्सव खेल ककरो लेल।

विचार मूलक कवितामे दृष्टिक महत होइत छै, कियो एक रूप तँ दोसर आन रूपसँ देखि सकै छथि। ऊपरलिखित पद्यकँ बलि प्रथा वा दोहरि मानसिकता कोन रूपमे देखल जाए, एकर दृष्टान्त तँ आब असंभव...।

साम्यवादी वएह भऽ सकै छथि जिनकामे बेथा हुअए, ओ बेथा अभावक हो वा संत्रासक मुदा जे मात्र कलमे टा मे नै, नित्य कर्ममे समग्र संसारकँ आत्म सात् करबाक शक्ति रखैत होथि। आरसी प्रसद जीक जीवन सरल छेलनि तँए समाजक ओछ होथि वा उच्च सबहक मानसिकतामे अभावक दर्शन करै छला। केतौ जीवन जीबैले साधनक अभावक दर्शन होइत छेलनि तँ केतौ साधनक प्राप्तिक लगातार प्रयास करबाक क्रममे असंतोष दर्शन-

डुमै अछि देह मुइल सूर्यक प्रकाशमे,
शीशा केर भीत छेद आबै अछि पासमे
अप्पन प्रति विम्व सँ अपनहि टकराइ छी
धुआँ जकाँ बन्न घर मे हम औनाइ छी

हमरा सबहक लेल दुर्भाग्य अछि जे मिथिलाक परिधि कोसी, कमला, गंडकी, बागमती, बलान, करेह आ किछु गंगा माएक हड़होरिसँ सौन मासमे तबाह हुअए प्रारंभ भऽ जाइत अछि। ऐ बाढ़िक विनाश लीलासँ मिथिलाकँ प्राय: प्रति बर्ख भारी कलेषक सामना करए पड़ै छन्हि। कविवरक जनम भूमि समस्तीपुर जिलाक एरौत गाम बागमतीक किछेरमे छन्हि तँए ऐ विषएपर लेखनी मूक केना राखथि। बाढ़िक हकरोस, सजल कुशल, वागमतीक धारमे आदि शीर्षक कविताक माध्यमसँ कवि जीवनक नाओं केतए लागत केर उद्घोष करै छथि। बाढ़ि हकरोसमे जनजीवन परेशान भऽ जाइत अछि। मुदा एक अर्थमे बाढ़ि समाजक एकताक प्रतीक सेहो छी-

एहेन आपत्काल विसरल वैरियो अरि-भाव,
साप मूसक मिलन देखल रंक भेटल राव।

मात्र सभ जीवे टा एकत्रित रहै छथि, किएक तँ सबहक साधन समाप्त भऽ जाइ छन्हि, प्राणकेँ तन्मे रखबाक मात्र आशा तँए केकरोसँ कोनो द्वेष नै। ऐ विषम परिस्थितिमे आरसी प्रसादजी बहुत बेर घेराएल छेलथि, तँए राजधर्मसँ निश्चित रूपेँ अवगत भेल हेता-

खाली शुभकामनाक कोनो ने मानि,
उपछऽ मे लागि गेला हाथे सँ पानि
तर्पण मे भीड़ल छथि, जूटि कऽ किसान
दाहर मे डूबि गेल कुशलक सभ धान।

एक दिस प्रलयक भयंकर लीला मुदा दोसर दिस हमरा सबहक भौतिकवादी दृष्टिकोणक प्रवृतिमे चार्वाक दर्शनक अनुपालन आवश्यक तँए कवि मर्माहित छथि जे भोजनक अभाव मुदा अय्याशीक साधन लेल लोक सभ उद्यत छथि-

सान्त्वनाक हस्तलिखित पोथी गलि गेल,
पान एक ढोली ले गोली चलि गेल...।

उछाह शीर्षक कवितामे कवि दु:खक सागरमे गोता तँ लगा रहल छथि मुदा कँपै छन्हि आत्मा जे संसारमे दु:ख मुदा केतए जाएब।

अर्थावलम्वी संसारमे सभटा उनटा-पुनटा भऽ रहल अछि। वाचक चुप्प छथि आ गोंग वाचाल बनबाक प्रयास कऽ रहल छथि। जगजीवन शीर्षक कवितामे बिम्ब आ विवेचन दुनू नीक मुदा ऐ कवितासँ अपन जीवनकेँ नीरस मानएबला लोककेँ कोन प्रकारक चेतना भेटत? आरसीक अर्थ होइत अछि- दर्पण मुदा आरसी प्रसाद जीक ऐ कवितासँ दार्शनिक केँ तँ अबस्स दर्शन भेटल मुदा अल्पज्ञ समाजकेँ मात्र छोह आ आकुलताक दर्शन भेटतनि तँए ऐ कविताकेँ आरसी प्रसादजी सन रचनाकारक अतिसाधारण प्रस्तुति मानल जाए। विरोधाभास शीर्षक कविता सेहो देशकालक दशासँ उबल मनुख लेल कोनो अर्थमे प्रेरणास्त्रोत नै मानल जा सकैत अछि-

कतहु चैन नहि पाबइ छै नर,
आशा तृष्णा शरसँ बेधल
एक फांस सँऽ जखनहि छूटल,
दोसर मे तखने उद्वेगल।

ज्ञान झाक वियोग शीर्षक कविता कोनो बेकती विशेषकेँ निर्देशित नै कए कऽ सरस्वतीक भंगिमामे जीवनक तादात्म्यकेँ झलकाबैत अछि। समए कालक दशापर वृति चित्र जकाँ लिखल गेल कवितामे भ्रष्टाचार आ जाति समाजक कुण्ठाक विवरण प्रसंगिक मानल जा सकैत। प्रेमक रूप जौं अनुशासित हुअए तँ प्रेमी-प्रेमिकाक चरित्र आ विचारकेँ नकारात्मक मानव उचित नै। मैथिली साहित्यमे ऐ विषएपर बहुत रास कविता लिखल गेल अिछ मुदा सूर्यमुखीमे सन्निहित रूप-राशि कविताकेँ किछु आर अनुशासित पद्यक श्रेणीमे राखब उचित। कविक दृष्टिमे प्रेमिकाक देह चानन जकाँ, कंठ मुरली सन, करतल किसलय सन, रूप दर्पण सन, आँखि कालिन्दी सन आ छाँह चुम्बक जकाँ लगै छन्हि। कवि प्रेमिकाक गामकेँ वृन्दावन जकाँ आ जैठाम प्रेमिकाक चरण पड़ैछ ओइ भूमिकेँ गोकुल जकाँ पवित्र मानै छथि। वास्तविक जीवनमे आरसी प्रसादजी पवित्र आचरणक बेकती छला तँए बेक्तिगत जीवनमे भऽ सकैत जे अपन अर्द्धांगिनीक प्रति समरपित कविता लिखने होथि वा समाज लेल प्रेम संदेश सेहो ऐ पद्यकेँ मानल जा सकैत। राग लय आ गतिमे महाकवि विद्यापतिक पद्य सबहक कोनो तुलना नै भऽ सकैत मुदा नीक लागल जे आरसी प्रसाद जीक दू गोट पद्य विद्यापतिक पदावलीमे सन्निहित गीत जकाँ सूर्यमुखीमे लिखल गेल अछि- हरिगीतिका आ अनुराधा दुनू पद्य विद्यापतिक रचनाक छाँह जकाँ लागल। अनुराधा तँ राग भैरवीमे महाकविक लिखल बहुत रास कवितासँ मिलैत अछि।

मैथिली साहित्यमे गजल नाओंसँ तँ बहुत कविक बहुत रास पद्य लिखल गेल अछि मुदा जौं श्रृंगार रसकेँ सरावोरि कऽ गजल वनएबाक चर्च कएल जाए तँ आरसी प्रसादजी रचित गुलाबी गजल केँ एकटा अलग स्थान देल जाए। गजलक पाँति-पाँतिमे बिम्ब अलग-अलग होइत छै। तँए परिधि निश्चित नै। गुलाबी गजल पढ़ला पछाति ई भम्र दूर भऽ गेल जे एकटा प्रेमीकेँ अपन प्रेमिकाकेँ समरपित कएल गेल अछि। चूँकि कवि अपन सिनेहीसँ अलग-अलग दिवसक रूप सरिताक चर्च करै छथि तँए ऐ पद्यकेँ कोनो पतिकेँ अपन पत्नीक प्रति परम सिनेह भरल उद्बोधन मानल जा सकैत। वसंतक नहुँ-नहुँ शीतल वयारसँ प्रेमिका मोन आ अंग-अंग फूलल गुलाव जकाँ भऽ गेल अछि। बिनु निसा ग्रहन केने कवि उन्मत्त छथि, अपन प्रेमिका वा

वामाक रूप फण बढ़ाएल सर्प जकाँ लहलहाइत देखाइ छन्हि। वास्तवमे फागुनक रंगसँ आरसी रंगा गेल छथि। १९८१ई.क होली विशेषांक (मिथिला मिहिर) मे ई कविता छपल छल। कविक मोन कहिओ वृद्ध नै भऽ सकैत छै तँए ने कवि अपन अर्द्धांगिनीसँ कहै छथि-

''कतहु ने जाउ भरि फागुन हमरे लग रहू।''

वास्तवमे आरसी प्रसादजी ककरा मुखसँ किनका प्रति समरपित ई गजल लिखलनि ई प्रश्नवाचक चिन्ह रहि गेल। मात्र एतबे मानल जाए जे सामाजिक जीवन आ पारिवारिक मर्यादासँ बान्हल आरसी गृहस्थ धर्मक किछु रूपकेँ सदिखन अपन लेखनीसँ स्पर्श करैत रहला।

किछु पद्यक विषएमे मैथिली साहित्यमे अखनो मतैक्य नै। ओइमे सँ एक- ''विरहमासा'' अछि। सामान्य रचनाकार ऐ प्रकारक पद्यकेँ बारहमासा लिखै छथि आ बर्ख भरिक प्रेमिकाक विरहवेदनाक वर्णन करै छथि। परंच वास्तवमे वारहमासा नै भऽ कऽ एहेन पद्य विरहमासा छी। विरहिनी जेतेक मास धरि पतिक वियोगमे विलग छथि मात्र तेतेक मासक चर्च कएल जाए। कवि मधुपक विरहमासा तँ केतौ पाँच-छह मास तँ केतौ बर्ख धरि लिखल गेल। सूर्यमुखीमे देल गेल विरहमासा कातिकसँ लऽ कऽ आसिन धरिक प्रेमिकाक वेदना छी। शब्द-शब्दमे स्वत: मर्मस्पर्शी झंकार मुदा एकटा कमजोर पक्ष जे बर्ख भरिक वेदनामे कार्तिकक पश्चात् अगहनक चर्च तँ कएल गेल मुदा तेकरा बाद मूस माध लुप्त। फागुनक पश्चात् सोझहे जेठ मासमे कवि प्रवेश कऽ गेलनि। अषाढ़क चर्च आरसीक मोनेमे रहि गेलनि। विरहक सभसँ हिलकोरि भरैबला मास भादवक ऐ पद्यमे कोनो प्रयोग नै केलनि। तँए विरहमासाकेँ पूर्ण नै मानल जा सकैत अछि। जौँ मात्र छ: मासक चर्च करबाक छेलनि तँ लगातार करबाक चाही, सम्पूर्ण सालकेँ छ: मासमे समेटब उचित नै लागल।

कवि कोनो राजनेता नै जे गरीवी भगेबाक योजना तैयार करथि मुदा लेखनीसँ प्रगती शीर्षक पद्य लिखि गरीबी दूर करबाक कल्पना अनुखन लागल। वचनिका, उपराग, दिलासा, मुइल सती, परिपाटी, ज्योतिवरण, ललित स्मृति, ॠृतुराज दर्शन, असीम आहवान, अर्थीक अर्थ, संक्रान्ति आदि कविताक माध्यमसँ ई ज्ञात होइत अछि जे कवि आरसी कोनो योजना बना

कऽ कविता नै लिखै छला, कवित्वक संचार हिनक कण-कणमे व्याप्त छेलनि यएह कारण जे आधुनिक मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ आशुकविक श्रेणीमे आरसीक स्थान विलक्षण मानल जाए। आरसी वीसम सदीमे रहितो भूतकालमे प्रवेश कऽ कखनो-कखनो कविता लिखै छला, जेकर प्रत्यक्ष प्रमाण दोहा दोहन कविता छी। जइमे १२ गोट दोहा लिखल गेल अछि। कवीर, रहीम जकाँ समए कालक दोहा सभमे वर्त्तमान कालक कलुषित मनोवृत्तिक विविध रूप चित्रण ऐ सभमे भेटैत अछि-

पोथी पढ़ि किछु हैत ने, तोड़ऽ चाही रोट,
जोड़ू नोट बकोटि कऽ भोट बटोरू मोट
अस्पताल सँ नीक अछि हमरा लगै पताल
कालक ओतऽ अकाल अछि काल एतऽ तत्काल।

दीपक दर्प आ नव पद्धआक संग-संग ३६ गोट मुक्त मुक्तावली सभमे कविताक विविध धाराक आँचरमे कवि समाज लेल किछु नव आ वहुआयामी दृष्टिकोण उत्पन्न करए चाहै छथि। कखनो कवि बाढ़िक पसाहीमे पानिसँ तबाह छथि तँ लघुकविता पानि मे जल-महिमा क गुणगान करै छथि-

पानि विना नहि धानक जीवन,
मोतीक रूप न पानि बिना
पानि विना नहि चूनक रौनक
शोभित भूप न पानि बिना...।

एवं प्रकारे आरसीक सूर्यमुखी मात्र सूर्येटा कँ नै दर्शन करै छन्हि, ऐमे सम्पूर्ण मानवता लेल विविध विषएक दृष्टि समाहित अछि। मैथिली लेल दुर्भाग्य जे जनिक कविताक अर्थ कियो नै बूझए ओ मंचपर ज्ञानक शेखी छँटै छथि, आ आरसी सन आशुकविकँ अखनि धरिक तथाकथित किछु समाज जेना-तेना कवि स्वीकार केलकनि। वास्तवमे जौं दृष्टिकँ हृदैसँ जोड़ि सूर्यमुखी पढ़ल जाए तँ स्पष्ट भऽ सकैत अछि जे ई मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ कविता संग्रह छी।

❍❍❍

२३.अम्बरा- (कविता संग्रह, राजदेव मण्डलक)

बक हँसैत अछि कुटिल हँसी,
कलपै छथि लुब्ध मराल।
जे कँपै छल डरसँ थरथर,
आब ने तकरो लाज।
पड़ल छथि बंधनमे मृगराज।।

प्रस्तुत पद्यांश कवि सरोज भुवनेश्वर सिंहक कवितासँ लेल गेल अछि। ऐ कवितामे समाजक विस्मयकारी अवस्थासँ कवि क्षुब्ध छथि। ऐमे देखाएल युगक विषमताक मार्मिक उद्बोधनसँ जौं अपन भाषा ओ साहित्य दु:दशाक तुलना कएल जाए तँ कोनो अतिशयोक्ति नै। किछु महान साहित्यकार विस्मृत रहि कालक गालमे समा गेला। लोक कहै छथि कवि कहियो नै मरैत, ओ तँ अपन रचनामे जीवंत रहै छथि मुदा जखनि रचने मरि गेल तँ कवि केना जीबथि। जे भेल से भेल मुदा हमर दृष्टिकोण जे आबहु चिन्तन कएल जाए। अखनो किछु एहेन रचनाकार उदीयमान छथि वा उगबाक प्रयास कऽ रहल छथि जनिक लेखनीकेँ प्रोत्साहित नहियोँ तँ कमसँ कम किछु चर्च कएल जाए तँ ओइ रचनाकारक संग-संग भाषा-साहित्यकेँ अमरत्व अबस्स भेटत।

एकटा परिपक्व मुदा साहित्यक भाषामे नवतुरिया कवि मैथिलीक पल्लवकेँ वसन्तक बातसँ हिलेबाक अपना भरि प्रयास कऽ रहल छथि श्री राजदेव मण्डल। हिनक पहिल कविता संग्रह अम्बरा- श्रुति प्रकाशनक सौजन्यसँ पाठक लोकनि लग परसल गेल अछि। राजदेवजी परिपक्व ऐ दुआरे किएक तँ ओ नव रचनाकार नै छथि। केतेक बर्ख ठकाइते रहला। जखनि आत्मीय लोक मैथिली अकादमीक अध्यक्ष बनौल गेला तँ राजदेव जीकेँ आश जगलनि, जे समाजक कात लागल वर्गक लोक अकादमीमे एलनि, रचना प्रकाशित हएत वा किछु मदति भेटत। अकादमीक अध्यक्षक संग-संग अकादमीक पत्रिकाक संपादक मण्डलमे सेहो अपन लोक देखि दोहरि आश नेने येनकेन प्रकारेण संपर्क स्थापित केलनि। करीब तीसटासँ उपरे कविता

देबो केलखिन, किन्तु ओ सभ मृग मरीचिका मात्र देखबैत रहलखिन। परिणाम निराशावादी रहल।

विदेह पत्रिकाक पदार्पणक पश्चात श्री उमेश मण्डल जीक माध्यमसँ संपादक श्री गजेन्द्र ठाकुरजी संग जुड़ि रचना पठाबए लगला। श्रुति प्रकाशनक अंतिम मुहर लगितहिं अम्बरा सामान्य अर्थमे तँ छाह मुदा नवल-धवल इजोत नेने पाठक धरि पहुँच गेल अछि।

राजदेव जीकेँ नवतुरिया ऐ दुआरे कहल जाए किएक तँ पूर्बमे लिखल गेल कविता अखनि धरि पाठकक लोचनसँ दूर छल। ऐ संग्रहमे ७५ गोट कविता देल गेल अछि। आह सँ श्रीगणेश आ आँखिक प्रतीक्षासँ इतिश्री। एकर तात्पर्य जे रसहीन जीवनसँ आकुल मनुख कुपित अछि मुदा अंतिम स्वप्न वा कल्प आशक संग मूर्त्त रूपमे क्षणहिंमे परिवर्तित भऽ जाइत। बाह्य रूपमे शीतलता अर्थात् शांति देखैमे अबैत अछि, परंच भीतरमे धाह...। कोन प्रकारक धाह? एकरा अश्रु उच्छ्वास, आकुलता, संत्राश वा प्राप्तिक आश नै पूर्ण हेबाक क्रममे उद्विग्नताक नाओं देल जाए। जै बेक्तीक जीवनक चौमुख आह वा क्षोभसँ घेरल हुअए ओ जौं आकाशकेँ छूबाक कल्पना करए तँ ओकरा विक्षिप्त नै तँ कमसँ कम अतिविश्वासी अबस्स कहल जा सकै छै। कुरूक्षेत्रक युद्ध समाप्तिक पश्चात् गांधारीक मनोदशा जकाँ अकाश स्पर्शक कल्पनामे अकाश तँ शून्य दृष्टिगोचर होइत मुदा पएरक निच्चाँ असंख्य लहास आ बाँचल बन्धु-बांधब केर कंठ दोहन कविक मोनकेँ अशांत कऽ देलकनि।

भौतिकवादी युगक हीराक चमकिमे अपन साहसक रजत नेने नव मार्गकेँ ताकि रहल छथि-

बिनु नेने आह
कि भेटि सकत
वाह-वाह
परंच,
नहि छी लापरवाह
खोजब नवका राह।

'खोजब' शब्दक स्थानपर ताकब वा हेरब लिखल रहितए तँ आर नीक लगितए। संग-संग छंद लेपनक क्रममे केतौ-केतौ अपन भावकेँ कवि व्यक्त नै कऽ सकला।

ज्ञानक झंडा कवितामे ज्ञानक परिभाषा विज्ञानक अन्वेषणक रूपेँ कएल गेल। विज्ञानक विकास-क्रममे अन्ध बिसवास शनै: शनै समाप्त भऽ रहल अछि-

आब नहि चलत
अंध बिसवासक हथकंडा
फहरा रहल विज्ञानक झंडा...।

प्रयोग धर्मितामे ई गप तँ सत्य मुदा वास्तविकताक अवलोकन केलापर स्थिति भिन्न होइ छै। ऐ युगमे सेहो पितृ कर्म आ देवकर्ममे बिसवास जागले अछि जखनि कि विज्ञानक शब्दकोषमे स्वर्ग-नर्कक परिभाषा असंभव। लोक अखनो श्राद्ध करै छथि, जीवनकालमे भरि पेट अन्न नै मुदा मुइलाक पश्चात सोहल अचार। मिथिलामे जमीन बेच कऽ पितृ श्राद्ध कएल जाइत अछि। साधन विहीन मानव अपन जीवित संतानक प्रति अपन दायित्वक पालन केना करथि, समाजकेँ एकर कोनो परवाहि नै, ओ तँ मात्र पितृधर्म पालनक उपदेश दइ छथि। तँए ज्ञानक झंडामे कविकेँ अनुकरणीय बिम्बक चित्रण करबाक चाही छल जे नै केलनि।

राजदेवजी शिल्पी नै छथि, किएक तँ कोनो शिल्पक कृत्रिम बिम्ब नै तैयार केलनि, स्वाभाविक अछि जै बेक्तीकेँ आरसी, यात्री, चन्द्रभानु, बहेड़ आ बूच जकाँ अपन गृहस्थ धर्मक पालन हेतु अभाव आ संत्रासक अनुभव नित्य-प्रति होइत हुअए ओइ बेक्तीकेँ कल्पनाशीलताक शिल्प बिम्बित करैले समए कखनि भेटए? ओ तँ जौं अपन जीवन दशासँ समाजक तुलना करऽ लागए तँ सदिखन बिम्बे-बिम्ब।

झाँपल अस्तित्वक शीर्षक कविता हृदैकेँ स्पर्श करैत अछि-
भीतरमे ओ लगा रहल अछि फानी,
सुनि रहल छी वक्रवाणी
प्राप्त करैले उत्कर्ष
करऽ पड़त आब संघर्ष...।।

विरोध कोनो जीव ताधरि कऽ सकैत अछि जाधरि ओकरामे संघर्ष करबाक सामर्थ्य जीवित हुअए। पराजयक बेर-बेर हिलकोर लगलासँ आत्म समर्पणक संभावना प्रबल भऽ जाइत। कखनो कखनो आसक्तिक कारणेँ लोक सेहो आत्मसमर्पण कऽ दइ छथि। जेना कुरूक्षेत्रमे भीष्म पितामह अर्जुनकेँ चाहितथि तँ धाराशायी कऽ सकै छेलथि मुदा ओ तँ अर्जुनक विजय हृदैसँ चाहै छला।

रहब अहींक सभक संग कविता आसक्ति, मृगतृष्णा वा मजबूरी कोन रूपक समझौता छी एकर विवेचन संभव नै, ई तँ कविक जीवनक अनुभवक सार अछि, ओ स्पष्ट रूपेँ बाँटए चाहै छथि-

नहि करब आब निअम भंग
नहि करब अहाँ सभकेँ तंग
लिअ अपन राज,
नहि चाही हमरा ताज...।।

एकटा अन्तर्मुखी सोझ विचारक लोक जखनि स्वयंसँ लड़ैत-लड़ैत थाकि जाइत अछि तखनि एहने वेदना कृत्रिम हँसीक संग-संग निकसैत अछि। फेरो अपन परिवारिक धर्म मोन पड़िते नदीक माछ बनि जाइत। जीव जखनि प्राणकेँ छोड़ि दइत वा प्राण जीवकेँ छोड़ि दइत तखनि लहासक रूप... ओइ प्रकारें कवि नदीक माछकेँ जल दुनियाँसँ बाहर निकलबाक प्रयास करै छथि। परिणाम हुनके मुखसँ सुनल जाए-

सुनने छल ओ अपनहि कान
कहने रहथिन बूढ़-पुरान
कहियो नहि जाइहेँ ओहि दुनियाँ
ओहिठाम भरल अछि खुनियाँ।

सभ किछु रहितौं अर्थाभाव अखनि समाजक सभसँ पैघ अभिशाप बनि गेल अछि समाजक मध्य, जेतए ईमानदारी आन्हर जकाँ गांधारी बनि ठाढ़ छथि, तँए उद्विग्न भऽ जलदुनियाँसँ बाहर जेबाक प्रयास केलनि परंच क्षणहिंमे अपन मातृभूमिक सिनेहक कड़ीमे फँसि फेर पानिमे कूदि गेला-

मुदा ओ अछि अभागल
जलबून्द कड़ी अछि लागल

विफल भेल छल बलमे

पुन: खसल ओहि नदीक जलमे

जखनि लोक अपनाकेँ पूर्णत: एकसरि मानि लैत अछि ओइ कालक मनोदशाक अभिबेक्ती के करए?

नहि कियो दऽ रहल अछि साथ,

पहाड़ीपर पटकब आब माथ

हूबा देबैक हम खूनसँ

अपना घामक बूनसँ...।

ऐ प्रकारक परिस्थितिजन्य पद्यक संग-संग सीमा परक झूला, कांध परक मुरदा, दीप, हित-अहित, प्रयास, ऑफिसक भूत, कठुआएल रूप, सुनगैत चिनगी, अहाँक अगवानीमे, लाल ज्योति, बीखक घैल, पत्रोतर, अन्हारक खेल, नाचक बिखाह आदि-आदि विचारमूलक मर्मस्पर्शी पद्य ऐ संग्रहमे संकलित अछि। मुदा अंत धरि नव जीवनक आशमे कविक आँखि मात्र प्रतीक्षा कऽ रहल छन्हि-

मन्द-मन्द सिहकैत बसात

केना रहब अहाँसँ भऽ कात

एको बेर तँ बोलू

आबो आँखि खोलू

निकलए नेह वा धिक्कार

हमरा दुनू अछि स्वीकार...।।

सम्पूर्ण संग्रहमे अश्रुरोदनक बिम्बित चित्रमे नूतन आयामक संग-संग जीवनक नवल आश धएने कवि अम्बरासँ मुक्तिपर रहब चाहे चलैत, सूतल, ठार वा बैसल...। अम्बरा अर्थात् छायाकेँ लोक एकाकार तँ नै कऽ सकैत अछि परंच भगाएब सेहो असंभव। तँए दुनू रूपेँ कवि अपन जीवनक अम्बराकेँ स्वीकार कऽ लिअ चाहै छथि। रचनाक निर्बल पक्ष जे केतौ आकर्षण नै, केतौ शिल्प नै, केतौ बिम्ब नै मुदा सभ छंद आयामक अभाव पछातिओ राजदेवजी अनचोकेमे एहेन कविता संग्रह लिखि देलनि जेकर तुलना दोसर कविसँ करब प्रासंगिक नै किएक तँ मैथिली भाषा लेल एकटा नव प्रकारक प्रयोग ऐमे भेटल।

शिव कुमार झा "टिल्लू"



२४. **मैथिली कथाक विकासमे गामक जिनगीक योगदान-**

अपन जनम कालहिसँ ''मैथिली'' समाजक अग्र आसनपर बैसल वाचकगण द्वारा महिमामंडित होइत रहली। स्वाभाविक अछि शिक्षित लोक ऐ वर्गसँ सम्बन्ध रखै छेलथि। आर्य परिवारक सभ भाषा समूहक जननी संस्कृत मानल जाइत अछि तँए मैथिली केना तत्समसँ बँचथि? सरिपौं मैथिलीक अधिष्ठाता ब्राह्मण आ कर्ण-कायस्थ रहल छथि, तँए काव्य, महाकाव्य, कथा वा नाटक हुअए सभ साहित्य पल्लवक उदय तत्सम मिश्रित मैथिलीसँ भेल।

आदिकवि विद्यापतिक पदावली पुरान-रहितौं ऐ रूपैँ अपवाद अछि मुदा हुनक पुरुष परीक्षा संस्कृतक आवरणसँ बाहर नै निकलि सकल।

संभवत: मैथिलीक कथाक आरम्भ पुरुष परीक्षाक मैथिली अनुवाद कऽ चन्दा झा केलनि। प्रथम मैथिलीक मौलिक कथा विद्यासिन्धुक कथा, कथा संग्रह छी। तत्पश्चात् स्वतंत्र रूपैँ मैथिलीमे कथा लिखब प्रारंभ भऽ गेल। भुवन जीसँ लऽ कऽ वर्त्तमान युगक कथा यात्रामे किछु एहेन कथाकार भेल छथि जनिक यात्रासँ ऐ भाषाकेँ स्थायी स्तंभ भेटल। ऐमे कुमार गंगानंद सिंह, नगेन्द्र कुमर, मनमोहन झा, शैलेन्द्र मोहन झा, रामदेव झा, हंसराज, व्यास, किरण, रमानंद रेणु, गौरी मिश्र, लिली रे, नीरजा रेणु, रूपकान्त ठाकुर, रमेश, धीरेन्द्र धीर, अशोक, मन्त्रेश्वर झा, धूमकेतु, विभूति आनंद, चित्रलेखा देवी, रामभरोस कापड़ि भ्रमर, श्यामा देवी, शेफालिका वर्मा, कमला चौधरी, कामिनी कामायनी, प्रदीप बिहारी, हीरेन्द्र, ललन प्रसाद ठाकुर, गौरीकान्त चौधरी कान्त, अरविन्द ठाकुर, अशोक मेहता, राजाराम सिंह राठौर, परमेश्वर कापड़ि, विजय हरीश, उमानाथ झा, योगानंद झा, सुधांशु शेखर चौधरी, गोविन्द झा, राधाकृष्ण बहेड़, मणिपद्म, मायानंद मिश्र, जीवकान्त, राजमोहन झा, प्रभास कुमार चौधरी, इन्द्रकान्त झा, दिनेश कुमार झा, नरेश कुमार विकल, सुभाष चन्द्र यादव, केदार कानन, बलराम, अमर, चन्द्रेश, रमाकान्त राय 'रमा', कुमार पवन, सियाराम झा सरस, रामभद्र, रौशन जनकपुरी, राजेन्द्र विमल, रमेश रंजन, सुजीत कुमार झा, जितेन्द्र जीत, नारायणजी, शैलेन्द्र आनन्द, अनमोल झा, उग्रनारायण मिश्र कनक, राजदेव मण्डल, कपिलेश्वर राउत, वीणा ठाकुर, कैलाश कुमार मिश्र, देवशंकर

नवीन, महाप्रकाश, धीरेन्द्र नाथ मिश्र, साकेतानंद, सोमदेव, अशोक अविचल, रविन्द्र चौधरी, विद्यानाथ झा 'विदित', शिवशंकर श्रीनिवास, मानेश्वर मनूज, अनलकांत, श्रीधरम, सत्यानंद पाठक, मिथिलेश कुमार झा, नवीन चौधरी, आशीष अनचिनहार, विरेन्द्र यादव, बेचन ठाकुर, गंगेश गुंजन, मनोज कुमार मण्डल, अकलेश कुमार मण्डल, संजय कुमार मण्डल, भारत भूषण झा, लक्ष्मी दास, नीता झा, उषा किरण खान, रामकृपाल चौधरी 'राकेश', विद्यापति झा, ज्योत्सना चंद्रम, सुस्सिमा पाठक, शुभेन्द्र शेखर, कुसुम ठाकुर, दुर्गानन्द मण्डल, ज्योति सुनीत चौधरी, शंकरदेव झा आ गजेन्द्र ठाकुर प्रमुख छथि।

ऐ बीछल कथाकारक समूहसँ विलग किछु एहेन कथाकार भेल छथि जनिक सृजनशीलतासँ मैथिलीकेँ नव गति भेटल। जइमे प्रो. हरिमोहन झा, ललित आ राजकमलकेँ राखल जाए। हरिमोहन झा हास्य आ दर्शनसँ समाजक सत्यकेँ नांगट करैत इतिश्री मर्म वा अनुशासित मजाकसँ केलनि। जइसँ हिनक गंभीर कथा बिम्बपर हास्य भारी पड़ि गेल आ ओहीमे समाहित दर्शन दिस समान्य पाठकक धियाने नै गेलनि। ललित जीक कथामे सम्यक् समाजक परिकल्पना तँ भेटैत अछि मुदा समाजक कात लागल वर्गक विवरण स्वातीक बून जकाँ केतौ-केतौ भेटैत अछि। राजकमल चौधरी प्रयोगवादी कथाकारक रूपेँ प्रसिद्ध छथि। जौं एकैसम शताब्दीक कथा विकासक चर्च कएल जाए तँ ऐ विधामे संतान रहितौं मैथिली बाँझ जकाँ भऽ गेल छेलथि। सन् २००१सँ २००८ई. धरिक कथा विकासक चर्च करब प्रासंगिक नै अछि।

सन २००८ई.क उत्तरार्धमे मैथिली साहित्यकेँ एकटा बेछप्प कथाकार भेटल। ओ मात्र कलमें वा वाचक रूपे नै वरन् जीवनक सभ क्षेत्रमे, सम्यक् चरित्र रखैबला साम्यवादी साहित्यकार श्री जगदीश प्रसाद मण्डल। हिनक पहिल कथा भैंटक लावा आ बिसाँढ़ घर-बाहरमे आ चूनवाली मिथिला दर्शन पत्रिकामे प्रकाशित भेल। मुदा घर बाहरमे हिनक रचनाक भाषामे तोड़-मरोड़, उनटा-पुनटा आ काट-छाँट सेहो कएल गेल, जइसँ भाषा-प्रदूषणक गंधसँ गनहा गेल। मैथिलीक किछु तथाकथित कथाकार-कवि हिन्दीक शब्द घोसिया-घोसिया कऽ मैथिलीकेँ प्रदूषित करैत रहल छथि, प्रायः जगदीशजीक

खाँटी मैथिली हुनका लोकनिकेँ नै अरघलनि। मुदा तत्पश्चात विदेहक सौजन्यसँ हिनक प्रतिपाद्य कथा बिसाँढ़ वास्तविक रूपरेखाक संग छपल। हम सेहो पढ़लौं। अनेक पाठकक संग श्रुति प्रकाशनक नजरि सेहो पड़लनि आ तखनि अविकल रूपमे ई संग्रह छपल।

सन् २००९ई.मे विदेहक संपादक श्री गजेन्द्र ठाकुरक प्रयाससँ श्रुतिप्रकाशन दिल्लीक अधिष्ठाता श्री नागेन्द्र कुमार झा आ हुनक साहित्य प्रेमी धर्मपत्नी श्रीमती नीतू कुमारी हिनक पहिल कथा संग्रह **गामक जिनगी** प्रकाशित केलनि। संयोगसँ ऐ पोथीक प्रारंभ भैंटक लावा कथासँ कएल गेल।

एक सए पैंसठ पृष्ठक ऐ संग्रहमे १९ गोट कथा संग्रहीत अछि। आमुख देसिल वयनाक सिद्धहस्त कथाकार सुभाष चन्द्र यादवजी लिखने छथि। जेना-तेना सुभाषचन्द यादवजी कथाकारक महिमामंडन तँ केलनि, परंच ऊपर मोने आ हियासँ लिखल आमुखमे भिन्नता होइत अछि, जेकर निर्णए प्रबुद्ध पाठकपर छोड़ि देल जाए।

बंगभाषीकेँ कोलकाता सन महानगर, मागधीकेँ पाटलिपुत्र ऐतिहासिक शहर, भोजपुरी लोकनिकेँ गोरखपुर आ वाराणसी सन धाम भेटल। मैथिली भाषीकेँ गनि-गुथि कऽ दरिभंगा आ सहरसा सन ग्राम्य नगरी। तखनि भाषाक शहरीकरण आ आदान-प्रदानक सपनों देखब उचित नै। भारतवर्ष जौं गामक देश तँ मिथिला महागामक भूमि। एक बर्ख बाढ़ि तँ दोसर बर्ख सुखाड़। कोनो उद्योगक साधन नै, शिक्षा, स्वास्थ्य आ सड़क सन मौलिक समस्या मकड़जालमे ओझराएल अछि। परिणाम पलाएन अर्थात् पड़ाइनक रूप लऽ रहल। भोजपुरी लोक सेहो पलाएन केलनि परंच अपन भाषाक संग, दृष्टिकोण नीक लगैत अछि। अपन देशकेँ के कहए मॉरीशस आ फिजी धरि अपन बोली धेने छथि।

अपन जीवन-आचारकेँ हाइटेक बनेबाक क्रममे मैथिल संस्कृतिक दोहन भऽ रहल अछि। आनक कोन कथा? किछु एहेन साहित्यकार भेलाहँ जिनका साहित्य आकादमी पुरस्कार तँ मैथिली भाषा लेल भेटल मुदा हुनक परिवारक नेना-भुटका गलतियोसँ मैथिली नै बजै छथि। कथा जगतक प्रयोगवादी शिल्पी राजकमल जीक कथा रीति-प्रीतिक समागमसँ ओत-प्रोत छन्हि। ललका पाग, साँझक गाछ, कादम्वरी उपकथा सन बहुत रास कथामे सिनेहक मर्मस्पर्शी

चित्रण कएल गेल अछि। परंच केतौ-केतौ राजकमलजी सेहो भटकि कऽ अनैतिक प्रेमकेँ चलन्त साहित्यक रूप देलनि। जेना घड़ी शीर्षक कथा कोनो रूपेँ समाजमे नीक संदेशक वाहक नै भऽ सकैत अछि। ऐमे उल्लेख तँ समाजक एकात लागल जहूरनीक कएल गेल परंच की अनुशासित सिनेहक प्रदर्शन राजकमलजी कऽ सकला? जखनि प्रांजल आ प्रवीण कथाकारक ई दशा तँ आनक विषएमे की लिखल जाए।

एक अर्थमे किछु जनवादी साहित्यकार अपन कथा सोतीमे मैथिली पाठककेँ आनन्दित अबस्स केलनि ओइमे प्रभाष कुमार चौधरी, रामदेव झा आ कांचीनाथ झा किरणक संग-संग धूमकेतु, कुमार पवन, कमला चौधरी आ डॉ. शेफालिका वर्माकेँ राखल जा सकैत।

जौं सम्पूर्णताक चर्च करी तँ जगदीश प्रसाद मण्डल जीकेँ एकैसम शताब्दीक सर्वश्रेष्ठ कथाकार माननाइ यथोचित। किएक तँ ओलती आ चिनुवार बिसरैबला मैथिली प्रेमीकेँ भैंटक लावा, बिसाँढ़, पीरार, करीन आ मरूआसँ परिचए करौलनि। मैथिली भाषाकेँ नव-नव शब्द देलनि। पाग पहिर कऽ सभामे आगाँ बैसैबला लोकसँ लऽ कऽ मुसहर धरिक प्रति सम्यक् सिनेह हिनक कथाक विशिष्टता अछि। जगदीशजी समाजक ओइ वर्गसँ अबै छथि जेकरा अखनि धरि मंचपर आसन दिअमे हमरा सभकेँ संकोच होइत अछि। परंच केतौ हिनक कथामे बेक्तिगत द्वेष आ पूर्वाग्रहक प्रदर्शन नै। जगदीशजी समाजक आगाँक पिरहीकेँ सम्मानित करैत सम्यक् ज्योति जगेबाक आश अपन कथा सभमे रखने छथि।

गामक जिनगी'क पहिल कथा भैंटक लावा मिथिलाक बाढ़िक दशाकेँ केन्द्रित कऽ कऽ लिखल गेल अछि। भैंटक लावाक संदर्भमे हमरा सबहक गाम-गाममे एकटा कहबी चर्चित छै-

''बड़-बड़ जनकेँ भैंटक लावा पदनोकेँ मिठाइ।''

ऐसँ प्रमाणित होइत जे सोती, मुरदैया, पोखरि, धनखेतामे जलमग्नक परिणाम स्वरूप जनमल भैंटक लावा-निघृष्ठ भोज्य पदार्थ छी। भोज्य पदार्थ मात्र समाजमे रहितौं यायावरी जीवन व्यतीत करैबला लोक लेल। ऐ कथाकेँ पढ़ि एकर प्रयोजन कनेक विस्मित करैबला परंच उपयोगी लागल। कथा मुसना ओकर अर्द्धांगिनी जीबछी आ दुनू बच्चाकेँ बाढ़िक जीवन दशासँ जोड़ि

बिम्बित कएल गेल अछि। अपना ऐठामक लोक संतान प्राप्ति लेल जीबछ घाटमे मनौती मनैत अछि। जौं पुत्र लेलक तँ जीबछा आ जौं बेटी आएलि तँ जीबछी। ऐ जीबछीक तँ नेनकाल नै देखौल गेल, ओहेन माँगल-चाँगल छथियो नै मुदा साहस देखनुक। मुसनाकेँ सर्पदंशक काल जीबछी साहस नै छोड़ली। झाड़-फूक सन भ्रांतिकेँ ऐ कथामे देखौल गेल परंच परिणाम सकारात्मक- ''मुदा ढोढ़ साँप कटने रहए तँए बिख लगबे नै केलै।'' ऐसँ रचनाकारक ग्राम्य जीवनक मनोदशाकेँ परिवर्तन करबाक उदेस प्रमाणित होइत अछि।

श्रीकान्त सन गामक छड़ीदारकेँ बाढ़ि उदेस पूरा नै करए देलक। जौं अन्न रहितनि तँ सूदिखोरी चैलतनि मुदा अपने खाइले नै तँए आगाँ की सोचथि...?

जीवछी हुनके आश्रममे कुटौनी करति छेली, श्रीकान्त जीकेँ सोगाएल देखि जीबछीक कथन-

''एक्केटा बाढ़िमे चिन्ता करै छथि काका, कनी नीक की कनी अधला, दिन तँ बितबे करतनि।''

ऐमे साहसक संग-संग यथार्थबोध होइत अछि। अभावक नाहमे सवार बेक्तीकेँ भासि जेबाक कोनो चिन्ता नै, ओ तँ ई सोचि कऽ जल-यात्रा करैत अछि जे अथाह पानिमे नाह डूबबे करत। तँए हेलबाक कला पहिने सीख लेल जाए। दीन-हीन आ साधन विहिन मानवीय जीवनमे विचलन नै होइत छै। मुसना अर्थात् मकसूदन मूसक तीमन आ धुसरी चाउरक भातमे जीबछीक सिनेह आ दुखनीक आश देखि अमृत मानि कऽ ग्रहण कऽ लेलक। रातुक कोनो चिन्ता नै जीबछी साक्षात आर्या बनि ठाढ़ छेली-

''केकरो किछु होउ जेकरा लूरि रहतै ओ जीबे करत।'' बाढ़िसँ सभ कियो तबाह कमला महरानीकेँ दीप बाड़ि अपन प्रभाव कम करबाक प्रार्थना सभ कियो करै छल। यएह छी मिथिलाक गामक जीवन केर मनोवैज्ञानिक रहस्य। हम-सभ भगवतीक आगाँ बलि प्रदानो कऽ सकै छी तँ कखनो प्रकृत पूजन सेहो। जखनि पानि कम भेल तँ सभ कियो अपन डूबल खेत-पथारक गलल डॉटकेँ गनऽ मे लागि गेला मुदा जीबछीक पारखी दृष्टि भैंटक कोखिकेँ देखबामे मग्न छल। श्रीकान्त जीसँ आज्ञा लऽ कऽ हुनक खेतसँ भाँटिकेँ

उजाड़ि अन्न निका लऽ लगली। लावाक सुगंधसँ जीबछीक कल्पनामे चारि चान लागि गेल बाढ़िकेँ जीवनक उपहार मानि कमला-कोसीकेँ धैनवाद दिअ लगली। ऐ प्रकारक सोचसँ कियो विस्मित भऽ सकैत अछि- बाढ़ि कखनो लाभकारी केना होएत? मुदा जीबछीकेँ डुमैले तँ किछु रहबे नै करए धास-पातक घर फेर बनि जाएत। महिंस नहियोँ तँ गाइए किनबाक योजना बनाबऽ लगली।

स्वाभाविक अछि कर्मठ लोककेँ दुआरि ताकए नै पड़ैत अछि। कथाक सभसँ नीक प्रसंग लागल जे पहिलुक भैंटक चाउर श्रीकान्त जीकेँ देबामे जीबछीक दृष्टिकोण। गरीब कखनो बिसवासधात नै कऽ सकैत अछि। संग-संग कथाक आकर्षण घटना चक्रक क्रममे जखनि ठेंगी मुसनाक भरि पोख खून पीब लेलक तखनि मुसनाक शंकाग्रस्त हएब जे जीबछी हुनक मरबाक कामना करैत अछि किएक तँ दोसर पुरुष भेट जेतनि। समाजक दाबल वर्गमे नारी शोषण नै, किएक तँ नारी पुरुषक संग-संग जीवनक वाहनकेँ गति देवामे गतिशील रहै छथि। ओ दोसरो बिआह करैले स्वतंत्र छथि। आगाँक जाति तँ नारीकेँ आब अधिकार दिअ लगल पहिने तँ ओ अंगनक लक्ष्मी मात्र छेली। ऐ कथाकेँ पढ़बाक क्रम सोचऽ मे अबैत अछि जे आगाँ किनका मानल जाए मुसना सन मुसहरकेँ वा हमरा सन...।

रचनाकारक एकटा आर दृष्टिकोण नीक मानल जाए जे समाजक दूटा अलग-अलग वर्गक कथा कहितो वर्ग संघर्ष नै वरन् सिनेहिल भाव। श्रीकान्त लावा तँ स्वीकार करै छथि संगहि जीबछीकेँ नव-वस्त्रक संग विदाइ सेहो दइ छथि ऐमे सामाजिक सामंजस्यकेँ बढ़ेबाक प्रयास देखैमे आएल।

ऐ कथा संग्रहक दोसर कथा ''बिसाँढ़'' भैंटक लावाक विपरीत सुखारक स्थितिक मध्य घुमैत अछि। प्रकृति प्रदत्त विपदामे सभसँ बशी प्रभावित समाजक पेटकान लाधल वर्ग रहै छथि। कथाक नायक डोमन चारि बर्खक रौदीसँ तप्त छथि। हिनका खेत-पथार नै। अपन कनियाँ सुगियाक संग मेहनति मजूरी कऽ कऽ कहुना जीवन वसर करै छला मुदा जखनि गिरहस्ती समाप्त भऽ गेल तँ नीक-नहाँति गुजर करबाक कल्पनो असंभव। परंच सुगिया तँ छथि मैथिल नारी, ओइ समाजक नारी जेतए पुरुषसँ बेसी परिवारक भार नारियेपर रहैत। हारि केना मानती। डोमनकेँ दुखित देखि

नूतन ओिरयान करैले अद्यत भऽ गेली। बड़का-बड़का मजाहन जेना नेंगरा काका अपन महाजनी बन्न कऽ लेलिन। ओ अपन झाँपल अन्न-पानिकेँ अगिला साल उच्च भाउपर बेचबाक तैयारी कऽ रहल छथि। गाए-बरदकेँ मरनासन्न देखि किसान तँ अरण्यरोदन करैत अछि मुदा गिद्ध प्रसन्नचित्त मुक्त गगनमे मँडराइत रहैत, यएह हाल छन्हि बौकी काकीकेँ, अपन महाजनी लेल राखल चाउरकेँ मातृनवमीमे निकालती। हाय रे हमरा सबहक संस्कृति नेना भूखसँ कल्हाइ छथि मुदा मातृनवमीमे मरल पूर्वजक स्मृतिमे अरबा चाउर पंडित केर पातपर देल जाएत। सरिपौं यथास्थिति जे हुअए परंच दुर्गापूजा, कोजगरा, दीवाली, गोवर्धनपूजा, भरदुतिया छठि आदिकेँ मिथिलाक संस्कृति पर्व मानि रचनाकार सम्यक् दृष्टिकोणक परिचए देलनि। जगदीशजीक जनम एहेन परिवार वा वंशमे भेल जैठाम कोजगरा मनाएब असंभव मुदा ब्रह्मण आ कर्ण कायस्थ सन अपेक्षाकृत कम गणनाक जातिकेँ सेहो आत्मसात् कऽ लेलनि। ऐसँ पूर्ब कोनो ब्राह्मण साहित्यकार गोवर्धनपूजा वा सलहेसपूजाकेँ मिथिलाक पावनि मात्र मंचेटा पर मानने हेता।

कथाक इतिश्री सुखारक मध्य एहेन फलक शोधक रूपमे कएल गेल जेकर विषएमे बहुत कम लोक सोचने हेता। सुक्खल पोखरिकेँ डाँड़ भरि कोरि उज्जर-उज्जर अल्हुआ सन फर देखि सुगियाक भूखल आत्मा जुरा गेल ओतऽ पुरान बेथाक मध्य वर्त्तमान सुखद अनुभूतिक तुलना करए लगली विकल जीक गजल-

''शेषांशपर रोदन करू गीत उदित भानपर...।''

ऊपर बिसाँढ़ आ निच्चाँ सिंगही माछ जौं वनस्पति शास्त्री रहती छल तँ पुरस्कार निश्चित, मुदा गरीबक शोध तँ पेट खातिर होइत अछि, एकरा अपन समाजमे मोजर नै, आनठाम के देत।

धनिया आ पिचकुनक प्रेम आ वैवाहिक जीवनमे भैंटक लावा वा बिसाँढ़ सन एकटा तेसर उपेक्षित फल- पीरारक फड़ सिनेह वृष्टि करैत अछि।

जगदीश जीक कथा सभमे बिम्ब विस्मयकारी, शिल्प समाजक जीवन शैलीक विषम परिपेक्ष्यक विवेचन करै छन्हि, मुदा एकटा कमी जे देखल गेल ओ अछि अलंकार आ हास्यक अभाव। वास्तवमे ऐ कथाक प्रति आकर्षण ओकरामे भऽ सकैत अछि जेकर जीवन अछोप हुअए। जौं पातपर भात नै तँ

चटनीक कोन प्रयोजन। हिनक कथा ओइठामक समाजकेँ हिलकोरि देलक जेतए धरि पंडित हरिमोहन झा सन माँजल साहित्यकार कहियो नै पहुँच सकलथि, आनक कोन गप?

''अनेरूआ बेटा'' कथामे एकटा संतानहीन दंपतिकेँ दोसरक फेंकल पूतक पोषण मैथिली साहित्यमे क्रांतिवादकेँ आगाँ बढ़एबाक प्रयास मानल जाए। गंगाराम आ भुलियाक वरदपूत मंगल कथानायक छथि। ओ मात्र साक्षर भेला उत्तर चाहक दोकानदार बनि गेला। मंगल, धर्ममाता आ पालक पिताक मृत्युक पश्चात अपन पेटसँ लड़ैत-लड़ैत केना साहित्यकार भऽ गेलथि संभवत: जगदीशजी लेखनी उठबैसँ पहिने नै सोचने हेता।

एकटा प्रसंग कनेक अनसोहाँत लागल जे गंगारामक स्त्री अबोध मंगलकेँ दुग्धपान करबैले अपन पितिऔत दियादिनी कबूतरी लग पहुँचै छथि। कबूतरी विस्मित नै भऽ कऽ भुलियासँ कहलनि जे हिनक बुढ़ाढ़ीक नेना केतेक पोरगर। मातृत्वक अवधि नौ मासक होइत अछि जखनि पहिने भुलियामे कोनो एहेन लक्षण नै तँ कबूतरीक ऐ प्रकारक संवाद रचनामे कल्पनाशीलता भरबाक असफल प्रयास मात्र मानल जाए। भऽ सकैत कथाकार कबूतरीकेँ हँसी-ठठाबला प्रवृत्तिक कलाकार बनबैत लिखने होथि।

मंगलकेँ साहित्यकार बनेबामे रूपचन सन खिसक्करक बड़ पैघ हाथ छल। कहियो राजा-रानी तँ कहियो रानी-सरंगा तँ कहियो रजनी-सजनीसँ लऽ कऽ गोनू झा, डाकक कथा, अल्हा रूदल, दीना-भदरी, लोरिक आ सलहेसक कथाक संग-संग गामक लोकक मुँहसँ सेहो सुनि-सुनि कऽ चाह विक्रेता मंगल कथाकार बनि गेलथि। ऐ प्रकारक कथा नाट्य रूपमे ''भफाइत चाहक जिनगी''मे शेखरजी लिखने छथि। समग्र समाजक प्रति सम्यक् दृष्टिकोण रखैत अर्थनीतिकेँ रचनाक मूल विषए-वस्तु बनएबामे जगदीश जीक कोनो जोड़ मैथिली साहित्यमे नै भेटत। कलान्तरमे ओकिल साहैबक पुत्री सुनएना मंगलसँ प्रभावित भऽ हिनका अपन जीवन संगी बनबैले आतूर भऽ गेली। ऐ निर्णएमे ओकिल साहैब सुनयनाक संग छथि। कथाक अंत धरि निष्कर्ष नै निकलि सकल मुदा एकटा प्रश्न हमरा सबहक माथपर रचनाकर लादि देने छथि- ओ अछि जाति, धर्मसँ ऊपर उठि कऽ आत्मिक मिलनक आधारपर बिआह करबाक निर्णए। भऽ सकैत अछि जे कथाकार अपन बेक्तिगत

जीवनमे एहेन क्रांतिकारी कदमक विरोधी होथि, मुदा हम अपन छठम ज्ञानेन्द्रिय अनुभूतिक आधारपर कहि सकै छी अगिला पचास बर्खक अंदर हिनक रचना आर्यावर्त्तमे क्रांतिक सूत्रपात करैत बदलैत दृष्टिकोणक प्रत्यक्षदर्शी रहत।

समग्र ग्राम्य जीवन शैलीकेँ छुबैत एकसँ बढ़ि कऽ एक कथाक संग्रह ‘‘गामक जिनगी’’ मैथिली साहित्य लेल बेछप्प संकलन छी।

‘‘डीहक बटवारा’’मे शहरी जीवनकेँ जीबि अंतिम अवस्थामे पितृभूमिकेँ अपन शेखी ओ शानक भूमि बनेबाक अविरल प्रस्तुति कएल गेल अछि। गामकेँ खराब शहरी लोक कऽ दइ छथि। ‘‘बाबी’’कथामे बाबी मुरूख रहितो गामक पथ प्रदर्शक महिला छथि। छठिमे एकटा छोट नेना पूजासँ पूर्ब पाकल केरा खा गेल सभ ओकरा मारए लगल मुदा बाबी सिनेह देखबैत भगवानकेँ श्रद्धासँ प्रसन्न करबाक प्रयास करए लगली। आडंवरपर मूर्ख महिलाक विजयी उद्घोष ऐसँ नीक शिल्प केतए-केतए देखौल गेल। रहमतक माए बाबीसँ खरनाक बासि प्रसाद लऽ संध्या अर्घ लेल फल-फूल देलनि आ बाबी हृदैसँ स्वीकार कऽ लेलथिन। वास्तवमे मिथिला यएह छल, मुदा किछु छद्म स्वार्थी तत्व एकरा जाति धर्मक खाधिमे ठाम-ठाम खसा देलक। संध्या अर्ध्यमे रहमतक माए किछु देरीसँ औती किएक तँ हटिया जेबाक छन्हि। ‘‘कर्म प्रधान विश्व करि राखा’’, बाबी हिनक निर्णएसँ सिनेहिल छथि किएक तँ भगवान प्रेमक भूखल, श्रद्धा कियो अखनो प्रकट कऽ सकै छथि।

कामिनी कथाक प्रारंभ अर्थक विजय मुदा अंतमे टकासँ किनल बर द्वारा अर्द्धांगिनीक प्रताड़नासँ भेल। अंतमे प्रश्ने रहि गेल ‘‘कामिनी केतए गेली?’’

राजकमल जीक कथा जकाँ जगदीशजी सेहो प्रश्न छोड़ि इतिश्री केलनि। प्रयोगवादिताकेँ मैथिलीक धरातलपर दोसर बेर प्रयोग, मुदा राजकमलजी सँ नीक रूपेँ केलनि। गामक जिनगीक कथाकार सभसँ पैघ जे वस्तु मैथिलीकेँ देलनि ओ छी नव-नव शब्द। ऐ प्रकारक शब्द कोनो अकाशसँ नै खसल, शोषित समाज आ अगिला पातिक गरीब समाजमे अखनो बाजल जाइत अछि, मुदा मैथिली साहित्यकारक रचना सभमे लुप्त।

मात्र किरणजी, हरिमोहन झा, सोमदेव आ शेखरजी सन किछु कथाकारक किछुए रचनामे एहेन प्रकार शब्द भेटैत अछि। मुदा ओ सभ शब्द ओतेक रूपक नै जेतेक जगदीश प्रसाद मण्डलक रचनामे ठाम-ठाम प्रयोगमे अबैत अछि।

आब प्रश्न उठैए जे मैथिली साहित्यक सर्वश्रेष्ठ कथा संग्रह ''गामक जिनगी''कँ किएक नै मानल जाए। नि:संदेह हरिमोहन झा, किरण, राजकमल, धूमकेतु, ललित आदि मैथिलीक सिद्धहस्त कथाकार छथि। हरिमोहन झाक हास्य, दर्शन ओ मर्मक त्रिवेणीसँ कथा सभकँ बोरैत सभसँ जनप्रिय कथाकार मानल गेला, मुदा हिनक कथामे हास्य समागमक क्रममे गंभीर लेखन सुशुप्त भऽ गेलनि। चर्चरीमे जौं गंभीरता अछि तँ ओ मात्र समाजक अगिला लोकक प्रतिनिधित्व करै छन्हि, अगिला लोक साहित्यक अधिकारी तँ छथि, मुदा भाषासँ दूर भऽ रहल छथि। समाजक अंतिम पाँति धरि हरिमोहनजी अधिकांश कथामे नै पहुँचला। किरण जीक किछु कथा जेना मधुरमनि ऐ रूपक छन्हि, मुदा जगदीश जीक कथाक दर्शनसँ हुनको तुलना केनाइ उचित नै। फनीश्वरनाथ रेणु जौं मैथिलीमे लिखतथि तँ स्थिति थोड़े फराक भऽ सकै छल। रेणुजी उपन्यासकारक रूपेँ हिन्दीक प्रेमचन्द्रक पश्चात सर्वश्रेष्ठ गद्यकार मानल जा सकै छथि मुदा कथाकारक रूपेँ हमरा सबहक जगदीश जीसँ आगाँ नै। पाठक जौं आत्मीय भऽ कऽ ''गामक जिनगी'' पढ़थि तँ निश्चित रूपेँ हम कहि सकै छी जे ई पोथी मैथिली साहित्यक अखनि धरिक सर्वश्रेष्ठ कथा संग्रह छी।

❍❍❍

२५.

मैथिली कथा साहित्यक विकासमे राजकमलक योगदान-

सन् १९५४ मे ''अपराजिता'' कथाक संग राजकमल जीक मैथिली कथा साहित्य जगतमे प्रवेश भेल। हिनक मूल नाओं मनीन्द्र नारायण चौधरी छन्हि। १९२९मे जनमल ऐ साहित्यकारक लेखनीसँ मैथिली साहित्यकेँ लगभग ३६ गोट कथा भेटल। मात्र ३८ बर्खक अपन जीवनकालमे राजकमल मैथिली गद्य साहित्यकेँ किछु एहेन कृति दऽ देलनि जइसँ प्रयोगकेँ बादक धरातलपर प्रतिष्ठित करबाक श्रेय साहित्यक समालोचक लोकनि ऐ साहित्यकारकेँ निर्विवाद रूपेँ दऽ रहल छथि।

हिनक तीन गोट कथा संग्रह ललका पाग, एक आन्हर एक रोगाह आ ''निमोही बालम हम्मर'' पुस्तकाकार प्रकाशित छन्हि। एकर अतिरिक्त हिनक एक गोट पोथी ''कृति राजकमलक'' मैथिली अकादेमीसँ प्रकाशित भेल अछि जइमे १३ गोट कथा आ एकटा उपन्यास आन्दोलन संकलित अछि। ओना कृतिराजकमलक छओ गोट कथा ''ललका पाग''मे सेहो छपल अछि।

रमानाथ झाक मतेँ राजकमलक कथा मूल उदेस मनोविश्लेषणात्मक प्रणालीसँ आरोपित मर्यादा ओ आदर्शक पाछाँ नुकाएल आन्हरकेँ नांगट करब अछि। डॉ. डी.एन. झा सेहो ऐ मतसँ सहमति छथि।

''ललका पाग'' कथा हिनक लिखल कथा सभमे अपन विशिष्ट स्थान रखै छन्हि। ऐ कथाकेँ मैथिली साहित्यक किछु श्रेष्ठ कथामे स्थान देब सर्वथा न्यायोचित अछि। कथाक आरम्भमे मैथिली स्त्रीक चिन्हबाक विश्लेषणमे कोनो अचरज नै। त्रिपुराक तुलना जइ वर्गक मैथिल कन्याँसँ कएल गेल कथाक भूमिकामे ओइ वर्गक स्पष्ट उल्लेख तँ नै कएल गेल मुदा ओ ब्राह्मण परिवारक कन्या छथि। अल्पायुमे पण्डित पिताक मृत्युक पश्चात् तिरू अपन माइक संग गाममे रहै छेली। अग्रज झिंगुरनाथ बाहर धन उपार्जन लेल चलि गेला। किछुए बर्खमे तिरू युवती वएसमे प्रवेश कऽ गेली। दस-एगारह बर्खक बाद जखनि झिंगुरनाथ अपन गाम घुरि एलनि तँ मातृसिनेहक संग-संग तिरूक हाथ पीअर करबाक जिम्मेदारीक आभास भेलनि। वास्तविकतो छै जे जखनि ई कथा १९५५मे विदेह विशेषांकमे देल

गेल ओइ कालकँ के कहए वर्तमान समैमे सेहो अपना सबहक समाजमे कन्याक जनम कालहिसँ बिआहक चिन्ता अभिभावककँ सतबए लगै छन्हि। तिरू तँ माघमे १४मे बर्खमे प्रवेश कऽ जेती। उदेस जौं सार्थक हुअए तँ सफलता निश्चित भेटबे करैत अछि। चण्डीपुरक राम सागर चौधरीक सुपुत्र राधाकान्तसँ स्व. पण्डित टेकनाथ झाक पुत्री त्रिपुराक बिआह सम्पन्न भेल। सासुर आबि तिरू कनेको स्तब्ध नै छथि किएक तँ जीवन शैलीक कोनो ज्ञाने नै छन्हि। अज्ञानतामे बाड़ीक पछुआरमे पोखरि देखि अपन बेमात्र सासुसँ हेलबाक कलाक जिज्ञासा केलनि। यएह जिज्ञासा हुनक जीवन लेल काल भऽ गेलनि। चनन्पुरवाली सासु भोरे-भोर समस्त गाममे अफवाह पसारि देलखिन जे रातिमे नवकी कनियाँ पोखरिमे चुभकि रहल छेली। राधाकान्त ऐ घटनासँ मर्माहित भऽ गेला। आब प्रश्न उठैए जे चनन्पुरवाली एना किए केली? ओ अपन पितिऔत भाय डॉ. शंभूनाथ मिसरक सुपत्रीसँ राधाकान्तक बिआह करबए चाहै छेली। ऐठाम कथाकार कनेक चुकि गेल छथि। ऐ उदेसकँ केतौ स्पष्ट नै कएल गेल। माए जौं अपन बेटाक बिआह आनठाम करबए चाहै छेली तँ त्रिपुरासँ केना भऽ गेलनि। जखनि की चनन्पुरवाली परिवारक अभिभाविका छेलखिन। हुनक पतिक हुनकापर कोनो विशेष अनुशासन सेहो नै छेलनि आ ने राधाकान्त त्रिपुरासँ प्रेम बिआह केलखिन तँ कथानकमे एहेन परिवर्त्तनकँ सोझहे-सोझ आत्मसात् करब कनेक कठिन लागि रहल अछि। गाममे तँ कूटनीति चलिते अछि किएक तँ छद्म रोजी रोजगारपर बेरोजगारी भारी। तँए भोलामास्टर आ बंगट चौधरी सन परिवार विध्वंसक कँ राधाकान्त सन संवेदनशील लोककँ दोसर बिआह करबाक प्रेरणा देबएमे यथार्थ बोध होइत अछि। ई सभ घटना चक्रसँ कथा रोचक होइत अछि। मुदा कथाकँ आकर्षक बनेबाक क्रममे राजकमल बिसरि गेला जे त्रिपुरा मात्र १३-१४ बर्खक बालिका छथि। जखनि पोखरिमे चुभकबाक जिज्ञासा सासुरोमे छन्हि तखनि सौतिन अएबाक संभावनाक मध्य अपन सकल गृहस्थ कार्यमे केना लागल रहली? एक दिस चंचल रूपक उद्बोधन आ दोसरा रूपमे परिपक्व नारी, एकरा प्रयोगवाद तँ कहल जा सकैत अछि मुदा प्रयोगात्मक रूप वास्तविकतासँ बहुत दूर अछि। राधाकान्त सेहो शिक्षित छथि, मात्र अपन स्त्रीकँ पोखरिमे स्नान करबाक सजाक रूपँ दोसर बिआह।

ओना मिथिलामे पहिने गप्पे-गपमे बिआह करबाक इतिहास रहल अछि परंच ऐ प्रकारक बिआहक कारण समीचीन नै लागल। अंतमे अपन बिआह कालक राखल ललका पाग जखनि त्रिपुरा राधाकान्तकेँ दोसर बिआह लेल प्रस्थानकालमे दइ छथिन तँ राधाकान्तक हृदए परिवर्तन भऽ जाइत अछि आ पहिलुक ललका पागक मर्यादा रखैले ओ चुप्प भऽ आँगनमे आबि कुर्सीपर बैस जाइ छथि। अहू घटनकाक्रममे कथा वास्तविकतासँ बेसी कल्पवृक्षक पुष्प प्रतीत होइत अछि। जे राधाकान्त मात्र पोखरि स्नानक दंडमे त्रिपुरासँ नारीक अधिकार छीनि लेबाक निर्णए केलनि ओ अंगुलिमाल जकाँ क्षणहिमे केना बदलि गेला। ई ध्रुव सत्य अछि जे मैथिल ब्राह्मण परिवारमे ललका पागक स्थान विशेष छै आ ओइ पागकेँ सहेजि कऽ त्रिपुरा धएने छेली। भगवत परीक्षा जकाँ सौतिन अनैले पतिक हाथमे पाग देबाक निर्णएमे अंगुलिमाल रूपी राधाकान्तकेँ बुद्धसँ दर्शन भेलनि। जौं एकरा संभवो मानल जाए तैयो कनेक कमी ई जे राधाकान्त त्रिपुराक तुलनामे कामाख्या दाइक संस्कारकेँ सोचि-विचारि विशिष्ट मानि दोसर बिआह करबाक निर्णए केलनि। कोनो क्षणहिमे नै। ऐ बिआहक सूत्रधार हुनक बेमात्र माए छेलथिन। चनन्पुरवालीकेँ अछैत राधाकान्त माथपर बिनु पाग धएने केना विदा भऽ रहल छला, ई तँ सद्य: कथाक बहुत कमजोर पक्ष अछि।

भाषा विज्ञानक आधारपर जौं मूल्यांकन कएल जाए तँ कथाकार परम्परावादी मैथिल साहित्यकार जकाँ गद्यकेँ अधोषित श्रृंगारक रूप देबाक प्रयास केलनि।

तिरूक तुलना वाण भट्टक श्यामांगी नायिकासँ करैकाल ई उदेस स्पष्ट भऽ जाइत अछि। मुदा जखनि लिखै छथि जे ''मिथिलाक छौड़ी सभ अहिना कनैत अछि।'' तँ स्पष्ट भऽ जाइ छन्हि आत्मिक रूपसँ किछु आर कहए चाहै छथि। ऐठाम छौड़ीक स्थानपर 'कन्या' शब्दक प्रयोग सेहो कएल जा सकै छल जे बेसी नीक लगितए। कामाख्या दाइक विषएमे राधाकान्तक मौन सिनेहमे पिआ आ आ जाऽ... लिखबाक उदेस स्पष्ट नै भऽ सकल।

ई सत्य अछि जे राजकमल मैथिलीक संग-संग हिन्दीमे सेहो लिखै छला, मुदा हिन्दीक प्रति झाँपल सिनेह मैथिली कथामे परिलक्षित भऽ गेल। ई मैथिली साहित्य लेल दुर्भाग्यक गप जे ऐ भाषाकेँ दुभाषी रचनाकार मात्र अपन

नाओं-गाओं लेल हथियार बनेलनि मातृभाषा सिनेहसँ साहित्यिक रचनाक कोनो सम्बन्ध नै। ओना ऐ प्रकारक कथ्य यात्री आ आरसीक रचनामे नै भेटैत अछि। कथोपकथनमे विरोधाभास देखला पछातिओ एकरा नीक रचना मानल जा सकैत किएक तँ कथा बड़ड आकर्षक छन्हि। जौं बिम्बक विश्लेषणकेँ शिल्पक रूपमे देखल जाए तँ राजकमलजी स्थापित शिल्पी छथि ई ललका पाग प्रकट भऽ गेल।

दमयन्ती हरण- 'दमयन्ती हरण' भरल सभामे कोनो विवश नारीक चिर-हरणक वृत्ति चित्र नै। ई तँ समाजक पाग-चानन- ठोपधारी किछु तथाकथिक भलमानुषक वास्तविक झाँपल चरित्रकेँ नांगट करबाक कथा छी। कथा नायिका छथि तेइस-चौबीस बर्खक- दमयन्ती दुलरैतिन दम्मो अथवा समाजक कोप भाजन बनलि दमिआँ। ऐ नायिकाकेँ गामक रक्षक लोकनि खलनायिका बना देलनि, जे दोसरक शोषण तँ नै करैत अछि मुदा अपन चरित्र हनन कऽ ग्राम्य समाजकेँ विगलित कऽ रहली जे कोनो अर्थमे उचित नै। ऐ लेल दोष ककरा देल जाए? सामर्थ्यहीन माएकेँ वा ओइ समाजकेँ जेकर छाहरिमे नेनपनसँ सोझहे अग्राह्य नारीक अवस्थामे प्रवेश कऽ गेली- दमियाँ।

मिथिला समाजक वर्णन कोनो कवितामे जेतेक घृतगन्धा हुअए मुदा ई अक्षरश: सत्य अछि जे जइ समैमे ई कथा लिखल गेल ओइ समैमे परीक्षा समाप्ति आ नव कक्षामे प्रवेशक मध्यक समए छात्र लेल मस्ताएल साँढ़सँ बेसी किछु नै छल। जौं रहितए तँ फूलबाबू रामपुरमे किए बौआइत रहितथि। ''फूल भैया ओइपार जएबह?'' वेदव्यासक मत्स्यगंधा इत्यादि संवादसँ नारी विमर्शक विह्वल रूप प्रदर्शित होइत छै। कथाकार तँ कथाक प्रारंभेमे अवश्ये ई निश्चय केने हेता की कथा नायिकाकेँ वैश्याक रूपमे प्रदर्शित कऽ कथाक इतिश्री कएल जाए। मुदा आदर्शवादी विचारधारासँ एकटा वैश्याक भूमिका वॉधव बड़ कठिन कार्य भेल हएत। शनै:-शनै: 'गाड़ीमे भीख मांगैत छौड़ी' सदृश दमयन्तीक रूपक विश्लेषणमे नारी जातिक अपमानसँ बेसी समाजक कटु सत्य इजोतमे आबि गेल।

स्वेच्छासँ अमर्यादित आचरणक आवरणमे दमियाँ नै गेली। 'हे महादेव, चारिदिनसँ हमरा ऑगनमे चूल्हा नहि जरल अछि' सन संवादसँ ई परिलक्षित होइत छै।

गूढ़ मंथन केलासँ कथामे किछु विशेष नै।

अपन बेटीक भरण-पोषण लेल देह बेपारकेँ केन्द्र बिन्दु बना कऽ लिखल गेल कथामे कोनो सम्यक् समाज विमर्श नै। कोनो आदर्श पथ नै मात्र पथभ्रष्ट समाजकेँ पाठक धरि परसल गेल। यायावरी जीवन चक्रमे घुमैत जयद्रथ आ कथाकारक संवाद कोनो समाज लेल आदर्श प्रस्तुत नै केलाक। देलक तँ समाजकेँ ई संदेश जे जौं कोनो अवला मिथिलाक गाममे रामबाबू सन दु:खिता पतिताक तथाकथिक रक्षक लग अपन आत्मरक्षाक ऑचर पसारती तँ ओ ऑचर खींच लेबामे कोनो संकोच नै करतथि।
'मायसँ कोन काज अछि'- नायिका कथाकारकेँ देखि हुनको ग्राहके बुझली। ई कोनो भ्रम नै। अस्तित्व विहिन नारी लग देहलोलुपे मनुख पहुँचै छथि।

'हम स्त्री नै छी, फूल भैया। हम तँ माटिक फूटलि हाँड़ी छी। हमरापर दया करबाक कोनो प्रयोजन नहि'- मर्माहित करैले चेतनाशील मनुखकेँ ई वाक्य भारी पड़त। छप्पन बर्ख पूर्ब ई कथा लिखल गेल। ओइ समैमे समाजक ई दशा छल? तखनि तँ वर्त्तमानकालक जीवन शैलीकेँ दोष देब उचित नै। जखनि जड़िए पथभ्रष्ट तँ छीपक विषएमे नीक कल्पना करब सेहो भ्रामक अछि।

सम्पूर्ण कथामे झाजी आ चौधरीजी, मात्र पंचैती कालमे स्कूलक प्रधानाध्यापक यादवजी आ एकठाम खबास कुंजा धानुक अन्य वर्गक पात्र छथि। तखनि 'ब्रह्मो जानति ब्राहण:' केना कलियुगमे प्रासंगिक मानल जाए। समाजमे नीति शिक्षाक आचार्य जौं कुनीतिक प्रधानाचार्य भऽ जाथि तँ बेवस्थे चौपट्ट किएक नै हएत।

बेर-बेर जखनि-जखनि नारी वा शूद्रक चर्च होइत अछि तँ तुलसीदासक 'ढोल गँवार शूद्र पशु नारीक' उद्धरण देल जाइत अछि। महाकाव्यक रचनामे कोनो विशेष पात्रक मुखसँ निकसल ऐ वाणी द्वारा मानस पुरुषक चरित्र हनन कएल जाइत अछि।

चौधरीजी बजला 'घोर कलियुग आबि गेल अछि तुलसीदास ठीके लिखने छथि...' ई उचित नै लागल। तुलसीदास तँ एकठाम लिखने छथि जे 'धीरज धर्म मित्र अरू नारी, आफत काल परेखहुँ चारी' एकर उल्लेख किएक नै कएल जाइ छै? ओना ऐ कथामे नारी आ धर्ममे सहचरी बनेबाक कोनो गुंजाइश नै छल। मुदा तुलसीक विषएमे लिखैकाल ई धियान रखबाक चाही जे रामचरित मानस जनभाषाक कृति अछि जइसँ सम्पूर्ण हिन्दू संस्कृति प्रभावित भऽ रहल, कोनो विशेष जातिक आधिकारिक भाषा संस्कृतिमे लिखल नै गेल। तँए बाल्मिकि रामायणसँ बेसी पाठक धरि एकर पहुँच रहल।

कथाक बिम्ब विश्लेषण रूचिगर लागल, जे राजकमलक विशेष कथा लिखबाक कलाक परिणाम मानल जाए। हिनक कथामे कोनो हास्य समागम नै रहितो जनप्रिय रहल। तेकर मौलिक कारण छी गद्य काव्यात्मक विश्लेषण। वाणिज्यक छात्र रहितो राजकमल अंकगणितीय वा सांख्यिक लेखा जोखामे नै पड़ला किएक तँ 'आशुकथाकार' छथि। कथाक अंतमे वएह पंचैतीक निर्णए जे हमरा सबहक समाजक व्याधि छल। कानूनकेँ चुनौती दइले पंच परमेश्वर बनि किछु लोक पान चिबा कऽ इतिश्री कऽ रहल छला। वर्त्तमान समैमे ई संभव नै छै किएक तँ मनुख सेहो 'चेतनाशील भऽ रहल आ प्रजातंत्र दीर्घ सूत्री समाजक पागधारीसँ भरिगर भऽ गेल। मुदा अंतमे कथाकार बिसरि जाइ छथि आ मत्स्यगंधाक हँसी प्रश्ने रहि गेल। राजकमलक प्रश्नसँ कथाक इतिश्री करब पाठककेँ भ्रमित कऽ दैत अछि, मुदा रूचिपूर्ण। निर्णए तँ हमरा सबहक समाजमे ओझराएले रहि गेल छल तँए संभवत: प्रश्नेसँ कथाक इतिश्री कएल गेल भऽ सकैत अछि कथाकार कथाकेँ रोचक बनबैले पाठक धरि प्रश्न छोड़ि कथाक इतिश्री करब उचित बुझैत होथि। जौं ई सत्य तँ एकरा मैथिली साहित्य लेल दुर्भाग्यशाली मानल जाए, किएक तँ न्यायाधिशकेँ निर्णए ओझरा कऽ न्यायक कुर्सीपर सँ उतरला पछाति बेवस्था चौपट हएब स्वभाविक छै।

अकास गंगा- मैथिली साहित्यक संग सदिखन ई भ्रांति रहल जे जौं कोनो साहित्यकारक एक गोट कृति साहित्यकेँ आर सुवासित कऽ देने अछि तँ आगाँक रचनामे कथ्य ओ शिल्पसँ बेसी कथाकारक नाओं मूल्यांकनक केन्द्र बिन्दु भऽ जाइत। ऐ अर्न्तद्वन्द्वसँ राजकमल सेहो नै अछोप रहलाहेँ।

'आकाश गंगा' श्रैगांरिक बिन्दुकेँ स्पर्श करैत समाजक अर्न्तव्यथाक चित्रण करैमे सफल कथा छी, ऐमे कोनो संदेह नै। मुदा जौं अंत:करणसँ अवलोकन कएल जाए तँ 'बर दुआरिपर उतरल नहि की छींकक ध्वनि' जकाँ कथाक प्रारंभे छायावादी शैलीमे कएल गेल। 'विवेकानन्द चौधरी नहि मिथ्या कहलौं, आब जमीन्दार नहि साधारण नागरिक। नागरिको नहि साधारण ग्रामीण' सन शब्दकोशसँ वाक्य बनाएब अप्रासंगिक मानल जाए। कथाकार स्वयं दृग्भ्रमित तँ नै छथि किएक तँ हिनक प्रतिभापर संदेह नै। तखनि पाठककेँ दृग्भ्रमित करबाक उदेस स्पष्ट नै। कथाकारकेँ एकबेर स्पष्ट कऽ देबाक चाही जे विवेकानंद की छथि? जौं ई काव्य रहितए तँ क्षम्य छल, मुदा कथाक ऐ रूपकेँ की मानल जाए? सचार तखने नीक लगै छै जखनि मूल खाद्य पदार्थ अक्षत हुए। मरूआक संग गाही साग तरकारी परसबा पछातिओ भोजनमे विशेष स्वाद नै भेटत। कथोपकथनपर शिल्पक भार एक निश्चित सीमाने तक शोभायमान लगैत। विवेकानंद चौधरीक अपन अर्द्धांगिनी मदालसासँ सम्बन्ध समाप्त भऽ गेलनि। विवेकानन्द अपन बेटी अन्नपूर्णा संग रहए लगला। एकटा जमीन्दारक बेटी अन्नपूर्णा पितृ आशाक विपरीत गरीब बालक राधाकान्तक संग बिआह कऽ लइ छथि। बाप-बेटीक सम्बन्ध समाप्त भऽ गेलनि। कालान्तरमे बेटी अन्नपूर्णा एक बालक अशोकक माए भऽ गेली। पतिक देहावसानक बाद दरिद्रासँ लड़ैत माए अन्नपूर्णाक चरित्र चित्रणमे कथाकारक सबल दृष्टिकोण झलकैत अछि। नारी-विमर्शक दृष्टिसँ कथा रोचक मुदा नारीक जीवन दशा समाजमे उदासी छै, ई प्रमाणित करब उचित मुदा अगिला पीढ़ी लेल उदासीन तँए रचनाकारकेँ ऐमे परिवर्त्तन करबाक चाही छल। अंतमे विवेकानन्दक हृदए पझिजैत अछि आ ओ बेटीक विदागरी लेल उद्यत भऽ जाइ छथि। ललका पाग जकाँ अहू कथामे परिणाम स्पष्ट नै भऽ सकल। श्रैंगारिक जीवनक परिधिमे घुमैत कथा परिणाम विहिन, ऐसँ एकरा कथाकारक पड़ाइनवादी वैरागी प्रवृत्तिक द्योतक मानल जा सकैत अछि।

कादम्बरी उपकथा- वैधव्य जीवनक अविरल चित्रणसँ भरल ऐ कथामे नायिका 'कादम्बरी' विधवा छथि। पति विश्वनाथक मरला पछाति नैहर चलि जाइ छथि। किछु दिनक बाद दिअर दुखित भऽ गेलखिन तखनि सासुर आबि गेली। सासुरक लोकक कल्पना छल जे कादम्बरी ब्राह्मण संस्कृतिक अनुकूल

श्वेत वस्त्र धारिणी अवला बनि एली। मुदा सौन्दर्य सुन्नरि कादम्बरी अंग-वस्त्रसँ विपदा-मारलि नै एली। फेर धमगिज्जरि। अपन कियो नै किएक तँ जीवनक एक पहिया धसि गेल छेलनि। तँए ने दोसरक नेनामे शिक्षाक दिव्य संस्कार जगबैक क्रममे परिहासक पात्र भऽ गेली। गायत्री देवी छोट दियादीनी छेली। शिक्षित नारी कादम्बरीक महत नेना-सभक मध्य बेसी छल। किएक तँ हुनकामे संतानहीन रहितो मातृत्व छेलनि। नेना आ मूक पालतू पशु सिनेहक भूखल होइत अछि। ई सभ गायत्रीकेँ सोहाइत नै छेलनि। अपना तँ ऊक दइले एकटा अल्लुओ पेटसँ नै उखड़लनि' गायत्रीक ऐ प्रतिघातसँ कादम्बरी पाषाण भऽ गेली। आँगनक पाठशाला बन्न कऽ देलखिन किएक तँ गायत्रीक छोटकी बेटी निरमलाक मृत्यु भेलापर 'डाइन' शब्दसँ सेहो विभूषित कएल गेली। जखनि की निरमला सर्प दंशसँ जहान छोड़ि विदा भेली।

कथाक अंतिम चक्र बड़ नीक अछि। लुब्धा खबासक स्त्री प्रसव पीड़ासँ बेथित कादम्बरीक आँगनमे छटपटाइ छथि। एकटा गरीब समाजक कात लागल वर्गक नारीक बेथा कादम्बरीकेँ कर्त्तव्य परायणताक भावुक प्रवाहमे लऽ गेलनि। हास-परिहास आ परितापक भयसँ मुक्त भऽ ओइ नारीक संग-संग संसारमे आबए बला नेना लेल भगवतीसँ छागर कबुला केलखिन। जखनि ई गप बादमे गायत्री कादम्बरीक मुखसँ सुनलनि तँ प्रायश्चितमे अश्रुकण बाहर भऽ गेलनि। ग्लानि भरल समाजक वैधव्य जीवनक वृति चित्र अंतमे सिनेहसँ समाप्त भेल।

आकर्षणमे कथा चुम्बकीय प्रभाव जकाँ पाठककेँ झपटि लैत अछि, मुदा की समाजक ऐ अनिश्चयवादी बेवस्थाकेँ 'नारी-विमर्श'क दृष्टिसँ उचित मानल जाए। जइ कालमे ई कथा लिखल गेल, भारतवर्षमे सेहो धर्म सुधार आन्दोलन भऽ रहल छल, मुदा मैथिल ब्राह्मण समाज ओइ कालकेँ के कहए अखनि धरि 'वैधव्य जीवन'सँ मुक्तिक आन्दोलनकेँ जाति-संस्कार विरोधी मानैत अछि। ऐ मतेँ ई कथा लिखब कोनो अनुचित नै। मुदा प्रयोगधर्मिताक रूपेँ जौं धियान देल जाए तँ राजकमल क्रांतिदूत भऽ सकै छला। परिणाम मिश्रित देखा सकै छेलथि परंच 'कादम्बरी'केँ रूढ़िवादितासँ मुक्ति करबाक प्रयास कथाकारकेँ ओइ शिखरपर स्थापित कऽ सकै छल जेतए धरि मैथिली साहित्य अखनि तक नै पहुँचल अछि।

निष्कर्षत: बेवस्था फेर नांगट भेल से उचित किएक तँ संकीर्ण मानसिकताक समाजक मध्य ई कथा घुमैत अछि।

घड़ी- कथा साहित्यमे रचनाकारक संग-संग समीक्षक लोकनि सेहो बिम्ब ओ शिल्पकेँ कथाक सचार मानै छथिन। हमर मत ऐ रूपेँ कनेक विलग अछि। कोनो रचनाकेँ पढ़ला पछाति ओकर मूल्यांकन हेतु जे मौलिक तत्व होइत ओ छी रचनाकारक दृष्टिकोण। जेना स्वस्थ बेक्तीक सम्मिलनसँ स्वस्थ परिवार आ समाजक निर्माण होइत अछि ठीक ओहिना जौं रचनाकारक दृष्टिकोण समाजपयोगी हुअनि तँ रचनाक सार्थकता सत्य प्रमाणित भऽ जाइत।

"घड़ी" शीर्षक कथाक बिम्ब चलन्त जेकरा सामान्य शब्दमे चालू कहल जाइत अछि। शिल्प आवृतिसँ भरल अर्थात् परिवर्त्तनशील आ दृष्टिकोण आश्चर्यजनक रूपसँ समाज लेल कलुष अछि। नाओंसँ प्रथम दृष्टिए बुझना जाइत जे 'घड़ी' अर्थात् समाजमे कालक प्रहरी मुदा अन्तरावलोकनक बाद काल प्रहरी घड़ी समाजमे अकालक सार्थकता सिद्ध कऽ रहलै। अकाल माने जे ने उचित मानल जाए तेकर व्याख्या, ओहूमे अनैतिक सम्बन्धक केन्द्र बिन्दु बना कऽ लिखल गेल कथामे कथाकार सेहो अनैतिक नायककेँ संग दइ छथिन।

रजनीकान्त प्राध्यापक बनि पटनामे रहै छथिन। पत्नी चन्द्रमुखी आ पाँच सन्तानक संग-संग एकटा विधवा शिक्षिका मौसी उर्मिला हिनक परिवारक सदस्या थिकी। टकाक ओ ओछौनपर सूतनिहार रजनीकान्तकेँ 'घड़ी'सँ कोनो प्रेम नै। 'घड़ी' नामक यंत्रसँ रजनीकान्त घृणा करै छथि। ई बात पटना नगरमे मैथिल समाजक सभ लोककेँ बूझल छै। ई लिखबाक प्रयोजन आ प्रमाणिकतापर संदेह होइत अछि जौं शिल्पक आधारपर उचित मानलो जाए तँ एकर प्राथमिकता पूर्णत: असत्य हएत। काल्पनिक कथामे सेहो ऐ तरहक शब्द वा वाक्य नै लिखबाक चाही। "मैथिल समाजक सभ लोक"मे पटनामे रहनिहार सम्पूर्ण मैथिलकेँ केन्द्रित कऽ कऽ १९६५ मे ई कथा लिखल गेल। रजनीकांत कोनो भारतीय सिनेमा जगतक प्रसिद्ध कलाकार नै छथि आ ने महात्मा गाँधी सन राष्ट्रक सेवक एकटा प्रोफेसरकेँ सभ लोक केना जानि सकैत अछि? मैथिल समाजमे अमीरक संग-संग गरीब लोक सेहो छथि।

तत्कालीन पटनामे समाजक किछु लोक मोटिया, रिक्शा चालक जूता पॉलिश केनिहार सेहो हेता हुनका रजनीकान्तसँ केना परिचए? खैर प्रयोगवादी राजकमलक ऐ कृत्यकेँ मैथिली भाषामे क्षम्य कऽ देल गेल जे साहित्यक अदूरदर्शिताक परिचायक छी।

कथा कोनो विशेष बिम्ब नै रखने अछि। कथाकार स्वयं ऐमे सहनायक छथि। मैथिल समाजक मुसलमान जातिक पात्र अमजद मियाँ अपन नवयुवती पत्नी जहूरनक इलाज लेल पटना अबै छथि। चूड़ीक व्यापारी अमजद कथाकारपर विश्वसनीयता रखैत हिनकेसँ सहयोग लइ छथिन। ''एक रिक्शापर हम आ जहूरनी आ दोसर रिक्शापर अमजद अली आ रत्नेश झा कम्पाउन्डर आ दुसधा खबास अस्पतालसँ घुरै छेलौं।'' ऐ प्रकारक संवादमे कथाकारक दृष्टिकोण पूर्णत: स्पष्ट भऽ गेल अछि। कोनो पुरुष ओहिकालमे कथमपि नै स्वीकार कऽ सकै छल जे ओकर कनियाँ पर-पुरुषक संग वैसए जौं एना कएलो गेल तँ एकर परिणाम अनर्गल साबित भेल। कालान्तरमे वएह जहूरन प्रो. रजनीकान्तक संग अबैत-अबैत हुनक प्रेमालाप मे ओझरा गेली। ओइ प्रेमालापकेँ कथाकार समर्थन तँ नै केलनि मुदा गबाह अबस्स भऽ गेलखिन। अनर्गल प्रेमकेँ प्रकाशित केलनि मुदा प्रो. साहैबक कनियाँसँ एकरा नुका कऽ रखलनि। मित्रक ई कर्त्तव्य होइत अछि जे अपन मित्रकेँ कुमार्गसँ रोकथि। जौं नै रोकि सकला तँ स्वयं संग छोड़ि देबाक चाहियनि छल। राजा बलि वचनक रक्षा लेल जखनि गुरुक संग छोड़ि देने छेलथि तँ राजकमल एक कुकर्मी मित्रक कुकर्मक भागी केना बनबैले तैयार छथि? ई घटना मात्र कथाक, मुदा कथोमे ऐ प्रकारक भ्रांति उत्पन्न करब सर्वथा अनुचित मानल जाए। 'दुसधा खबास' लिखब उचित नै जौं हम दोसरकेँ इज्जति नै देब तँ 'बाभन' शब्द सुनबामे किएक क्षोभ होइत अछि? अंतमे रजनीकान्त अपन सत्य पथपर पुन: आबि जाइ छथि। 'घड़ी' तँ कीनि लेलथि मुदा ई घड़ी जहूरनीक चरित्र आ चन्द्रमुखीक बिसवासकेँ केना घुराएत?

ब्रह्माण्डशास्त्री, दार्शनिकसँ लऽ कऽ भौतिकीय गणकक दृष्टिकोणमे चुम्बकीय आकर्षण विपरीत ध्रुवक मध्य होइत छै। जीवन धर्ममे नर-नारी संग

रहितो विपरीत किएक तँ शारीरिक संरचनासँ सृजनक माध्यममे अन्तर होइत। स्वाभाविक छै जे साहित्यकार ऐ गृहस्थ आश्रममे प्रवेश करैत रचनाक बिम्ब तैयार करैत अछि। तँए कोनो साहित्यक आदि कालमे मौलिक विमर्श भक्ति आ श्रृंगार रहल। राजकमल जीक पदार्पण मैथिली साहित्यक आधुनिक कालमे भेलनि मुदा ताधरिक कथा जगतमे अपन भाषाकेँ कृषकाय मानल जाए। अपेक्षाकृत राजकमल युवा सेहो रहथि तँए सौन्दर्य आकर्षण पनकब कोनो असहज नै। अपराजिता कथा हिनक पहिलुक रचना छन्हि जे वैदेहीक अक्टूबर १९५४ अंकमे प्रकाशित भेल रहए।

जेना नाओंसँ स्पष्ट अछि ''अपराजिता'' जे स्त्री पराजित नै भेल हुअए मुदा ऐठाम कोनो मण्डन मिश्रक भारतीक उल्लेख नै। कथाकारक मित्र नागदत्तक कनियाँ छथि- अपराजिता। एकर अर्थ कथमपि नै जे ओ नागदत्तपर विशेषाधिकार रखै छेली। सिनेहसँ राखल नाओं आ अधिकारक दृष्टकोणमे व्यापक अंतर होइत छै। तँए कथाकारकेँ ई नाओं अनसोहाँत लगै छन्हि।

मिथिला क्षेत्र अखनि धरि प्राकृतिक विपदा बाढ़िक कोपभाजिता बनैत रहली। सन् १९५४मे स्थिति तँ आर फराक छल। ''सरिपहुँ... बागमती, कमला, बलान, गण्डक आ खास कऽ कोसी तँ अपराजिता अछि ने। केकरो सामर्थ्य नै जे एकरा पराजित कऽ सकए''

...ऐ कथांशक द्वारा कथाकार कोनो बातसँ मुक्तिक आश नै रखने छथि, हिआसँ भऽ सकैत जे रखने होथि मुदा कथाक दृष्टिकोण बेछप्प मानल जाए।

कथाकारकेँ कथामे तँ अबस्स पीड़ा भऽ रहलनि जे जे वेदमे नदीकेँ मनुखक सेविका कहलकैक अछि। मनुखक पत्नी कहलकैक अछि... मुदा, बहुओ भऽ कऽ कोसी आ वागमती अपराजिता छथि।

एक दिस बाढ़िक उजैहियासँ पसरल अधोगतिकेँ देखि कथाकार बेथित छथि तँ दोसर दिस मिथिलाक परम सत्यकेँ उधार कऽ रहला। सम्पूर्ण भारत-वर्षक अधिकांश भूभागमे नारी-जीवन सोझ विचार रखनिहार लोक लेल चिन्ताक विषए रहल। राजकमलक कथा सभमे सम्पूर्ण भारत बर्खक उल्लेख नै आ ने मिालिक सम्पूर्ण समाजक हिनक कथा प्रतिनिधित्व करै छन्हि।

मूलत: मैथिल ब्राह्मण परिवारकेँ केन्द्र बिन्दु बना कऽ लिखल गेल हिनक ''अपराजिता'' शिक्षित मैथिल परिवारक नारी जेकरा पति रहितौं अवला कहल जा सकैत केर स्थितिक वास्तविक विवेचक छी। ओना ऐ कथामे केतौ नारी शोषित अथवा दोहनक प्रत्यक्षत: उल्लेख नै। सम्पूर्ण कथा ''द वनिर्ग ट्रेन'' जकाँ रेलगाड़ीसँ प्रारंभ भऽ समस्तीपुर आ दरिभंगाक बीच पटरीक मध्य झुलैत अछि। समस्तीपुरसँ मुक्तापुर होइत हायाधाट धरि बाढ़िक प्रकोपक मध्य प्रारंभ भेल कथामे रेल पटरीपर पानि आबि जेबाक कारण यात्री सबहक परेशानी कथा मूल बिम्ब छी। बिम्ब कोनो विशेष अर्थक नै मुदा शिल्प जोरगर तँए कथा किछु हद धरि रोचक भऽ गेल।

प्राय: मैथिली कथाकारक संग समस्या रहल जे कथा लिखबाक उदेस बहुत ठाम स्पष्ट नै होइत अछि। राजकमलक अपराजिता सेहो इएह प्रकारक कथा मानल जाए। हमरा सबहक समाजक नकारात्मक स्वरूपकेँ ऐ कथामे नांगट तँ खूब नीक जकाँ कएल गेल मुदा की मात्र नांगट केने समस्याक निदान संभव छै?

ऐ कथामे तँ ई प्रमाणित होइ छै जे साहित्य समाजक दर्पण मुदा भांगल दर्पणमे कांति देखलासँ कांति सेहो स्पष्टत: नै देखाएत आ आँखिपर असर पड़ब सेहो अवश्यांभावी तँ कथाकार पाठककेँ ऐ कथासँ पूर्णत: प्रभावित केलनि ई कहब सर्वथा अनुचित।

''फुलपरास वाली'' कथा नारी प्रधान कथा छी जेकर नायिका छथि। विलट भाय पटनामे रहि रिक्शा चलबै छथिन। एकटा पंडितक पुत्र भऽ रिक्शा हाँकब कथाकारक अर्द्धांगिनी शशिकेँ नीक नै लगै छन्हि। शारीरिक श्रमक अभ्यास नै रहलासँ जीवन दुष्कर भऽ जाइ छै। शशिकेँ ऐसँ बेसी खटकै छन्हि जे विलट भाय हुनक भैंसुर छथि। पंडित चन्द्रकांत झा वेदान्तक पुत्र विलट झा रिक्शा चएलबाक कर्मकेँ अनुचित नै मानै छथि। मनुख कर्मशील भऽ अपन पेट पोसए तँ कोनो हर्ज नै। पैतृक ठाठ-बाठक घंटी डोलेलासँ पेट तँ नै भरि सकैत अछि। श्रमजीवी श्रमसँ पेट भरि सकैत अछि मुदा जौं शरीर अस्वस्थ भऽ जाए तँ जीवन चलाएब नितांत असहज भऽ जाइ छै।

विलट भाइ बिमार पड़ि जाइ छथि जिनका देखैले कनियाँ अर्थात् फुलपरास वाली पटना अबै छथि। विलट भाइक ज्वर तँ शांत भऽ जाइ छन्हि मुदा एकटा ज्वार बढ़ि गेलनि ओ छी सुरा पान। कहियो पीब कऽ नाली खसै छथि तँ कहियो घर आबि गुड़कै छथि। कथाकार अर्थात् मणि बाबू आ हुनक कनियाँ शशिकेँ ई सभ बड़ अनसोहाँत लगलनि। बिलट कर्मोपदेश दइ छला जे कोनो काज कऽ कऽ जीवन यापान करब अनुचित नै। मुदा आब ताड़ी-दारूपर उतरि गेल छथि। एतबे नै एक दिन अपन संग फुलपरास वालीकेँ सिनेमा देखबए लऽ जाइ छथि जैठाम मीनाक्षी अर्थात् फुलपरासवालीक हाथ विलट भाइक एकटा लुच्चा मित्र पकड़ि लैत अछि।

बादमे बिलट अपन अधला कर्मपर प्रयश्चित सेहो करै छथि। ऐ बीच कथाकार कथानककेँ थोड़े मोरि दइ छथि। फुलपरास वाली जे मणि बाबूक भौजी थिकी तिनकासँ प्रेम करबाक नाटक। अश्चर्य मानल जाए जे नारी विमर्शमे राजकमलक लेखनी केतए धरि भसिया जाइ छन्हि। ओना दिअर अर्थात् मणिबाबू मीनाक्षीकेँ अपन पियासक शिकार नै बना सकलनि। किएक तँ पतिक देल पीड़ासँ मैथिल नारी आत्मासँ कानि तँ सकैत अछि मुदा अपन पतिकेँ छोड़ि आन पुरुषकेँ अपन सर्वस्व न्योछावर करबाक कल्पनो नै करत। ऐठाम कथाकारक दृष्टिकोण साफ आ समाज लेल आदर्श मानल जाए। जौं दोसर अर्थमे सोचल जाए तँ विजय कुकर्मी पुरुषेकेँ भेल। अपने कोनो कर्म करब, पथभ्रष्ट भऽ जाएब मुदा जीवन संगिनी सदिखन संग देत, संभवत: यएह कारण छी जे पुरुष कोनो हद धरि खसि जएबामे संकोच नै करैत अछि आ तथापि ओकरा बिसवास रहै छै जे गृहिणी कदापि नै विमुख हएत।

विहनि कथाक विकासमे राजकमलक सेहो किछु योगदान छन्हि। ''किरतनियाँ'' सर्वकालिक विहनि कथामे अपन विशेष महत रखैत अछि। एकर कारण जे राजकमल ऐ कथाक माध्यमसँ पहिलुक बेर मिथिलांक ब्राह्मण समाजसँ इतर भऽ कथा लिखै छथि। किरतनियाँ कोनो भजन संकीर्तण मण्डलीक सदस्य नै एकटा भिखमंगनी बालिका अछि। जौं सवल परिवारमे जनमलि रहैत तँ उमेर पढ़ब लिखब आ नेनपनक भभटपन करबाक छल। मुदा गरीबक कोन शेखी। माए-बाप कहिया जहान छोड़ि देलक पता नै।

८०-९० बर्खक बुढ़िया मइयाँक संग भीख मंगैत अछि। पूस मासक जाड़मे बुढ़िया लटुआ कऽ खसि पड़ल। ऐ घटनाक तीन दर्शक नांगड़ा, झपसुआ आ भिखमंगाक मेट चन्नरदास छल। नेंगरा कोनो नामकरण संस्कारसँ देल नाओं नै। नांगड़ तँए नगड़ा ओना भिखमंगाक नामे की...? कथाकारक दर्शन नीक लगैत अछि। झपसुआ नामधारी जीव आ चन्नरदास दिनमे निपट्ट अन्हारक भूमिकामे भीख मंगैत अछि आ रातिमे अपन वास्तविक रूपमे। कथाकार ऐ प्रसंगसँ प्रमाणित करैमे सफल होइ छथि जे जीवनक मंच आ रंगमंचमे भिन्नता छै। बुढ़िया मरि गेल ओकर लहास लग बैसि किरतनिआँ चन्नरदास संग भीख मांगि लहास जरबैले नाटकीय क्रीड़ा करैत अछि। भीखक कैंचा गनि-गनि सवा तीन टका पूरा कएल गेल, मुदा लहास नै जरौल जाएत। किरतनिआँ बाजलि-

''एह! तीन टकामे हम दुनू आठ दिन ताड़ी पी लेब।''

चन्नरदास अपन उदेसमे सफल होइत अछि। ओकर उदेस छल बाल जीवनसँ युवती बनलि किरतनियाँक शारीरिक दोहन। आब किरतनिआँ सेहो निडर भऽ गेली। स्वाभाविक छै जखनि नारी कलंकिता बनि जाइत अछि तँ निर्लज्ज होएब निश्चित भऽ जाइत। कथाक गतिमे गेलासँ ई प्रमाणित होइ छै जे ऐ तरहक स्थिति लेल दोषी ई पुरुष प्रधान समाज रहल। बिम्ब आ शिल्प दुनूमे ई कथा राजकमलक सर्वश्रेष्ठ कथामे सँ एकटा मानल जाए। सबल पक्ष ई जे कथा समाजक सभसँ अंतिम वर्गक जीवन शैलीक कथा छी। एकटा आन विहनि कथा पनिडुब्बी सेहो राजकमलक श्रेष्ठ कथामे स्थान रखैत अछि। हिनक अधिकांश कथा ब्राह्मण-परिवार विषएमूलक अछि मुदा एकटा कथा ''मलाहक टोल : एक चित्र'' समाजमे पिछड़ल वर्गक नारीकेँ केन्द्रित कऽ कऽ लिखल गेल तीन नायिका पिरितिआ कमली आ केतकीक कथा छी। ऐ कथामे राजकमल मूलत: नारी विमर्शकेँ बिम्बित केलनि मुदा ऐठाम ई अबस्स प्रमाणित भऽ गेल जे समाजक कात लागल वर्गक नारीमे साहस, चेतना आ दृढ़ निश्चय समाजक अधिष्ठाता वर्गक नारीसँ बेसी अछि। तँए ऐ वर्गक नारी अपन इच्छानुसार अधोगतिकेँ प्राप्त तँ कऽ सकैत अछि मुदा ओकरा संग कियो जबरदस्ती नै कऽ सकैत। जौं कियो करबाक प्रयास करत तँ ''कैतकी'' जकाँ समाजक कात लागल वंगक नारी रूद्रा बनि

तिरपित मिसर सन चरित्र हीन बेक्तीक हत्या तक कऽ सकैत अछि। ऐ प्रकारक घटना समाजमे होइत रहल तँए राजकमल जीक प्रयास ऐठाम उचित मानल जाए।

प्रयोगकेँ बादक धरातलपर आनैबला राजकमल मैथिली साहित्यमे कथाकेँ विशेष स्थान दियौलनि। हरिमोहन आ ललित जकाँ हिनक कथा पाठकमे प्रिय अछि। जौं अल्पायु (मात्र ३९ बर्ख) मे कालकलवित नै भेल होइत अछि तँ भऽ सकै छल जे आगाँ आर परिपक्व भऽ कथा जगतमे प्रवेश करितथि। मुदा हिनक कथाक सभसँ पैघ कमी रहल नारी सौन्दर्य आ अनैतिक सम्बन्धकेँ मूल बना कऽ किछु कथा लिखि साहित्यमे अनैतिक सम्बन्धकेँ बलशाली बनेबाक प्रयास केलनि। ओना ऐ तरहक घटना समाजमे होइत रहल अछि मुदा सत्यकेँ नांगट कऽ कऽ छोड़ि देलासँ साहित्य सबल नै भऽ सकैत। दोसर किछु कथाकेँ जौं छोड़ि देल जाए तँ कथाकार स्वयं फूलबाबू बनि कथा नायक बनल छथि मुदा सोचमे पारदर्शी नै। राजकमलकेँ सम्पूर्ण कथाकार तँ नै मानल जा सकैत मुदा ''शिल्पी''क रूपमे मैथिली कथा जगतक विशिष्ट कथाकार तँ अबस्स छथि।



२६

इन्द्रधनुषी अकासमे सामाजिक विमर्श

''इंद्रधनुषी अकास'' आधुनिक मैथिलीक चर्चित गद्यकार श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक पहिल पद्य संग्रह अछि। जगदीशजी सन् २००८सँ पूर्ब मैथिली साहित्य लेल अनचिन्ह नाओं छलाह, मुदा गत तीन-चारि बर्खक भीतर हिनक विविध बिम्बक उपन्यास, कथा, नाटक, एकांकी, बाल गद्य साहित्य आदिसँ मैथिली साहित्यकेँ उतर आधुनिक युगमे प्रवेशक अवसरि भेट गेलनि।

मूलत: कथाकार आ उपन्यासकार जगदीश प्रसाद मण्डल कोनो चन्दा झा सन प्राचीनता ओ नवीनताक सन्धिक कवि नै आ ने हिनक रचनामे परम्परावादी प्रीतिक कतहु दर्शन होइत। भुवनेश्वर सिंह भुवन जकाँ ने जगदीश नवीन प्रगीत काव्यक व्याख्याता छथि आ ने आरसी प्रसाद सिंह जकाँ आशु कवि।

९५ कविताक संग्रह ''इंद्रधनुषी अकास''मे जे ई वैशिष्ट्यता प्रमाणित कएलनि ओ अछि सम्पूर्ण समाज लेल समन्वयवादी दृष्टिकोणक दार्शनिक अवलोकन आ अर्थनीतिक सम्यक् विश्लेषण। अनचोकेमे कविता सबहक रूपेँ हिनक विराट सरल जीवन दर्शन प्रदर्शित होइत अछि।

''मणि'' विषधर साँपकेँ सेहो मनोरम बना दैत जेकर लोभमे सपेरा सबहक अंत भऽ जाइत। ओ मणि तँ वैज्ञानिक दृष्टिकोणसँ काल्पनिक छी, मुदा मणि कवितामे कवि अपन मनक मनोभावकेँ मढ़ि-मढ़ि मणि'क रूप रेखाक संदेश दइ छथि। भाववाचक संज्ञा छी- मणि मुदा जाति आ बेक्तिक रचना लेल भावक आवश्यकता प्रासांगिक होइत। जखनि अर्न्तमनमे दिव्य ज्योति जागत तँ तन अबस्स प्रज्जवलित हएत। लक्ष्मी तखने औती जखनि कर्मपथ उज्ज्वल हएत। कर्मपथकेँ प्रकाशित करैले स्वस्थ मोनक आवश्यक्ता होइत छै। पहिने ई अवधारना छल जे स्वस्थ शरीरमे स्वस्थ मनक निवास होइ छै, मुदा आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टकोणे ई मिथ्या प्रमाणित भऽ रहलैक। व्यस्त जीवन शैलीमे मोन अस्थिर भऽ गेल छै। बिनु कर्मक अधिक प्राप्तिक तृष्णासँ मनमे विचलन स्वाभाविक जइसँ मोन अस्वस्थ। जखनि मोन अस्वस्थ तँ शरीरक अस्वस्थ हएब कोनो अजगुत नै। 'चिन्ह बिना औषधि

भारी' वैज्ञानिक दृष्टिकोणसँ अक्षरश: सत्य मानल जाए। सोडियम कार्बोनेट धोविया सोडर छी आ सोडियम बाइकार्वोनेट पेटक अम्लीयताकेँ दूर करैत अछि। मात्र 'वाइ' शब्द हटलासँ जौं उलटा सेवन हएत तँ जीवन वाइ-वाइ भऽ सकैत अछि।

मुदा सामाजिक जीवनमे धोवियो सोडर अनिवार्य किएक तँ मात्र पेटक अम्लीयता दूर केलासँ शरीरक मोइल नै धोअल जा सकैत। तँए जीवनमे सबहक लेल समायानुसार स्थान देल जाए। 'श्रेष्ठ जीवन मानव कहबै छै मानवता उदेस जेकर' ऐ पाँतिसँ रचनात्मक समन्वयवादी न्याय दर्शन प्रदर्शित होइत छै। समाजक आगाँ पाँतिक लोक जखनि कात लागल वर्गकेँ मर्माहित करैत अछि, तखनि कातक लोक सेहो उग्रता प्रदर्शित करैत अछि। ऐ प्रकारक अदला-बदलाक भाव जगदीश जीक ऐ कवितामे नै भेटल। ई तँ सकारात्मक सोचक आशावादी दार्शनिक जकाँ अपन कविताक इति श्री करै छथि-

'मनुखक भेद विभेद
मेटबैक छी धर्म ओकर'

संभवत: ब्रह्माक बरद पूत सभकेँ आदर्शवादी बनबाक संदेश देलनि अछि। ओना अलंकार मिलेबाक क्रममे एकठाम चूकि गेल छथि

जखने मन मणि बनत छिटकत ज्योति धरतीपर
अपने बाट अपने देखब हँसैत चलब पृथ्वीपर

ऐठाम पृथ्वी परक स्थानपर 'परतीपर' जौं लिखल रहितए तँ शब्द सामंजस्य भऽ सकै छल। ओना कविक दृष्टिकोण भऽ सकै छै जे किछु आर होन्हि।

गंभीर आशु काव्यक मान्यता समाप्त होइत मैथिली साहित्यमे विचार मूलक पद्य बिरले भेटैत अछि। जीवन आ आध्यात्मक सम्बन्ध चलन्त समाजक बीच देखैमे आबि रहल छै। सभ दिस भागमभाग सोचैले फुरसति नै। मैथिली साहित्यमे छायावादक काल निर्धारण तँ नै कएल गेल अछि, मुदा अनचोकेमे किछु साहित्यकार ऐ काव्य विधापर समए-समैपर रचना कऽ दइ छथि। 'चल रे जीवन' कविता आध्यात्मिक दर्शनसँ कर्मशील जीवनक संधि करैमे पूर्णत: सफल मानल जा सकैत। महाकवि आरसीक कहब छेलनि जे सभ लोकमे आशुत्व होइ छै मुदा लेखनीसँ अभिव्यक्त करैले अर्न्तमन आ

आत्माक मिलन जिनकामे हएत वएह 'आशु कवि' मानल जेता। जगदीशजी तँ आशुकवि नै छथि, मुदा 'चल रे जीवन' हिनक क्षणिक अर्न्तमन आ आत्मीय मिलनक परिणामे आशु कविता अबस्स भऽ गेल। जीवनमे गति सर्वाधिक उपयोगी आ सम्प्रभु-सर्वशक्ति मान तत्व छी। जइ वसुन्धराक माथपर हमर अस्तित्व अछि ओ कखनो ने रुकै छथि। ग्रह-नक्षण सभ सदिखन गतिमान, अंतिम काल धरि जीवन गतिमान, मुइलापर प्राण गतिमान होइत अदृश्य चक्रमे प्रवेश कऽ जाइत अछि।

''यात्रीकेँ आराम कहाँ छै
यात्रा पथ विश्राम कहाँ छै।''

जे अभागल छथि ओ सुतले रहथि मुदा हुनको शरीरमे क्षिति, जल, पावक, समीर, रुधिरक संग सभ अंग मौलिक रुपसँ गतिमान रहैत अछि। 'सूर्य-तरेगन सेहो चलै छै' वैज्ञानिक मान्यतासँ सर्वथा अनुचित मानल जाइत अछि। सूर्य नै तँ उगैत अछि आ ने डुमैत अछि। तँए कविक एक पाँतिकेँ मात्र उत्साह वर्धन लेल कवित्वक किछु मंद बात मानल जाए। वास्तविक रूपसँ ई असत्य मात्र कवितेमे क्षम्य जौं कथा रहितए तँ अप्रासंगिक मानल जा सकै छल।

जेना जगदीश प्रसादजी कथामे शब्द समंजन कऽ लइ छथि ओना कवितामे कतहु-कतहु ओझरा जाइ छथिन-

''समए संग चल, ॠतु संग चल
गति संग चल मति संग चल।''

सभठाम 'संग' उदेस आ कथोपकथन लेल सर्वथा उचित, मुदा स्वरात्मक पद्यमे कथोपकथनक संग-संग अलंकार आ छंदक सम्मिलन सेहो आवश्यक होइत अछि। ई कविता कोनो अतुकांत कविता नै तँए छंदमे आबद्ध करैले कविकेँ विशेष धियान देबाक छेलनि। जगदीश जीक शब्द-कोषमे मैथिलीक खाँटी शब्द सभ भरल छन्हि तँए हिनकासँ आर आशा कएल जा सकैत अछि।

बाल मनोविज्ञानक दृष्टिसँ ई पद्य उपयुक्त मानल जाए। जे बाल आ युवावस्थाक संधि भऽ सकैत अछि किएक तँ ऐ अवधिमे जीवनक गति-चक्रकेँ बूझब विशेष अनिवार्य होइत। ऐसँ भाषा-साहित्य विकास सेहो होइत छै।

आरसी प्रसाद सिंह, सोहन लाल द्विवेदी, सुमित्रा नंदन पंत आ हरिवंश राय बच्चन सन हिन्दी साहित्यक 'आशुकवि' लोकनिक ऐ प्रकारक पद्य प्रारंभिक आ माध्यमिक शिक्षामे विशेष लोकप्रियता प्राप्त केने अछि।

''टुटए ने कहियो सुर-तार
हुअए ने कहियो जिनगी बेहाल।''

जखने जीवनमे गति मति आ नियतिक त्रिवेणी अलग-अलग भऽ जाइत अछि तँ जीवन उदासीन आ परिणाम कष्टदायी, तँए कविक ऐ उक्तिकेँ विचारक संग-संग शिक्षा मूलक सेहो मानल जाए। गति बिनु पहिने जिनगी अक्रिय फेर अकर्मण्यता आ परिणाम जिनगी बेहाल, अंकगणितीय आधारपर दृष्टिकोणकेँ प्रमाणित कएल गेल जे सर्वथा उपयुक्त लगैत अछि।

जीवन जीबाक कलासँ सम्बन्ध काव्यमे प्राय: कवि लोकनि स्वयंकेँ नायक बना कऽ कविता लिखै छथि। हिन्दी साहित्यमे जानकी वल्लभ शास्त्री आध्यात्म दर्शनक सम्मिलन- ''मेरे पथ में न विराम रहा'' सँ कएलनि तँ मैथिली साहित्यमे कालीकान्त झा बूच- ''मृगी जकाँ हम काँपि रहल छी, झाॅखुरसँ तन झाँपि रहल छी'' रूपेँ समाजक रुग्न दशासँ बँचि कऽ जीबए चाहै छथि। मुदा जगदीश ऐ समाजक मैलकेँ साफ करैले उद्विग्न छथि। 'धोब घाट' कविता कोनो मैल वस्त्रक मूल नै, वरन समाजक कृत-कृत्यपर लागल कुचक्रकेँ साफ कऽ कऽ ऐ सँ वचबाक प्रेरणा छी-

''धोइब घाट ओ घाट छी,
पाप धुआ पुन बनैत रहैत
अज्ञान-ज्ञान राति दिन
रगड़ि सान चढ़बैत रहैत''

मैथिली साहित्यमे रीतिक त्रिभाषीय नाटक, प्रीतिक महाकाव्य अर्थहीन वैरागी काव्य शास्त्र कखनो विनोदी, कखनो चलन्त कविता आ कखनो नाम-गाम आ ठामक पद्यसँ भरल पद्य संग्रहक प्रधानता अछि किएक तँ भलमानुस जे लिखत वएह कोसक पाथर मानल जाएत। तँए अभावक ऐ साहित्यमे नीतिशास्त्रसँ सन्निहित पद्याभावकेँ 'धोब घाट' सन कविता पूरा करैत अछि-

उला-पका रातिकेँ
साले साल सूर्ज सुड़कैए

सुख आरामक पहर छीनि

हँसि-हँसि राति दिन झाड़ैए।

कोनो आवश्यक नै जे जाज्वल्यमान नक्षत्रक कर्मसँ निकसैत प्रभावक सभटा परिणाम उत्तमे हएत। सूर्य ज्योतिक प्रतीक छथि, मुदा कखनो तँ हिनको किरण जीव-अजीवकेँ उला-पका दैत अछि तत्पश्चात् अन्हार। हिनक प्रतिभा आ कर्मपर कविकेँ कोनो संदेह नै तँए भलमानुसोक अधला कर्मक विरोध करबाक चाही। ऐसँ समाजमे दृष्टिकोणक विजय प्रासंगिक हएत। वृक्ष मात्र गगनगामी... एकर एक दृष्टि एकटा उदेस होइत परंच शोर विचलनसँ भरल लक्षण रखैत अछि। एक ध्वनि अकास आ दोसर पताल प्रकृतिक रंग बॉसक गिरह जकाँ प्रत्येक दृश्यपर पटाक्षेप। नाटकक अंकमे एकसँ बेसी दृश्य हेबाक चाही, मुदा प्रकृति अर्थात् विधाता अपन प्रत्येक अंककेँ अलग-अलग दृष्यसँ आबद्ध कऽ विविध नाटकीय परिदृश्यक मंचन करैत अछि। ऐ पद्यक प्रत्येक छंदमे विशेष अर्थ झाँपल अछि जे पाठकक मस्तिष्कपर ज्यामितिक दबाब अबस्स बनाएत-

जहिना डारि करोटन लीची

खोंधिते खोंइचा पकड़ैए

निच्चाँ-ऊपर ससरि-ससरि

अपन-अपन बाट पबैए।

भारतीय संस्कृतिक संग ई दुर्भाग्य रहल जे परम्परावादी दृष्टिकोणक किछु अवांक्षित तत्वसँ लोक परेशान तँ छथि मुदा कियो ओकरा समाप्त होमए देबए नै चाहै छथि। 'काटर प्रथा' ऐ रूपेमे सभसँ निर्घिष्ठ मानल जाए। 'सासु-पुतोहु वार्ता'मे कवि ओना स्पष्ट रूपेँ काटरक परिणाम स्वरूपक उद्बोधन नै केने छथि, मुदा परक बेटीकेँ बेटीक रूपमे स्वीकार करब सुसंस्कृत समाजक नारी लेल असहज होइत। ई विडंवना जे अपन संतानक संग जे सिनेह रहैत ओ दोसराक संतान जे आब आत्मसात भऽ गेल छथि तिनका लेल असंभव। ओना एकरा स्वार्थ सेहो नै मानल जा सकैत किएक तँ पुतोहुक आवश्यकता व्याहुत बेटीसँ बेसी होइत छै। ऐमे प्रतिद्वन्द्वताक भाव रहैत अछि। मनुखकेँ अपन अधिकार तँ मोन रहैत अछि मुदा कर्त्तव्यवोधक

ज्ञान जिनकामे नै रहत हुनका पारिवारिक शांतिक स्पप्न देखनाइ सर्वथा अनुचित आ भ्रामक।

प्रतिद्वन्द्विता ऐ खेलमे सासु-पुतोहु दुनू दोषी मुदा सासुक दोख बेसी किएक तँ आनक बेटी अपन घरमे अनला पछाति हास-परिहास सासुएक मुखसँ पहिने निकलबाक संभावना रहै छै-

ओसार पुवरिया बैस सासु
पड़ल पुतोहुकेँ देल धाही
अकड़ि कऽ मकड़ि बाजलि
देहक पानि लऽ गेल हाही।

केकरोपर जौं झूटका फेंकब तँ प्रत्युत्तरमे पाथर अबस्स भेटत, किएक तँ कियो-केकरोसँ कम नै। अधला देखौंस संस्कार मनुखमे पहिने अबैत तँ नवकी कनियाँ केना चुप रहती-

पानिए तँ पसरि देहमे
पीब गेल सभटा पाणि
की करब, फुरिते कहाँ अछि
कहाँ पड़ल छी जानि...।

ऐ प्रकारक आरोप-प्रत्यारोप ग्रामीण समाजमे बरोबरि देखैमे अबैत अछि। परिणाम परिहासक संग-संग अपन दैनन्दिनीमे लागलि पुतोहु सासुरमे बसलि ननदिकेँ बीचमे सेहो लऽ अबै छथि।

कविक कहबाक उदेस छन्हि जे स्वस्थ जड़िसँ स्वस्थ वृक्षक विकास हएब प्रासंगिक तँए सासुकेँ अपन मर्यादाक स्मरण रखि पुतोहुक संग ओहने बेबहार करबाक चाहियनि जेना बेटीक संग करै छथि। पुतोहुकेँ सेहो सासुमे अपन माइक छबि देखबाक आवश्यकता छै।

प्रयोगात्मक रूपेँ आब ऐ प्रकारक अनटेटल क्रिया-कलापक संभावना क्षीण भऽ रहलैक किएक तँ पड़ाइनवादी समाजमे सासु-पुतोहु एक संग रहती, बिरले अवसरि भेटैत। जगदीशजी गाममे रहि कऽ साहित्य साधना कऽ रहल छथि तँए ऐ प्रकारक घटना गाम-घरमे घटित होइत देखानाइ कवि लेल कोनो अजगुत नै। कविताक बिम्ब आ शिल्पसँ बेसी महतपूर्ण अछि कविक उदेस। ऐ दृष्टिसँ जौं देखल जाए तँ कविता नीक छै। भाषा विज्ञानक रूपमे अद्भुत

किएक तँ अपन गद्य जकाँ ऐठाम जगदीश धाही, अकड़ि, मकड़ि, हाही, लसिया, निचेन सन लुप्त होइत शब्द सभसँ पद्यकेँ वांछित रूपेँ बोरि कविता श्रवणीय बना देलनि।

''बौड़ाएल बटोही'' शीर्षक कविता ऐ संग्रहक सभसँ नीक बिम्बकेँ केन्द्रित कऽ कऽ लिखल गेल अछि। जीवन दर्शन आ आध्यात्मक तात्विक विवेचन अत्यन्त विस्मयकारी छायावादसँ भरल मानल जा सकैत। 'परदा'मे ओझराएल जिनगी जकाँ वर्त्तमान मनुखक जीवन भऽ गेल अदि। प्रयोगात्मक रूपेँ आब कोवरक कनियाँक ओ रूप केतए जेकर कल्पना कवि केने छथि, मुदा गामक समाजमे अखनो कोवरमे नुकाएल कनियाँ भेटैत अछि। कोवरक कनियाँ तँ मर्यादाक अनुपालन लेल नुकाएल छथि मुदा कर्म पथपर विचरण करैबला मनुख कटि कऽ किएक रहि रहल अछि? जे किछु नै जानि रहल अर्थात् अशिक्षित मूक अनभुआरसँ सामर्थ्यशील मनुख किएक तकरार कऽ रहल छथि? अपन-अपन कर्मक संग-संग माए-बापक कर्म ओ धर्म संतानक सफलताक बाट उज्ज्वल करैत अछि। ऐठाम धर्मक भाव संप्रदाय नै अपितु मानवीय मूल्यक सम्यक् अनुपालन मानल जाए। विलगित पथपर जौं चरण राखल जाए तँ बुधि बिलेनाइ स्वाभाविक आ जखनि बुधि बिला जाएत तँ बाट कलुष अबस्स भऽ जाएत-

बाटे बिला वुइध
बाटे बिसरि गेल
जेम्हर जे चलल
तेम्हरे पहुँच गेल...।

कर्मक बीआ जौं सत्व तम ओ रज रस रससँ बोरल नै जाएत तँ 'मनोकामना' भ्रम बनि अपन सिद्धिक आशमे लुप्त अबस्स भऽ जाएत।

कोनो रचनाकार जौं स्वयं नायक बनि कविता लिखै छथि तँ कोनो अचरज नै, मुदा बेसीठाम कवि स्वयंकेँ रीति ओ प्रीतिक नायक बना कऽ कविता लिखलाहेँ ई बरोबरि मैथिली साहित्यमे देखैमे अबैत अछि। अपन आलोचना करब सबहक लेल संभव नै, ओना केतौ-केतौ हास्य रसक कवितामे कवि लोकनि अपन मजाक अबस्स उड़बै छथि मुदा एना करब कविताकेँ लोकप्रिय बनाएब मात्र मानल जाए। 'अपनेपर हँसै छी' शीर्षक

कविता मूलत: वर्त्तमान शिक्षा प्रणालीपर कविक आलोचनात्मक काव्य शैलीमे प्रहार छी। स्वयंकेँ नायक बना कऽ चोरिक डिग्रीक आधारपर 'शिक्षा मित्र'क नौकरी प्राप्त करैमे हेर-फेर देखौल गेल अछि। गाममे रहि कऽ बिहारक शैक्षणिक प्रणालीपर कटु टिप्पणी न्यायोचित। शासन तंत्र केतबो मजगूत मानल जाए मुदा जखनि बेबस्थे भ्रष्ट, तखनि इमानदारीक दाबा केनाइ भ्रामक सिद्ध होइत छै। साम्यवादी विचारधाराक अक्षरश: सम्पोषक कवि कोनो राजनैतिक दल विशेषपर टिप्पणी नै केने छथि। अर्थनीति जौं भ्रामक हुअए तँ ऐ लेल सम्पूर्ण समाजकेँ दोख देल जाए। लोक जखनि स्वयं भ्रष्ट भऽ गेल छथि तँ प्रजातंत्र वा शासन तंत्रपर दोख देब अनुचित-

लाखे रूपैयामे
दशो कट्ठा जमीन गमेलौं
गुरु दक्षिना देने बिना
गुरु भाइक भार उठेलौं...।

ओना भारतीय परिदृश्यमे बिहारक राज्य बेबस्था भलहिं स्तरीय मानल जा रहल मुदा शैक्षणिक बहालीमे योग्यतमक उत्तरजीविकामे धन बल आ कुचक्रबल बेसी भारी पड़लैक, ज्ञानक मोजर एखनों नै भेटि रहल। पाँच हजारक नौकरी लेल मूल्यवान वसुन्धराकेँ बेचि लोक लौटरी लगा रहल छथि। एकर दू गोट कुपरिणाम- पहिल कृषि कार्य जे हमरा समाजक रीढ छी तेकर महत समाप्त भऽ रहलैक आ दोसर प्रतिभाक पड़ाइन अवश्यम्भावी किएक तँ साधनहीन प्रतिभा सम्पन्न बेकती ऐ भ्रष्ट मंचपर केना आसीन होथि-

बिनु धनक धनिक जहिना
ताम-झाम देखबैए
देखि-देखि आँखि करूआए
लाजे आँखि मुनै छी
अपने पर हँसै छी...।

विचारमूलक पद्य देशकालक दशाक एक रूपेँ सत्यश: चित्रण करैत अछि। चारूकातक परिदृश्य हेहर भऽ गेलैक, ऐ दशामे सोझ बाट अकल्याणकारी लगनाइ कोनो अनुचित नै। चोटगर तीक्ष्ण वान चला कऽ भ्रष्ट लोक अपनाकेँ सत्य साबित करैमे कोनो अर्थे नै हुसैत अछि किएक तँ

धनक संग गालक जमाना एक तँ चोरि आ दोसर सीना जोरि। ऐ कटु सत्यकेँ साहित्यमे केना स्वीकार कएल जाए ई तँ भविसक गप मुदा यात्री आ आरसी जकाँ अपन लेखनीक संग जीवनमे सम्यक् साम्यवादी जगदीश जीक ई कविता समाज लेल दिशा निर्देश कऽ रहलैक। ओना ई अलग बात जे वर्त्तमान परिदृश्य फ्रांसक राज्यक्रांति जकाँ नै जखनि रूसो आ वाल्टेयरक आखर-आखरसँ समाजमे क्रांति आबि गेल छल।

आशावादी दृष्टिसँ जौं सोचल जाए तँ साहित्य समाजक दर्पण अबस्स प्रतीत हएत, मुदा प्रत्येक पाठक एकर सम्यक् तत्वकेँ जौं अपन जीवनमे उतारि लेथि तखने ई संभव मानल जा सकैत।

समाजक माने सबहक दृष्टिकोण आ आचार-विचारक सभ गोट रूप व्यापक अर्थमे मंथन कएल जाए। जगदीशजी 'धोब घाट' कविताक बाद 'धोबि घाट' कविता सेहो लिखने छथि। 'दर्शन' कोनो पोथी पढ़ि नै उत्पन्न कएल जा सकैत, ई तँ जीवनकेँ देखबाक अपन दृष्टकोण होइत अछि। उदयनाचार्य कोनो काशी आ प्रयागमे रहि 'न्याय कुसुमांजलि' सन पोथी नै लिखने रहथि। राजपूत कालक 'करियन' हुनक साहित्य सृज्नताक गह छेलनि। तँए जगदीशसँ टेम्स नदीक सभ्यताक आधुनिक बिम्बक आश केनाइ सर्वथा अनुचित हएत किएक तँ मिथिलाक खाँटी गाम 'बेरमा' हिनक साहित्य साधनाक केन्द्र बिन्दु छन्हि। दर्शनक तीन वएस होइत अछि- नीति, श्रृंगार ओ वैराग्य। सामाजिक जीवनमे रहनिहार मनुख लेल तीनूक सम्यक् काल ओ भाव होइत छै। जीवन क्रममे संतुलन बनबैले तीनू वएससँ अलग-अलग सत्व रज ओ तमो गुण टपकैत। 'सात्विक भाव' कविता सत्व गुणकेँ आधार बना कऽ लिखल गेल अछि। सात्विक भाव विरासतपर आधारित होइत छै। जैठामक भूमि सात्विक, हवा पानि सात्विक माने नैसर्गिक संस्कार सात्वकतासँ भरल होइत ओइठाम एकर प्रभाव अवश्यंभावी होइत छै। लक्ष्य, संकल्प आ दृष्ता सेहो मनुखकेँ सम्यक् शाश्वत कर्म दिस लऽ जाइत, मुदा ऐ लेल संस्कार अनुवंशिकी आदिपर बेक्तित्वक विचार निर्भर होइत। सुभाव-कुभाव आदि संगहि चलैत अछि मुदा ऐ लेल दृष्टिकोणकेँ जइ रूपसँ देखल जाए वएह रूप दृष्टिगोचर हएत। कविताक भाव दर्शनपर आधारित सरल शब्दमे

मुदा विचार बोध लेल गूढ़ अछि तँए एकरा बेसी लोकप्रिय नै मानल जाए परंच साहित्यिक विकास लेल आ जीवन-दर्शन लेल युक्तिसंगत कविता छी।

दिव्य पुरुष ओ जे सोलह कलासँ परिपूर्ण होथि। 'दिव्य शक्ति' शीर्षक पद्य सरल रूपेँ पढ़ला पछाति किछु विशेष नै देखबामे अबैत मुदा जेना कविक बेक्तित्व अर्न्तमुखी तहिना पद्यमे गूढ़ रहस्य झाँपल छै। दिव्य शक्तिसँ पूर्ण होएबा पछाति मनुजमे प्रखर ज्योतिक आवरण पनकि जाइत अछि। नीक-अधला विचार संस्कारसँ उत्पन्न होइत अछि मुदा गंगा माने पवित्रताक परिचायक संस्कृतिसँ आबद्ध जलधाराक कोखिमे सबहक लेल समान स्थान। जइ भूमिपर वसुदेव विराजथि वएह वसुधा...।

नन्द आ वसुदेवक प्रसंग तँ वर्तमान सामाजिक परिदृश्यमे 'उपहास' जकाँ भऽ गेल अछि मुदा कवि आशावादी छथि...

पाँचम कला बनि जे बीआ
मनुज मन विरजैए
डेगे-डेगे डगरि-डगरि
सोलहम कला पबैए...

जगदीश जीक जे काव्य सृजनता ओ व्यंगनाक विशेषता छन्हि ओ छी हिनक आशावादी सकारात्मक दृष्टिकोण। अपन पद्यमे केतौ कवि सामाजिक दशासँ निराश नै छथि। कालक अकालकेँ अपन पद्यमे देखबैत तँ छथि मुदा ओइसँ उदिग्न नै।

'उड़िआएल चिड़ै' कवितामे वर्त्तमान मानवक मनोवृत्ति उझलि लेखनीसँ कविताक रूपेँ उद्धृत कऽ कवि पड़ाइनवादपर तीक्ष्ण प्रहार कएलनि अछि। ऐ पड़ाइनमे मात्र अपन माटिसँ पड़ाइन नै अपितु संस्कार आ मानवीयमूल्यक पड़ाइन सेहो देखाएल गेल अछि। 'चिड़ै'क उदाहरण मात्र कविक छायावादी दृष्टिकोण छन्हि, कचोट तँ संस्कृतिक पराभवकेँ मानल जाए। जे चिड़ै अपन डीहो-डाबरकेँ बिसरि स्वार्थ आ कृत्रिमताक लहरिमे जेतए घोघ भरतै ओत्तै रास करत ओइ चिड़ैक मधुर स्वरसँ मूल समाजकेँ कोन काज-

ओहन स्मृति स्मृते की
जे मने मन घुरिआइत रहैत
पसरि नै पबैत जे कहियो

तरे-तर खिआइत रहैत...।
कविसँ बेसी समाज लेल विडंबना जे बाटसँ भटकल बाटोही अपन मूल बाटपर श्रद्धा तँ व्यक्त करैत अछि, मुदा जइ पथमे पहिल बेर उदयायल आदिलिक दर्शन होइत अछि ओइ पथपर फेर धुरब पथ भ्रष्ट लेल असंभव जकाँ लगैत अछि। अपन मूल संस्कारक पराभव करब उचित नै मात्र स्मृतिसँ मूल माटिमे मातृत्व केना उत्पन्न हएत। तँए 'पड़ाइन' कोनो रूपेँ उचित नै।

मिथिलाक माटि-पानिसँ फलैत-फूलैत हिन्दीक चर्चित उपन्यासकार फनीश्वर नाथ रेणु आंचलिक बनि गेलनि। जौं मैथिलीक गप करी तँ कथाकार तँ कथा जगतमे ललित, राजकमल, धूमकेतु, कुमार पवन आ कमला चौधरी सन प्रांजल आंचलिक कथाकार भेल छथि मुदा आंचलिक काव्य जगतमे समग्र सामाजिक दैनन्दिनीककेँ छूबैत कविमे यात्री (चित्रा) ओ आरसी प्रसाद सिंह (सूर्यमुखी)क पश्चात् जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ मानल जाए। 'सान-धार-धारा' कविता कोनो कैंचीक शानपर आधारित काव्य बून नहि ई तँ मानवीय मूल्य ओ संवेदनाक शानपर आधारित पद्य अछि-

जे धारा सिरजए गंगा
कमला कोसी ओ महानन्दा
ओ धार कहिया धरि ठमकि
मानैत रहत फंदा?

गंगा, कमला आ कोसीक किछेरमे बसल गाम सभ मिथिलाक परिधिक भीतर अबैत ऐ तरहक उल्लेख तँ बहुत रास कवितामे भेटैत अछि, मुदा ऐठाम 'महानन्दा'क चर्च कऽ कवि पुबरिया बिहारक क्षेत्र किशनगंजसँ आगाँ धरिक लोककेँ आश्वस्त कऽ देलनि जे अहूँ मैथिले थिकौं? मात्र पद्यमे लयात्मकता भरैले एना नै कएल गेल। कवि मोन भावुक होइ छै, भावमे बहनाइ कविक प्रवृत्ति मुदा मिथिलाक संस्कारसँ भरल रहला पछातिओ ई क्षेत्र साहित्यमे अपच जकाँ छल, तँए कविक भावनाकेँ सम्मान करबाक चाही।
'जहाँ न जाए रवि वहाँ जाए कवि'- ई वाक्य जे कियो लिखने होथि मुदा ई सर्वथा विचारमूलक अछि। ऐ संग्रहक किछु पद्य जेना पपीहाक गीत, विखधरक बीख, नंगरकट घोड़ा आदि पढ़लासँ स्पष्टत: बुझना गेल जे

छायावादी दृष्टिकोण रचनाकारकेँ छोड़ि सबहक लेल पूर्णत: बुझबामे नै अबैत छै। 'कोइली' शीर्षक कवितामे कवि चन्द्रभानु सिंह 'मैथिली'क सरसताकेँ स्पष्ट रूपेँ पाठक वा श्रोता लग परसि देने छथि मुदा पपीहा गीत शीर्षक पद्य कोनो चिड़ै-चुन्मुन्नीक स्वरपर आधारित संस्कृति गीत नै ई तँ सम्पूर्ण दर्शन छी- जीवन-मरणक दर्शन। धरती अकाश, जल-थल कानि-अकानि सन सहचाी विपरीतार्थक जीवन दर्शन...

काव्यक व्याख्या बड़ कठिन होइत, तँए गजेन्द्र ठाकुर जीक ऐ मतसँ सहमति छी जे कविता कम लोक पढ़ै छथि। चलन्त गीत-नादकेँ जौं छोड़ि देल जाए तँ प्राय: साहित्यिक काव्यमे केतौ-ने-केतौ कवि स्वयं जीवित रहै छथि। किछु विशेष बिम्बकेँ स्पर्श करैबला कविता सभमे सेहो छायावादिताक आवरण लागल रहैत अछि। ऐ ओहारक मध्य बिन्दु दर बिन्दु प्रवेश करब किनको लेल दुष्कर, तँए कविताक वास्तविक दृष्टकोणकेँ कवि-छोड़ि कियो नै बूझि सकैत छै।

''सरस्वती वंदना'' कोनो देवोपराध क्षमा मंत्र नै, आ ने पारम्परिक सनातन संस्कृतिक अवलम्बकेँ स्पर्श करैत भक्तिगीत। ऐ वन्दनामे समाजक असंतुलित दशाकेँ समाप्त करैले बुधिक देवीकसँ याचना कएल गेल अछि। किछु विशेष दिवसकेँ देवोपासना लेल चयन आ तात्कालिक आस्था कोनो भक्तिक श्रद्धा नै, एकरा कवि आडंवर मानने छथि। साम्यवादमे आस्तिकता विशेष पंथसँ सम्बन्ध नै रखैत अछि। कर्म प्रधान विवेचन कविक कोनो कविता मात्रमे नै ई अर्न्तआत्माक ज्वार छी। मात्र एक दिन बर्ख भरिमे बुधिक आवरहन आ शेष दिवस-रातिमे कुमार्गपर चलैत रहबामे संस्कारक पराभव अवश्यम्भावी हएत। तँए सरस्वतीसँ प्रतिक्षण आ प्रतिपल संग रहबाक प्रार्थना कएल गेल अछि। कर्म आ ज्ञानक सराबोरि जौं नै हएत तँ सिनेहसँ सिनेह स्पर्श नै कऽ सकैत। जेना महाकवि विद्यापति ''अपन करम फल हम उपभोगव तोहि किए तेजह पराने सखि हे मन जनि करुऊ मलाने...।'' लिखि कर्म फलक मूल्यांकनमे कर्त्ताक कर्त्तव्यकेँ आधार बनेने छथि। जगदीश सेहो कहै छथि-

''जे हूसल से हम्मर हूसल
तइले किए छी कलहन्त

सभ जागैए सभ सूतैए
एक दिन हेतै सबहक अंत...।''

ऐमे याचक भगवती सरस्वतीसँ किछु विशेष नै मँगैत अछि मात्र सत्कर्मक बाटपर चलबाक दिशा निर्देशक आश रखैत अछि। जौं ऐमे ओ हूसि जाएत तँ भगवानक संग-संग आन केकरो दोख नै।

कामना तँ सभ करैत अछि मुदा ओकरा कर्मक पतवारिसँ जौं नित्य आगाँ नै बढ़ाएल जाए तँ प्रतिस्पर्द्धाक युगमे पाछाँ रहब प्रासंगिक अछि। सबहक आगाँ आ पाछाँक बाट सुत्र नै, सभ ठाम जीव अपन अस्तित्वक रक्षार्थ निरंतर लागल छथि ऐमे विजयश्री ओकरे भेटत जेकर चंचल मन रुढ़ रहत आ भीड़-भार देखि उजगुजाएत नै-

''टुटिते लाट धरासँ
भीड़े-भीड़ बनैत रहैत
एक्के-दुइए भीड़ टपैमे
भीड़ेमे भरमति रहैत...।''

कर्त्तव्यनिष्ठ बेकतीकेँ हंस जकाँ दुग्ध आ नीरमे विभेद करबाक प्रयोजन किएक तँ हरि-हरी सन सहचरी कखनो नारायण कखनो बेग तँ कखनो साँप सेहो भऽ सकैत अछि।

ऐ प्रकारक काव्य सामान्य बहुत आकर्षक आ सुस्वादु नै भऽ सकैत मुदा निष्क्रिय जीवन भेलापर अलात अनिवार्य। जेना भूमिगत जल पीबाक योग्य होइत अछि मुदा आसुतजाल कंठसँ पीअल नै जा सकैत किएक तँ ओ सीरम छी। वएह सीरम नाद आ स्नायुमे नाद आ स्नायुमे निर्जलीकरणक स्थितिमे सोडियम आ क्लोरीन मिला कऽ नस द्वारा सूई भोंकि शरीरमे चटौल जाइत। तँए जगदीश जीक कविता हास्य आ प्रीतिक मंचसँ थपरी बजैबला लेल भलहिं उपयोगी नै होन्हि मुदा ऐमे छुच्छ तत्व भरल छै तँए मृतक समान भऽ रहल समाज लेल एकरा सीरम अवस्था मानल जाए।

ऋृतु वर्णन बहुत रास कवितामे भेटैत अछि मुदा ''अगहन'' कविताक माध्यमसँ कविक ऋृतुक विवेचन अत्यन्त विलक्षण छन्हि। ''समय पाठ तरूवर फले, केतक सींचो नीर'' जकाँ कवि अगहन केर आ वाहनमे किसान जकाँ उताहुल नै छथि। जखनि धान लबालब शीशसँ धराकेँ स्पर्श करए

लगैत अछि, तँ किसान मजूरक धैर्यक बान्ह टुटब स्वाभाविक। मुदा कवि धैर्य धरैले आगाह करै छथि-

''तीन दिन, आठ अगहन बाँकी
धड़फड़ बेसी नै अगुताउ
धीरजसँ सभ किछु होइ छै
तैबीच घरक काज सरिआऊ...।''

स्वाभाविक छै कृषि प्रधान देशमे किसान मजदूरक जीविकाक साधन कोनो सभ मासक विशेष तारिखकेँ नौकरिहारा जकाँ धनसँ कऽ नै अबैत। बर्ख भरिक मेहमति आ पसीनाक गंगा जखनि बान्ह तोड़ैले उफान तोड़ि रहल तँ कविक निर्देश जे घरक आन काज सभ सरिया कऽ पहिने खरिहान बनाएल जाए एकटा यथार्थ प्रयोगवाद मानल जा सकैत। रातुक नाच देखैले दर्शक लोकनि गाम-गाममे सपरिवार जाइ छला मुदा ओ कृत्रिमतासँ भरल, किएक तँ भोर होइते जखनि कलाकारक रूप बदलि जाइ छै तँ दर्शकक कोन ठेकान ओतए ठका गेल। मुदा चौकीपर धम्म धम्म जखनि चानक बोझ पड़ि चष्टाएल बहार भऽ जाइत किसानक नाच कर्मफल बनि कोठीमे भरि जाइत अछि। ई चौकी स्टेज नै ऐठाम मान सम्मानक माने आजीविकाक फल आ अर्थक आवाहन। अहू कर्ममे लोक सभ परानी हाँसू लऽ कऽ खेत दिस जाइत अछि मुदा अन्नपूर्णाक संग अपन घर घुरैत अछि। बनाबटी नाचमे टका अर्थात् अन्नपूर्णाक संग जाइत तँ अछि मुदा घुरबाक काल खाली हाथ अपन आँगन आ बथान वापस अबैत अछि।

मनोरंजन तखने नीक जखनि कर्मक गति प्रखर हुअए कविक ऐ शिक्षामे समाजक वास्तविक रूप-रेखा दृष्टि पटलपर उभरि कऽ समक्ष आबि गेल। ऐ प्रकारक संदेश ॠतु वर्णनक माध्यमसँ मैथिली साहित्यमे संभवत: पहिने नै भेटल हएत। ग्राम्य जीवनक वृत्ति चित्रक निर्देशक वएह भऽ सकैत अछि जे गामक संस्कार आ बेवस्थाकेँ आत्मसात कऽ नेने हुअए।

जीवन तीनू मौलिक गुण सत्व रज ओ तमक दार्शनिक अवलोकन मैथिली गद्य साहित्यमे ''खट्टर ककाक तरंग'' रूपेँ प्रो. हरिमोहन झा केने छथि, मुदा गंभीर चिन्तनकेँ हास्यक बिहाड़िमे उधिया देलासँ एकर प्रासंगिकता ओइठाम निष्क्रिय भऽ गेल। ऐ कमीकेँ जगदीशजी ''तरंग'' कवितामे पूर्ण कऽ

देलनि। तरंग कोनो जल तरंग नै जीवन क्रियाशीलता ओ शैलीक तरंग छी। एकटा कहबी छै जेहने छलिअ हौ कुटुम तेहने भेटलऽ हौ कुटुम- वास्तवमे जीवन क्रीड़ाक मैदानमे जेहेन दृष्टिकोण रहत ओहने खेलबाक खेलौना भेटत।

आइ धरिक मैथिली काव्य जगतमे जे कमी खलैत अछि ओ छी रचनाकारक जीवनशैली ओ रचनाक तारतम्यक अभाव। संभवत: जगदीश जीक कविता पढ़ि पाठक कविक दृष्टिकोणपर प्रश्नचिन्ह नै ठाढ़ कऽ सकै छथि। शैक्षणिक पाठ्यक्रममे कोनो चर्चित बेकती जीवन परिचए मात्र सकारात्मक दृष्टकोणकेँ पनकबैत देल जाइत अछि। प्राथमिक आ माध्यमिक शिक्षामे समालोचना छात्र नै कऽ सकैत अछि, ओइमे मर्यादाक बान्हकेँ नांघब संभव नै। मैथिली साहित्यमे संभवत: अहिना होइत रहल अछि। बेक्तिगत वा किछु खास वर्गकेँ महिमामंडित करबाक क्रममे अधिकांश साहित्यकार समाजक वास्तविक वृतिचित्रकेँ झाँपि देबाक प्रयास करै छथिन। ऐ दुर्भाग्यसँ साहित्य कलंकित तँ होइत रहल मुदा किनको एकर क्षोभ नै। सभ शब्द समंजन आ आत्म संतुष्टिमे लागल छथि किएक तँ आत्म संदृष्टिक रूप विचित्र भऽ गेल छै।

जगदीश जीक काव्यमे ई सभ नै भेटत किएक तँ हिनक दृष्टिकोण साफ छन्हि ई सामाजिक विडंबना आ विषमताकेँ झाँपि कऽ नै राखए चाहै छथि। आब निर्भर करै छै जे समाज हिनक दृष्टिकोणकेँ केतए धरि मोजर देतनि-

सत बनि कखनो राज विराजए
रज बनि-बनि शासन करए
धरिते धारण तम तम-तमा
झहरि-झहरि फुनगीसँ गिरए...।

ऐ पद्यांशमे गिरए केर स्थानपर खसए रहबाक चाही मुदा गिरए वा खसए जे लिखल जाए ई तँ अक्षरश: सत्य अछि समाजक परिदृश्यमे अधोगति शिखरकेँ छूबि लेलक। ''बान्हसँ खाधि ऊँच'' अनिश्चयवाचक लोकोक्ति छल मुदा मिथिलाक समाजमे आब ई निश्चियवाचक भऽ गेल। अंग्रेजीमे कहबी छै ''Nature and signature remains constant'' मुदा मिथिला क्षेत्र एकर अपवाद थिक। मंचीय भाषणमे जीवन शैलीक उद्बोधन केतबो साफ रहए मुदा वास्तविक रूप किछु आर भेटैत अछि।

विवादित पृष्ठभूमिसँ जगदीशजी केतबो दूर होथि मुदा साहित्यकार कुकर्मीक हाथसँ फेकल अक्षतकेँ मॉथसँ लगा कऽ सम्यक् जीवनक केतबो उद्बोधन करए परंच जखनि लेखनी उठाएत तँ सत्य अबस्स परिलक्षित भऽ जाएत। ''नंगरकट घोड़ा'' एकर प्रत्यक्ष प्रमाण मानल जाए। कवि समाजसँ मात्र सिनेह चाहैत अछि। कोनो आत्मिक कवि स्वार्थी नै आ ने ओकरा समाजसँ पिरही वा सम्मानक आश... ओ तँ मात्र चाहैत अछि जे विद्वतमंडली ओकर रचनाकेँ जन-जन धरि पहुँचा कऽ ओकर दृष्टिकोणकेँ परिलक्षित करथि। जेकर अभाव मैथिली साहित्यक वास्तविक रूपकेँ पाठक धरि पहुँचबा रहल अछि। अर्थात् ऐ साहित्यमे पारदर्शीकेँ कहए पारभासक समालोचक सेहो अखनि धरि नै आएल छथि।

''गीत-१'' द्वारा कवि एकटा निर्भीक समालोचकसँ मैथिली साहित्यक रक्षाक आश रखै छथि ई संभव हएत वा नै ई तँ भविसक विषए छी मुदा जगदीशजी इंद्रधनुषी अकासक द्वारा की देलनि ऐपर मंथन केलासँ उत्तर आधुनिक मैथिली काव्य जगतकेँ अबस्स स्वस्थ चिन्तन भेटत।



२७.

कृष्णजन्म :: कथाकाव्यक सूत्रपात

मैथिली साहित्यमे महाकाव्यक पहिलुक छाँह रतिपति भगतक ''गीत-गोविन्द''सँ सन १७२३ई.क लगिचमे देखैमे आएल। जइ छाहरिकेँ स्पष्ट बिम्बक रूप मनबोध द्वारा १८म शताब्दीक मध्यमे ''कृष्ण जन्म'' स्वरूपे देल गेल। मनबोध मध्यकालीन मैथिलीक विशिष्ट रचनाकार मानल जाइ छथि।

जौं पदावलीकेँ छोड़ि देल जाए तँ ज्योतिरीश्वर आ विद्यापतिक अधिकांश रचना तत्समसँ लीपित छल। मनबोधक प्रवेश मैथिली काव्य जगतमे अत्यन्त महतपूर्ण किएक तँ ''कृष्णजन्म'' तत्सम परम्पराकेँ तोड़लक मात्र नै संग-संग चन्दा झा रचित मिथिला भाया रामायणसँ आधारशीला सेहो प्रदान कएलक। डॉ. ग्रियर्सनक मते कृष्णजन्म महाकवि विद्यापति आ आधुनिक मैथिलीक हर्षनाथ झा आर तत्कालीन अन्य महाकाव्यक योजक कड़ी छी। ई निर्विवाद सत्य जे कृष्णजन्मक भाषा ओ शैली संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश ओ अवहट्ठसँ विलग जनभाषामे रचत पहिलुक काव्य छी। रतिपति भगतक गीत-गोविन्दक विपरीत कृष्णजन्मक व्यापक प्रचार-प्रसार भेल किएक तँ केतौ भाषामे क्लिष्टता नै। तँए प्राय: सभ समालोचक एक मतेँ स्वीकार करै छथि जे तुलसीकृत रामचरित मानस जकाँ ''कृष्णजन्म'' मैथिली साहित्यकेँ प्रबंध काव्यक पहिलुक सबल स्तंभ प्रदान कएलक। विद्यापतिक रचना रीतिकाव्यात्मक मुदा मनबोध ऐ परम्पराकेँ तोड़ि जे नवल बिम्ब ओ शैलीक सृजन केलनि ओइसँ चन्दा झा अबस्स प्रेरित छथि।

सुभाषचन्द्र यादव लिखै छथि ''मनबोध'' कथाकाव्यक परम्पराक आरम्भ केलनि। श्रृंगारिक काव्य परम्पराकेँ विराम दऽ कऽ ओ वात्सल्य भावसँ युक्त रचनामे विशेष रूचि देखैलनि। मनबोध विषए आ शिल्प दुनू स्तरपर परम्पराक अतिक्रमण करै छथि। विषएक स्तरपर कृष्णक नेनपन आ पराक्रम हुनका आकृष्ट करै छन्हि तँ शिल्पक स्तरपर चौपाइ। लोक भाषासँ सम्पृक्ति सन विद्यापतिक परम्पराकेँ मनबोध अखुण्ण बनौने रखै छथि।

दुर्गानाथ झा श्रीशक शब्दमे ''अठारहम शताब्दीक अंतिम चरणमे मनबोध अबस्स कृष्णजन्मक रचना केलनि ओ अद्भुत लोक भाषात्मक प्रवाह

ओ विलक्षण संक्षिप्त मुदा सजीव वर्णनक दृष्टिसँ लोकप्रिय सेहो भेल। परन्च कृष्णजन्मसँ प्रबंधकाव्यक विकास परम्परा स्थापित नै भेल। ई स्थापित भेल कवीश्वर चन्दा झाक मिथिला भाषा रामायण एवं लालदासक रमेश्वर चरित रामायणसँ। ‘‘कृष्णजन्म झुझुआन काव्य तँए महाकाव्य वा प्रबंध काव्यक श्री गणेश श्रीष एकरा नै मानै छथि संग-संग महाकाव्यीय परम्पराक सर्ग विभाजन ऐमे नै भऽ कऽ अध्यायमे बिभक्त अछि। एकर एकटा आर निर्वल पक्ष जे अठारह अध्यायमे विभक्त ऐ कृतिक पहिल दस अध्याय मात्र मौलिक आ खाँटी मैथिलीमे रचित अछि। अन्य आठ अध्याय जनभाषा ओ रचनाक दृष्टिएँ विवादित तँए श्रीश जीक मत अंशत: सत्य मानल जाए मुदा महाकाव्यीय मरम्पराक पहिलुक अनुपालन कृष्णजन्ममे भेल तेकर प्रणाण एकर पहिल अध्यायक उल्लेखमे तँ मंगलाचनण नै छी मुदा आर्यभाषाक महाकाव्यक मूल बिन्दु मंगलाचरणक छाँह ऐठाम अबस्स भेटैत अछि-

प्रणमो गिरिवर कूमारि-चरण
जे वल कवि सभ त्रिभुवन वरन
हमहू कएल अछि मन मड़ गोट
कृष्णजन्म परिणय नै छोट
कोनपर होएत तेकर निरवाह
एखन लगै अछि अगम अथाह...

मनबोध सोलह कलासँ निपुण कृष्णकेँ ऐमे कोनो अभिसार पथपर बिहुँसैत राधाक सिनेही नै बनौने छथि।

मनबोधक कृष्ण वास्तममे नायक छथि।

‘धर्म संस्थापनार्थाय सम्भामि युगे-युगे’क हुंकार भरैबला कृष्णक मात्र जनम कथा नै, मात्र प्रीति गाथा नै हुनक समग्र जीवन दर्शनक अभिप्राय छी ‘कृष्णजन्म’ भागवत ओ हरिवंश पुराणक कथापर आधारित ‘कृष्णजन्म‘क नायक कृष्ण राम जकाँ गंभीर, लक्ष्मण जकाँ मर्यादित सिनेही, स्वंय कृष्ण जकाँ वात्सल्य भावसँ भरल शिशु आ नरसिंह जकाँ आक्रोशित दुष्ट नाशक छथि। ऐमे पहिलुक क्रांति जे कृष्ण जीवन वृतांतक धार श्रृंगारसँ कर्त्तव्यवोध धरि चलि आएल। बाल मनोविज्ञानक विश्लेशणक दृष्टिएँ कृष्णजन्म पहिलुक वास्तविक वाल्य शैलीसँ भल महाकाव्य छी-

गुड़कल-गुड़कल भिड़ुकल जाए
जतय अछल दुइ विर्छ अकाय
जमला अर्जुन कनला-नाथ
जुगुति उपारल छुइल न हाथ
खसल महातरू हँसल मुरारि
भेल अघात जगतपर चारि...।

डॉ. चेतकर झाक शब्दमे वस्तुत: ई पौराणिक महाकाव्य मात्र छी आकि महाकाव्य ई अखनि चरि विद्वत समाजमे विवादक विषए बनल अछि। विवादक विषए ईहो अछि जे अठारह अध्यायमे विभक्त'' कृष्णजन्म'' सम्पूर्ण रूपेँ मौलिक अछि आकि मात्र दस अध्याय धरि।

समालोचकक मन्तव्य जे होन्हि मुदा ई अक्षरश: सत्य जे कृष्णजन्मक रीति नीति आधार-विचार, खान-पान, बात-विचारक संग-संग बेवहार मिथिलाकसँ प्रभावित अछि। लगैत जेना कृष्णक कथा गोकुलक कथा नै मिथिलाक कोनो भूभागक कथा छी। गाम भरि हकार, चुमौन, तेल-सेनूर, नाच-गान, भदवा, सोहर, वटगवनी, झटहा आ ठेंपा फेंकब, टेलवा टेलइक खेल खेलाएब सन खाँटी मैथिल परम्परा ऐ काव्यकेँ मिथिला धरापर जीवन्त कऽ देलक।

म. म. डॉ. उमेश मिश्रक अनुसार ई कथा दशम अध्याय धरि श्रीमद्भागवतक दशम स्कंधक पूर्वाधक आधारपर लिखल गेल अछि, एगारहमक अध्यायसँ अन्त धरि हरिवंश विष्णुपर्वक आधारपर लिखल गेल अछि।

प्रो. रमानाथ झाक कहब छन्हि-

''मनबोध पहिल कवि छला जे अपन कृष्णजन्ममे श्रृंगार रससँ शून्य भक्ति रसमय एकछन्द मे जे राग ताल प्रभृति गीतक विषएसँ रहित अछि अपन एक गोट नूतन शैलीमे काव्यक रचना केलनि। ई छन्द आब चौपाइ कहल जाइत अछि परन्तु ताहि दिन ई गाहिक मेर बूझल जाइ छल।''

राग-लय, गति, यति ओ नियतिक रचनात्मक मर्यादा जे हुअए अपितु ई अक्षरश: सत्य जे कृष्ण जन्मक महाकाव्यीय सृजनतामे वएह मौलिक स्थान

जे स्थान संस्कृत साहित्यमे वेदव्यास ओ वाल्मीकिक अछि। अर्थात् वेद व्यास ओ वाल्मीकि हदृश मनबोध मैथिली महाकाव्यक शलाका पुरुष छथि।

सुमन जीक शब्दमे प्रकृति वर्णन, भने ओ जड़ प्रकृति होअ अथवा मानव प्रकृति मनबोधक रचनामे सहज, सुबोध एवं हृदयावर्जक बनल अछि। संज्ञा, क्रिया विशेषण, नामधातु ओ अनुध्वनिक विलक्षण प्रयोग ऐमे भेटैत अछि।

मैथिली काव्यमे गीत-शिल्पक जे परम्परा छल तेकरा लागि स्वतंत्र कथा-काव्यक पहिल प्रयोग ''कृष्णजन्म''मे भेल। बाल साहित्यक दृष्टिसँ जौं देखल जाए तँ प्रयोगकँवादक धरातलपर आनि महाकाव्यक रूप रेखामे बाल मनोविज्ञानकेँ पूर्णत: स्पर्श मनबोधसँ पूर्ब कियो नै कऽ सकला। शब्द-शब्दमे प्रवाह हास्य स्पर्शी ओ सजीव अछि। तँए दशम अध्याय धरि उत्तर आधुनिक काव्य लेल सेहो अनुगामी तँ रचनाकालमे एकर महत की हएत ई मंथनक विषए छी।

तँए ई सत्य मानल जाए जे मात्र एक छन्दमे लिखल समस्त महाकाव्यक शैलीक ई मैथिलीक प्रयोग ग्रंथ छी जे भाषा विन्यासक संग-संग बिम्बक मौलिक स्पर्श आ बाल साहित्य लेल अखनि धरि उपयोगी अछि।



२८

मिथिलाक लोक देवता

कोनो साहित्यक समृद्धिक आधार महाकाव्य, प्रबन्ध काव्य, उपन्यास वा कथाक उत्तर आधुनिक विवेचनकेँ मानल जाइत अछि। ऐ दिशामे मैथिली अखनि बड़ पाछू अछि किएक तँ समग्र साहित्य विधाक परम्परागत रूपसँ ई भाषा बाझल मानल जा सकैत। साहित्यक विकास तखने संभव जखनि भाषाक दीर्घकालीन संभावना परिलक्षित हएत। पुरना खाढ़ी झखड़ि रहल छथि आ नवका पीढ़ीमे शिक्षाक माध्यम अंग्रेजी तखनि मैथिलीक अस्तित्वपर अपने आप प्रश्न चिन्ह लागब दर्शनीय। गाम-घरक नेना-भुटकाकेँ जौं छोड़ि देल जाए तँ मैथिल परिवारक शैशवक मातृभाषा निश्चित रूपेँ बदलि रहल अछि।

प्रारंभिक शिक्षाक माध्य अंग्रेजी आ हिन्दी छी। ऐ दशामे साहित्यसँ बेसी आवश्यक अछि भाषाकेँ बँचाएब। मैथिली तखने अपन अस्तित्वकेँ दृढ़ रूपेँ रखि सकती जखनि नवका पीढ़ीमे मातृ आ वात्सल्य सिनेहक वेदना हुअए। ऐ लेल आवश्यक अछि बाल मनोविज्ञानकेँ स्पर्श करैबला बाल साहित्यक प्रोत्साहन।

ऐ दिशामे कहैले तँ बहुत रास कार्य भेल अछि परंच वास्तविक बाल साहित्यमे आधुनिक पीढ़ीक रचनाकारक समूहमे अग्रगन्या छथि श्रीमति प्रीति ठाकुर। हिनक तेसर पोथी 'मिथिलाक लोक देवता' श्रुति प्रकाशनक सौजन्यसँ २०१० ई.मे बहार भेल।

टी.एस. इलियटक Tradition and the individual talent (सन १९४७) क अनुसार कोनो कवि, कथाकार वा कलाकार स्वयंमे पूर्ण अर्थ नै स्पष्ट करै छथि। हुनक कलाक तुलना मृत कवि वा कलाकारक रचनासँ केलाक बादे हुनक मूल्यांकन कएल जा सकैत। जौं ऐ मतकेँ प्रासंगिक मानल जाए तैयो प्रीतिजी अतुलनीय छथि किएक तँ हिनकासँ पूर्ब ऐ प्रकारक चित्रात्मक आ लयात्मक शैलीमे बाल गद्य पहिने मैथिलीमे लिखल नै गेल। ई अक्षरश: सत्यो छी किएक तँ आदि पुरुषक माथपर पाग रखबाक साहस कियो नै कऽ सकल। संगहि ऐ तथ्यकेँ जानब सेहो आवश्यक जे अन्य भाषा समूहसँ तुलना पछाति प्रीतिजी केतए छथि?

'सामा चकेबा' परम्परागत जनश्रुति आ पौराणिक कथाक आधारपर मिथिलाक गाम-गाममे प्रचलित कार्तिक पूर्णमासीक पावनि छी। ऐ कथाकेँ ऐ पोथीमे सम्मिलित कऽ प्रीतिजी कोनो नव रचनात्मक कार्य नै केलनि परंच अनचोकेमे नवका पीढ़ीकेँ अपन संस्कृतिसँ अबस्स अवगत करा देलखिन। अनचोके शब्दक प्रयोग ऐ दुआरे कएलौं किएक तँ बहुत रास गामसँ ई पावनि लुप्त भऽ रहल अछि, शहरमे तँ एकर अस्तित्वक कल्पना करब सेहो असंभव। आन ठाम जकाँ मिथिलामे सेहो पड़ाइनवाद हाबी भऽ गेल छै। कोनो आवश्यक नै जे पड़ाइन पछाति लोक अपन संस्कृतिकेँ दड़भंगिया प्रभावमे झाँपि कऽ रखि सकथि। तँए एहेन पावनिक चर्च आधुनिक पीढ़ी लग आवश्यक। जखनि चर्च हएत तँ भऽ सकैत जे प्रवासी नेनामे ऐ प्रकारक संस्कृतिसँ जुड़ल रहबाक प्रेरणा जागए। मधुश्रावणी वा कोजगराक सदृश सामा चकेबा कोनो जाति विशेषक पावनि नै छी वरन् ई सम्पूर्ण मिथिलाक प्रतिनिधित्व केने अछि।

साहित्यानुरागी लोकनि ऐ पोथीकेँ रचनात्मक कथा (creative story) नै मानता ई ध्रुव सत्य, किएक तँ एकर कथा सभ नूतन कल्पना नै भऽ कऽ परम्परागत शैली आ कथाक प्रतिरूप छी। ऐ दुआरे रचनाकारक आलोचना सेहो संभव अछि। मुदा ई धियान राखब सेहो आवश्यक जे अबोध नेनाकेँ क्लिष्ट साहित्यसँ कोनो सिनेह नै होइत। ओ तँ महाकाव्यक पाँतिसँ बेसी 'आनी-मूनी हम नै जानी' सदृश अर्थहीन पाँतिसँ सिनेह रखैत अछि। तँए चालनि बाढ़नि डेढ़ बितना, जेहन करनी, चारि बटोही, बगियाक गाछ आदि जनश्रुतिसँ सम्बन्धित कथानककेँ बाल मनोविज्ञानसँ सम्बन्धित माननाइ उचित हएत। लेखिका पहिनहि ईमानदारीसँ ई स्वीकार केने छथि जे बाल कालमे बूढ़-पुरानक मुखसँ जे सुनने छेली तेकरा अपन शब्दमे कथाक रूप दऽ देलखिन।

ऐ पोथीक सबल पक्ष अछि कथाक चित्रात्मक विवेचन। मोती साएर, लालबन बाबा, गरीबन बाबा, बिहुला, सीता आ सुग्गा, अयाची मिश्र, पक्षधर मिश्र आ उगना सन कथा चित्रकेँ तैयार करैमे केतेक मेहनति आ समए लगल हेतनि ओ तँ लेखिके कहि सकै छथि। परंच ई चित्र अपन विविध मूक शैलीमे नेना-भुटकाक संग अबस्स वार्तालाप करत। आलोचनात्मक पक्षसँ

जौं देखल जाए तँ एकरा आन भाषा साहित्यक चित्रकथासँ बेसी नै मानल जाएत, मुदा एहेन दीर्घसूत्री आलोचके कऽ सकै छथि। किएक तँ ई कोनो कम्प्यूटरक खेल नै अपन मस्तिष्कमे उपजल बालउद्बोधनक चित्रात्मक शैली छी जे समालोचनाक भयसँ मुक्त रहैत लेखिका मात्र नेना लेल केने छथि।

रंग समंजन सेहो नीक लागल। अंतिम किछु चित्र श्वेत-श्याम रूपेँ देल गेल जइमे नेना स्वयं रंगरोगन कऽ सकै छथि।

ऐ पोथीक कथानक परम्परागत अछि मुदा शैली आ चित्रांकन नव तँए अपन उदेसमे रचनाकार सफल छथि।

दुर्बल पक्ष जे चित्रक संग जे किछु कथा देल गेल अछि ओकरा आर विस्तृत कएल जा सकै छल। जेना मोती साएरसँ लऽ कऽ मीरा साहैब धरिक चित्रकथामे कथानक एकाएक बदलि जाइत अछि। जे सारंश जकाँ लागल, मुदा आशा करै छी जे नेना सभकेँ नीक लागि रहल हेतनि।

(ई पोथी पी.डी.एफ. डाउनलोड लेल लिंक
http://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi
पर सेहो उपलब्ध अछि।)

❍❍❍

२९

कथा किरणमे यथार्थवोध ओ नारी विमर्श

मैथिली साहित्यमे समग्र विधाक रचनाक आधारपर डॉ. ब्रज-किशोर वर्मा मणिपद्मकेँ पहिल सम्पूर्ण साहित्यकार मानल जाइत अछि। मुदा जौं जनम क्रमांकक आधारपर निर्णए कएल जाए तँ कॉचीनाथ झा 'किरण' पहिल सम्पूर्ण साहित्यकार छथि। मणिपद्म जकाँ किरणजी सेहो साहित्यक समग्र विधा उपन्यास, वालकथा, एकांकी, नाटक, कविता संग्रह, महाकाव्य, निबंध संग्रह आ कथा संग्रहक रचना केलनि। पराशर महाकाव्य लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कार आ 'कथा किरण' कथा संग्रह लेल वैदेही सम्मानसँ सम्मानित कएल गेलनि।

मूलत: काव्यात्मक प्रवृति ओ अभिरूचि राखएबला ऐ साहित्यकारक पहिल कथा संग्रह 'कथा किरण' सन् १९८८ई.मे भाखा प्रकाशन द्वारा प्रकाशित भेल। सन् १९८९ई.मे किरण जीक देहावसान भऽ गेलनि। सन् १९९१-९२ ई.मे बिहार सरकार द्वारा मैथिलीकेँ बिहार लोक सेवा आयोगसँ निकालि देल गेल। जइसँ ऐ भाषाक वाचक ओ पाठक लोकनिक मध्य अस्तित्व डगमगाए लगल। फलस्वरूप महाविद्यालय स्तरपर मैथिली पढ़एबला छात्रक कमी भऽ गेल। जेकर परिणाम ई भेल जे ऐ अवधिक किछु आगाँ-पाछाँ प्रकाशित रचनाक ओ महत नै भेटल जेकर ओ अधिकारी छल।

'कथा किरण' सम्बन्धत: ऐ अन्तर्द्वन्द्वक सभसँ बेसी शिकार भेल। किएक तँ हिनक ऐ संग्रहसँ पहिने प्रकाशित किछु रचनाकेँ छोड़ि समाजक विभिन्न ऊँच-नीच, सिनेह-द्वेष आ समन्वयवादकेँ स्पर्श करैबला कथा साहित्य मैथिलीमे नै लिखल गेल छल। जौं किछु कथाकार ऐ परिधिसँ ऊपर उठबाक प्रयासमे सफल भेलथि तँ मात्र किछुए कथामे। सम्पूर्ण समाजक जर्जर बेवस्था दिस किनको नजरि पड़बो केलनि तँ केतौ-केतौ। सम्पूर्ण कथा संग्रहमे मानवीय मूल्यक अवलोकन कथा किरणसँ पहिने हरिमोहन झाक चर्चरी, मनमोहन झाक अश्रुकण, ललितक प्रतिनिधि, रामदेव झाक एक खीरा तीन फाँक, रमानन्द रेणुक कचोट, रमेश नारायणक पाथरक नाव, धूमकेतुक अगुरवान, शेफालिका वर्माक अर्थयुग आदिमे भेटैत अछि परंच ऐ सभ कथा

संग्रहक सभटा कथाकेँ ऐ दृष्टिसँ सेहो प्रासंगिक नै मानल जाए। प्रयोगवादी कथाकार राजकमल जीक किछु कथा जेना ललका पाग, साँझक गाछ, उपराजिता आदि मैथिली साहित्यमे अपन बेछप्प आधुनिक रूप नेने प्रवेश तँ कएलक मुदा हुनको किछु कथा मैथिली साहित्यकेँ शिल्प आ प्रयोगवादक विश्लेषणक क्रममे अन्हार घर नेने चलि गेल।

कथा किरणमे १९ गोट कथा संकलित अछि, अलग-अलग कालमे लिखल गेल ऐ कथा सभकेँ शिवशंकर श्रीनिवासक प्रयाससँ १९८८ई.मे भाषा प्रकाशन द्वारा प्रकाशित कएल गेल अछि। आमुख शिवशंकरजी लिखने छथि, जइमे एकटा चर्चित समीक्ष समीक्षक द्वारा आमुखसँ बेसी किरण जीक मनोदशा आ रचना प्रकाशन करेबाक क्रममे कथाकारपर श्री निवास जीक उपकार परिलक्षित भेल। वास्तवमे समीक्षा वा आमुख ऐ रूपैँ नै लिखबाक चाही। आमुखमे एकटा कमी आर देखैमे आएल जे श्रीनिवास लिखै छथि-

"किरण जीक प्रारंभिक कथा कथ्यक स्तरपर जेतेक धारदार ओतेक सुन्दर शिल्प नहि।"

मैथिली साहित्यक संग ई दुर्भाग्यपूर्ण विडंम्बना रहल जे मानसिक विलासिताकेँ स्पर्श करैबला कथाकारकेँ अइठाम शिल्पी मानल जाइ छन्हि। वास्तवमे कथाक दू गोट प्रमुख तत्व छी- बिम्ब आ शिल्प। बिम्बक अर्थ कोनो घरक नेओं आ शिल्पक अर्थ ओकर चार, कोरो आ श्रृंगार- चून पालिश। जौं बिम्ब काल्पनिक तँ शिल्प कल्पनाशील अबस्स हएत। जखनि कल्पने करबाक हएत तँ गामक खोपड़ीक कल्पना नै कऽ कऽ आगराक ताजमहलक कल्पना कएल जाए। किरणजी मात्र यएह अपराध केने छथि जे आगराक ताज महलकेँ छोड़ि मिथिलाक गामक मचानपर अपन रचनोमे जीवंत रहला, तँए 'शिल्पी' नै छथि। साहित्यकार कल्पनाशील होइ छै, मुदा जौं कखनो मोनकेँ धरातलपर आनि कऽ लिखैत अछि तँ यथार्थवोधक बिम्ब समाजक सत्यकेँ वृतिचित्रक रूपमे देखैत अछि। किरणजी संभवत: वएह श्रेणीक ययार्थवोधी कथाकार छथि।

पहिलुक कथा 'करूणा' करूणाक नैहरमे स्वच्छन्द जीवनसँ प्रारंभ होइत ओइठाम तक पहुँच जाइत अछि जेतए धरि साधारण शिल्पी नै पहुँच सकै छथि। यामिनीकान्त बाबूक सुकन्या करूणाक बिआह सुन्दरबाबू सँ

भेल। नैहरक भगजोगिनी कर्त्तव्य पथपर भाटक संग सासुरमे आगाँ बढ़ै छलि, वृद्ध पितामही सासु आ मातृ पितृ विहिन जाउत नरेन्द्रक संग...। तीन मासक भीतर अजिया सासुक देहावसान आ ओकर दू मास बाद श्वसन ज्वरसँ पतिक देहान्तक पश्चात करूणा टूटि गेली। प्राचीन आर्य संस्कृति जेकरा जनभाषामे सनातन कहल जाइत, रूढ़िवादिताक आवरणसँ अखनि धरि ओझराएल अछि। जे लोक समाजक मुख्य धारासँ कात लागल छथि, ओ ऐ कथा कथित सनातन संस्कृतिक आधारपर संस्कार तँ करै छथि, मुदा ओइमे ओझराएल नै। ऐ दृष्टिसँ समाजक पछातिक लोककेँ बेसी विचारवान मानल जाए। अगिला लोकमे बाहरी आडंवरकेँ मानबाक क्रममे किछु कुबेवस्था उत्पन्न भऽ गेल। संभवत: ई कथा सनातनधर्मी ब्राह्मण परिवारकेँ धियानमे रखि कऽ लिखल गेल। भऽ सकैत कथाकारक ई कल्पना हुअनि, मुदा ऐ प्रकारक घटना वास्तवमे अखनि धरि होइत अछि जे सवर्ण परिवारक वाल विधवा सुकन्याकेँ सेहो पुनर्विवाह करबाक समाजमे मान्यता नै गेल, जइ समैमे ई कथा लिखल गेल ओइ समैमे स्थिति तँ आर दयनीय छल।

'करूणा' कथा विषम पिरस्थितिमे आगाँ बढ़ैत अछि। एकटा वालिका नरेन्द्रकेँ तकैत करूणा घर पहुँचलि। नरेन्द्र अपन मातृकमे छल। करूणा एकसरि छली। वालिका चकित होइत प्रश्न केलनि, 'एकसरि डऽर नहि लगैत अछि। अपन जीवनकेँ जीवन्त लहासक रूपमे करूणा बाजलि- ककर डऽर वास्तवमे भूत-परेत एकटा भावनात्मक रूपसँ शून्य प्रणी लेल डरक साधन नै बनि सकैत। की छन्हि जे चोर औत? मुदा बालिका प्रश्न कएल जे जौं अपने उठा लिए? ऐ प्रकारक प्रश्नसँ करूणा स्तब्ध भऽ गेली। एकटा नारीक मर्यादा समाजक दृष्टिमे जे महत राखए, मुदा ओकरा लेल सर्वोपरि। समाजक उदाहरण यएह लेल जे ऐ समाजक नीच लोकसँ लऽ कऽ विचारवान वर्गक किछु लोक सेहो अवलाक चरित्र हननसँ वाज नै आएल अछि। करूणा भविसक डरसँ काँपि अपन सुन्नर रूपकेँ भयावह बनबैले उद्धत भऽ गेली। परिस्थिति सेहो संग देलकनि जे बच्चाबाबूक माथ परक चाम उज्जर देखि करण पुछलनि तँ पता चललनि जे सल्फ्यूरिक एसिड अर्थात् तेजाप प्रयोगशालामे पड़ि गेल।

बच्चाबाबूकेँ अपन घरसँ विदा करैत देरी तखापर राखल स्ल्फ्यूरिक एसिड अपन मुँहपर ठाढ़ि करूणा रूपवतीसँ जीवित पिचाशक रूपमे आबि गेली?

आब प्रश्न उठैए जे करूणाकेँ एना केलासँ की भेटल? भेटबाक प्रश्न तँ नै मुदा हुनक चरित्रहरणक आशंका हुनका मोने समाप्त भऽ गेल। जौं एकटा मातृ-पितृ विहिन बालकक दायित्व नै रहतनि तँ आत्महत्या सेहो कऽ सकै छेली। यएह छी देवी भक्तिक केन्द्र मिथिलामे देवीक दशा। नारी विमर्शक एकरूपक यथार्थचित्रण किरणजी केलनि। कनेक कमी जे कथाक प्रारम्भ सरल शब्दमे सेहो कएल जा सकै छल मुदा साहित्यक पुरा रूपक शब्दमे कथाकेँ प्रवेश करा कऽ किरणजी ओइ विचारवान समीक्षकक दृष्टिमे अपन स्थान बनेलनि जनिक मान्यता छन्हि जे भाषा उच्च कोटिक हुअए, जेकर अर्थ सभ मैथिल नै लगा सकथि ओ वास्तविक रचना छी। भऽ सकैत अछि जे कथाकार ऐ प्रकारक शब्द सभसँ कथाक सहज रूपेँ केने होथि, वा मूलत: कवि रहनिहार किरण अपन काव्यात्मक प्रवृतिकेँ नै झाँपि कविताक बिम्बकेँ कथाक रूप दऽ देने होथि। जौं ई कथा काव्य रहितए तँ मैथिली साहित्य लेल विस्मयकारी क्षण होइतए जखनि करूणा... महाकाव्यक नायिका बनि मिथिलाक मानस पटलपर विचरण करितथि। दोसर जे कनेक नकारात्मक बिन्दु भेटल ओ अछि करूणाक अपन आभा नष्ट करबाक दृष्टिकोण। यथार्थबोधी कथाकारकेँ अइठाम क्रांतिवादी दृष्टिकोण स्पष्ट करबाक चाहियनि, मुदा किरणजी सन सिद्धहस्त रचनाकारक सोच सेहो समाजमे क्रांति नै सोचि सकल।

हम सम मिथिलामे रहै छी, एकटा उतर आधुनिक सोच की कहल जाए आधुनिक दृष्टिकोणसँ दूर मिथिला... जैठाम अखनो विधवाकेँ पुनर्विवाह की कहल जाए कोनो आन कन्याक बिआह संस्कारक ऐहब नै बनौल जाइत अछि। फ्रांसक राज्यक्रांति हुअए वा यूरोपक धर्म सुधार आन्दोलन सभमे साहित्यक अपन महत अछि, मुदा ई आर्यावर्त्त छी अइठाम साहित्य मनोरंजन मात्रक साधन मानल जाइत अछि, प्रेरणाक स्त्रोत नै। वास्तविकता सेहो छै जे साहित्यकारकेँ अपन लेखनीक दृष्टिकोणकेँ अपन जीवनमे सेहो जोड़ि देबाक चाही, नै तँ समाज मान्यता केना देतनि वा ओ साहित्य प्रेरक केना

हएत? किरणजी करूणा सन दृष्टिकोण रखैत हेता किएक तँ हुनको जनम अही समाजमे तँए क्रांतिवादी नै बनि 'करूणा'क नाश देखा देलनि। ओइ प्रकारक नाश जे जइसँ नीक मृत्यु। मुदा सम्यक् सोचबला किरणजी कँ अइठाम कनेक क्रांतिवादी बनि करूणाक पुनर्विवाह देखएबाक चाहियनि। यथर्थादोषी साहित्यकारकँ सेहो समाजमे विचार उत्पन्न करबैले क्रांतिवादी बनब साहित्य लेल अनिवार्य नै तँ आडंवरकँ समर्थन करैबला ऐ प्रकारक साहित्यकँ पढ़निहार लोक दोष साहित्यकारेपर देत।

दोसर कथा 'एहि चारि खूनक खोज केनिहार के?' अर्थनीतिकँ धियानमे रखि कऽ लिखल गेल। कथाक प्रारंभमे कथाकार ब्राह्मणवादी बेवस्थापर कनेक कटाक्ष केलनि, 'पंडित जे कहथि से करी मुदा जे करथि से नहि करी' अर्थात् अग्रसोची समाजक धर्मपालक जातिक कर्म आ कथनमे भिन्नता अछि। वास्तविकता सेहो अछि पंडित विद्याध्ययन आ नीति अध्ययनक आधारपर उचित वचन तँ अपन मुखसँ बजै छथि, मुदा मात्र होसरा लेल अपन लेल नै।

ऐ कथामे सेहो एकटा सत्कर्मी परेमा अपन स्वाभिमानक संग जीवन तँ प्रांरभ कएलक मुदा सम्पतियासँ बिआह पछाति साधनहीन परेमाक स्वाभिमान परिस्थितिवश डगमगा गेल। अपन नेनाकँ जीवित रखैले हलुआइक दोकानमे किछु भोजन सामग्री तकैत पकड़ल गेल। पुलिस अपन काज कएलक एकटा भोजन चोरि करबाक प्रयास करैबला चोरकँ डकैत बना कऽ सातबर्ख कठोर कारावास दिआ देलक। न्यायालयमे परेमाकँ न्याय नै भेटल किएक तँ ओकर गप सुनत के?

परेमा जहलसँ छूटल तँ अर्थहीन परिवारक सभ जन समाप्त...।

अर्थनीतिक ई कथा समाजक अंतिम बेकतीपर प्रारंभ भऽ ओकर अंतसँ समाप्त भेल। किरण जीक ई कथा यथार्थबोधी मानल जा सकैत अछि। अइमे क्रांतिक कोनो गुंजाइश नै किएक तँ शिक्षा आ भौतिक साधनसँ विहिन मानब सरकारी तंत्रक विरूद्धमे केना आन्दोलन करए, वादमे परेमा केतए जाए किएक तँ ओ विक्षिप्त भऽ गेल।

'काल ककरो छोड़त' एकटा राजपरिवारक कथा छी। महाराज दीर्घवाहु अपन मृत्युकालमे अपन राज्य आ अपन पाँच बर्खक वालक सुन्दर

अपन छोट भाए वीरवाहुकेँ सौंपि ऐ संसारसँ विदा भेलनि। कालान्तरमे वीरवाहु अपने वास्तविक राजा कहबैले अपन भातिजकेँ मारि देलनि। ई दृश्य वीरवाहुक पुत्र शंकर देखलक आ पितृहन्ता बनि गेल। शंकरक स्त्री राधा दोसर पड़ोसी युवक रमेशसँ प्रेम करै छलि, ओ सेहो 'महाजनोयेन गत: स पंथा'क आधारपर शंकरक हत्या कऽ देलथिन। अंतमे कथाकार ई प्रश्न छोड़ि कथाक इतिश्री केलनि- 'काल की राधाकेँ छोड़तनि? वास्तवमे एकरा कथा नै मानल जाए ई छी कथाकारक विराट जीवन दर्शन ओ शैक्षणिक योग्यताक एकटा चित्र। इतिहास साक्षी अछि धनलोलुपता ओ राजपदक आशमे केतेक शासक सम्बन्धक मर्यादाकेँ बिसरि गेल छेलथि। लोभ पापक कारण होइत। लोभ माली अपन फुलवाड़ीक फूलसँ सेहो करैत अछि, एकटा पति अपन पत्नीक सौन्दर्यसँ सेहो करैत अछि मुदा ओ छी मर्यादापूर्ण अधिकारक लोभ। अमर्यादित ओ अवांछित लोभक परिस्थितिमे लोक अपने नाश करैत अछि। प्रलाप, समाजक चित्र, धर्मरत्नाकर, चनटा, जाति पाँतिक जाड़ू आदि कथा सेहो समाजक अग्रआसनपर बैसल लोकक समाजक अंतिम व्यक्तक प्रति दृष्टिकोणकेँ स्पष्ट करबैत अछि। ऐ प्रकारक कथा जइमे सम्पूर्ण समाजक स्थितिक चर्च हुअए ललित आ जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ छोड़ि किरण जकाँ कियो नै कएलक। मुदा सभटा कथा यथार्थचित्रण तँए श्रीनिवासजी हिनका शिल्पीक संज्ञा दइमे संकोच केलनि। वास्तविकता अर्थात् इजोतसँ डर कल्पना अर्थात् अन्हारसँ प्रेम मैथिली साहित्यक प्रवृति रहल छै तँए किरणकेँ ओ स्थान नै भेटल जेकर ओ अधिकारी छथि। ऐ संग्रहक सभसँ विलक्षण कथा छी- मधुरमनि। अपन साहित्यक किछु चर्चित कथामे एकर स्थान अछि। एकटा निम्नवर्गीय समाजक मुँहजोरि मुदा स्वस्थ आ कर्मशील नारी मधुरमनि अपन शरीरसँ असमर्थ पतिक प्रतिदायित्व रखैत अछि। मधुरमनिक कठोरवाणीसँ उद्विग्न भऽ ओकर पति मोचन घरसँ पड़ा गेल। मधुरमनि पोटि कऽ फेर ओकरा घरमे आनि लेलक। सतना माए जखनि मोचनक आलोचना मधुरमनि लग करैत अछि तँ मधुरमनि सतना माएपर तीक्ष्ण शब्दवाण चला कऽ ओकरा चुप करा दैत अछि। 'पिट्ठा पहलमान लऽ कऽ हम की करब जे भरि दिन डेंगबिते रहत।' वास्तवमे सतना माएक शरीरसँ मजगूत पति खूब पिटाइ करै छल। यएह छी हमरा सबहक समाजक नारीक पतिक प्रति सिनेह

ओ अपन पतिकेँ किछु कहि सकै छथि, मुदा दोसर किए कहत? अइमे अधिकार आ सिनेह दुनू भेटैत अछि।

ऐ प्रकारे विहनि कथाक ऐ संग्रहकेँ युगान्तकारी तँ नै मानल जा सकैत अछि मुदा समाजक वास्तविक दशाक विवेचन आ तर्कपूर्ण शैलीसँ ई संग्रह अपन अलग स्थान रखैत अछि।

❍❍❍

पोथीक नाओं- कथा किरण

रचनाकार- डॉ. कान्चीनाथ झा 'किरण'

प्रकाशक- भाषा प्रकाषन पटना

बर्ख- १९८८ई.

३०

आशु कवित्वक हृदयांतरिक किलोल- कलानिधि

महाकवि विद्यापति पछाति मैथिली साहित्यमे आशु कविक जे श्रृंखला काव्य साहित्यकेँ गतिमान केलक ओइमे विविध कारणसँ किछु काव्य प्रतिभा झँपले रहि गेल। ओहेन आशु कविमे कालीकान्त झा 'बूच' सेहो एकटा नाओं अछि। सन् १९३४ई.मे महान दार्शनिक उदयनाचार्यक जनम ओ कर्मस्थली समस्तीपुर जिलाक करियन गाममे जनम नेनिहार कवि कालीकान्त झा 'बूच' अपन काव्य साधनाक श्रीगणेश हिन्दी साहित्यसँ केलनि, परंच किछुए हिन्दी कविताक रचनाक पश्चात अपन मातृभाषामे लिखए लगलथि, फेर हिन्दीमे लिखबाक कोनो जिज्ञासा नै, कोनो योजना नै। कवि आ पाठकक मध्य रचनाक अभिबेक्तीक साधन मिथिला मिहिर, माटि-पानि आ मैथिली भाषा सन पत्रिका छल। ऐ पत्रिका सभकेँ बन्न भेलापर कविक कविता गामक किछु लोकक मध्य मनोरंजन मात्रक साधन रहि गेल, कविता पन्ना फाटल आ कविक रचना गुम्म। बहुत रास रचना अप्रकाशित रहि लुप्त भऽ गेलनि। जे किछु उपलब्ध भऽ सकल ओकरा विदेहक सौजन्यसँ श्रुति प्रकाशन द्वारा प्रकाशित कएल गेल। दुभाग्य अछि जे कविक मृत्यु २००९ई.मे आ कविता संग्रह २०१०ई.मे। एकरा ककर दुर्भाग्य मानल जाए मैथिली साहित्य वा कविक एकर निर्णए पाठक कऽ सकै छथि। किएक तँ सन् १९७०ई.सँ १९८४ई.क मध्य मिथिला मिहिरक लोक प्रिय कविमे जनिक गणना होइत छल ओकर रचनाक केतौ कोनो चर्च नै, कोनो प्रोत्साहन नै। ऐ सभ उपहासक दंशसँ आकुल भऽ कवि गंभीर आ विचारमूलक रचना लिखब छोड़ि भक्ति, हास्य आ चुट्टक्काक संग-संग गामक वियाह सबहक अभिनंदन पत्र लिखए लगलथि। जइ कविकेँ कहिओ मधुपजी सन कवि चूड़ामणिक प्रशंसा पत्र भेटै छल ओ मैथिली लेल अछोप बनि गेल। मात्र डॉ. दुर्गानाथ झा श्रीश, डॉ. विद्यापति झा, डॉ. नरेश कुमार विकल सन किछु साहित्यकार केतौ-केतौ हिनक चर्च केने छथि, जइ लेल मैथिली साहित्य हिनका सभसँ कृतज्ञ रहत।

श्री गजेन्द्र ठाकुरक विशेष प्रयाससँ जे हिनक कविता संग्रह प्रकाशित भेल, ओकर नाओं अछि- 'कलानिधि' कलानिधिक अर्थ होइत चन्द्रमा, ऐ संसारकेँ छोड़ि देला पछाति संग्रह आएल तँए आकाशीय पिंड जकाँ मात्र दर्शनीय नाओं देल गेल।

आशु कविक कोनो बंधन नै छै आ ने ओ अतुकांत कविता जकाँ योजना बना कऽ कविता लिखैत अछि तँए समीक्षक लोकनिक दृष्टिमे किछु कविता अप्रासंगिक भऽ सकैत अछि।

कवि 'बूच' कविताक रचना प्राय: गाबि कऽ करै छला, जखनि जे फुरेलनि गीत जकाँ लिखि देलनि। तँए गोष्ठीक मंचपर सेहो मात्र गबैए रहि गेला। श्रृंगार, हास्य, विरह, भक्ति ओ विचार मूलक कविता सभमे कोनो कालक बंधन नै अछि। भक्तिकाल, रीतिकालसँ लऽ कऽ उत्तर आधुनिक साहित्यकाल धरिक परिवेशकेँ बूच अपन कविता सभमे समेटने छथि। तँए किछु रचनाकेँ घसल-पिटल सेहो मानल जा सकैत।

अपन काव्य रचनाक श्री गणेश कवि गंभीर लेखनसँ केने छला, मुदा ऐठाम 'सरस्वती वंदना'सँ कएल गेल। भक्ति रसमे कवि बहुत रास कविता लिखने छथि। रामचरित मानसक हिनका विशेष ज्ञान छेलनि तँए भक्ति मूलक कवितामे ओइ युगक घटना स्वभाविक अछि, मुदा मिथिलाक भक्ति शक्ति अराधना तँ मातृगीतकेँ विशेष महत देल गेल। भऽ सकैत ऐ प्रकारक वकिता उत्तर आधुनिक मैथिली साहित्य लेल विशेष महतपूर्ण नै हुअए मुदा जैठाम भाषा सुशुप्त भऽ गेल हो ओइठाम भक्ति मूलक गीत भाषाक समृद्धि लेल अनिवार्य, किएक तँ आर्य परिवारक सभ लग्नमे स्त्रीगण देवोपराधनाकेँ विशेष महत दइ छथि। यएह कारण अछि जे मैथिली साहित्यमे सभसँ लोकप्रिय पद्य विद्यापतिक बाप प्रदीप मैथिली पुत्र जीक 'जगदम्ब अहीं अवलम्ब हमर' भेल अछि। कविश्वकेँ सीताराम झा वा प्रदीप मैथिलीपुत्र जकाँ लोकप्रियता नै भेटल मुदा हिनक भक्ति पद्य सभमे जे झंकार अछि ओकर अपन अलग अस्तित्व मानल जाए-

''सद्य: सुधा सिन्धु स्नात, माँजल गंगा जलसँ गात
सेवक खातिर तजलनि नवरतनक रजधानी अय
मणिद्वीपक महरानी अय ना...।''

जेना रवि भूषणजी आमुखमे लिखने छथि जे कवि रामकेँ प्रवासी कहलनि बनवसी नहि, ऐ प्रकारक दृष्टिकोण पितृ: आज्ञा पालनाय अर्थात् पितृभक्ति आ सम्बन्धक मर्यादामे क्रांतिकारी दृष्टिकोणकेँ विशेष महत दइले आदरनीय मानल जाए-

भक्ति मूलक एकटा गजलमे राधा कृष्णक सिनेह केर अनुशासित चित्रण गजलमे भक्तिक बोर मैथिली साहित्यमे विरले भेटैत-

श्याम होइछ परक प्रेम अधला हे,
तैँ बिसरि जाह हमरा बिसरि जाह हे।

कविक श्रृंगार मूलक पद्यमे विचार, अनुशासित सिनेह, वैराग्य आ जीवन दर्शन मर्म स्पर्शी अछि। केतौ कोनो अवांछित प्रेमकेँ प्रोत्साहन नै, केतौ अशोभनीय शब्द नै। भाषा सरल आशुगीत मुदा लोकप्रियता लेल लिखल गेल चलन्त नै। अतुकांत कवितामे बिम्ब विश्लेषण करैले बेवधान नै होइ छै किएक तँ ताल-मात्राक बंधन नै। आशु कवितामे बंधन रहितो जौं बिम्ब विश्लेषण बोधगम्य आ हृदयान्तरिक स्पर्श करैत हुअए तँ कविता आर लोकप्रिय किएक नै मानल जाए-

''जाहि बाटकेँ नित्य बहारी
हम तीतल ऑचरसँ झारी
जेकरा अपनामे रखने अछि
हमर आँखि ई कारी-कारी
आइ ताहि पर किएक अलासित गतिसँ आबै छी
रातु बीच चान पर तपि-तपि ध्यान लगाबै छी...।''

दोसर पद्य 'विरहिनी'मे कृष्णक अवाहनक आशमे अश्रुउच्छवाससँ आकुल राधाक ''बेथा रीति-प्रीतिक हिलकोरसँ भरल मानल जाए-

अहँक रूप राखि नैन युग-युगसँ जागलि छी
मुरलीक मधुर बैन गुनि-गुनि कऽ पागलि छी
परकीया पतिता हम प्रेमक पुजारिनकेँ
नहि चाही गीताक ज्ञान
आऊ-आऊ रूसल हमर भगवान...।''

एक दिस कवि 'तोहर ठोर' कविताक माध्यमसँ प्रेमिकाक सौन्दर्यक गुणगान ठोरकेँ केन्द्र बिन्दु बना कऽ करैत अछि। प्रेमी प्रेमिकाक ठोरकेँ स्पर्थ जौं नैतिक रूपसँ नै कऽ सकत तँ राहुक रूप धारण कऽ जबरदस्ती करत अहूमे जौं सफलता नै तँ भगवानसँ प्रार्थना कऽ कऽ पुर्नजन्ममे धान बनि प्रेमिका पातपर चिष्टान्न अर्थात् भात वा खीरक रूपेँ पड़त आ प्रेमिका स्वत: प्रेमी रूपी भातकेँ ठोरसँ सटा लेती-

''बनव हम पुर्नजन्ममे धान,
धानसँ भऽ जाएब चिष्टान्न
पड़ब पुनि अहँक प्रतीक्षापात
अछिंजलसँ सद्य: स्नात...।''

दोसर दिस कवि समाजकेँ सिनेहमे मर्यादाक सीमा नै लंघबाक निर्देश सेहो दइ छथि-

''नहि श्रृंगार रौद्र हुंकारे
हम एहि पार अहाँ ओहि पारे
दुहूक बीच कठोर कर्तव्यक
भरल अथाह भयंकार नाला
सुरभित अहँक सिनेहक माला...।''

विरह, श्रृंगारक स्पंदन होइ छै, जौं विरह नै हुअए तँ मिलन आनंदक अनुभूति केना कराएत। ॠृतु वर्णनकेँ मूलाधार बना कऽ कवि 'वसन्ते-विरहिनी' कविता लिखलक, अचल जीव अर्थात् गाछ-वृक्ष वसंतक नशामे माँतलि छथि मुदा पतिसँ दूर विरहिनी लेल वसंतक कोन प्रयोजन-

''रहलौं शेष राति भरि जागलि,
हुनक दोष की हम अभागलि
रसक अथाह सिन्धु छल उछलल
प्राण मुदा बुन्ने लय विह्वल
घर-घर अकाशे चन्ना धरती अन्हार गय...।''

अर्न्तमनक जुआरिकेँ कियो झाँपि सकैत अछि, कविक दृष्टि भलहिं रविक प्रकाशसँ दूर चालि जाए, मुदा कविता जौं शान्तचित्त भऽ कऽ पढ़ल जाए तँ अपन बेक्तिगत जीवनकेँ कविसँ झाँपब असंभव। 'उदासी' शीर्षक

कवितामे कवि किए उदास अछि, चानक मुख किए मलीन भऽ गेल ई तँ नहि कहल जा सकैत मुदा केकरो देल बेथासँ कविक मोन अबस्स हहरि गेल छन्हि-

''ककरा पर रूपसि करी आश
ई कल्पो विटप बबूर भेल
रोपल अभिसिचिंत वर प्रवाल
बढ़ि जेठक ठुट्ठ खजूर भेल...।''

यात्री, आरसी आ चन्द्रभानु जकाँ कवि भौतिकतामे अपन समाजक मध्य शिखर स्थान नै रखलक, अर्थयुगक देल पीड़ा एकरा इमानदार साधारण कर्मचारी लेल असहनीय तँए 'करूण गीत' बनि उपटि गेल-

''कटि रहल किए ई कला इन्दु
घटि रहल किए जीवन प्रकाश
रजनीक रूदन विगलित प्रभात
कऽ रहल किए अतिशय उदास...।''

हिनक विचार मूलक कविता सभमे सेहो सिनेहसँ वेशी वैराग्यक बोध होइत अछि। जीवनक अंतिम अवस्था धरि कवि पारिवारिक र्धमे बान्हल रहल कोनो दबाबमे नै, अपन आत्मीयतासँ समाजकेँ सर्वे भवन्तु निरामया रूपेँ देखलक मुदा बेक्तिगत जीवनमे 'ठोप-ठोप चारक चुआठकेँ ऑगुरसँ उपछैत रहल छी' लिखबाक किए आवश्यकता पड़ल? हास्य कविता पाठ सुनि पाठक हँसै छथि, वा मर्म स्पर्शी रचनापर कनै छथि परंच कविसँ कियो नै पुछैत अछि जे ओ ऐ प्रकारक पद्य किए लिखलनि। बूचक बेथा सेहो झाँपले चलि गेल मुदा एतेक तँ हम निश्चित रूपेँ कहि सकै छी जे अपन जीवनक बेक्तिगत संघर्षक संग-संग कवि साहित्यकार मंडलीमे अपन महत नै देखि- 'एकला चलो रे'क आधारपर अपन साहित्यिक कृतिकेँ सेहो एकात कऽ लेलक-

''दुनियाँ हमर एकातक गहवर
भेल जीअत मुरूतक स्थापना एहि जीवनमे...।''

एकर परिणाम स्वरूप कवि मैथिलीक अस्तित्वपर सोझहे प्रश्नचिन्ह लगा देलक-

“चन्दा सुमन यात्री मधुपक
जुनि करू ओ आबि रहल अछि
हेती मैथिली सभसँ कात...।”

वास्तवमे कवि मिथिला-मैथिलीमे जाति, क्षेत्र आदिक आधारपर परसल भेदभावसँ आहत अछि, जातिवाद तँ सम्पूर्ण आर्यावत्तक अस्तत्वक कलंकित केने अछि, मुदा कोनो भाषामे जौं जातिक आधारपर भेद हएत तँ एकरा की कहल जाए? मैथिली ऐ भंवरजालमे एना ओझरा गेल छथि जे ब्राह्मणोमे भलमानुष आ जयवारक मध्य अभिबेक्तीक अंतर आन जातिकेँ रूढ़िवादी भाषाधिकारी लोकनि केना मोजर देथि। कवि १९७८ई.मे जागरणगान लिखि अपन वयनानुरागकेँ पसरबाक प्रयास केलनि-

“असम वंग पंजाव गुजरात जागल
अहीं टा पड़ल छी उठू औ अभागल
हरण भऽ रहल अछि हमर मीठ वयना
केना कऽ सिखत आन बोली ई मयना...।”

स्वागत गानक विषएमे आमुखमे रवि भूषणजी आ गजेन्द्र ठाकुरजी विशेष चर्च केनहि छथि। संभवत: ऐ प्रकारक स्वागतगान जेकरा बेथागान सेहो कहल जा सकै छै मैथिलीमे तँ निश्चित नै लिखल गेल हएत। गजेन्द्रजी कवि बूचकेँ विद्यापति पछाति सभसँ लयात्मक कवि मानलनि ऐ गपपर समालोचक लोकनि निश्चित प्रश्न ठाढ़ करता मुदा एतेक तँ अबस्स सत्य अछि जे आरसी आ यात्रीक पश्चात एहेन समन्ववादी आशुकवि मैथिली साहित्यमे नै भेटत।

अखनि किछु लोक मिथिला राज्य लेल पगहा तोड़ि कऽ चिचिआ रहल छथि। समाजक मध्य समन्वयवाद नै रहत तँ मिथिला राज्यक कल्पना करब सेहो असंभव। अगिला आसनपर बैसल लोककेँ समाजक कात लागल वर्ग जेकर संख्या बारह आना अछि, मिथिला राज्यक पुरौधा केना मानत, किएक तँ ऐ उपेक्षित लोक सभकेँ मैथिल मानले नै गेल। ऐ विषएपर कवि ३० बर्ख पहिनहि ‘मिथिला दु:दशा’ नाओंसँ कविता लिखलक-

“राज्यक की बात कठिन पाँचोटा गॉव गय...।”

कविक पोटरीमे पड़ाइनवादक विरोध सेहो अछि। बाल साहित्य सन विषएपर 'दीनक नेना' सन मर्म स्पर्शी आ 'पोताक अट्टाहास' सन हास्य कविता लिखि कवि प्रमाणित केलक जे बाल साहित्य ओछ विषए-बिम्ब नै छी। भऽ सकैत किछु हास्य कविताकेँ लोक मात्र मंचक गबैयाक गीत बुझथु मुदा ओहू सभमे गंभीर दृष्टिकोण झापल छै- मात्र अपन संस्कृतिक विस्मयकारी विषए दृष्टिकोणपर कवि प्रहारेटा नै केलक आ मात्र काटर प्रथा सन कलंककेँ उघारे नै केलक संग-संग अपन संस्कृतिक सिक्कड़िकेँ सेहो 'अप्पन मिथिला' कवितामे पिजौलक, परंच ओइमे लागल जगपर कवि बेथित सेहो भेल-

''गंगो दीदी चाह बनावथि,
कमला बेटी पान लगावथि
कोसी वहिना धान कुटै छथि
वागमती सिदहा फटकै छथि
घरक लक्ष्मी विहुंसथि माँझ ओसार अप्पन मिथिला...।''

ओना ई गप ओतबे सत्य सेहो अछि जे कवि किदु निरर्थक कविता सेहो लिखने छथि। जेकर देशकालक दशासँ कोनो सम्बन्ध नै। जेना डहकन, हमर गाम आदि। ऐ प्रकारक कविताकेँ साहित्यक विकासमे कोनो योगदान नै, वरन् बेर्थ अपन कवित्वकेँ नष्ट करब मानल जाए, मुदा इहो गप ओतबे सत्य जे आशु कविक कोनो सीमा नै होइत छै।

बहिर्मुखी बेक्तीत्वक बूच अपन रचनामे अर्न्तमुखी बनि विशेष अर्थ राखएबला कविता सभ लिखै छला। मुदा हिनक अन्तर्तममे स्वांग नै अछि केतौ किलोल नै केलनि जे हमहूँ कवि छी, मुदा अपन समन्वयवादी दृष्टिकोणकेँ आत्मामे नुका कऽ नै रखि सकलथि आ हृदयांतरिक किलोल कविताक माध्यमेँ बाहर निकलि गेल।

विदेहक सम्पादक गजेन्द्र ठाकुर, सह सम्पादक उमेश मण्डल आ श्रुति प्रकाशन धैनवादक पात्र छथि जे ऐ उपेक्षित अभिशप्त कविक बँचल-खुचल रचनाकेँ प्रकाशमे अनलनि, नै तँ अगिला पीढ़ीक गप के कहए वर्तमान पीढ़ीक किछु लोकेँ छोड़ि ई कियो नै जनैत अछि जे 'बूच' मैथिलीक कवि छला। ऐ

लेल ककरा दोष देल जाए कविक अथवा साहित्यक हथियार नेने मैथिलीक रथपर सवार महारथी लोकनिकेँ? एकर निर्णए पाठक कऽ सकै छथि।

❍❍❍

पोथीक नाओं- कलानिधि
रचनाकार- कालीकान्त झा 'बूच'
प्रकाशक- श्रुति प्रकाशन
प्रकाशन बर्ख- २०१०
दाम- १५० टका मात्र।

३१

निश्तुकी

निश्तुकीक अर्थ होइत- ''निश्चित'', निश्चित माने परम सत्य। कोनो साहित्यक कृतिक नाओं ओइमे निहित तत्वक विश्लेषणक हेतु मौलिक रूपरेखाक भान करबैत छै। आधुनिक मैथिलीक नवतुरिया कवि श्री उमेश मण्डल रचित कविता संग्रह ''निश्तुकी''कें पढ़ला पछाति ई ज्ञात भेल जे ऐ छोट-छीन कृतिमे मिथिलाक सांस्कृतिक ओ समाजिक पराभव केर दशो दिशा निश्चित कएल गेल अछि।

उमेशजी शिल्पी नै छथि आ ने हुनक कविता सभमे अलंकारक दर्शन होइत अछि केतौ कोनो भंगिमा नै, लयात्मक धार नै तखनि ऐमे कोन प्रकारक ''तात्विक विवेचन'' अछि जेकर समीक्षा कएल जाए?

वास्तवमे मिथिलाक ग्राम्य जीवनमे रमि, ऊँच-नीचक अनुभव हिनक रचनामे अलग-अलग बिम्ब रूपेँ यथार्थक बोध करबैत अछि। विराट जीवन अनुभव नै रहला पछाति नवतुरिया कवि अपन दैनन्दिनीकें काव्यात्मक रूप देलक, ऐ लेल कविक पहिल रचनामे केतौ अपन भाषा-संस्कृति ओ साहित्यसँ बिसवासघात नै देखैमे आएल। उपेक्षित समाजक मध्य जनम नेनिहार कवि प्रांजल रूपेँ उपेक्षासँ आकुल छथि मुदा मात्र अपन नै, समाजमे व्याप्त विषए जीवन शैली ओ श्रमक संग-संग श्रमजीवीक अधोगति हिनक कविता सभमे नव रूपेँ परिलक्षित भेल। ऐ उपेक्षामे कोनो क्रांतिक वा उन्मादक आश नै, मात्र अधोगतिक पराभव चाहै छथि। ऐ प्रकारक विषमता केना दूर हएत ई तँ समाजपर निर्भर करैत अछि। मूलत: अर्थनीतिक अपन दृष्टिकोण कविक महत्ता छी। ऐमे सन्निहित साम्यवाद लेलिन ओ स्टालिनक साम्यवादी विचारधारा नै, हमर अपन मिथिलाक उमेश मण्डलक विचारधारा छी, जे जगदीश प्रसाद मण्डलक अवतारवादसँ प्रभावित तँ छथि, मुदा केतौ हुनक रचनाकें नै चोरौलनि।

पहिल कविता ''हँसैत लहास''मे कोनो लहासक वर्णन नै, जे मनुख जीवित रहितो साधनहीन आ ग्लानिसँ भरल यायावरी जीवन जिबैत-जिबैत

थाकि गेल अछि ओइ जीवित रहितौ लहास बनल मनुखमे आब ज्ञानेंद्रीय तन्त्र सक्रिय भऽ गेल आ ओ बजैले उद्यत अछि। वास्तवमे एकरा क्रांति मानल जाए। ऐ प्रकारक क्रांतिसँ हमरा देशमे विभिन्न प्रकारक आन्दोलन भेल, मुदा अइठाम ओ लहास कोनो आन्दोलन नै करत। आ ने नक्सलवादक जनम हएत, ऐ लेल समाज निश्‍चिन्त रहि सकैत अछि, मुदा आन्दोलन हएत तँ वाह्य आडंवर ओ अपन संस्कृतिक विरूद्ध। परंच ओहूठाम लहास कोनो लाठी-गड़ाँस नै उठाएत, मात्र हँसत। दस पाँतीक ऐ लघुकवितामे सांस्कृतिक अधोगतिपर कवि तेज शब्दवाण चला कऽ मिथिलेटा नै, सम्पूर्ण आर्यावर्तमे व्याप्त समाजिक विषमताकेँ झकझोड़ि देलनि। केतेक समाजिक आन्दोलन भेल मुदा स्थिति यथावत्, नै जानि कहिया धरि ऐ प्रकारक विषमता हमरा सबहक समाजकेँ कोढ़ि बनि गलबैत रहत। एकटा कनेक कमी ऐ कवितामे देखैमे आएल ओ अछि पराभवसँ मुक्तिक उपाए, कवि नै प्रकट कऽ सकलनि जे लहासक हँसीक परिणाम की हएत।

''फाँट'' एकटा एहेन शब्द छी जे लोककेँ लोकसँ फराक कऽ रहल। श्राद्ध-कर्मक अंतिम दिन ज्येष्ठ संतानक माॅथमे पगड़ी बान्हि उतराधिकारी बनाएल जाइत अछि, मुदा क्षणहिमे मृतकक खड़ाम छोड़ि सभटा आन वस्तु लेल परिवारक आन लोक ओइ उतराधिकारीक आदेश केर प्रतीक्षा सेहो नै करैत अछि। वास्तवमे ''फाँट'' शब्द बौद्धिकतापर भारी पड़ि रहल, लोक अपन आचार-विचारकेँ ताखपर रखि दियाद बनि गेल छथि, मात्र कुल-वंशक अधिकार लेल नै, जीवनक समस्त ''कर्मस्थली''मे ऐ प्रकारक प्रवृति अछि। ''कविता'' शीर्षक कवितामे कवि दियादकेँ मित्र बनाबए चाहै छथि। ''बाधा''गरीबक जीवनमे सहचरी बनि कऽ कखनो नै संग छोड़ए चाहै छथि। मंगला पूव भर जा तँ रहल अछि, नदी पार करबाक क्रममे प्रसन्नो भेल जे नदीमे पानि नै मात्र बालु तँए बिनु घटखेबा देने पार भऽ जाएब। मुदा...। ओतौ किछु लंठ लोक घटखेबा लऽ रहल, मंगलाक जेबीमे कैंचा नै वापस पश्चिमे रहि गेल। ऐ प्रकारक घटना पड़ाइनवादकेँ रोकैत अछि। एकर शिकार मिथिलाक महान दार्शनिक उदयनाचार्य सेहो भेल छला जेकर परिणाम भेल जे ओ गंडक पार नै कऽ सकलनि आ आपस अपन जन्मभूमि करियनमे आबि अपन नाओंक संग पूर्ण मैथिल लगा लेलनि। भोजपुरी साहित्यक आदि

कवि भिखारी ठाकुर अर्थोपार्जन लेल पड़ाइन तँ केलनि मुदा कटुफल भेटलनि आ पुनि भोजपुर आबि गेला, जेकर परिणाम सोझाँ अछि, भोजपुरी साहित्य आर्य परिवारक भाषा समूहमे अपन स्थान बना लेलक। ई तँ भेल ''मंगला''कैं भेटल बेथाकैं रोकबाक प्रयास, मुदा जौं ओ पू-भर मात्र मिथिलेमे जाइत हएत तँ एकरा की मानबाक चाही, गरीबक बाटमे काँट रोपबाक प्रयास नै?

सम्यक् अर्थनीतिक आश धएने एकटा आर कविता लिखल गेल अछि- ''भोगी''। भोगी आ योगी समाजिक जीवन रूपी नदीक दू कछेर छी मुदा अइठाम योगीक अर्थ श्रमजीवी आ भोगीक अर्थ अनैतिक रूपसँ धनोपार्जन कऽ अंत धरि समाजपर अपन अधिकार रखनिहार मनुख। अइठाम आबि कऽ कवि कालीकान्त झा बूचक उक्ति-

''भोगीकैं देहोक मोह नै, योगी तम कथि तुम्मा रहि-रहि...।''

उनटा पड़ि गेलनि। ओइकालसँ वर्त्तमान समए केर तुलनामे भोगी बेसी भारी पड़ि गेल छथि।

''छठि'' कविता सूर्यकैं उपासनासँ बेसी कर्जक प्रति कृतज्ञताक बोध करबैत अछि। मुदा कोन प्रकारक कर्ज कवि स्पष्ट नै कऽ सकलनि। कविक फुलवारीमे फूलक डंटी वयस्क नै भेल छन्हि किएक तँ नवतुरिया छथि, अखनि मात्र प्रांजल माली छथि, प्रवीण नै। तँए बेसी नकारात्मक अंश निकालब हतोत्साहित कऽ सकै छन्हि। ऐ कविता संग्रहक आन कविता सभ सेहो बोधगम्य अछि मुदा एकटा आर कविता जे ऐ संग्रहकैं वैशिष्ठ्यता प्रदान करैत अछि ओ छी-

''के मैथिल।''

वास्तवमे बेर-बेर समाजक कात लागल वर्गकैं आगाँक लोक कहै छथि-

''अहूँ मैथिले थिकौं।'' ऐसँ कवि मर्माहित भऽ अपन तर्कसँ प्रमाणित करबाक प्रयास केलनि जे मिथिलाक कात लागल वर्ग आन लोकसँ बेसी मैथिल कहेबाक योग्य छथि। कात कऽ देल गेल समाजक लोक जौं कवि भऽ जाइ छथि तँ लेखनीमे अपन बेथाकैं झाँपब असंभव।

फजलुर रहमान हासमीक कविता-

''हे भाई।''

जकाँ उमेश मण्डलक कविता-

''के मैथिल''

भविसमे मैथिली साहित्यकेँ क्रांतिवादी दृष्टिकोणसँ अबस्स प्रकाशित करत-

''डोका काँकोर बीछ हम
भैंटक लावा चिबाकऽ
उफनैत शोणितकेँ जरा रहल छी
मिथिलामे बैसल...।
मुदा प्रश्न रहिए गेल
के मैथिल?''

कवि आशु कवि नै अछि, आ ने आत्मासँ कविता लिखलक, मुदा मिथिलाक समाजमे रमल कवि अपन जीवन दर्शनकेँ झाँपि नै सकल आ कविता सभक रूपेँ मिथिलामे परसि देलक।

निष्कर्षत: पहिल प्रयास सराहनीय मानल जाए। कोनो आन कविक कविता सभसँ एकर तुलना करब अनुचित हएत। किएक तँ ऐमे ने तँ श्रृंगार आ ने वैराग्य, ने केतौ भक्तिक हिलकोरि, केतौ हास्यक समागम नै परंच बिम्बित अर्थनीति ओ विचारमूलक कविताक आधुनिक श्रृंखला।

धैनवादक पात्र छथि विदेहक संपादक गजेन्द्र ठाकुर जे गामक वैध बनल उमेशमे कवित्व गुण देखि आगाँ बढ़ेलनि, ई मात्र उमेशपर उपकार नै सम्पूर्ण मिथिलाक प्रति गजेन्द्र जीक सिनेह छी। ऐ लेल विदेह परिवारक संग-संग श्रुति प्रकाशन सेहो धैनवादक पात्र छथि जे मात्र भॉज पुड़बैले समाजक कात लागल वर्गक संग्रह प्रकाशित नै करै छथि, वरन् आत्मीय रूपेँ सम्पूर्ण मिथिला-मैथिलमे उपेक्षित नीक रचनाकेँ प्रकाशित करबाक योजना श्रुति प्रकाशनकेँ आधुनिक मैथिलीमे शीर्ष स्थानपर बैसा देलक।

❍❍❍

पोथीक नाओं- निश्तुकी

रचनाकार- उमेश मण्डल

शिव कुमार झा ''टिल्लू''

प्रकाशक- श्रुति प्रकाशन, दिल्ली
दाम- १००
प्रकाशन बर्ख- २००९

३२
पृथ्वीपुत्र

अतिक्रमण सबल बेकती वा समूहक अमानुषिक प्रवृति रहल अछि। वैज्ञानिक मान्यताक अनुसारे सेहो अस्तित्व लेल संघर्ष आ ओइ संघर्षमे योग्यतमक उत्तरजीविता कालक्रममे होइ रहल अछि। जखनि सम्पूर्ण सृष्टिमे बौद्धिक चेतनासँ युक्त मानव अस्तित्व लेल बेवस्थाक विरूद्ध संघर्ष केवल तखनि मिथिलाक माटि-पानि केना अछोप रहए।
समाजक ऊँच-नीच आ जय-पराजयक वृत्ति-चित्रक रूपैँ ललितेश मिश्र ललित जीक उपन्यास पृथ्वी-पुत्र पुस्तकाकार सन् १९६५ ई.मे प्रकाशित भेल। जेना की आमुखमे स्वयं उपन्यासकार लिखने छथि जे ई उपन्यास हंसराज जीक तगेदामे लिखल गेल, तँए ऐमे रचनाकारक सम्पूर्ण आत्मीयता देखब भ्रामक सिद्ध हएत। हमरा सबहक संग ई दुर्भाग्य रहल जे आत्मिक भाषामे रचनाकार अपन आशुत्वसँ बेसी तगेदाक कारणेँ रचना करैत रहलाहेँ।

रचनाक कारण जे हुअनि मुदा एतबा तँ अबस्स प्रासांगिक आ मैथिली साहित्य लेल वरदान मानल जाए जे पृथ्वीपुत्र उपन्यासक माध्यमसँ उपन्यसकार मिथिलाक माटि-पानिमे समाहित सभसँ अंतिम वर्गक समाज धरि पहुँच गेल छथि जे सोझ मानसिक प्रवृत्तिक द्योतक अछि। ओना ललितक कथा ''रमजानी'' सेहो समाजक दलित वा पछड़ल लोकक वृत्तिचित्र छी। स्वाभाविके छै रचनाकार प्रशासनिक सेवामे रहल छथि,, समाजक ऊँच-नीच कृत्य-कुकृत्य आ वर्गक विषमताक दर्शन बरबरि होइत हेतनि तँए अपन दैनन्दिनीक अनुभवकेँ कल्पनाक सरोवरिमे बोरि यथार्थवादी रूप देबाक प्रयास केलनि जइमे अंशत: सफल सेहो भेला।

उपन्यासक गाथा व्यावसायिक चलचित्र जकाँ मध्यसँ प्रारंभ होइत अछि। घटनाक गर्त्तमे गेलासँ ई उपन्यास दलित समाजमे सामन्तवादी शोषणक विरूद्ध वर्ग संघर्षक चलचित्र छी।

जंगी पासवानक पुत्र विसेखी पासवान कर्मसँ वैड-कैरेक्टरक चोर अछि। जेकरा अपन दुनू पुत्र गेनालाल आ सरूपसँ बेसी अपन शिष्य छतरपर बिसवास छै। गेनालाल जेकरा गेनमा कहल जाइत ओकर चरित्र

भकलोल-मनुख मुदा कर्मशील मजूरक छै। सरूप ऐ उपन्यासक नायक छी। जेकरा केतौ उपन्यासकार दलित समाजक क्रांति-वीर वनएबाक प्रयास करै छथि तँ केतौ अपन बहिन बिजलीक कल्पनाथ मिश्र उर्फ कलपू मिश्रक संग अनैतिक सिनेहक प्रोत्साहक वा साक्षी। सरूपक चित्रक ई अर्न्तद्वन्द्व दलित समाजक जीवन शैलीमे विराधाभास मानल जाए। गेना लालक अर्द्धांगिनी बेनी अपन पतिक मृत्युक पश्चात् पारिवारिक सहमति आ उत्तरदायित्वक कारणे अपन दिअर सरूपसँ बिआह कऽ लैत अछि। उपन्यास गाथाक विचित्र पात्र छथि बिजुली वा बिजो बिजुरी आ बिजुरिया सन छद्म नाओंसँ विभूषित बिसेखी पासवानक कन्या "बिजली"। कौमार्यक आँगनमे प्रवेश करिते बिजलीकेँ गामक पंडित कुलमे जनमल कल्पनाथ मिश्रसँ प्रेम भऽ जाइत अछि। कलपू मिसर विवाहित छथि मुदा पहिल प्रसव पीड़ाक क्रममे हिनक कनियाँक देहान्त भऽ गेलनि। ऐ अनर्गल आ निष्कर्ष रहित प्रेमक आभास दलित समाजकेँ लागि जाइत अछि। फलत: रेलवेमे पेटमेन हीरालालसँ बिजलीक बिआह कऽ देल गेल। रीति-प्रीति आरंभे कालसँ साहित्यक महतपूर्ण बिन्दु रहल छै। ओइ मार्गदर्शनपर आगाँ बढ़ैत ललितजी उपन्यासमे आकर्षणक सोमरस घोरबाक प्रयास करैत ऐ विचित्र पात्राकेँ ऐमे समाहित केलनि। दू-तीन बेरि पेटमेन हीरा लालक सानिध्यसँ बिजली पड़ा कऽ गाम आबि गेली। मान-मनोबल पछाति फेर पतिक क्वाटरमे गयला पछाति कोयला सन धुरधुर घर आ बर नीक नै लगलनि। हीरा लालकेँ बिजलीक चरित्रक वास्तविकताक भान भऽ जाइत अछि। पुरुष सभ किछु बर्दास्त कऽ सकैत अछि मुदा अपन दाराकेँ दोसर पुरुषक सन आत्मिक वा दैहिक वरन् पुरुष लेल घोंटव असंभव। बिजलीक प्रति हीरा लालक बेवहार कर्कश भऽ जाइत अछि।

अंतिम परिणति भेल जे बिजली सभ दिन लेल नैहर आबि गेली। हीरा लाल पुनि आएल मुदा ओकरा चरित्रपर खलनायिका बिजली लांछना लगेबैले सरुपकेँ उत्साहित केलक। गामक मानिजन अर्थात् जतिया राजा कीी दासक अंतिम निर्णए भेल जे बिजली आब हीरा लाल संगे नै जेती। ओना समाजक सभ पंच एकमत छला जे बिजलीक पुर्नविवाह करौल जाए, मुदा जखनि रचनाकार मात्र उपन्यासक आकर्षक लेल ऐ चरित्रक निर्माण केने छथि तँ क्रांतिक आश असंभव। कल्पनाथ मिश्र आ बिजलीक सिनेह पत्रहीन नग्न

गाछ जकाँ मानल जाए जेकर अस्तित्व नै। एक दिस जखनि सरूप पुछैत अछि बिजलीसँ-

"पाहुन मोन पड़लौ की...?"

तँ बिजलीक उत्तर दार्शनिक जकाँ भेटल तँ दोसर दिस बिजली कलपू मिसर द्वारा दोहरि मोड़ि कऽ देबए काल बलजोरी शब्द सुनि बजैत अछि- तोरा संग कुश्तम पटकममे डाँड़ तँ नै हएत हमरा...।

ई सिनेह कोन तरहक मानल जाए ई निर्णए करब सर्वथा असंभव।

उपन्यासगाथामे कथाक्रमानुसारे विकराल वर्ग संघर्ष देखार होइत अछि। सर्वे एला पछाति गरीबक जमीन कागतपर तँ आपिस होइत अछि मुदा जंग बहादुर सिंह सन जमीन्दार दुसाध आ मुसहर समाजकेँ जमीन दइले तैयार नै अछि। वर्ग संघर्ष करैले सरूप उद्यत भेल। सरूपक दलमे जजाति कटैले गेनालाल सन माटिक पूत मात्र छल। जंग बहादुरक हँसेरीदल लोहा सिंहक नेतृत्वमे सरूपपर हमला कऽ देलक। अनुजकेँ वचेबाक क्रममे गेनमा मारल गेल। ऐ वर्ग संघर्षक अंत औचित्वहीन लगैत अछि। सन् १९६५ ई.मे भारत आजाद भऽ गेल छल। तखनि दलित समाजक एकटा माटिक लाल सामन्तवादी तत्वक आगाँ लुप्त भऽ गेल आ जंगबहादुर सन सामन्तीक ओइठाम पुलिस पहुँचल नै हएत...। ई अत्यन्त हास्यास्पद लगैत अछि। जौं ऐ तरहक घटना भेलो हएत तैयो उपन्यासकारकेँ ऐमे क्रांति अनबाक प्रयास करबाक छेलनि। साम्यवादी लेखनीसँ निकसल उपन्यासक अंश अत्यन्त निर्बल मानल जाए।

ऐ घटनासँ पूर्ब बिजलीक चरित्रपर आधात दुर्योधन सिंह सन सिपाही करैत अछि। ओकरा सरूप काटि दैत अछि। पुत्रकेँ जेहलसँ बँचबैले बिसेखी सभ दोख अपना ऊपर लऽ जहल चलि जाइत अछि जैठाम संग्रहणी सन बेमारीसँ ओकर मृत्यु भऽ गेल।

बिसेखीक चरित्रक काल-क्रमानुसार परिवर्त्तन उपन्यासक सबल पक्ष मानल जाए। पहिने जखनि चोर छल तँ ओकरा किछु नै भेल आ जखनि किछु नै केलक तँ पुत्रमोह आ पारिवारिक मर्यादाक कारणेँ सजा भेटल। बी.सी. कैरेक्टरक चोरसँ मुक्ति पाबए लेल कलक्टरक आगाँ सप्पत खेने छल। ओइ सप्पत खेबामे घुरन दुसाध, मंडर पाण्डे, खख्खन जट्ट, रौदी

खलीफा आ बुच्ची झा सन चोर सेहो छल। उपन्यासकार द्वारा चोरक नाओं चयन करैमे ई स्पष्ट भऽ गेल चोरक कोनो जाति नै होइ छै, समाजक अग्र आसन बैसैबला लोककेँ सेहो कुकर्मी समाजमे स्थान छन्हि। ई उपन्यासकारक समन्वयवादी सोच मानल जाए।

आब बिसेखीक परिवारमे पुरुष पात्रक रूपमे बचैत अछि- सरूप। सरूपकेँ ललित पृथ्वीपुत्र बनेबाक कोनो अबसरि नै छोड़ै छथि। ऐ उपन्यासक ओ वास्तविक नायक अछि। अपन पिताकेँ चोरि नै करबाक सप्पत खाइत काल लड़खड़ाइत देखि ओ क्रोधित भऽ जाइत अछि। ओकरा चोरि करब कथमपि पसिन्न नै। जंगबहादुरकेँ ललकारि जजाति काटि लेबाक उपक्रममे शोषित समाजक ओ ''क्रांतिवीर'' बनि जइले उद्यत अछि। बहिनक आँचरपर दुर्योधन सिंह सन सिपाहीक हाथ देखि ओकर हत्या कऽ केलक। सरूप कर्मवादी सत्पुरुष अछि। जाधरि बेनीकेँ सरूपक माए एकर अंक नै लगलनि ताधरि ओइ भाउजमे सरूप मात्र श्रद्धापूर्वक मातृत्व रूप देखलक। ऐ दलित समाजक आदरणीय पात्रकेँ ललित एकठाम कलंकी चरित्र बना देलनि। कल्पनाथ मिसरक अनर्गल सिनेहसँ बँधलि बिजलीकेँ सरूप आत्मसात केना केलक। एकठाम भाउजिक विषक्त हँसी आ व्यंग्यवाणसँ आकुल भऽ सरूप बिजलीपर क्रोध तँ करैत अछि मुदा सम्पूर्ण उपन्यासमे कलपू मिसरक प्रसंगमे पृथ्वीपुत्र चुप्प रहि गेल। सिनेह कोनो अपराध नै, कियो केकरोसँ कऽ सकैत अछि, मुदा ऐ सिनेहक कोनो निष्कर्ष नै। सरूप सन सोझ मानसिकताक पुरुष ऐ अनर्गल सिनेहकेँ केना समर्थन देलक। बिजली ठाम-ठाम औचित्यहीन सिनेही जकाँ बेनीसँ अपन प्रेमकेँ सबलता प्रदान करैले निरर्थक संवाद करैत अछि। ऐसँ इहए प्रमाणित होइत जे ऐ नारीकेँ अपन माता-पिता आ भाइक मर्यादाक कोनो बोध नै। तखनि एकठाम महान दार्शनिक जकाँ बिजलीकेँ दृष्टि पटलपर राखब उपन्यासकारक अदूरदर्शिता छन्हि। जखनि कलपू मिसर अपन माइक राखल अभरन बिजलीकेँ पहिरबाक अनुरोध करैत अछि तँ ओ बजैत अछि जे-

''ओ गहना पहिरब तँ हम जरि जाएब। जखनि बिजली एतेक बुद्धिमती महिला अछि तँ अपन मान-मर्यादा अपन बाप-पुरूखाक द्वारा बनौल बेवस्था अर्थात् पाणिग्रहण संस्कार द्वारा वरणेय हीरालालकेँ किए छोड़ि देलक। ई

निश्चित रूपे जातीय संकीर्णतासँ बान्हल उपन्यासकारक बेक्तिगत अनर्गल सोच छन्हि।''

जौं ऐ उपन्यासमे वर्ग-संघर्ष देखाएब यथार्थबोध मानल जाए तैयो ऐमे कमजोरी अछि। वर्ग संघर्षमे हत्या आ ओइ हत्या पछाति केनिहारकेँ कोनो सजा नै, अत्यन्त निर्बल पक्ष छी। कलपू मिसर आ बिजलीक सिनेहमे बिसेखीक परिवारक कोनो तीक्ष्ण अवरोध नै देखाएब दलित समाजक चेतनापर आधात मानल जाए। समाजक कात लागल वर्ग सवर्ण आ सामन्तवादी लग अपन घरक गणिकाकेँ परसि सकैत अछि... सर्वथा असंभव। दलित समाजक नारीसँ सवर्ण समाजक पुरुष बेवाक गप तखने कऽ सकै छथि जखनि हुनक विचार आ चरित्र विश्वसनीय हुअए। भऽ सकैत अछि बिजली सन कोनो विशेष नारी एहेन मानसिकता रखै छथि वा होथि मुदा परिवारक आन लोक ऐ तरहक सिनेहकेँ कथमपि नै स्वीकार करत। जौं एकर अंत दुनूक बिआह देखा कऽ कएल जइतए तँ ई उपन्यास अबस्स दूरगामी होइतए। अंर्तद्वन्द्वसँ भरल समाजसँ ललित कोनो अलग नै छथि तँए सभ सकारात्मकताक आश राखब उचित नै।

एतेक तँ निश्चित जे पृथ्वीपुत्र शिल्पमे बड़ नीक स्थान रखैत अछि। बिम्ब कोनो विशेष नै मुदा समाजक अंतिम वर्ग धरि पहुँचल तँए व्यापक मानल जाए। जितपुर मौजाक टोल बबुरबन्नाक गाथा, मुदा टोलमे खएरक बोन बबूरसँ बेसी मुदा नाओं बबुरबन्ना। वास्तविकता अछि सामर्थ्यवान लोक कम रहितौ पूजनीय होइत छथि, उपन्यासकारक दृष्टिकोण सम्यक् आ समन्वयवादी ऐठाम तँ अबस्स लगैत अछि। भाषा ओ शैली गतिमान आ खाँटी ग्रामीण आंचलिक मैथिलीमे लिखल गेल जे ललितक योग्यताक प्रत्यक्ष प्रमाण छी। आचार्य रमानाथ झाक ऐ मतसँ हम सहमति नै रखै छी जे हास्य रसक अभावमे पृथ्वीपुत्र झुझुआन लगैत अछि। जखनि स्थिति कनबाक हुअए तँ हास्य समागम संमव नै ऐ उपन्यासमे हास्य रसक समागम करब निरर्थक होइतए।

ऐ पोथीक सभसँ सकारात्मक पक्ष छी समाजक यथार्थवादी बेवस्थाक मौलिक चित्रण। जाति-पातिमे टुटल समाजक सत्यकेँ स्पष्ट देखबैत उपन्यासकार एकठाम एहेन साहस कऽ देलनि जे संभवत: सबल समाजमे

जनमल दोसर साहित्यकारसँ अबस्स असंभव होइतए। पृथ्वीपुत्र पड़ाइनवादक विरोध करैत अछि। जमीन्दार कृषिकार्य स्वयं नै करता, मुदा जमीनक सकल उत्पाद आ स्वामित्व हिनके भेटनि, ऐ कटु सत्यसँ ललित विलग छथि। हिनक लेखनीसँ क्रांतिक सुगंध पसरल जे जमीन ओकरे हएत जे एकरा जोतए। वास्तविकता सेहो छै साम्यवादी बेवस्थामे कर्म पुरुषकँ कर्मक फल अबस्स भेटबाक चाही। जे संतान माए-बापक प्रति अपन कर्त्तव्य पालन नै करए ओकरा मातृ-पितृ सिनेह मंगबाक कोनो अधिकार नै। अपन पसेनासँ माटि कोरि जे मजूर धरतीकँ बाँझ होइसँ बँचाबथि हुनके ऐ माटिक स्वामित्व भेटबाक चाही।

जौं ऐ प्रकारक सोचकँ सबलता प्रदान कएल जाए तँ कृषि प्रधान देशमे अपन मौलिक कर्मसँ लोक विमुख भऽ पड़ाइन नै करता। प्राकृतिक संतुलनकँ जीवन्त राखब सभक मौलिक कर्त्तव्य छी। ऐ तरहक साम्यवादी दृष्टिकोण मैथिली साहित्यकँ अबस्स नव दिशा देलक। निष्कर्षत: पृथ्वीपुत्र किछु अर्न्तद्वन्द्वसँ भरल रहला पछातिओ मैथिली साहित्यमे नव चेतना भरैले अनुगामी उपन्यास मानल जाए।



३३.

मैथिली उपन्यास साहित्यक विकासमे हरिमोहन झाक योगदान ::

मैथिली उपन्यास साहित्यक इतिहास बेसी प्रचीन नै अछि। ऐ भाषाक पहिलुक मान्य उपन्यासकार जनसीदन छथि। ओना तँ हरिमोहन झा बिम्ब ओ शिल्पाच्छादित आवरणसँ युक्त कथाकारक रूपेँ चर्चित छथि, किएक तँ चर्चरी सन हास्य ओ मर्मक समागम हिनक अन्य विधाक कृतिमे नै भेटैत, परंच साहित्यक जगतमे हिनक पदार्पण पाठकगणकेँ जइ कृतिसँ झंकृत केलक ओ छी सन् १९३३ ई.मे हिनक लिखल उपन्यास कन्यादान ओ सन १९४५ ई.मे हिनक दोसर उपन्यास- द्विरागमन।

जखनि उपन्यास विधामे हरिमोहनक पदार्पण भेलनि तँ ई विधा काँच छल। अखनि धरि जनसीदनक निर्दयी सासु, शशिकला, कलियुगी सन्यसी, पुनर्विवाह, द्विरागमन रहस्य जीवछ मिश्रक रामेश्वर, पुण्यानंद झाक मिथिला दर्पण आ डॉ. काँची नाथ झा किरणक चन्द्रग्रहण सन किछु जनप्रिय आ साहित्योपयोगी उपन्यास सभ पाठक लग पसरल गेल छल। मुदा कोनो उपन्यासमे ओ शक्ति वा आकर्षण नै छल जेकरा मैथिली पाठक पूर्णत: आत्मसात करथि। किएक तँ पोथी कीनि कऽ पढ़बाक दृष्टिसँ जौँ मूल्यांकन कएल जाए तँ मैथिलीकेँ आन भाषाक पाठकसँ बेसी उदासीन मानल जाए। जइ भाषा साहित्यक प्रति पाठकमे ओ भक्ति-समागम नै ओइ भाषामे हरिमोहन सन उपन्यासकारक पदार्पण अबस्स क्रांतिकारी मानल जाए किएक तँ हिनक रचना शैलीमे ओ आकर्षण तँ अबस्स अछि जेकरा कारणेँ उदासीन पाठक वर्ग सेहो पोथ्ज्ञी कीनि कऽ पढ़ैले वाध्य भऽ जाइ छथि।

कथा बिम्बक आधारपर जौँ निर्णए लेल जाए तँ कन्यादान कोनो विशेष कथाक वाचक नै। मिथिला समाजक एकटा विकट मुदा सभसँ महतपूर्ण संस्कार विआहकेँ केन्द्र बिन्दु बना कऽ लिखल गेल ऐ उपन्यासमे कथानक बड़ कमजोर अछि। बेटी जनम लैत देरी माएकेँ ओकर बिआहक चिन्ता भऽ जाइ छन्हि। तँए संभवत: बर भेटल नै मुदा कनियाँ माइक ओरिऔनसँ उपन्यासक आदि भेल।

बारह अध्यायमे विभक्त ऐ उपन्यासकेँ कनियाँ माइक ओरिऔन, सभागाछीक दृश्य, तार केना पढ़ल गेल, जहाज परक गप-सप्प, गोसाँओनिक गीत, मिस्टर सी.सी. मिश्रा जटिल समस्या, गुप्प परामर्श, कौतुक, कन्यादान, चतुर्थीक राति आदि शीर्षकमे बॉटल गेल अछि। अंतिम शीर्षक प्रश्नवाचक किएक तँ दर्शनशास्त्रक ज्ञाता हरिमोहन झा धरि एकटा प्रश्न छोड़ि उपन्यासक इति श्री केलनि।

लालकका आ लालकाकीक कन्या बुचिया उपन्यासक नायिका छथि जनिक बिआह चण्डीचरण मिश्रा सन मात्र कहैले मैथिलसँ होइत अछि। सी.सी. मिश्रा अपन संस्कृतिसँ विलग वहसल एडभान्स लोक छथि। जिनका अपन अर्द्धांगिनीसँ बहुत रास आश छन्हि। बुचियाक जेठ भाय रेवती रमण ई जनै छला, मुदा अपन बहिनक भविस उज्जलव करैले मिथ्याक डोरिमे लटकि सी.सी. मिश्रासँ अपन बहिनक पाणिग्रहण तँ करबा लेलनि, मुदा चतुर्थीक रातिमे नव विवाहित दंपति बिनु आत्मिक वरन् केने विलग भऽ जाइ छथि।

सी. सी. मिज्ञा जे अपनाकेँ कखनो कान्ट तँ कखनो कालिदास सन वद्वत मानै छथि सत्य जानि लेला पछाति बुचियाकेँ छोड़ि भागि गेला। कोबरघरमे रहि गेली कनैत बुचिया ओइ पत्रक संग जे सी. सी. मिश्रा रेवती रमणक नाओंसँ लिखि छोड़ि गेलनि। पत्रमे अशिक्षित कन्याक संग शिक्षित पुरुषक विष्झमताकेँ लिपित कएल गेल अछि। ऐ तरहेँ अंत करैले हरिमोहन जीक बड़ आलोचना भेलनि तँए समाधान करैत द्विरागमन लिखैले उपन्यासकार विवश भऽ गेलखिन।

हरिमोहनजी मिथिलाक सामाजिक अवस्थापर प्रहार करैत बुचिया सन अशिक्षित नारीमे चेतना अनबाक प्रयास तँ करै छथि, मुदा ई बिसरि गेलखिन जे सी. सी. मिश्रा सन पात्र आ ओकर संवादक जे रूप ऐ उपन्यसमे प्रस्तुत कएल गेल ओ ''मैथिली''पर आधार मानल जाए। ओहेन पात्रकेँ नायक बनेबाक कोनो प्रयोजन नै जेकरा मैथिली संस्कृतिसँ लेस मात्र सिनेह वा ऐठामक बेवस्थाक कोनो ज्ञान नै हुअए। हिनक ''ग्रेजुएट पुतोहु'' कथाक नायाकि सेहो विदुषी आ एडभान्स महिला छथि परन्च हुनक संवाद सभठाम खँटी मैथिलीमे छन्हि। सी.सी. मिश्रा अंग्रेजी आ हिन्दी मात्र बजै छथि। मैथिली उपन्यासमे आन भाषक एतेक बेसी प्रयोगसँ एकर अपन संस्कार केना

बाँचत...? हरिमोहनक सभसँ पैघ कमी ऐ उपन्यासक महतपर अबस्स ग्रहण लगा देलक।

किछु मैथिली साहित्यकारक ई प्रवृत्ति रहल छन्हि जे जौं हिन्दीक प्रयोग कएल जाए तँ रचना आर सारगर्भित मानल जाएत आ लोक योग्य बुझता। हरिमोहन विषए मर्ममे झाँपल यथार्थक हृदैस्पर्शी साहित्यकार छथि तँए हिनकासँ पाठक ई अपेक्षा तँ कथमपि नै रखलक। हास्य समागमसँ युक्त कन्यादानक संवाद उच्च कोटिक अछि। सी. सी. मित्रा हिन्दू विश्वविद्यालयक साहित्यक शोधार्थी तँ छथि मुदा कन्यादानमे हुनक स्थान एकटा पाश्चात्य संस्कृतिकेँ जानय बला जोकरसँ बेसी नै। बुचिया तँ बुचिए छथि। मि. मिश्र जखनि जिज्ञाशा केलनि जे क्या तुम नर्सिंग जानती हो...? बुचिया मनमे सोचली नरसिंह तँ गामक कोतबालक नाओं छै, देखू तँ भला हमरा कोतबाल लगा कऽ गारि पढ़ैत अछि...।

ऐ अज्ञ अवलाकेँ रेवती रमण सन भाय केना सी. सी. मिश्रा सन ‘‘पाश्चात्य-जोकर’’क हाथमे सौंपि देबाक निर्णए केलक। ऐ लेल रेवती रमण जीकेँ अपन अर्द्धांगिनी बड़गामवाली सन नारी द्वारा मि. मिश्राक संग छल करबए पड़ै छन्हि। ऐ तथ्यमे सत्यता झलकैत अछि। हमरा सबहक समाजमे बड़का गामवाली सन नारीकेँ केतेक बालाक पैतराखनि बनए पड़ै छन्हि।

एक अर्थमे ई उपन्यासक सबल स्थिति सेहो मानल जाए जे सन् १९३३ ई.मे जखनि पुरुष वर्गक अधिकांश लोक हमरा सबहक समाजमे अशिक्षित छेलथि ओइ कालक नारीमे शिक्षा-विकासक एहेन कल्पना हरिमोहनसँ पूर्ब मैथिलीमे निश्चित नै भेल।

हिनक कथा वा उपन्यास किछु हुअए एकटा बड़ सकारात्मक तथ्य भेटैत जे हिनक कृतिक महिला पात्र सदिखन गतिशील रहै छथि, बैसि कऽ सोचैत नरीक चर्च बड़ कम ठाम देखैमे आएल। कन्यादानमे सेहो लालकाकी झट दऽ आवेश रानीक पैरक कनगुरिया आंगुरकेँ दाबि देलखिन, मुनियाँ माए चमकि कऽ घैल उठेलक आ लालकाकी द्रपसि कऽ मोटरी खोलए लगली सन क्रियाशील महिला समाजक दर्शन हरिमोहन झाक मैथिल संस्कृतिक आत्म आवलोकनक संग-संग नारी चेतनाक दर्पण मानल जाए।

ठुनमुनकाकी आ लालकाकी दुनू दियादीनी खूब लड़ै छथि। भोलानाथ झाक पत्नी ठुनमुनकाकी गर्भवती छथिन। लड़बाक क्रममे गर्भ लगा कऽ सप्पत सेहो खाइत छथिन, मुदा बुचियाक बिआह लेल ओरिऔनमे हुनक सहभागिता कने कनियाँ माएसँ कम नै। एकटा ''संयुक्त परिवारक'' महतपूर्ण सक्ल पक्ष मानल जाए। लालकाकीक पुतोहु बड़कागामवाली शिक्षित नारी छथि सदिखन किताबे संग लटपटाएल रहैवाली बड़कागाम वाली कनियाँ बिआह लेल चंगेरा नै साँठती। आ ने चूल्हिए लग बैसती, मुदा जखनि महीन काज अर्थात् सी. सी. मिश्राकेँ बिआहक पूर्ब कनियाँसँ गप करबैले नाटक करबाक आवश्यकता भेल तँ रेवती रमण हिनकेसँ कनियाँक अभिनय करेलनि।

ठकबा जे ऐ उपन्यासक अदना पात्र अछि ओकर माथक मोटरीमे भोलानाथ झाक पनही सेहो बान्हल छन्हि। ई समाजक कटु सत्त्ा केकरो पएरक पनही केकरो माथपर ई समन्वयवाद समाज लेल कलंक किए नै मानल जसए। तखनि जौं वएह ठकबाक पुत्र जखनि अधिकारी बनि भोलानाथ झाक संतानक संग बदला लैत अछि तँ अग्र आसनपर बैसल लोक अकुला जाइ छथि। ओना एहेन बदलल परिस्थिति तँ हरिमोहनक उपन्यासमे कथपति नै भेटत किएक तँ हरिमोहन झाक कृति ब्राह्मवादी समाजक वृत्तिचित्र छन्हि। ऐमे समाजक कात लागल वर्गमे मुनियाँ माए सन पैनभरनी आ ठकवा सन खबास मात्र अछि तँए हिनक उपन्यास सम्पूर्ण समाजक प्रतिनिधि कृति कथमपि नै भऽ सकल।

उपन्यासकार दलित वा परदलितक मर्मक स्पर्श तँ नै केलनि मुदा ब्राह्मणेमे ऊँच-नीच आ उत्तर-दक्षिणसँ क्षुब्ध अबस्स छथि। हरिमोहन जीक मातृक अबस्स भलमानुषक गाममे छन्हि मुदा पैतृक भूमि कुमर बाजितपुर वैशली भदेसमे, तँए भदेसक मर्मसँ आकुल तँ अबस्स छथि। सभागाछीक दृश्मे टुन्नी झा कनेक खखसि कऽ बजला-

''मानि लियऽ बरक घर दक्षिणे भर छन्हि तऽ हर्ज की...? सेहो बेसी दूर नहि- दलसिंह सराय सँ चौदह कोसपर घर छन्हि।'' मूलक चर्च भेलापर बिआहक अगुआ अर्थात् सभागाछीक दलाल कहै छथि जे मानि लिअ शुरगने छथि...,

ऐ सभ कटु सत्यसँ प्रमाणित होइत अछि जे जखनि ब्राह्मण-ब्रह्मणक मध्य मौलिक विषमता तँ मिथिलामे समन्वयवाद केना आबय...?

गंभीर चिन्तनयोग्य विषएकँ हरिमोहनजी हास्यक माध्यमसँ चर्च कऽ उपन्यासकँ लोकप्रिय तँ अबस्स बना देलनि मुदा गंभीर चिन्तनकँ हास्यक बोरिसँ लिप्त केलासँ एकर उदेस अबस्स लुप्त भऽ गेल। एकरा सुयोग्य उपन्यासकारक अदूरदर्शिता मानल जाए।

किछु समालोचकक तर्क भऽ सकै छन्हि जे हरिमोहन जीक ऐ कृतिक उदेस समाजक विकृतिकँ नागट करबासँ बेसी ''हास्य समागम'' करैले छेलनि, मुदा ऐ तर्कसँ हम सहमति नै रखै छी। कोनो हास्य जे समाजिक आ पारिवारिक समता आ शांतिकँ बाधित करए ओ समाज लेल कखनो स्वीकारर्य नै भऽ सकैत अछि। कालीदासचरित्रसँ प्रभावित सी. सी. मिश्रा बुच्चीदायकँ ''विधोत्तमा'' बना कऽ स्वीकार करता, ई परिस्थिति उपन्यासक कमजोर पक्ष छी। कहबी छै-

''बड़ो से ने कीजिए ब्याह-प्रति और वैर''

ऐ विस्मयकारी उपन्यासमे विषम परिस्थिति जौं मात्र हास्य समागमक लेल आएल तैयो उचित नै। एक उपन्यासमे समस्या आ दोसरमे जा कऽ ओकर निदान ई रचनाकारक कलात्मक कृति कखनो नै मानल जा सकैत। मात्र हँसैले झारखण्डीनाथ, बटुक आ तोतराह पंडित नमोनाथ झा सन पात्रक उपस्थिति तँ प्रासंगिक मुदा हँसीक पात्र बना कऽ बुचियाकँ कोवरमे कनैत छोड़ि उपन्यासक अंत देखाएब नारी जातिक अपमानसँ बेसी किछु नै।

ऐ सभ कमजोर तथ्यसँ भरल रहला पछातिओ ''कन्यादान'' मैथिली साहित्यमे महतपूर्ण स्थान रखैत अछि किएक तँ पाठकगण ऐ कृतिकँ हिआसँ स्वीकार कऽ नेने छन्हि।

कन्यादानक लोकप्रियताक मौलिक कारण छी ग्राम्य जीवनक आधारभुत घटनाक चित्रणमे सहज मौलिकताक अनुपालन। हास्य समागम तँ स्वाभाविक किएक तँ ई रचनाकारक प्रकृति ओ प्रवृति रहल छन्हि। हास्यक क्रममे गंभीर दर्शन तँ हँसीमे उधिया गेल मुदा कोनो ठाम साहित्यिक मर्यादा ओ अनुगासनपर ग्रहार नै देखैमे आएल। ई उपन्यासकारक प्रांजल आ प्रवीण रचनाशीलताक द्योतक मानल जाए। जखनि बर अर्थात् सी. सी. मिश्रा

महिला मंडलीक मध्य बिआहसँ पूर्ब परीक्षण हेतु अबै छथि तँ अपन नाओं सी. सी. मिश्रा कहै छथिन। क्षणेमे महिला मंडलीक एकटा बालिका सदस्याक चुटकी... तखनि तँ बापक नाओं बोतल मिश्रा हेतनि। अतिवादी प्रवृतिक लोक पर हास्यक माध्यमसँ अनुशासित प्रहार गामक रीति-रिवाजक अतिक्रमणक प्रयासपर सहज रूपसँ कएल गेल। कनियाँ माइक ओरिऔन अध्ययाय पूर्णत: सहज मैथिल नारी समूहक झलकि देखबैत अछि। ऐठाम ई पूर्णत: मौलिक आ वास्तविक लगैत। संवादक भाषा आ शैलीसँ स्पष्ट भऽ जाइत जे हरिमोहनजी अपन संस्कृति आ रीति-रिवाजकँ आत्मसात केने छथि।

२
द्विरागमन

आत्मासँ जीबाक प्रवृति रखेबला लोककेँ जखनि परिस्थितिवश अविरल स्नात जीवन शैलीकेँ जीबाक अनर्गल प्रयन्न करए पड़ै छै तँ जीवनक शैलीमे परिवर्त्तन अवश्यंभावी भऽ जाइ छै। इहए दशा मौलिक रसास्वादन करैत अपन साहित्य साधनासँ समाजकेँ अनुशासित स्वस्थ मनोरंजन देबाक प्रयन्न करैबला आशुकथाकारकेँ सेहो होइत अछि।

हरिमोहन बाबू हास्य सम्राट छथि। मैथिली कथाकेँ जनप्रिय बनेबाक दृष्टिएँ हिनक प्रयास अतुलनीय मानल जाइत अछि। गंभीर चिन्तन हेतु अनुशीलन करैले सामाजिक अर्न्तद्वन्द्व ओ विडम्बनाकेँ अपन सरल शैलीमे आरोहन कऽ मैथिली साहित्यकेँ मनोरम रसास्वादन प्रदान केलनि। किछु व्यतिक्रमक क्रममे हास्य सम्राट ई बिसरि गेलथि जे गंभीर विषए हास्यक छाल्हीक तरमे पानि-पानि भऽ गेल छल। जेकर प्रत्यक्ष प्रमाण हिनक चर्चित उपन्यास ''कन्यादान'' मानल गेल। सगरो आलोचनाक बाढ़ि आबि गेल छेलनि। ''बुच्ची दाइ''केँ एहेन अवस्थामे आनि कऽ किएक छोड़ि देलनि? ओना ई कोनो असहज नै। मिथिलाक तथाकथिक भलमानुषक परिवारमे अखनो बहुत ठाम ''बुच्ची दाइ'' कानि रहल छथि। अपस्याँत छथि केतौ अपन सासुरक पीड़ासँ तँ केतौ अपन नैहरक देल लावण्य दुखमयी अश्रुसरितासँ। जौं विधवा भऽ जेती तँ समाजकेँ स्वीकार्य भऽ जाएत किएक तँ उज्जर साड़ीमे वाला सवल समाजकेँ मान्य छै। मुदा शिक्षा विहिन बुच्ची दाइकेँ छोड़ि पाश्चात्य जरदगब सी.सी. मिश्रा केना भागि सकै छथि...?

बेटी दोसरक लाज होइत। ओकरा इस्कूल नै पठा कऽ लालकाकी केना गलती नै केलखिन...।

हरिमोहन जीक ऐ उदेसहीन उपन्यासक आलोचना हिनका समस्याक तत्काल समाधान करैले प्रेरणा देलक। आशु कथाकार समाजक देल उपहासकेँ बर्दाश्त नै कऽ सकल आ तत्क्षण एकर समाधान लिखैले उद्यत भऽ गेल। शीर्षक देल गेल ''द्विरागमन''।

स्वाभाविक छै बेटी कोनो ढोलनाक ताग तँ नै जे सड़ि गेला बाद

निकालि कऽ दोसर तागमे गाँथल जाए। तँए द्विरागमन दोसर केना करत। सी.सी. मिश्र पाश्चात्य जोकर बुच्ची दाइकेँ मोडर्न वाला बना कऽ द्विरागमन करत। कोनो न्यायाधीशसँ साक्ष्यक अभावमे नै चाहैत निर्दोषकेँ सजा दइ छै तँ ओकर शब्द-शब्दक तादात्म्य अनर्गल लगैत। तहिना हरिमोहन जीक द्विरागमनमे जइ-जइ समाधानक बिन्दुक उत्कर्ष भेल ओ वएह प्रमाण नै दऽ सकल जेकर हरिमोहन अधिकारी छथि।

द्विरागमन अपन मोनकेँ जवरदस्ती मनौअल करा कऽ हरिमोहन लिखलनि। एतेक तँ निश्चित अछि नैसर्गिक प्रतिभाक धनी उपन्यासकार केतौ ऐ कचोटकेँ प्रत्यक्ष नै केलनि। संग-संग कोनो पारखी ई दु:साहस नै कऽ सकैत अछि जे ऐ उपन्यासक मान्यतापर प्रश्नचिन्ह लगौत। द्विरागमन सेहो कन्यादाने जकाँ अध्यायमे विभक्त अछि। प्रयोगवादिताक एहेन प्रमाण मैथिली साहित्यक महाकाव्य विधामे मनबोध आ प्रवासी तथा काव्य विधामे नचिकेताकेँ छोड़ि संभवत: आनठाम नै भेटत। मिस विजली विश्व-विद्यालय अज्ञात यौवना आ मुग्धा छथि। सी.सी. मिश्रा हुनक फैन भऽ गेल छथि। सम्पूर्ण भाषणमे आर्यक मूल भाषक श्लोकक तार्किक विवेचन विश्व विद्यालयक संग-संग चण्डीचरणकेँ झकझोकरि देलक। विद्योत्तमा ''कालीदास'' केँ कुमारसंभवमक नायक बना देने छेली तँ ऐठाम चण्डीकेँ अपन ''बुच्ची दाइ''मे सुयोग्य पाश्चात्य वालाक आश जागव उपन्यासक यथार्थवादी क्रांति मानल जाए। जे मैथिली साहित्य लेल तत्क्षण तँ बेछप्प अबस्स छल। मिस विजलीक भाषणमे जे आधुनिकताक लेब उपन्यासकार देखेबाक प्रयास केलनि ओ पुरुष प्रधान संकुचित मानसिकतासँ भरल तथाकथित मिथिलाक सवल अर्थात् सवर्ण समाज विशेष कऽ कऽ ब्राह्मणमे अखनो स्वीकार्य नै ओइ काल तँ सर्वथा असंभव छल। अखनो हमरा सबहक समाजमे स्त्रीकेँ सहचरी नै अनुचरी मानल जाइत अछि। अपन वेवाक हास्यसँ हरिमोहन तत्कालीन सार्मथ्यवान सबल मैथिलक अर्न्तदशापर तीक्ष्ण प्रहार केलनि, मुदा हास्य समागम मिश्रित रहबाक कारणे ओ समाज एकर मर्मकेँ बूझि नै सकल। जौं सभटा गप शुष्क दार्शनिक अंदाजमे लिखल जाइतए तँ हरिमोहन जीक द्विरागमन ओहिना अक्षोप भऽ जइतए जेना साम्यवादी जगदीश प्रसाद मण्डल जीक ''मौलाइल गाछक फूल'' आ सुभाष चन्द्र यादव केर ''घरदेखिया'' आ ''बनैत विगड़ैत''क

अछि। एकटा ब्रह्मण साहित्यकार द्वारा मनुवादी प्रवृतिपर प्रहार समाज द्वारा मान्य तँ भेल मुदा मात्र हास्य आ रोचकताक कारणे। जौं हास्य नै रहितए तँ चतुरानन मिश्रक ''कला'' जकाँ दुतियाक चान मानल जेबाक संभावनाक विशेष छल। ''अकाण्डताण्डव''मे लालकाकी, आवेश रानी, तारादाइ आ दुलारमनिक संवाद रूचिगर लगैत अछि। ऐठाम मिथिलाक परम्परावादी दृष्टिकोणकेँ उत्तम देखेबाक मूल कारण उपन्यासकार नारी शिक्षा ओ चेतनाक संग-संग अनुशीलनक अभाव मानै छथि। एतेक तँ स्पष्ट अछि जे रेवती रमण सन शिक्षित भाइक कारणे सकल ग्राम्य नारी पात्रा बुच्ची दाइकेँ आधुनिक बनबैले तैयार भऽ जाइ छथि। पति परमेश्वर होइत अछि। ओकर इच्छाकेँ केना नै पूर्ण कएल जाएत। ब्राह्मण परिवारक स्त्री केना दोसर बिआह करती? ऐ प्रकारक कल्पना हरिमोहन करबाक साहस नै कऽ सकला। ओ स्वयं परम्परावादी समाजक अंग छथि। तँए परम्परा आ आधुनिकतामे सामंजस्य स्थापित कराबाक इच्छाशक्तिकेँ नवल रूपेँ सजा कऽ बुच्ची दाइकेँ आधुनिक बना देलनि। कन्यादानमे उदेसहीन अंतिम यात्राक परिणति इहए भेल जे एकटा मूर्ख वालिकाकेँ जबरदस्ती तेतेक आधुनिक बना देल गेल जे वर्तमान परिस्थितिमे सेहो ग्राह्य नै भऽ सकैत अछि। ओइ काल लेल तँ सर्वथा अनुपयुक्त भेल हएत। जे बुच्ची दाइ पहिल राति सी.सी. मिश्राक ''नार्सिग'' शब्दकेँ नरसिंह लगा कऽ गारि बूझि गेली ओ आब डलसीक स्थानपर ''क्रोटन''क गमला मंगबाक प्रेरणा अपन माएकेँ दइ छथि- ई तँ सर्वथा अपच्च मानल जाए। ओना ''देशी मुर्गी विलायती बोल'' परिस्थिति वश संभव छै मुदा प्रकृति ओहूमे गाममे रहि कऽ वएस भेल मुरुख वालाकेँ शिक्षित बना कऽ एहेन परिवर्तन करबाक चेष्टा उपन्यासकारक अदूरदर्शिता मानल जाए।

अशिक्षित पुरुष वा नारी जखनि परिस्थितिवश पाश्चात्य संस्कृति आरोहण करैत अछि तँ चालिमे परिवर्तन संभव छै।

मुदा ऐठाम बुच्ची दाइमे शिक्षाक क्रमिक विकास देखौल गेल। पतिक आलिंगन आ सिनेहसँ विमुख नारीकेँ परीक्षास्वरूप आधुनिक बनए पड़ल ऐ प्रसंगमे तँ बुच्ची दाइकेँ आर गंभीर बना देबाक आवश्यकता छल। मात्र लोकप्रियता आ छद्म साहित्य लोलपताक कारणे एतेक अलौकिक परिवर्तनकेँ

समाज लेल कोनो रूपेँ दिशा निर्देशित नै मानल जा सकैत। हरिमोहन सन पारखी रचनाकारक लेखनीक कमाल मानल जाए जे शैली ओ प्रवाहक संग-संग रोचकताक कारणे ''द्विरागमन'' लोकप्रिय भऽ गेल अन्यथा जौं सामान्य साहित्यकारक ई प्रयास रहितए तँ कोनो रूपे साहित्य लेल उपयुक्त नै मानल जइतए। भाषा शैली ओ प्रवाहमे द्विरागमन अभूतपूर्व कृति छी ऐमे कोनो संदेह नै। सरल ग्राम्य समाजक शब्द ''धी-डाही''सँ लऽ कऽ पाश्चात्य उपक्रम धरि केतौ ई नै बुझना जाइत अछि जे हरिमोहन ओइ समाजक अंग नै छथि जइ समाज लेल संवाद लिखल गेल। अर्थात् अज्ञसँ लऽ कऽ विज्ञ धरि गामक ''जरलाही'' सन शब्द बाजैवाली महिलासँ लऽ कऽ मिस विजलीक भाषण धरि एकरूपता देखा कऽ ई प्रमाणित तँ अबस्स केलनि जे हुनकासँ पैघ रोम-रोममे पुलकित ''मैथिली पुत्र'' ताधरि तँ अबस्स नै भेल छल।

❍❍❍

३४.कला :: सबल समाजक अर्न्तद्वन्द्वपर सकारात्मक प्रहार

साम्यवाद मात्र कोनो राजनैतिक चेतना नै अतिक्रमणवादी बेवस्थाक विरूद्ध एकटा समाजवादी विचारधारा छी। मैथिली साहित्यक संग ई बड़ पैघ विडम्वना रहल जे वचनसँ तँ बहुत रास रचनाकार अपनाकेँ साम्यवादी मानै छथि मुदा जखनि कर्मक बेर अबै छन्हि तँ केतौ कोनो सार्थकता नै। इतिहास साक्षी अछि कोनो भाषा साहित्यक विकास ओकर विचारधाराक सम्यक् सम्पोषणपर निर्भर रहल अछि। यूनानी साहित्यकार होमरक इलियड आ ओडेसी, कार्ल्स मार्क्सक दास कैपिटलसँ लऽ कऽ मैक्सिम गोर्की मदर आ माओत्से तुंगक आनकन्ट्राडिक्सन सन सारगर्भित विदेशी पोथी समन्वयवादक स्थापना लेल क्रांतिक द्योतक छी। लियो टाल्सटाय आ लेनिन ऐ दर्शनमे सूरमाक काज केलनि। आर्यावर्त्तक इतिहास सेहो ऐसँ अक्षोप नै। रामचरित मानसमे रामराज्यक परिकल्पना आ सवरीक सिनेह समन्वयवादक द्योतक छी। मात्र चौपाइक कारणे ई ग्रन्थ जनप्रिय नै भेल। श्री मद्भागवत गीतामे कृष्णक उपदेश निश्चित रूपसँ शांति लेल युद्धक प्रतीक मुदा ऐ क्रांतिमे सेहो समाजमे समन्वयवादक आश लगौल गेल। ''देसिल वयना सभ जन मिट्ठा''क कतेको गुणगान कएल जाए मुदा हमर साहित्यक इतिहास श्रृंगार आ यशोगानसँ आगू नै बढ़ि रहल छल। ऐ उपक्रममे ललित आ धूमकेतु सन आधुनिक रचनाकार अबस्स समन्वयवादक आश लऽ कऽ एला। ऐसँ पूर्बक साहित्य अपन समाजमे केतबो गुणगानक ध्वजकेँ जाज्वल्यमान करए मुदा आन क्षेत्र लेल मात्र मधुर भाषा बनि कऽ रहि गेल जाइमे पग-पग पोखरि माछ मखानसँ बेसी आश राखब अनर्गल छल। कर्मवादिताक आधारपर जौं निर्णए कएल जाए तँ साहित्यसँ साम्यवादक घृतगंध मात्र किछुए साहित्यकारक लेखनीसँ झहरैत भेटत, जइमे प्रमुख छथि जगदीश प्रसाद मण्डल, बैद्यनाथ मिश्र यात्री, चतुरानन मिश्र, ललित, धूमकेतु, गजेन्द्र ठाकुर, सुधांशु शेखर चौधरी, कुमार पवन आ श्रीमती कमला चौधरी। वास्तवमे मैथिली उपन्यास विधामे साम्यवादक संस्थापक वैद्यनाथ मिश्र यात्री (कृति- पारो) आ चतुरानन मिश्र (कृति- कला) केँ मानल जा सकैत। ई मात्र संयोग मानल जाए जे दुनू

साहित्यकारक कृति एकहि बर्ख सन १९४७ ई.मे प्रकाशित भेल। ओही कालमे यात्री परिपक्व रचनाकार भऽ गेल छला, मुदा चतुरानन एकटा काँच क्रांतिवादी युवक रहथि। एकटा मजदूर आन्दोलनक नेतृत्व केनिहार २१ बर्खक नवयुवकक लेखनीसँ निकसल ऐ उपन्यास नै समाज लेल लिखल क्रांतिगीतकेँ पूर्ण वैचारिक मान्यता किएक नै भेटल ई विचारनीय प्रश्न छी। कलाक अतिरिक्त चतुरानन मिश्रीजी विकास, संझा माए, जागरण आदि लघु उपन्यास लिखने छथि मुदा सामान्य पाठक लेल साहित्यकार नै मानल जाइ छथि। कलाक पहिलुक प्रकाशन १९४८ ई.मे भेल। पछाति मैथिली अकादमी ऐ पोथीकेँ फेरसँ प्रकाशित केलक। हिरमोहन झा आ यात्री सन चर्चित लोकनि एकर सारगर्भितासँ हर्षित भेला, मुदा पाग प्रधान मिथिलामे ''कला'' क कहए जे वाहवाहीक मुरेठा सेहो नै भेटल। समालोचक लोकनि केतौ-केतौ मर्यादावश उल्लेख तँ करै छथि मुदा ''क्रांतिवीर'' कहबामे संकोच होइ छन्हि किएक तँ ई साम्यवादी राजनीतिज्ञ कालसँ पूर्बे लिखब छोड़ि देलक।

आब प्रश्न उठैए जे चतुराननकेँ साहित्यक महिमा मण्डनक पिरही नै देल जाए किएक तँ परिपक्व भेला बाद लिखनाइ छोड़ि देलक आ संग-संग दोहरी चरित्र ई जे जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ सेहो महत नै देल जाए किएक तँ ओ परिपक्व भेला पछाति लिखलक आ लिखि रहल अछि की ई उचित...?

एकटा समन्वयवादपर आघात मानल जाए। ई दुनू केकरो यशोगान आ केकरो तगेदासँ नै लिखलक। एकर गंभीर परिणाम जे जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ ''टैगोर साहित्य सम्मान'' सन सम्मान भेटल मुदा मिथिलाक कोनो समाचार पत्रसँ ई प्रकाशित नै भेल। मैथिली भाषा मात्रमे ऐ प्रकारक अन्तर्द्वन्द्व संभव छै। समन्वयवादसँ हमरा सबहक अँतरी किएक डोलि जाइत अछि? एकर अर्थ स्पष्ट जे भाषाक प्रचारक आ संरक्षक लोकनिमे पारदर्शिताक संग-संग प्रतिभा सेहो नै छन्हि आ आत्मग्लानि (complexion) सँ ग्रसित छथिए।

मात्र ५४ पृष्ठक एकटा छोट-छीन जेकरा अतिवादी समालोचकक दृष्टिमे झुझुआन सेहो कहल जा सकैत, औपन्यासिक कृति ''कला'' मिथिलाक निरापद समाजक नारी दोहनक वृत्ति चित्र छी। मैथिलीमे रचनाक

संख्या बल आगालक ताल रचनाकारक स्तरक मूलाधार होइत। ''कला'' पढ़ला पछाति ई अक्षरश: प्रमाणित भऽ गेल। जइ समाजमे अखनो विधवा बिआह अमान्य मानल जाइत। ओइ समाजक एकटा नारीमे चेतना आ सकारात्मक परिणामक संग उदेस प्राप्तिक आश लगभग ६६ बर्ख पूर्ब राखब एकटा क्रांतिवादी विचारधाराक कारण मानल जा सकैत। महेश बाबू गरीब मुदा ऊँच-नीच बुझनिहार बेकती छथि। ओ अपन १० बर्खक ज्येष्ठ कन्या ''कला''क बिआह नै करए चाहै छथि, मुदा पारिवारिक स्थिति आ समाजक दशो-दिशा महेश बाबूक मुख बन्न कऽ देलकनि ५० बीघा जमीनक मालिक बूढ़ बर मनेजर भाइसँ कलाक बिआह करए पड़लनि।

अपराधवोध नीक लोककेँ अबस्स होइत। परिस्थितिवश आर्थिक दृष्टिसँ नि:शक्त महेन्द्र बाबू बेटीक बिआहसँ पूर्बे अपन कनियाँक नाओंसँ समाजक आ परिस्थितिक देल पीड़ाकेँ पतिया स्वरूप लिखि निपत्ता भऽ गेला। एकटा बूढ़ बरक कनियाँ जे क्षणहिं पूर्ब काँच कन्या छेली आब वएससँ नै मुदा जीवन शैलीमे परिवर्तनसँ बेथित आ बेसाहु भऽ गेली। एक बर्खक दाम्पत्य जीवन व्यतीत केला पछाति अज्ञात यौवना बालिका चित्राक ''बूढ़ वर'' कविताक नायिका जकाँ विदा भऽ गेली। मुदा ''जो रे राक्षस, जो रे पुरुष जाति। तोरे मारलि हमरा सभ मरि रहल छी...।'' केर उद्घोष नै केली। माए-बाप आ समाजक देल अवांक्षित वैधव्यकेँ मूक स्वीकारोक्ति कलाक परिपक्वताक नै परिस्थितिक निष्कर्ष भऽ गेल। ''कला'' वैधव्यक कष्टसँ कानल तँ रहथि मुदा छोट वएसक कारणे जीवनमे एतेक भारी विपतिक आगमनक पूर्ण भान नै भेल छेलनि। ''अज्ञात नव यौवना'' (कोनो राजकमलक कथानायिका नै मिथिलाक गुणगान करए बड़ा छद्म ब्राह्मण जातिक कन्या) विधवा संकटा बनि गेली। क्षणिक चुहचुहीसँ भरल कलाकेँ देखि सासु कहलखिन-

''वौआसिन केर विधवाक शोभा नै संकटे छी तँए हमर विचार जे कहबा लितौं?''

फेर गंगा कातमे कलाक मूड़न भेल! ई मिथिलाक तादात्म्य, मैथिल ब्राह्मणक शक्तिकेँ की मानल जाए? इहए कारण छी जे सम्पूर्ण भारतमे धर्म सुधार आन्दोलन भेल, मुदा मिथिलामे नै। ओना ऐ तरहक प्रवृत्ति आन ठामक

ब्राह्मणमे सेहो छन्हि, मुदा एतेक कट्टरता नै। अवलाक शोणितसँ जातिवादी हथियारकेँ पिजा कऽ कहिया धरि अपनाकेँ ''सवर्ण'' कहैत रहत, ई तँ अवर्णो लेल ग्राह्य नै। जौं एतबे टामे ''कला''क ललित कलाक इतिश्री भऽ गेल रहितए तँ विशेष गप नै छल। अवला निर्वला कलाकेँ हुनक दिअर सुन्दर बाबू जे वएसमे कलाक पिताक समान छथि चरित्र हनन कऽ कुलक्षणा पतिता आ कलंकिता माताक रूप दऽ देलखिन। कला गर्भवती भऽ गेली। भरि दिनक गारि आ शापसँ कला असहज भऽ सासुकेँ जवाब देलखिन-
''अपन कोखि केहेन भेलनि जे एहेन सुपुत्र जे जनमैलनि। शौख केहेन भेलनि जे पचास बर्खक बूढ़ बेटाले नअ बर्खक कनियाँ तकै छेली...।''

सुन्दर बाबू जे पहिने कलाक चरित्रहंता खलनायक छला आब मर्यादा पुरुषोत्तम बनि माइक आदेशपर कलाकेँ मूर्छित कऽ देलनि।

जखनि वियति अबैत तँ सगरो दिस अन्हार जेम्हरे जीव जेबाक प्रयत्न करैत तेम्हरे संकट। कला भागि कऽ बनारस चलि गेली। एकटा तथाकथित मैथिल भद्र महिला सोमदाइ कलाकेँ षडयंत्रसँ गयिका बना कऽ बेचए चाहै छेली। एकटा ब्राह्मणी सहायतासँ कला चरित्र दोहनसँ बँचि तँ गेली मुदा पीड़ा अग्राह्य भऽ गेलनि। परिणाम भेल आत्महत्याक प्रयास, मुदा अभागलिकेँ मरनाइ सेहो कठिन होइत। सात दिन अस्पतालमे रहला पछाति जखनि किछु सुधार भेलनि तँ डॉ. कलानंदसँ साक्षात्कार जीवनमे सुखद अनुभूति लऽ कऽ आएल। युवक डॉ. कलानंद आत्महत्याकेँ उचित नै मानै छथि। ओ सुधारवादी ब्राह्मण छथि। विधवाकेँ बिआह कऽ लेबाक चाही...। डॉ. कलानंदक तर्क कलाकेँ असहज लगलनि। ऐ समाजमे विधवाक नारकीय स्थितिसँ उद्वेलित कला ''सती प्रथा''केँ उचित मानै छथि। केहेन विकट परिस्थिति छी जैठामक नारी अवला जीवनक अभिशापसँ बेसी चरित्र हननक डरसँ सती हएब उचित बुझै छथि। तथाकथित पुरुष प्रधान सबल वर्गक नारी दिन भरि खटैत रहए सभ दैनन्दिनीमे परिवारक सहयोगी मुदा यात्राकालमे अशुभ। आश्चर्य अछि समाजक अग्र आसनपर बैसल धर्म निर्माता आ बेवस्थाक तथाकथित मनुवादी प्रवृति ओ दर्शन। जौं मनुवादकेँ हृदैसँ मानै छथि तैयो एहेन दृष्टिकोण हएब उचित नै। मनु तँ एकर समर्थन कथमपि नै केने हेता। जौं हुनको इहए दृष्टिकोण छेलनि तँ एहेन बेक्तीक लिखल स्मृति

समाजपर कलंक मानल जाए। ऐ क्रममे सभसँ नीक लागल चतुरानन जीक समन्वयवादी विचारधाराक बेवाक विश्लेषण। डॉ. कलानन्द अन्तरजातीय आ अन्तरप्रान्तीय बिआहक समर्थक छथि कलानंदक ऐ दृष्टिकोणकेँ साम्यवादी विचारधाराक अनुशीलन हेतु चतुरानन जीक आत्म उद्बोधन मानल जाए।

उपन्यासक निष्कर्ष सकारात्मक अछि। डॉ. ‘‘कलानंद’’ कलानंदसँ ‘‘कलाकान्त’’ अर्थात् कला दाइक पति भऽ गेला। दंतहीन मैनेजर भाइ जकाँ नै सुन्दबाबूसँ संस्कृत शिक्षा ग्रहण करैवाली ‘‘कला’’क सुयोग्य पति- डॉ. कलानंद। कलाक जिज्ञासा छेलनि जे विधवा ट्रेनिंग कैम्प चलैत रहए। ओ पूर्ण भेलनि। डॉ. कलानंद आब औषधालय खोलि राजनीतिमे कूदए चाहै छथि। औषधालयसँ जे आमदनी हेतनि ओइसँ परिवारक भरण-पोषण डॉ. साहैबक मूल उदेस छन्हि। रचनाकार राजनीतिज्ञ लेल प्रश्न ठाढ़ कऽ देलनि जे राजनीतिमे रहैबला लोक समाज सेवाकेँ अपन उदेस बनाबथु। राज्यक धनसँ परिवारक पोषण नै ई तँ ‘‘ऑनरेरी सर्विस’’ हेबाक चाही। कला सोलह बर्खक बाद अपन नैहर एली मुदा सभ किछु नष्ट भऽ गेल छेलनि। ऐ उपन्यासमे महाजनवादी सूदिखोरी प्रथाक विरोध सेहो कएल गेल अछि।

निष्कर्षत: ई उपन्यास विन्याक दृष्टिसँ किछु विशेष नै किएक तँ मैथिलीमे कथोपकथनसँ बेसी विन्यासक महत होइत छै। चोटगर आ रसगर गप ऐमे नै छै तँए ई समालोचक लोकनिकेँ नै पचलनि। जौं चतुरानन जीक ऐ तरहक दृष्टिकोण जे अखनि धरि मात्र कल्पना छी, समाज द्वारा अर्न्तमनसँ स्वीकार कऽ लेल जाए तँ चतुरानन जीक लेखनीक सार्थकता परिलक्षित होएत।

ऐ मौलिक कृतिक प्रासंगिकता समाजमे अखनो अछि। जे वर्ग स्वयंकेँ मस्तिष्क कहै छथि ओइमे सम्यक् साम्यवादी तत्वक विकासमे लागल धून अखनि धरि व्याप्त अछि। ओना स्थिति बदलि रहलै आ बाल-बिआह लगभग मिथिलामे न्यून भऽ गेलै मुदा काटर प्रथा आ वैधव्य जीवनक दारूणिक बेथाकेँ अखनो सबल समाजमे मान्यता छै। ब्राह्मण शिक्षा स्पोतक मूलांकुर रहल छथि तँए राजतंत्रीय बेवस्थामे पएर पुजेबाक हिनका अधिकार छेलनि मुदा की ऐ वर्गक विद्धत लोकनि ओइ अधिकारक प्रयोग समाजमे समन्वयवादी बेवस्थाक स्थापना लेल कऽ सकलनि?

द्रविड़ समाजमे तँ बहुत हद धरि जाति-पातिक दृष्टिकोणमे कमी आएल मुदा आर्य समूह विशेष कऽ कऽ मिथिलामे अखनि धरि आनक प्रतिमाकेँ प्रोत्साहित करब वा सांस्कृतिक एवं सामाजिक विकासमे भूमिका देबएमे सबल वर्गकेँ अखनो कचोट होइ छन्हि। जाधरि ऐ मानसिकतासँ मुक्ति नै भेटत चतुराननजी सन समन्वयवादी विचारधारा पुरान रहितो नूतन मानल जाएत। बिसवास अछि जे स्वयंकेँ मूल्यांकन कएल जाए जे हम सभ केतए जा रहल छी इहए ''कला''क कलात्मता ओ तादात्म्यक सार्थक श्रद्धांजलि हएत।



शिवकुमार झा 'टिल्लू'

पिताक नाओं : स्व. काली कान्त झा ''बूच''
माताक नाओं : स्व. चन्द्रकला देवी
जनम तिथि : ११-१२-१९७३,
शिक्षा : स्नातक (प्रतिष्ठा)
जन्म स्थान : मातृक- मालीपुर मोड़तर, जिला.- बेगूसराय,
मूलगाम : ग्राम-पत्रालय-करियन, जिला-समस्तीपुर, पिन: ८४८१०१,
संप्रति : प्रबंधक, संग्रहण, जे. एम. ए. स्टोर्स लि., मेन रोड, बिस्टुपुर जमशेदपुर - ८३१००१,
अन्य गतिविधि : बर्ख १९९६ सँ बर्ख २००२ धरि विद्यापति परिषद समस्तीपुरक सांस्कृतिक, गतिवधि एवं मैथिलीक प्रचार-प्रसार हेतु डॉ. नरेश कुमार विकल आ श्री उदय नारायण चौधरी (राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त शिक्षक) क नेतृत्वमे संलग्न।